कृषि विभाग

किसानों की
सफलता की कहानी

Success Story of Farmers'

कृषि विभाग

किसानों की
सफलता की कहानी

Success Story of Farmers'

BAMETI

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती), पटना

आईएसओ 2022

e-mail : bameti.bihar@gmail.com Website : www.bameti.org

प्रकाशन
बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्ट: बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना-800 014
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com

मुख्य संरक्षक	**श्री कुमार सर्वजीत** मंत्री कृषि, बिहार सरकार
मार्गदर्शन	**श्री संजय कुमार अग्रवाल (भा.प्र.से.)** सचिव, कृषि विभाग, बिहार सरकार **श्री विजय कुमार (भा.प्र.से.)** राज्य नोडल पदाधिकारी, आत्मा योजना पटना, बिहार **डॉ. आलोक रंजन घोष (भा.प्र.से.)** निदेशक, कृषि, बिहार **श्री अभिषेक कुमार (भा.व.से.)** निदेशक उद्यान, कृषि विभाग, बिहार
संपादक	**श्री आभांशु सी जैन** निदेशक, बामेती, बिहार
संपादक मंडल	**डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा** स्टेट कॉडिनेटर आत्मा योजना, पटना बिहार **श्रीमती शारदा शर्मा** उप निदेशक, बामेती, बिहार **श्रीमती नीलम गौर** उप निदेशक, बामेती, बिहार
सहयोगी संपादक	**श्री संदीप कुमार**
पृष्ठ सज्जा	**श्री हृदय नारायण ठाकुर**

प्रकाशक

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार
प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)

पोस्टः बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना–800 014

website: www.bameti.org

e-mail : bameti.bihar@gmail.com

श्री कुमार सवरजीत
मंत्री, कृषि विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

संदेश

श्री कुमार सर्वजीत

श्री संजय कुमार अग्रवाल
(भा.प्र.से.)
सचिव, कृषि विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

संदेश

श्री संजय कुमार अग्रवाल

डॉ. आलोक रंजन घोष

(भा.प्र.से.)

निदेशक, कृषि, बिहार

बिहार सरकार

संदेश

डॉ. आलोक रंजन घोष

श्री अभिषेक कुमार
(भा.व.से.)
निदेशक उद्यान, कृषि विभाग,
बिहार

संदेश

श्री अभिषेक कुमार
(भा.व.से.)
निदेशक उद्यान, कृषि विभाग, बिहार

विषय–सूची

अध्याय	विवरणी	पृष्ठ
01.	कांति किरण ने पफल–पूफल एवं सब्जी की खेती कर बनाया अलग पहचान	08
02.	सब्जियों की खेती कर आत्मनिर्भर बनी लालबूची	09
03.	कोकरी की खेती नई परम्परा की शुरूआत	10
04.	विजय कर रहे टमाटर की उन्नत खेती	11
05.	अवधेश ने खेती में नयी तकनीक का प्रयोग	12
06.	किसान उत्पादन संगठन ने दिलायी पहचान	14
07.	केले की खेती से मिली पहचान	16
08.	आलोक कर रहे सब्जी उत्पादन	17
09.	संजू कर रही सब्जी की खेती	18
10.	किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बने विजय पांडेय	19
11.	बीज उत्पादन कर ललितेश्वर बने व्यवसायी	20
12.	धन की करते हैं तकनीकी खेती सर्वजीत	21
13.	पॉलीहाउस में दीप्ति कर रही पफूल की खेती	22
14.	शकुन्तला कर रहीं उद्यानिक पफसलों की खेती	23
15.	मंती ने समेकित कृषि को अपनाया	24
16.	पपीता की खेती से हुआ चर्चित	25
17.	पपीता व आम उगा रहे हेमन्त	26
18.	पपीता की खेती से सवारा भविष्य	27
19.	पपीता उत्पादन कर विजय शंकर ने बनाया पहचान	28
20.	संतरा एवं पपीता की खेती ने दिलायी पहचान	29
21.	मुन्ना कर रहे सब्जी एवं बागवानी की खेती	30
22.	जन्मेजय कर रहे केला की खेती	31
23.	चंदा कर रहे वैज्ञानिक तरीके से सब्जी की खेती	32
24.	बाजार हमें खोजता है अमरजीत कुमार	33
25.	सब्जी उत्पादन कर आय का बनाया स्रोत महेंद्र प्रसाद	34
26.	तकनीकी खेती ने दिलायी पहचान	35
27.	शशि कर रहे सब्जी एवं मक्का का उत्पादन	37
28.	ऑरगेनिक पफर्टिलाईजर से कर रहे परवल की खेती	38
29.	पप्पू ने विदेशों तक पहुंचायी पफूलों की सुगंध	39
30.	जिज्ञासु पॉली हाउस में उगा रहे शिमला मिर्च	40
31.	हरेश ने 100 से अध्कि आम के लगाए पौधे	41
32.	बागवानी लगाकर लोगों के लिए नजीर बन रहे हैं दुबौलिया के केशव	42
33.	पॉलीहाउस में कर रहे उन्नत विधि से शिमला मिर्च और खीरा की खेती	43
34.	संजीत उगा रहे कई तरह के पौधे	45
35.	जर्दालु आम ने दिलायी पहचान	46
36.	पशुपालन से किया मुकाम हासिल	47
37.	समेकित कृषि प्रणाली को अपनाया, हुआ मुनाफा	48
38.	समेकित खेती कर खुशहाल हुआ परिवार	50
39.	इंद्रदेव पशुपालन को बनाया आमदनी का जरिया	52
40.	मुर्गी पालन से अनिल को मिली सपफलता	53
41.	रमेश ने मत्स्य पालन कर पायी सफलता	54
42.	मछली पालन कर पंकज बने प्रेरणास्रोत	55
43.	कई प्रजातियों का मछलियां का पालन कर रहा दिलीप	56
44.	मुर्गी, बकरी एवं मत्स्य पालन कर पायी सफलता	57
45.	केशरंजन बना मत्स्य उत्पादक	58
46.	ओमप्रकाश कर रहे मत्स्यपालन	59
47.	अभिषेक ने बायोफ्रलॉक विधि से मछली का उत्पादन	60
48.	बायोफ्रलॉक तकनीक अपनाकर यशवन्त कर रहे मत्स्यपालन	61
49.	जय प्रकाश ने उद्यानिक खेती कर बढ़ाया जिले का मान	62
50.	लाल बाबु ने डेयरी फॉर्म प्रबंध्न में अपनाया उन्नत तकनीक	65
51.	खस की खेती ने बदली मो. हमीद की तकदीर	66
52.	अनिल कर रहे ड्रिप सिंचाई एवं प्लास्टिक मलचिंग उपयोग	68
53.	समेकित खेती कर खुशहाल हुआ परिवार	69
54.	जल संरक्षण मिशन में सारथी बने अजय को मिला सम्मान	71
55.	पुष्पा कर रही दुग्ध उत्पादन	72
56.	गाय पालन एवं सब्जी की खेती कर रही शोभा	73
57.	सत्येंद्र ने पशुपालन को बनाया व्यवसाय	74
58.	मशरुम तथा हर्बल गुलाल से रेखा बनी उद्यमी	75
59.	ओमप्रकश ने मशरूम उत्पादन कर पायी सफलता	76
60.	मशरूम का सुखौता ने दिलायी पहचान	77
61.	मशरूम उत्पादन को बनाया आय का स्रोत	78
62.	अरूणी देवी ने मशरूम उत्पादन से बढ़ायी आमदनी	79
63.	मशरूम व मधुमक्खी पालन ने दिलायी पहचान	80
64.	मशरूम उत्पादन कर रहे सरोज	81
65.	मशरूम की खेती से आमदनी हुई दोगुनी	82
66.	रिंकु ने मशरूम उपजाकर बनी स्वावलम्बन	83
67.	मशरूम को बनाया आय का स्रोत	84
68.	मिश्रित खेती कर ने बनायी पहचान	86
69.	समेकित कृषि प्रणाली सपफलता की नई राह	88
70.	मशरूम उत्पादन से अरूणी देवी कर रही अच्छी आमदनी	90
71.	समेकित कृषि प्रणाली को अपनाया	91
72.	स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे रविशंकर	92
73.	सुधीर ने स्ट्रॉबेरी की खेती कर बना आत्मनिर्भर	93
74.	आचार तैयार कर गौतम ने बनाया अलग पहचान	94
75.	कौशल ने स्टॉबेरी की खेती कर हासिल किया मुकाम	95
76.	कृषि बैंक यंत्रा से मिला रोजगार	96
77.	किसानों के जीवन में मिठास घोल रहे रमेश	97
78.	आचार, पापड़ एवं बड़ी को बनाया उद्योग	98
79.	जेम एंड जेली से बनी जुही बनी व्यवसायी	99
80.	ओल एवं पफूलों की खेती के लिए पुरस्कृत	100

01 कांति किरण ने फल-फूल एवं सब्जी की खेती कर बनाया अलग पहचान

परिचय

1. किसान का नाम -**श्रीमती कांति किरण**
2. पिता/पति का नाम -श्री हीरामन प्रसाद
3. पता - गॉव/मुहल्ला-भेड़री, पोस्ट-इचरी प्रखंड -गड़हनी, जिला-भोजपुर (बिहार)
4. किसान का मोबाइल नम्बर- **9535707711, 9113677329**
5. किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे0में) -6.8 हेक्टेयर
6. सिंचित क्षेत्र (हे0 में) -0
7. असिंचित क्षेत्र (हे0 में) -6.8 हेक्टेयर
8. किसान का प्रकार -व्यक्तिगत।

आज की कहानी एक ऐसे महिला किसान श्रीमति कांति किरण जी का है, जिन्होंने अपने जीवन के शुरूआती दिन (शादी के बाद) भारत के विभिन्न शहरों एवं महानगरों में बिताया है। इनके पति का भारतीय वायुसेना में कार्यरत होने के कारण ऐसा होता था। पति के अवकाश प्राप्ति के बाद इन्होंने भारत के मशहूर महानगर बेंगलुरु को अपना आशियाना बनाया। बेंगलुरु में हो रहे विभिन्न तरह के पुष्प उत्पादन से इतने प्रभावित हुए कि इस उम्र में भी अपना खुद का फार्म हाउस जिसमें विभिन्न तरह फूल, फल एवं सब्जी उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारण कर लिया। इनके सोंच का भरपूर साथ इनके पति, पुत्र और दमाद का भी मिला जिससे इन्होंने बिहार के जिला भोजपुर को अपना कार्य क्षेत्र मान आगे बढ़े। भोजपुर जिले में कोईलवर प्रखण्ड के एक छोटे से गांव कुलहड़िया में इनका घर था, लेकिन लक्ष्य का निर्धारण के पश्चात इनके पास ऐसा खेती योग्य उपयुक्त एवं प्रयाप्त जमीन नहीं था। इन्होंने ऐसा भूमि को अपने उपयोग में लाने का सोचा जो वर्षो से खेती के कार्य के लिए अनुप्युक्त समझ लोगों ने छोड़ रखा हो। इस तरह की भूमि की इनको गड़हनी प्रखण्ड प्रखण्ड के इचरी पंचायत के भेंडरी ग्राम में उपलब्ध हुआ। इस जगह को (टाड़) के नाम से जानते थे, जहां बरसों से किसी तरह का कृषि कार्य नहीं किया गया था, न उस क्षेत्र में कोई अधारभूत सुविधा, न कोई अबादी पूरा का पूरा विरान इलाका, बंजर भूमि जहां जंगली पौधे के अलावा किसी तरह का फसल दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता था। इस जगह पर वर्ष 2016-17 में इनके द्वारा 17 एकड़ जमीन खरीद कर पपीता की खेती कर शुरूआत किया गया जो कि सफल शुरूआत अच्छी नहीं रही सारे पौधे सुख गए और भी विभिन्न तरह के परेशानियों का सामना करना पड़ा। शुरू के वर्षो में इनके खेती की देखभाल के लिए कुछ लोगों को रखा गया था। वर्ष 2018 में इन्होंने बेंगलुरू से यहां रहना शुरू किया और सम्पूर्ण देखभाल अपने द्वारा करने लगी। श्रीमती कांति किरण जी जिन्होंने वर्ष 2017 में गड़हनी प्रखण्ड के भेड़री ग्राम में अपने फार्म हाउस का स्थापना कर फल, फूल एवं सब्जी उत्पादन का मुख्य लक्ष्य बनाया। जिसमें से 1 हेक्टेयर क्षेत्रफल में कई प्रजाति के अमरूद बाग का स्थापना किया, जिसमें वर्ष 2020 से व्यवसायिक तौर पर उत्पादन किया जा रहा है। जहां प्रति पौघ 30 किलो गुणवत्ता पूर्ण उत्पाद का लक्ष्य रखा गया है। संरक्षित खेती के लिए 12000 वर्ग मीटर में पॉलीहाउस की स्थापना किया गया। जिसमें 2000 वर्ग मीटर में जरबेरा फूल, 3024 वर्ग मीटर में गुलाब फूल की खेती की जा रही है। जरबेरा और गुलाब से क्रमशः 3,60,000 एवं 6,30,000 फूल का उत्पादन प्रति वर्ष किया जाने का लक्ष्य रख उत्पादन किया जा रहा है। अन्य पॉली हाउस में बीज रहित खीरा, शिमला मिर्च, बिना मौसम खरबूज इत्यादि का उत्पादन जिले में प्रथम बार किया गया, जो अन्य किसान के लिए भी एक आकर्षण का केन्द्र रहा। अभी इनके सभी खेतों में सिंचाई के लिए सिर्फ बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति (ड्रिप सिंचाई) का उपयोग में लाया जाता है जिससे फसलों की उत्पादन लागत कम तो होता है हि उत्पादन में भी वृद्धि देखी जा सकती है। इनके द्वारा उत्पादित फल एवं सब्जी को जिला स्तर पर आत्मा (कृषि विभाग) द्वारा आयोजित किसान प्रदर्शनी और राज्य स्तर पर उद्यान विभाग द्वारा आयोजित फल, फूल एवं सब्जी प्रदर्शिनी में कई बार पुरस्कार प्राप्त किये है।

कृषि विभाग, उद्यान, मृदा एवं जल संरक्षण विभाग, आत्मा भोजपुर से सहयोग। इनके द्वारा अपने खेतों की अच्छी फसल के उत्पादन से प्रभातिव होकर ही अगल बगल के सैकड़ों एकड़ खेत में लहलहाती फसल देखी जा सकती है जहां वर्षो से किसी तरह का कृषि कार्य नहीं किया जा रहा था। साथ की आत्मा भोजपुर द्वारा विभिन्न प्रखण्डों के किसानों का परिभ्रमण कराया गया। जिसके फलस्वरूप किसानों द्वारा फलों की खेती एवं ड्रिप सिंचाई के लिए आकर्षण बढ़ा है। जो किसानों द्वारा अपनाया जा रहा है। फल एवं सब्जी प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार, राज्य स्तर पर उद्यान विभाग द्वारा आयोजित फूल एवं सब्जी उत्पादन प्रतियोगिता में लगातार दो साल से प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार प्राप्त।

02 सब्जियों की खेती कर आत्मनिर्भर बनी लालबूची

परिचय

नाम लाल बुची देवी
पिता/पति का नाम – श्री विरेन्द्र प्रसाद चैधरी
पूरा पता – गाँव/मोहल्ला-हरिहरपुर पो0- हरिहरपुर, थाना -शाहपुर, प्रखंड -शाहपुर, जिला -भोजपुर
मोबाइल सं0-9973938475
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 1.5
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)-1.5
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)-0.0
किसान का प्रकार- गैर रैयत
(स्वयं सहायता समूह/कृषक हित समूह/खाद्य सुरक्षा समूह (महिलाओं के लिए)/किसान उत्पादक संगठन के सदस्य/व्यक्तिगत)

यह कहानी शाहपुर प्रखण्ड मुख्यालय से लगभग 5 किमी दूर स्थित हरिहरपुर गांव की लाल बुची देवी पति विरेन्द्र प्रसाद चैधरी की है जो शादी होने के बाद हरिहरपुर के एक छोटे घराने मगरू बिन की बहु बनकर अपने ससुराल आई। ससुराल में इनका अपना एक भी धूर जमीन नही होने के कारण इनके परिवार का जैसे-तैसे जीवन यापन हो रहा था। वे आर्थिक रूप से काफी पिछड़ी हुई थी, जिसके कारण उनके परिवार में षिक्षा का भी अभाव था। इनके पति विरेन्द्र प्रसाद चौधरी जो बाहर रहकर फैक्ट्री में कार्य करते थे। पति के अपने काम पर चले जाने के उपरांत लाल बुची देवी अपने कच्चे घर में बैठ कर अपने भविष्य के सपने बुनती रहती थी, और अपने आप को बेरोजगार महसुस करती थी। इसी बीच उन्हे अखबार में आत्मा योजना के माध्यम से सब्जी उत्पादन के बारे में जानकारी मिली। चौपाल के दौरान, आत्मा कर्मी के सुझाव और सहयोग से उन्होने सब्जी की खेती करने की जानकारी ली और अपना भविष्य सवारने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हो गई।

लालबुची देवी बताती है कि करीब दो दशक पूर्व परिवार को आर्थिक तंगी से उबारने के लिए कृषि विभाग एवं कृषि वैज्ञानिकों से समन्वय स्थापित किया इसके बाद वो आत्मा के द्वारा समुह में जुड़कर पट्टे पर सब्जी की खेती करना शुरू किया । इन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र,आरा तथा बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर एवं भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान,वाराणसी आदि संस्थानों से कृषि तकनीकों द्वारा सब्जी उत्पादन करने की प्रशिक्षण ली, और बड़े स्तर पर सब्जी खेती करना शुरू किया। उन्होनें विभिन्न प्रकार की सब्जी जैसेः- टमाटर ,बैगन, हरी मिंच, फुल गोभी, प्याज, आलु इत्यादी उगाना शुरू किया, और कुछ दिनों के बाद उन्होनें अपना उत्पाद(टमाटर ,बैगन, हरी मिंच, फुल गोभी,प्याज,आलु) नजदीकी मार्केट और घर से ही बेचती है तथा दूर दराज से भी व्यासायि उनके यहॉ खरिदने के लिए पहुचते है। इस प्रकार लालबुची देवी ने 1 धुर जमीन न होने पर भी पट्टे की खेती कर अपने परिवार की जिन्दगी पिछले 10 वर्षो से सफलता पूर्वक संवार रही है और बेटे, बेटियों को अच्छी षिक्षा दिलाई जिसके फलस्वरूप आज उनका बड़ा बेटा सरकारी नौकरी में देष की सेवा कर रहा है। शुरूआत में समाजिक तंज और विरोध का सामना करने के बावजुद लालबुची देवी आज कई गॉवों की महिलाओं के लिए मिसाल बन चुकी है, सिंफ दो दशक पूर्व मे दुसरे से उधार लेकर खेती करने वाली, आज दुसरो की आर्थिक मदद करने में आगे रहती है, उनकी प्रेरणा से यहां कई कृषक समूह का गठन हो चुका है, इसके साथ ही वे दर्जनो महिलाओं को एकजुट कर समूह में खेती करने की प्रेरित कर रही है।

श्रीमती लालबुची देवी बताती है कि वे दुसरे औरतों को भी प्रषिक्षण देती है और सब्जी की खेती के लिए जागरुक करती है, आज वो अपने काम से बहुत खुष है। उनके प्रत्येक साल का आय 1 लाख-1.25 लाख रुपया है। आज अपने आप को वो एक सफल महिला क रुप में देखती है और दुसरे महिला को भी अपने जैसा ही सब्जी कि खेती में सफल बनाना चाहती है। जिसका मुख्य श्रेय शाहपुर कृषि विभाग के कर्मी एवं उप परियोजना निदेशक आत्मा भोजपुर, श्री राणा राजीव रंजन कुमार को देती है और आत्मा भोजपुर को काफी आभार व्यक्त करती है।

सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण तत्व/घटक- (व्यक्तिगत प्रयास/आत्मा से सहयोग/अन्य विभाग से सहयोग)

स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव- आस-पास की गॉव की महिलाओं ने इनसे प्रेरित होकर समूह बनाकर सब्जी की खेती करना शूरू किया एवं अपना उत्पाद नजदीकि बाजारो में बेच रही है और अपने परिवार को काफी आर्थिक सहयोग कर रही है।

03 कोकरी की खेती नयी परम्परा की शुरूआत

परिचय

नाम – **श्री शाली महतो**
पिता – श्री बाले महतो
पता – ग्राम– कटहरा पंचायत– सातपुर
प्रखंड– फुल्लीडूमर, जिला– बांका

- ❖ कोकरी खेती में एक हजार रूपये प्रति कट्ठा लागत है साथ चार हजार रूपया प्रति कट्ठा आमदनी प्राप्त होती है।
- ❖ बाजार भाव काफी अच्छा रहता है।
- ❖ कम समय में फलत से शीघ्र आमदनी का रास्ता बनता है।

बिहार के गिने–चुने क्षेत्रों में ही कोकरी की खेती होती है। इन्हीं क्षेत्रों में बांका जिले के फुल्लीडुमर प्रखण्ड के सादपुर पंचायत का कटहरा गॉव है। यहाँ के किसानों ने ककोरी की खेती कर एक नई परामपरा की शुरूआत की, कृषि में एक एनोवेशन का द्वारा खुला। कटहारा गॉव के श्री शाली महतो सीमांत किसान हैं। जिनके पास खेती योग्य भूमि काफी कम है विशेषकर सब्जियों की खेती कर परिवार चलाते हैं। परम्परागत सब्जी फसल से कर्मी बाजार भाव मिलता है, तो कभी नहीं यह एक प्रमुख समस्या बनी रहती है। पिछले दो वर्ष से कृषि विभाग के सहयोग से इन्होंने ककोरी की खेती की शुरूआत की और सफलता मिलती चली गई। शाली महतो 8 कट्ठा में कोकरी की खेती करते हैं जिसमें प्रति कट्ठा 1000 रूपये लागत आती है और 4000 रूपये प्रति कट्ठा शुद्ध लाभ प्राप्त होती है। जिसे स्थानीय बाजार में 80 रूपये प्रति कि0ग्रा0 की दर से बिकता है। कोकरी लगाने के लगभग 3 माह में फल प्राप्त होने लगता है जो 3 से 4 माह तक फलत होती रहती है। कोकरी की बांका जिले में आपार सम्भावनाएं हैं क्योंकि यहाँ की जलवायु इसकी खेती के लिए अनुकूल है। शाली महतो का कहना है कि सिंचाई की सुविधा न होने के कारण फसल प्रभावित होती है। यदि समय पर पानी मिलता रहे तो इससे फायदेमंद दूसरी कोई खेती नहीं है। क्योंकि इसकी खेती कम दिनों में होती है और बाजार भाव अच्छा मिलता है। कोकरी की खेती बांका जिले की पहचान बन चुकी है और आने वाले समय में अधिक क्षेत्रफल में इसकी सम्भावनाएं बनती जा रही है। शाली महतो की खेती को देखकर दूसरे किसानों का रूझान बढ़ा है यह शाली महतो के लिए गर्व की बात है।

04 विजय कर रहे टमाटर की उन्नत खेती

परिचय

नाम - **श्री विजय मंडल**
पिता का नाम - श्री बौधी मंडल
ग्राम - सौदागर मंडल टोला,
प्रखंड - इस्माईलपुर, जिला -भागलपुर (बिहार)
किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 01 (एक) एकड़
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 01 (एक) एकड़
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- शून्य
किसान का प्रकार- कृषक हित समूह

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा) भागलपुर के तहत प्रगतिशील किसानों के लिए शिक्षण /प्रशिक्षण /वित्तीय सहायता प्रदान करती है। सबजी की खेती का उत्पादन विपणन की जानकारी स्वंय सहायता समूह के माध्यम से करायी गई है। प्रगतिशील किसान श्री विजय मंडल, पिता-बोधी मंडल, ग्राम-सौदागर मंडल टोला, पंचायत-पूर्वी भिट्ठा, प्रखंड-इस्माईलपुर, अनुमंडल-नवगछिया के निवासी हैं। इनके पास दो पुत्र एक पुत्री है। तीनों को ये समुचित शिक्षा खेती के माध्यम से दिये हैं। इनके शादी हुए नौ वर्ष हो गए हैं। जब इनकी शादी हुई तो ये सोचते थे कि ये बेरोजगार हैं। अपने परिवार का भरण-पोषण करने में कठिनाई होती थी। इनकी पतनी एवं परिवार भी कहा करते थे कोई कार्य कीजिए जिससे की रोजी-रोटी सुचारू रूप से चल सके। उस समय उनकी स्थिति बहुत दयनीय थी। इनके पिता के पास खेती योग्य भूमि रहते हुए भी खेती का समुचित लाभ नहीं उठा सके। परमपरागत तरीके से खेती करने के कारण उत्पादन में भारी कमी आती थी। राज्य के विकास दर में कृषि के विकास दर को निरंतर धनात्मक बनाए रखने तथा आनेवाली पीढ़ी को खाद्य सुरक्षा एवं संतुलित आहार प्रदान करने में आत्मा भागलपुर की भूमिका एवं जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है। सब्जी की खेती पहले घर के आसपास वाली जमीन पर मौसम के अनुरूप घर के उपयोग हेतु किया करते थे। एक बार पंचायत भवन में कृषि विभाग बिहार सरकार भागलपुर द्वारा बैठक का आयोजन किया गा था। उनमें कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा) के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। जिनमें प्रगतिशील किसानों को स्वंय सहायता समूह तथा सब्जी बीज उत्पादन हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे कि नकद फसल के रूप में टमाटर को मैनें चुना। उसके बाद प्रशिक्षण आत्मा से लिया और बिहार कृष्ि विश्वविद्यालय, सबौर के कृषि विज्ञान केन्द्र सबौर में आत्मा द्वारा संचालित सब्जी उत्पादन कार्यक्रम में भाग लिया। जिनमें टमाटर उत्पादन पर कृषि वैज्ञानिकों ने सफल खेती एवं विपणन की जानकारी दी। टमाटर को पहले मैंने गाँवों में जरूरतमंदो को और फिर व्यापारीयों के द्वारा स्थानीय एवं दुरस्थ सब्जी मंडी बाजार में सब्जी उत्पाद को पहुँचाए। इससे बड़े पैमाने पर आर्थिक सुद्धढ़ता आयी है। कृषि विभाग बिहार सरकार द्वारा प्रदत्त योजना आत्मा योजना/बैंक/स्वंय सहायता समूह प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

क्र0 सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण			अपनाने के बाद का विवरण			
		प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	कुल	प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	प्रक्षेत्र 3	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	फसल / क्षेत्र / कार्य का नाम	सब्जी उतपादन	–	सब्जी उतपादन	सब्जी उतपादन	–	–	सब्जी उतपादन
2	फसल मौसम में फसल / उत्पाद की मात्रा (क्वीं में)	35 क्वी0	35 क्वी0	70 क्वी0	100 क्वी0	100 क्वी0	100 क्वी0	300 क्वी0
3	उत्पाद का बिक्री मूल्य दर (रू0 / क्वीं)	700	700	1400	2000	2000	2000	6000
4	फसल मौसम में कुल लागत मूल्य	20,000	20,000	40,000	12,000	12,000	–	24,000
5	उपादान का मूल्य (बीज, खाद, कीटनाशी, जुताई–बुआई, सिंचाई, कटाई, दौनी एवं अन्य)	8,000	8,000	16,000	3,000	3,000	–	6,000
6	मजदूर खर्च (रू0 में)	2,000	2,000	4,000	1500	1500	–	3,000
7	अन्य लागत खर्च (रू0 में)	1,000	1,000	2,000	1,000	1,000	–	2,000
8	कुल लागत खर्च (रू0 में)	20,000	20,000	40,000	12,000	12,000	–	24,000
9	शुद्ध आय / बचत (रू0 में)	–	–	–	10,000	10,000	–	20,000

05 अवधेश ने खेती में नयी तकनीक का प्रयोग

परिचय

नाम- **अवधेश कुमार मिश्र**
पिता का नाम- स्व. शम्भू नाथ मिश्र
पता- ग्राम-गंधवारि, पो.-गंधवारि, थाना-सकरी, प्रखंड-रहिका, जिला-मधुबनी (बिहार) पिनकोड-847234
मोबाईल संख्या- **9473147181**
खेती योग्य जमीन- 07 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हेक्टेयर में)- 07 हेक्टेयर

अवधेश कुमार मिश्र का जन्म 01 जनवरी1958 में हुआ। ये दरभंगा C.M.Science कालेज से B.Sc. (Chemistry Hons.) की शिक्षा प्राप्त किये। पढ़ाई समाप्ति करने के बाद दवाई का दुकान चलाए साथ में घर पर खेती से जुड़ गये। पिता जी इनका प्रगतिशील किसान थे। इनके पिताजी को गन्ना के खेती से चीनी मिल के क्षेत्र में काम करने के साथ-साथ सरकार द्वारा बहुत सारा कृषि उपयोग सम्मान/पुरस्कार मिलता था। उनके पास 07 हेक्टेयर जमीन सिंचित है। इनके पास तीन बोरिंग है, एक बोरिंग में सोलर पम्प लगा हुआ है, दूसरा बोरिंग में बिजली मोटर चलित है। इनका सभी खेत सिंचित है जिससे सालों भर फसल उपजाते हैं। ये परम्परागत रुप से धान गेहुं, तेलहन, दलहन के साथ मछली पालन, पशुपालन, उद्यान के साथ नई तकनीक उपयोग कर कृषि क्षेत्र में उत्पादक अधिक करते हैं। एक एकड़ में तलाब बनाये हैं उसमें मछली पालन से आमदनी अच्छी होती है।

अवधेश कुमार मिश्र पढ़ाई समाप्त कर वर्ष 1986 से घर पर अपने पिता जी के साथ कृषि का कार्य शुरू की पहले धान, गेहुं, मसूर का खेती सामान्य विधि से हुआ करता था। धान गेहुं इत्यादि फसल का उत्पादन 30-40 किलो प्रति कट्ठा होता था। गन्ना प्रति कट्ठा 5 से 7 क्वींटल तक होता था। एक दो साल खेती करने से लागत खर्च का वसूल नहीं होता था। दो साल बाद कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर में वैज्ञानिक के साथ समय-समय पर सभी फसलों के बारे में वैज्ञानिक तरीके अपनाकर अधिक फसल का उपज हो इसके लिए लगन से काम किये। वर्ष 1988 से नई तकनीक अपना अपना कर गेहुं, धान, सरसो, गन्ना का बीज पुसा फार्म से वैज्ञानिक द्वारा प्राप्त बीज का अपने खेत में उपजाने लगे जिससे उत्पादन बहुत ज्यादा होने लगा। जो धान, गेहुं 30 से 40 किलो प्रति कट्ठा था वह बढ़कर 80 से 90 किलो प्रति कट्ठा का उपज होने लगा । इनका ये उत्पादन देख अगल-बगल में बहुत सारे किसानों का बैठक होने लगा और सब किसान बीज नाया लेकर बीज उत्पादन करने लगे। सभी किसान अवधेश कुमार मिश्र से सहयोग से इस खेती का उत्पादन से आमदनी बढ़ी। चीनी मिल अवधेश जी के द्वारा लाए गन्ना की नई बीज का उत्पादन के लिए किसानो के खेत में लगवाते थे एवं सरकार द्वारा अनुदान दिलाते रहे।

वर्ष 2001 में वे आत्मा कार्यालय मधुबनी से जुड़ें और आत्मा मधुबनी के द्वारा ईख अनुसंधान केन्द्र लखनउ से प्रशिक्षण लिये। प्रशिक्षण प्राप्त कर मुख्य मंत्री गना विकास योजना से जुड़ गये एवं गन्ना की नई किस्म लाकर अपना खेत में लगाने का काम करते रहे जो गना सामान्य विधि से 6-7 क्वीं0 प्रति कट्ठा था उसका ट्रेंच विधि अपना कर 4ह्न इंच दूरी पर लगवायें और उत्पादन 25 से 30 क्वीं0 प्रति कट्ठा का उत्पादन किये। उस खेतों के देखने जयनगर, राजनगर, वासोपट्टी के किसान आते रहे और बीज इनसे खरीद कर ले जाते रहें। उनका बीज बिहार राज्य बीज निगम द्वारा निवन्धन होता रहा जिससे सरकार द्वारा किसानों को अनुदान मिलता था। बीज उत्पादक किसान को 50 रु0 प्रति क्वीं. प्रोत्साहन मिलता था। ये आलू का बीज आलू अनुसंधान केन्द्र पटना से आते थे और सरकार द्वारा निवन्धन कराकर किसानों को बीज उत्पादन के लिये देते थे। जिला के किसान उनसे प्रमाणित बीज लेकर खेती करते थे और किसानों के खेत पर जाकर नई तकनीक

का सुझाव देते थे। पशुपालन क्षेत्र में भी किसानों की दुग्ध उत्पादन अच्छी हो उसके लिये गव्य दियरा योजना आत्मा मधुबनी कम्फेड के माध्यम से 30-30 किसानों का टीम लीडर बनाकर प्रशिक्षण के लिये बरौनी डेयरी, समस्तीपुर डेयरी, करनाल पशु विश्वविद्यालय एवं शिलीगोरी से प्रशिक्षण दिलाते रहे हैं। जिससे किसानों का दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में बढ़ोतरी होती रही। अवधेश जी का खेती का मुख्य कारण रासायनिक खाद का व्यवहार नही के बराबर रहे ज्यादा तक जैविक से करते हैं। कृषि एवं पशुपालन दोनों का संबंध है अपने से

वर्मी बनाते हैं और गोबर का भरपुर व्यवहार करते है। धान, गेहुं, दलहन एवं तेलहन के खेत में खेत में गहरी जुताई कर धैंचा, मुंग, उड़द को खेत में उपजा कर उसको सड़ा कर हरि खाद बना कर फसल लगातें हैं। अपने धर पर दुग्ध उत्पादन सहयोग समिति चला रहें हैं प्रतिदिन 70 से 80 किसानों का दुध कलेक्शन कर सुधा को 300 लीटर सुबह-शाम देते हैं। उनके यहां सुबह 5 बजे से 9 बजे और शाम 6 बजे से 9 बजे तक किसानों से दुध खरीद करते हैं। आत्मा मधुबनी द्वारा पूर्ण सहयोग मिलता है और रहेगा। कृषि क्षेत्र में अपने वुद्धी-विवके से नई बीज का खोज करते रहते हैं और जमीन पर करते हैं उसी कारण कृषि क्षेत्र के पदाधिकारी गण देखने पहुंचते हैं। ये ज्यादातर खेती श्री विधि से धान, जीरोटिलेज गेहुं, मसुर, तोरी का खेती करते हैं और इनाम के भागिदार होते हैं। धान की उपज 180 क्वी0 प्रति कद्धा तक उत्पादन किये। खेती की शूरुआती दौर में व्यक्तिगत प्रयासों एवं वर्ष 2001 ई0 से आत्मा मधुबनी द्वरा भरपुर सहयोग कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक का सहयोग मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना से बीज उत्पादक किसान के तहत सरकार का भरपुर सहयोग मिलता रहा। स्थानिय स्तर पर आत्मा मधुबनी, गव्य विकास योजना कम्फेड सुधा के माध्यम से जो अनुभव मिला उसको ये किसानों के साथ बैठक कर जमीन पर काम करने का प्रोत्साहन का काम करते रहें, मछली पालन, सब्जी उत्पादन, गन्ना तोड़ी, दलहनी, धान, गेहुं इत्यादि उत्पादन से आमदनी दुगुनी करने का प्रयास करते रहें। इन बातों को लेकर किसानों के बीच इनका का चर्चा होता रहता है। इन्हें आत्मा मधुबनी द्वारा, मुख्य मंत्री गन्ना विकास योजना, बागवानी किसान, सब्जी, फल, धान गेहुं ,गन्ना का प्रदर्शनी में पुरस्कार प्राप्त किया।

क0सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र	कुल	प्रक्षेत्र	कुल
1	2	3	4	5	6
1	फसल / क्षेत्र / कार्य का नाम	1.परम्परागत विधि से धान एवं गेहूँ की खेती 2.तेलहन की खेती 3.दलहनी फसल	धान–4 एकड़ गेंहूँ– 5 एकड़ दलहन–5एकड़ तेलहन–2एकड़	1.श्री विधि से धान एवं जिरोटिलेज से गेहूँ की खेती 2.तेलहन की खेती 3.दलहनी फसल	धान–4 एकड़ गेंहूँ– 5 एकड़ दलहन–5एकड़ तेलहन–2एकड़
2	फसल मौसम में फसल / उत्पाद की मात्रा (क्वी0)	धान गेंहूँ तोरी मसूर	धान–28 क्वी0 गेंहूँ–40 क्वी0 तोरी–6क्वी0 मसूर–20क्वी0	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	धान–88 क्वी0 गेंहूँ–80 क्वी0 तोरी–8 क्वी0 मसूर–35क्वी0
3	उत्पाद का बिकी मूल्य दर (रु0 / क्वी0)	धान गेंहूँ तोरी मसूर	धान–42000 / – गेंहूँ–64000 / – तोरी–24000 / – मसूर–100000 / –	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	धान–132000 / – गेंहूँ–128000 / – तोरी–32000 / – मसूर–175000 /
4	फसल मौसम में कुल लागत मूल्य	धान गेंहूँ तोरी मसूर	धान–24000 / – गेंहूँ–8000 / एकड़ तोरी–5000 / एकड़ मसूर–40000 / –	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	धान–28000 / गेंहूँ–42500 / तोरी–30000 / मसूर–10000 /
5	उपादन का मूल्य (बीज, खाद, कीटनाशी, जुताई–बुआई,सिंचाई कटाई,दौनी एवं अन्य)	धान गेंहूँ तोरी मसूर	धान–36000 / गेंहूँ–45000 / तोरी–10000 / मसूर–40000 /	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	धान–40000 / गेंहूँ–50000 / तोरी–14000 / मसूर–40000 /
6	मजदुर खर्च (रु0 में)	धान गेंहूँ तोरी मसूर	धान–16000 / गेंहूँ–20000 / तोरी–6000 / मसूर–20000 /	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	धान–18000 / गेंहूँ–25000 / तोरी–8000 / मसूर–40000 /
7	अन्य लागत खर्च (रु0 में)	धान गेंहूँ तोरी मसूर	धान–1500 / गेंहूँ–2000 / तोरी–2000 / मसूर–2000 /	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	धान–3500 / गेंहूँ–2000 / तोरी–2000 / मसूर–2000 /
8	कुल लागत खर्च (रु0 में)	धान गेंहूँ तोरी मसूर	धान–37500 / गेंहूँ–47000 / तोरी–12000 / मसूर–42000 /	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	धान–44500 / गेंहूँ–52500 / तोरी–10000 / मसूर–44000 /
9	शुद्ध आय / बचत (रु0 में)	धान गेंहूँ तोरी मसूर	51500.00 / –	धान–श्री विधि गेंहूँ–जिरोटिलेज तोरी–छीटवा विधि मसूर–जिरोटिलेज	317000.00 / –

06 किसान उत्पादन संगठन ने दिलायी पहचान

परिचय

नामः- **विलट प्रसाद सिंह**
पिता का नामः- स्व. सुकदेव सिंह
पताः- ग्रामः- कन्हौली, पो.:- कन्हौली
थानाः- खजौली, प्रखंडः-खजौली
जिला - मधुबनी (बिहार), पिनकोडः-847228
मोबाईल संख्याः- **7992458719**
खेती योग्य भूमि (हेक्टेयर में) 4 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हेक्टेयर में) 4 हेक्टेयर

श्री विलट प्रसाद सिंह का जन्म 16 अगस्त 1970 को हुआ। ये महात्मा गाँधी उच्च विद्यालय से मैट्रिक प्रथम श्रेणी से उतीर्ण एवं शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय से नरार मधुबनी से शिक्षक प्रषिक्षण प्राप्त कर इंटर, स्नातक की पढ़ाई करने के पष्चात घर पर रहने लगे। इनके पिताजी एक किसान थे। वे राजनिती के साथ-साथ समय-समय पर खेती में भी हाथ बटाया करते थे। उस समय में परम्परागत ढ़ग से धान, गेंहूँ, तेलहन एवं दलहन की खेती किया करते थे। श्री विलट प्रसाद सिंह, जिस समय खेती में हाथ बँटाना शुरू किये उस समय धान 40 किग्रा एवं गेहूँ 25 से 30 किग्रा प्रति कट्ठा उपज हुआ करता था। यह उपज धीरे-धीरे 2005-06 तक थोड़ा बहुत बढ़ा। लागत के अनुरूप आमदनी नही हो रहा था। इसके बाद 2008 ई0 में जब किसान सलाहकार एवं अन्य कर्मियों की बहाली हुई तब कर्मियों के द्वारा प्राप्त जानकारी के पष्चात मूँग, ढ़ैचा एवं सड़ा हुआ गोबर को खाद के रूप में प्रयोग करने लगे। जिसके कारण खेतों में उपज में वृद्धि होने लगा। कृषि वानकी विषय पर गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर में प्रशिक्षण प्राप्त किये। 2012 ई0 से वैज्ञानिकों के सुझाव एवं प्रखंड कृषि पदाधिकारी के मार्गदर्षन में वैज्ञानिक ढ़ंग से खेती करना शुरू किये। प्रथम बार 2012 ई0 में श्री विधि से धान की खेती कर 1 क्वीं0 32 किग्रा एवं गेंहूँ की खेती कर 90 किग्रा प्रति कट्ठा उत्पादन किये। फिर आत्मा, मधुबनी के सहयोग से 2014 ई0 में हरियाली किसान हित समूह का गठन किये। मधुबनी जिला के अन्तर्गत समूह के माध्यम से प्रथम कृषि यांत्रिकरण बैंक का स्थापना किये। फिर भारतीय सब्जी अनुसंधान केन्द्र वाराणसी से प्रशिक्षण प्राप्त कर नये-नये तरीके से सब्जी उत्पादन करते हुए लाल, पीला, नीला फुलगोभी तथा पत्ता गोभी का उत्पादन शुरू किये। राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पुसा, समस्तीपुर से गेंहूँ बीज उत्पादन विषय पर बीज तैयार एवं रखरखाव पर प्रशिक्षण प्राप्त कर बीज तैयार करना शुरू किये। मारवाड़ी आँरगेनाईजेषन, पटना में काला गेंहूँ, काला चावल, काला हल्दी, काला चना, लाल केला, काला मिर्च, सेब, संतरा, स्ट्रॉबेरी, ड्रेगन फ्रुट की खेती कर प्रशिक्षण प्राप्त कर बीज उपलब्धता के साथ जैवीक खेती समूह के माध्यम से शुरू किया गया और समूह के सभी किसान अपनी आमदनी को बढ़ा रहे हैं। आत्मा, मधुबनी के सहयोग से खजौली कृषक प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड का निबंध करवाकर वर्तमान समय में कम्पनी के तहत 267 किसान आधुनीक ढ़ंग से नये-नये फसलों, फलों एवं सब्जी का उत्पादन कर लाभान्वित हो रहे हैं। आत्मा, मधुबनी के सहयोग से हर विषय का प्रशिक्षण प्राप्त कर फसलों के साथ-साथ मुंग, ढ़ैंचा, उड़द एवं सनई का खेती कर नये यंत्रों के द्वारा उसे खेतो में सड़ा कर नये तरीके से फसल को लगाने लगे हैं। तब से उपज क्षमता बढ़ता जा रहा है। कृषि विभाग आत्मा, मधुबनी के द्वारा जैविक ग्राम घोषित कर सभी किसानों को पाँच-पाँच यूनिट पक्का वर्मी कम्पोस्ट बेड का निर्माण करवाया गया।तब से किसान उत्पादक संगठन के किसानों के द्वारा जैविक खाद तैयार कर जैविक खेती कर रहे हैं, जिससे लागत कम एवं उत्पादन के साथ-साथ अच्छा मूल्य पर फसल बेच भी रहे हैं। आत्मा, मधुबनी के सहयोग से बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर तथा मोबाईल एग्रीकल्चर स्कुल एण्ड सवीर्सेज, राँची से प्रशिक्षण प्राप्त कर वैज्ञानिक तरीके से एक एकड़ में लाल, पीला फुलगोभी, करैला, नेनुआ, कदु, परवल, लाल भिंडी की खेती कर कम खर्च में अधिक उपज प्राप्त किये। वैज्ञानिक विधि से खेती करने में खेत में खरपतवार कम हुई, सिंचाई कम लगी तथा मजदुर का खर्च में भी कमी आयी। इस विधि से मेरे द्वारा बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर से प्राप्त मरूआ बीज से मरूआ की फसल खेतों में लगा हुआ है। बाजरा, काला हल्दी भी इस समय खेतों में लगा हुआ है। आज के समय में धान की खेती दो विधि से कर रहे हैं। अच्छे प्रभेद के लिये श्री विधि का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे कम बीज में अधिक खेती हो जाती है और उपज में भी बढ़ोतरी हुई है। 100 से 150

आत्मा, मधुबनी द्वारा 2020 ई0 में आयोजित फल,फुल,सब्जी प्रदर्षनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

2021 ई0 में कृषि विज्ञान केन्द्र सुखेत झंझारपुर में फल, फूल, सब्जी इत्यादि पर प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

आत्मा, मधुबनी द्वारा 2021 में फल, फूल, सब्जी प्रदर्शनी में प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया।

क्र0 सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र	कुल	प्रक्षेत्र	कुल
1	2	3	4	5	6
1	फसल / क्षेत्र / कार्य का नाम	1.परम्परागत विधि से धान एवं गेहूँ की खेती 2.सब्जी की खेती 3.दलहनी फसल	धान– 1.5 हेक्टेयर गेंहूँ– 1 हेक्टेयर सब्जी– 1 हेक्टेयर दलहनी फसल–0.5 हेक्टेयर	1. परम्परागत विधि से धान एवं गेहूँ की खेती 2. सब्जी की खेती 3. दलहनी फसल	धान–1.5 हेक्टेयर गेंहूँ–1 हेक्टेयर सब्जी– 1 हेक्टेयर दलहनी फसल–0.5 हेक्टेयर
2	फसल मौसम में फसल / उत्पाद की मात्रा (क्वी0 में)	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–35 क्वींटल गेंहूँ–30 क्वींटल गेहूँ का भूसा–28क्वींटल सब्जी– 15 क्वींटल दलहन– 5 क्वींटल	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–65 क्वींटल गेंहूँ–50 क्वींटल गेहूँ का भूसा–50 क्वींटल सब्जी–20 क्वींटल दलहन–8 क्वींटल
3	उत्पाद का बिक्री मूल्य दर (रु0 / क्वी0)	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–28000 / – गेंहूँ– 60000 / – गेहूँ का भूसा–12000 / – सब्जी–30000 / – दलहन–35000 / –	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–80000 / – गेंहूँ– 75000 / – गेहूँ का भूसा–35000 / – सब्जी–35000 / – दलहन–65000 / –
4	फसल मौसम में कुल लागत मूल्य	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–21000 / – गेंहूँ–50000 / – सब्जी–20000 / – दलहन–28000 / –	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–25000 / – गेंहूँ–55000 / – सब्जी–18000 / – दलहन–32000 / –
5	उपादान का मूल्य (बीज, खाद, कीटनाशी, जुताई–बुआई, सिंचाई, कटाई, दौनी एवं अन्य)	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–15000 / – गेंहूँ–40000 / – सब्जी–15000 / – दलहन–20000 / –	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–23000 / – गेंहूँ–32000 / – सब्जी–11000 / – दलहन–25000 / –
6	मजदूर खर्च (रु0 में)	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–1000 / – गेंहूँ–2000 / – सब्जी–2000 / – दलहन–2500 / –	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–1100 / – गेंहूँ–2200 / – सब्जी–2300 / – दलहन–2800 / –
7	अन्य लागत खर्च (रु0 में)				
8	कुल लागत खर्च (रु0 में)	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–21000 / – गेंहूँ–50000 / – सब्जी–15000 / – दलहन–28000 / –	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–25000 / – गेंहूँ–55000 / – सब्जी–18000 / – दलहन–32000 / –
9	शुद्ध आय / बचत (रु0 में)	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–5000 / – गेंहूँ–6000 / – सब्जी–5000 / – दलहन–6000 / –	धान गेंहूँ सब्जी दलहन	धान–6000 / – गेंहूँ–8000 / – सब्जी–9000 / – दलहन–7500 / –

किग्रा कट्ठा धान की उपज प्राप्त कर रहे हैं। साथ में अब पैडी ट्रांसप्लांटर मषीन से धान की खेती कर रहे हैं। इनके द्वारा वैज्ञानिक तकनीक से की गई सब्जी की खेती एवं काला गेहूँ, धान, काला हल्दी एवं फल इत्यादी की खेती को देखकर प्रखंड/जिला के अन्य किसान भी इस विधि से खेती करने हेतु इनसे राय विचार प्राप्त कर खेती प्रारंभ किये हैं। आज ये गेहूँ की खेती भी अच्छे तरह से कर हैं। जब से इन्होंने बीज उपचार करके बुआई, उर्वक प्रबंधन समय पर सिचाई निराई-गुराई समय से फसल सुरक्षा कर जैविक तरीके से गेहूँ का उपज आज ये 40-50 किग्रा प्रति कट्ठा दर से प्राप्त कर 120 रू प्रति किग्रा बेच रहे हैं। एवं दलहनी बीज को राईजोवियम कल्चर के द्वारा उपचार कर बुआई करते हैं। टमाटर,बेगन, आलू को एजेटोवेक्टर कल्चर से उपचार करते हैं। मसूर एवं आलू के लिए फास्को वैरायटी का उपयोग करते हैं। कीट एवं रोग के रोकथाम के लिए गोमूत्र, नीम, गाजर घास एवं वेस्डी कम्पोज से खुद का बना दवा प्रयोग करते हैं। जिससे हमें कम लागत में आमदनी अधिक प्राप्त हो रहा है।

07 केले की खेती से मिली पहचान

परिचय

नाम – **श्री संतोष कुमार सिंह**
पिता – श्री जय कुमार सिंह
पता – ग्राम– तेतरिया, पंचायत– खेसर
प्रखंड– फुल्लीडूमर, जिला– बांका
मो0– 9199273881

- लागत कम आमदनी अधिक।
- दूसरे फसलों से यह सम्भव नहीं है।
- 10 कट्ठे में 60 से 65 हजार रूपये आमदनी।
- केला की खेती की अधिक सम्भावनाएं।

बांका जिले के फुल्लीडुमर प्रखण्ड के तेतरिया गॉव के सफल किसान श्री संतोष कुमार सिंह धान, गेहूँ व दूसरी फसलों की खेती कर ऊब चके थे। हर रोज आर्थिक तंगी रहती क्योंकि खेती से जो आमदनी चाहते थे वह हासिल नहीं हो पा रही थी और खेती में लागत से परेशान, कभी अधिक वर्षा तो कभी सुखाड़ अलग समस्या थी। कृषि विभाग से सम्पर्क हुआ और खेती में कुछ नया प्रयोग करने पर चर्चा की, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंकधक से मुलाकात हुई, जिससे प्रोत्साहित होकर केला की खेती की ओर झुकाव हुआ। नौगछिया से 500 पौधे लाकर 10 कट्ठे में इन्होंने रोपाई। वैज्ञानिक विधियों को अपना कर पौधों के विकास से संतुष्ट नजर आते हैं। केले के 500 पौधे से 60 से 65 हजार रूपये आमदनी प्राप्त हो रही है जब कि 10 से 15 हजार रूपये लागत आ रही है।

संतोष कुमार सिंह का कहना है कि केला की खेती अधिक लाभदायक है। इसमें बहुत अधिक देख–रेख की आवश्यकता नहीं है और न ही अधिक लागत एवं आमदनी ही आमदनी है। जब कि 10 कट्ठे जमीन में दूसरी फसलों से इतनी आमदनी सम्भव नहीं है। आज संतोष कुमार सिंह के केले की खेती को देखकर आस–पास के दूसरे किसान भी, केला की खेती करने के लिए आतुर है। आने वाले समय में किसानों द्वारा अधिक क्षेत्रफल में केले की खेती करने की सम्भावना बन रही है जो निश्चित तौर पर यह एक सकारात्मक पहल है। किसानों की समृद्धि एवं शोहरत के लिए केला की खेती अच्छा विकल्प है।

08 आलोक कर रहे सब्जी उत्पादन

परिचय

नामः- आलोक मोर्य
पिता का नामः- स्व. कृष्णदेव सिंह
पताः- ग्रामः-कमलाबाड़ी, पो. कमलाबाड़ी
थानाः- जयनगर, प्रखंडः- जयनगर
जिला - मधुबनी (बिहार), पिनकोडः-..847226
मोबाईल संख्याः- **9264462260**
खेती योग्य भूमि (हेक्टेयर में) 4
सिंचित क्षेत्र (हेक्टेयर में) 2.8
असिंचित क्षेत्र (हेक्टेयर में) 1.2

आलोक मोर्य पुत्र स्व. कृष्णदेव सिंह ग्राम-कमलाबाड़ी निवासी एक साधारण सब्जी उत्पादक किसान थे जो लगभग 0.4 हे0 में मौसमी सब्जी का उत्पादन करते है। जिसमें विभिन्न प्रकार के कीट व्याधि का प्रकोप होता था जिस कारण बहुत ही आर्थिक नुकसान दवा छिड़काव मे हो जाता था और जिस कारण से उचित बाजार मूल्य प्राप्त नहीं होता था। पूरे वर्ष मेहनत के बावजूद भी 35000.00 से 40000.00 रुपए (पैत्तीस से चालीस हजार) प्राप्त होता था। समय से पहले सब्जी उत्पादन की जानकारी नहीं होने के कारण सब्जी उत्पादन का उचित साधन, सही तकनिकी के अभाव में लागत के अनुसार उचित लाभ प्राप्त नहीं होता था, समय से पहले सब्जी उत्पादन का जनाकारी नहीं होने के कारण उचित बाजार मूल्य मिलने से बंचित रह जाते थें। लागत का अधिक भाग कीट व्याधि नियंत्रण एवं खरपतवार नियंत्रण में लग जाता था। बीज का प्रभेद चयन, बीज उपचार एवं नर्सरी प्रबंधन कैसे करे इसकी सही जानकारी नहीं होने के कारण नर्सरी में ही 25 से

आलोक मोर्य पुत्र स्व. कृष्णदेव सिंह ग्राम-कमलाबाड़ी को आत्मा मधुबनी के द्वारा वर्ष 2016 में सब्जी अनुसंधान संस्थान वाराणसी (उ.प्र.) से सब्जी उत्पादन संबंधी प्रशिक्षण में भेजा गया जहाँ वह आवासीय प्रशिक्षण में सब्जी उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमें विभिन्न सब्जी के अनुशंधित प्रभेद, उचित समय पर बुआई, उचित बीज दर, बीज उपचार, खेत की तैयारी, पौधे से पौधे की दूरी, उचित उर्वरक प्रबन्धन, उचित समय पर समुचित सिंचाई, उचित समय पर कीट व्याधी प्रबंधन नियंत्रण एवं साथ ही सब्जी उगाने हेतु नर्सरी प्रबंधन कैसे करे उसका सही जानकारी दिया गया। उसके बाद से ही ये सब्जी उत्पादन सही ढंग से करने लगें। सबसे पहले उन्होनें 0.4 हे0 में ग्रीष्मकालीन मिर्चा की खेती अपबेड एवं मलचिंग सिस्टम से प्रारम्भ कर दिया। मलचिंग सिस्टम अपनाने के कारण खरपतवार नियंत्रण से वचाव एवं नमी संरक्षण का अच्छा उपाय साबित हुआ। ढंग से समुचित उत्पादन का तरीका अपनाने से (0.4) हे0 या एक एकड़ में 35-40 क्विन्टल उत्पादन प्राप्त हुआ जिससे 140000.00 से 160000.00 हजार तक नगद प्राप्त हुआ। जिसमें लागत मूल्य लगभग 30000.00 (तीस हजार) के बराबर है। अतः कुल लाभ लगभग 110000.00 से 130000.00 प्राप्त हुआ जो बहुत अच्छी उपलब्धि है। साथ ही अन्य सब्जी बैंगन, टमाटर एवं फूलगोभी इत्यादि भी अपबेड एवं मल्चिंग सिस्टम से उगाकर सलाना 2.5 से 3.0 लाख तक आमदनी प्राप्त कर रहे है। वत्र्तमान वर्ष 2019 में कृषि विभाग से ड्रिप इरीगेशन इन्सटाल कराकर उससे सिंचाई का तरीका अपनाकर उचित लाभ प्राप्त कर रहे है। तथा

वर्ष 2016-2017 मे कृषि विभाग से सोलर सिस्टम 90 प्रतिषत अनुदान पर प्राप्त किये, उससे उनको मुख्य लाभ हुआ कि सब्जी खेती में समय-समय पर सिंचाई करने की सुविधा प्राप्त हो गयी। वर्ष 2020-21 में उद्यान विभाग, मधुबनी द्वारा शेड-नेट लगाने का आदेष मिल गया है। शेड-नेट इन्स्टाल कर षिमला मिर्च, खीरा इत्यादि फसल करने की योजना बनायीं, उपरोक्त सभी बातों से यह साबित होता है कि आत्मा मधुबनी से जुड़ने के बाद विभिन्न संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में उनका बेहतर भविष्य बना हुआ है।

क्र0 सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण		अपनाने के बाद का विवरण	
		प्रक्षेत्र	कुल	प्रक्षेत्र	कुल
1	2	3	4	5	6
1	फसल/क्षेत्र/कार्य का नाम	सब्जी उत्पादन	0.4	सब्जी उत्पादन	1
2	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वीं0 में)	मिर्चा 10 से 15 क्वीं0	10–15	मिर्चा, बैंगन, फूलगोभी	100–150 क्वीं0
3	उत्पाद का बिक्री मूल्य दर (रु0/क्वीं0)	मिर्चा	35000 – 40000	मिर्चा, बैंगन, फूलगोभी	2.5 से 3.00 लाख
4	फसल मौसम में कुल लागत मूल्य	मिर्चा	15000– 20000	मिर्चा, बैंगन, फूलगोभी	60000.00
5	उपादान का मूल्य (बीज, खाद, कीटनाशी, जुताई–बुआई, सिंचाई, कटाई, दौनी एवं अन्य)	मिर्चा	10000.00	मिर्चा, बैंगन, फूलगोभी	48000.00
6	मजदूर खर्च (रु0 में)	मिर्चा	3000.00	मिर्चा, बैंगन, फूलगोभी	65000.00
7	अन्य लागत खर्च (रु0 में)	मिर्चा	2000.00	मिर्चा, बैंगन, फूलगोभी	3500.00
8	कुल लागत खर्च (रु0 में)	मिर्चा	15000.00	मिर्चा, बैंगन, फूलगोभी	60000.00
9	शुद्ध आय/बचत (रु0 में)	मिर्चा	20000.00	मिर्चा, बैंगन,	190000.00

09 संजू कर रही सब्जी की खेती

परिचय

किसान का नाम- **संजू देवी**
पति - अवधेश तिवारी
ग्राम- पीपरडीह पंचायत - बसडीहा पोस्ट - टण्डवा
प्रखण्ड - नबीनगर जिला - औरंगाबाद बिहार

महिला कृषक संजू देवी कहानी की शुरूआती है कि इनके पति अवधेश तिवारी धान, गेहूँ की ही खेती करते थे। जिसके चलते प्रति एकड़ खेत में उपज कम होती थी एवं उपज का मुल्य भी सही रुप से नही मिल पाता था। श्री अवधेश तिवारी नई तकनीकी की अभाव में खेती करते थे। प्रति एकड़ उत्पादन में कमी का भी कारण था। श्री तिवारी की फसल की प्रति एकड़ उत्पादकता भी काफी कम थी श्री तिवारी कही भी नई तकनीकि का प्रशिक्षण नही लिए एवं पुरानी पद्धति से खेती करते गये। यही उत्पादन के कमी का कारण था। श्री तिवारी अपने धान एवं गेहूँ के उपज का सरकारी माध्यम से नही बेचते थे इसलिए इनके उपज का सही मूल्य नही मिलता था। ये सब को देखते हुए श्रीमति संजू देवी ने खेती को अपने हाथों मे लिया एवं सब्जी के खेती के लिए अग्रसर हुई। चूकि सब्जी एक नगद फसल है एवं इसकी कीमत बाजार में तत्काल मिल जाता है। श्रीमति संजू देवी आत्मा विभाग औरंगाबाद के सब्जी के खेती के लिए प्रशिक्षण भी प्राप्त कर ली है। आत्मा विभाग द्वारा राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय पुसा एवं महाराष्ट्रा जलगाँव में सब्जी एवं फल प्रशिक्षण एवं डीप सिंचाई के अपोत --हामी प्रदर्शनी कार्यक्रम औरंगाबाद में भाग लिया। फल एवं सब्जी पर कम पानी में सिंचाई हेतू प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था। श्रीमती संजू देवी अपने सब्जी भींडी, कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा), औरंगाबाद नेनुआ, कदुआ, फल-फूल-सब्जी प्रदर्शनी कार्यक्रम अंतर्गत प्रशस्ति प्रमाण पत्र बेदी निकटतम प्रमाणित किए जाता है कि संपतिमारी भी अपधेश पारी निपीट बाजार में प्रशननगा जल औरंगामा... दिनांक 17 DAROIN A SIRSS संयुक्त को मान जगन औरंगाबाद । बेचवाती है। नदी को प्रपन पुरस्कार दिउ गया . एवं सब्जी की लंबी खेती में /2 । बहुत से बेरोजगारो को रोजगार दी है। सब्जी की खेती से इनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिती भी सुधरी एवं परिवार आगे की ओर अग्रसर है। श्रीमति संजू देवी खेती के लिए बैंक से लोन भी ली एवं ससमय बैंक को लोन भर दी।

प्रगतिशील उद्यमी के रूप में अपना नाम रौशन किया अवधेश

परिचय

नाम- **अवधेश कुमार मिश्र**
पिता का नाम- स्व. शम्भू नाथ मिश्र
पता- ग्राम-गंधवारि, पो.-गंधवारि, थाना-सकरी, प्रखंड-रहिका, जिला-मधुबनी (बिहार) पिनकोड-847234
मोबाईल संख्या- **9473147181**
खेती योग्य जमीन- 07 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हेक्टेयर में)- 07 हेक्टेयर

1. गायपालन 2. सब्जी की खेती 3. मक्का उत्पादन के साथ खाद्यान फसलों का उत्पादन 4. दक्षिणी बिहार ग्रामिण बैंक के क्षेत्रीय बैंक मित्र शाखा का सचालन 5. चाईनिज मशीन के द्वारा सिलाई आज भी जब कोई बहु ससुराल आती है तो उसका नाम मानो गुम हो जाता है पर एक मैं हूँ जहाँ मुझे मेरे नाम से जाना जाता है। यह कहानी है ओबरा प्रखण्ड के ग्राम पंचायत की एक होनहार बहु आशा कुमारी कि जिन्होने प्रगतिशील किसान के साथ एक प्रगतिशील उधमी के रूप में अपना नाम रौशन किया है। छोटी उमर में ही आशा कुमारी के पिता का वंगवास हो जाने के बाद दो भाईयो के पढाई के साथ अपनी माँ की देख भाल करते हुए आशा कुमारी का जिवन बित रहा था। अपने इस रूप में आशा कुमारी ने हार नही मानी और अपने आप को साबित किया। शादी के बाद जब आशा कुमारी जब ओबरा प्रखण्ड आई तो वह भी आम महिला कि भांति एक कुशल गृहणी के रूप में जीवन व्यतित करने लगी। ज्व उनके परिवार पर आर्थिक संकठ आया तो अपने पिछले संघर्षपूर्ण जीवन से जो भी सिखा था उसे अमल करने का यह एकदम सही समय आशा कुमारी ने समझा और फिर उन्होने अपने परिवार कि मदद करने कि ठानी। यहाँ से एक जिज्ञासु आशा कुमारी के उद्यमी आशा कुमारी बनने का सफर प्रारंभ होता है आत्मा के समुह में जुड़कर मिला बल उद्यमी बनने कि राह मे तो बडी कठनाईयो का सामना करना पड़ता है, और खास कर जब आप एक महिला हो लेकिन बिहार सरकार के द्वारा समुह का गठन आत्मा तथा जिविका जैसे योजनाओं के अर्न्तगत करवाया जाता है जिसके कारण आशा कुमारी जैसी न जाने कितनी महिलाओं को एक बेहतर जीवन जिने और अपने पैरो पर खड़ा होने कि ताकत मिलती है ऐसे ही समुह से जुड़ने के बाद उन्हें पता चला कि कितने ही प्रकार के योजनाएं भारत सरकार/ बिहार सरकार ने हम महिलाओं के लिए चला रखी है। आत्मा योजना ने दिखाई राह शैक्षिणिक भ्रमण तथा प्रशिक्षण ने खोली आँखें आत्मा योजना के तहत भ्रमण के लिए दिल्ली कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरिस, औरंगाबाद में प्रशिक्षण के लिए मौका मिला इस प्रशिक्षण-सह-परिभ्रमण कार्यक्रम में मुझे विभिन्न घरेलू और कृषि से संबंधित बिजनेस के बारे में जानकारियाँ मिली और साथ ही भ्रमण और प्रशिक्षण के विभिन्न फायदो का आभास हुआ। कृषि विज्ञान केन्द्र में प्राप्त मशरूम उत्पादन की प्रशिक्षण ने दिया बल कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरिस, औरंगाबाद से मैने एक दिवसीय मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण प्राप्त किया पर प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ ही K.V.K में मौजूद कषि वैज्ञानिकों ने हमारी हौसलो में बल भर दिया और उन्होने हमें बहुत सी ऐसी जानकारीयां दी जिसे हमें आगे और अच्छा करने का बल प्राप्त हुआ। गव्य विकास योजना का भी प्रशिक्षण प्राप्त किया पटना में आयोजित गव्य विकास योजना के प्रशिक्षण में भी भाग लिया और इस योजना का लाभ प्राप्त हुआ और आज आशा कुमारी के पास प्रति शाम 10-12 लीटर दुध देने वाली गाय एवं भैस है जिनसे प्राप्त आमदनी ने फिर से मेरे हौसलों को बल और परिवार में मेरा मान बढाया। कृषि के क्षेत्र मे भी फायदो को जाना सभी प्रकार के उद्यमों की भांती आशा कुमारी ने कृषि के क्षेत्र में तकनिकी जानकारी प्राप्त कर परिवार के जमीन से कमाई प्राप्त करने लगी। मक्का के उत्पादन से लाभ मिर्च उगाकर भी लाभ प्राप्त किया चाईनिज मशीन से भी करती है कमाई जहाँ एक ओर सभी परंपरागत तरीकों से अपने काम काज को करते आ रहे हो वहाँ आशा कुमारी ने नई तकनिक को स्थान दे अधिक मुनाफा प्राप्त किया चाहे अच्छी नश्ल के जानवरों की बात हो या सिलाई के लिए चाईना के बेहतर मशीनों के प्रयोग की बात आशा जी कभी संकोच नही करती उन्हें अपने प्रशिक्षण और भ्रमण के जरिये नई तकनिको के उपयोग से होने वाले फायदो का पुर्ण ज्ञान प्राप्त हो चुका था। कुछ अलग करने मे एक बहु को होती है बहुत परेशानी आशा कुमारी ने बातचित मे बतायाकी जब मै समुह से जुडकर कही प्रशिखण या परिभ्रमण पर जाति और 10-10 रुपए जमा कर समुह चलाने कि कोशिश करती थी तब समाज में बहुत परेशानी का सामना करन पड़ता था लोग समुह के सभी सदस्यो को 10 रूपया वाली भी कहते थे। अपने गाँव में ही किराये के मकान मे रही - जब घर के सदस्यों को आशा कुमारी के उपर भरोसा नहीं हुआ त बवह अपने काम को बेहतर करती गई इसी बीच उन्हे अपने ससुराल में ही किराये के मकान में रहने पर मजबूर होना पड़ा। अपने मेहनत और प्रशिक्षण के बल पर जिला कि पूरे पंचायत का मान जिस आशा कुमारी को लोग 10 रुपए वाली दिदी कहती थी, जिसे अपने ससुराल मे ही किराये के घर में रहना पड़ा हो, जब अपनो ने ही अपनो से दुर कर दिया तब ऐसे में अपने हौसलो और बिहार सरकार के साथ मेहनत कर प्रशिक्षण प्राप्त कर आशा कुमारी ने धिरे-धिरे प्रगती की राह पकड ली और कृषि, डेयरी, सिलाई और ई-कामर्स की और आशा कुमारी के कदमो को बढाने मे जो सहायता बिहार और केन्द्र सरकार की योजनाओ ने कि है उतना ही मदद एवं ATMA के प्रशिक्षण व परिभ्रमण से मिली और जब आशा कुमारी के घर वालो को यह एहसास हुआ की हमारी बेटी हमारी बहु हमारे लिए ही मेहनत कर रही है और अनकी लगन को देख कर आशा कुमारी के ससुर जी उन्हे घर वापस लेने आये।

10 किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बने विजय पांडेय

बिहार के पश्चिमी चंपारण के नरकटियागंज प्रखंड के बरनिहार गांव के किसान विजय कुमार पांडेय जीताजागता उदाहरण है 55 वर्षीय विजय ने खेती की शुरूआत 1977 ई. से आरंभ किया तब से लेकर आज तक खेती में ही लगे हैं। 1984 ई. में विजय पांडेय ने खेती को आधुनिक तरीके से शुरू किया। वह जिले के किसानों के बीच इनदिनों प्रेरणास्रोत बने हुए है। जिले के कई किसान इन्हीं के मार्गदर्शन पर खेती कर मुनाफा कमा रहे हैं। उन्होंने खेती से आमदनी प्राप्त कर 35 एकड़ जमीन खरीदकर खेती का विस्तार किया, खेती की शुरूआत बड़े पैमाने पर आलू से की इसमें सफलता मिलने के बाद धान, गन्ना, गेहूं के अलावा 10 एकड़ में नर्सरी का काम भी आरंभ किया है। इनके पास 60 देशी गायें हैं, इनके परिवार में दो लड़के है, एक डॉक्टर तो दूसरा इंजीनियर है। खेती के बदौलत विजय ने अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाई। विजय कहते है कि दोनों लड़के उच्च पद पर होने के बावजूद खेती में हाथ बटाते रहते हैं और हमें खेती कृषि तकनीकों के बारे में जानकारी देते रहते है।

परिचय

नाम- विजय कुमार पांडेय
पता- बेतिया
मो. 09931812116

अनुसंधानः विजय कुमार पांडेय ने कई वर्षों से आलू पर शोध कर पी-1, पी-2 की किस्मों का इजाद किया। इनके द्वारा आलू के नई किस्मों को पटना, शिमला आदि देश के कई कृषि विश्वविद्यालयों ने परिक्षण कर इन्हीं दोनों किस्मों पर कोफरी केसर का नाम देकर बाजारों में उतारा। जो कि आज देश के किसानों के बीच में काफी लोकप्रिय बना हुआ है। देश एवं जिला के किसान इन्हीं के आलू के बीज के किस्मों का इस्तेमाल कर मुनाफा कमा रहे हैं।

यहां बेचते हैं उत्पादनः विजय कहते हैं जो भी कुछ हम उपजाते हैं उसे बेचने में हमें कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ता है। उनका कहना है कि कोलकाता की एक कंपनी उचित मूल्य पर हमारे उत्पाद को हर साल खरीद कर समय पर राशि का भुगतान कर देते है। जिसकी वजह से हमें आर्थिक कठिनाईयों का सामना न के बराबर करना पड़ता है।

पुरस्कार एवं सम्मानः भारत के पर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे कलाम से भी मिलने का मौका मिला और कृषि के बारे में विचार-विमर्श करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बिहार से किसान भूषण सम्मान, पंत नगर कृषि विश्वविद्यालय से पर्यावरणीय सुरक्षा में सम्मान, कोलकाता में किसान रत्न पुरस्कार बिहार में आलू अनुसंधान केंद्र से सर्वश्रेष्ठ किसान का सम्मान मिला एवं 2019 में राष्ट्रीय आलू दिवस पर आलू गौरव का सम्मान मिला है।

सरकार से मिला सहयोगः केंद्र एवं राज्य सरकार की ओर से कृषि योजनाओं का लाभ समय-समय पर मिलता रहा जैसे पौली हाउस, ग्रीन हाउस, डीप सिंचाई के अभाव से सौर उर्जा चालित उपकरण भी मिला, विजय कहते हैं कि खेती घाटे का सौदा नहीं हो सकता यदि सरकार प्रोसेसिंग मार्केटिंग एवं प्रचार-प्रसार का विस्तार किसानों तक करें तो बेहतर होगा, विजय का कहना है यदि किसान नई तकनीकों के द्वारा एवं सूझ-बूझ के साथ खेती करें तो वह आर्थिक रूप से मजबूत होंगे।

11 आलू एवं बीज उत्पादन कर ललितेश्वर बने व्यवसायी

आलू, गोभी एवं प्याज के बीज को लगाकर जिले भर के किसान कमा रहे हैं अधिक मुनाफा

परिचय

ललितेश्वर प्रसाद सिंह
गांव–वैशाली, बिहार
9835436001

देश में किसान जहां कर्ज माफी को लेकर आंदोलन कर रहे हैं, उन्हें में से कुछ किसान ऐसे हैं जो बिना कर्ज एवं सरकारी योजना का लाभ के लिए खेती कर लाखों की आमदनी प्राप्त कर बेहतर जीवन यापन कर रहे हैं। साथ ही जिले के सैकड़ों किसानों को खेती के गुर बताकर अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। बिहार के वैशाली जिला के महुआ प्रखंड के छतवार कपूर गांव के एक ऐसे ही किसान ललितेश्वर प्रसाद सिंह हैं ललितेश्वर का कहना है कि, मेरे पिताजी खेती किया करते थे और मैं खेती को प्रसंद नहीं करता था। वजह यह थी कि खेती में मेहनत अधिक और मुनाफा कम होता था। इसे देखते हुए मैंने हार्डवेयर और ट्रांसपोटिंग लाईन के कारोबार को अपनाया लेकिन उस काम में मुनाफा तो होता था परन्तु कार्य का सम्मान नहीं मिलता था। पुनः मैं इस कार्य को छोड़कर तीन साल बाद मैंने नए वैज्ञानिक पद्धति एवं तकनीकी तरीके से खेती करने लगा।'

आलू के बीज की खासियत यह है कि सबसे अधिक उत्पादन होता है और एक हेक्टेयर में 400 क्विंटल उपज देता है। इसे झुलसा रोग से लड़ने की क्षमता अधिक होती है। वहीं प्याज के बीज की बात करें तो यह सड़ता कम है तथा आठ महीने तक घर में भंडारण किया जा सकता है। 'ललितेश्वर का कहना है कि हाईब्रिड प्याज की बीज डेढ़ महीने तक रूक पाता हैं इससे सलाना लगभग पांच लाख की आय प्राप्त होती है।

इस पद्धति से खेती करने पर खर्च एवं समय कम और मुनाफ अधिक होने लगा। ललितेश्वर का कहना है कि बेहतर खेती क लिए शिक्षित होना बहुत ही जरूरी है। मैंने स्नातकोतर तक ही पढ़ाई की जिसका लाभ मुझे खेती में मिल रहा है। मेरे पास तीन एकड़ अपनी जमीन है। बाकी दस एकड़ जमीन लीज पर ले कर आलू और प्याज के बीज की खेती कर रहा हूं। मेरे बीज की मांग बिहार के कई जिलों के अलावा नेपाल, झारखण्ड व यूपी तक के किसानों तक है। मेरा यह बीज, बिहार राज्य बीज प्रमाणन एजेंसी पटना द्वारा प्रमाणित है। आलू के बीज की खासियत यह है कि सबसे अधिक उत्पादन होता है और एक हेक्टेयर में 400 क्विंटल उपज देता है। इसे झुलसा रोग से लड़ने की क्षमता अधिक होती है। वहीं प्याज के बीज की बात करें तो यह सड़ता कम है तथा आठ महीने तक घर में भंडारण किया जा सकता है। 'ललितेश्वर का कहना है कि हाईब्रिड प्याज की बीज डेढ़ महीने तक रूक पाता हैं इससे सलाना लगभग पांच लाख की आय प्राप्त होती है। ललितेश्वर कहते हैं कि इन बीजों के लिए बाजार जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है बल्कि घर पर व्यापारी आकर उचित मूल्य देकर ले जाते हैं। आलू, गोभी एवं प्याज के बीज को वो ब्रांड के रूप में बाजारों में जल्दी उतारेंगे। इसके लिए वो सीड्स क्लब बनाने की तैयारी में लगे हुए हैं जो सिर्फ किसानों से बना होगा।

ललितेश्वर, आलू बीज के अलावा लीची बेचकर अच्छी आय प्राप्त करते हैं। उनका कहना है कि मशह.ूर शाही लीची मेरे यहां हर साल होती है। ललितेश्वर कहते हैं कि खेती में बड़े भाई ललन एवं भतीजा सुबोध समय–समय हाथ बंटाते रहते हैं। यही वजह है कि उन्हें खेती में जिला राज्य स्तरीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मान एवं पुरस्कार मिला है।

12 धान की करते हैं तकनीकी खेती सर्वजीत

परिचय

किसान का नाम :- सर्वजीत मिश्र
पिता/पति का नाम :- स्व0 केदारनाथ मिश्र
पूरा पताः गॉव/मुहल्ला/धनंजयपुर, पो., नगवॉ,थानाः सिमरी प्रखण्डः सिमरी
जिलाः बक्सर (बिहार)
मोबाइल सं0 : 9934094825
खेती योग्य भूमि(हे0में): 6
सिंचित क्षेत्र (हे0में): 4
असिंचित क्षेत्र (हे0में): 2
किसान का प्रकार : कृषक हितार्थ समूह

नाम सर्वजीत मिश्र पिता स्व0 केदारनाथ मिश्र ग्राम:- धनंजयपुर ,पो0 -नगवॉ, थाना-सिमरी प्रखण्ड सिमरी, पंचायत-पड़री, जिला- बक्सर का मूल निवासी हैं। मेरी शिक्षा इन्टर तक है। मैं एक साधारण परिवार से हूँ मेरा पास कुल 06 हेक्टर कृषि योग्य जमीन है। जिस पर मैं परंपरागत तरीके से धान, गेहूँ, चना, मटर इत्यादि की खेती करता हूँ लेकिन इसमें लागत खर्च अधिक होता है और उत्पादन संतोषजनक नहीं होता है। मैं सिमरी प्रखण्ड के कृषि कार्यालय में अजय कुमार सिंह, प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक से सम्पर्क में आया और उन्होने मुझे धान में श्रीविधि तरीके से खेती करने का सुझाव दिये और मेरे खेत में किसान पाठशाला भी संचालित किये। जिससे सभी उपस्थित किसानों ने श्रीविधि तरीके से धान की खेती करने का जानकारी प्राप्त हुआ। और 01 हेक्टेयर में हमने श्रीविधि धान का प्रत्यक्षण लगाया। धान की खेती में बीज शोधन, नर्सरी तैयार कर 12 दिन के बाद निश्चित दूरी पर धान की रोपाई किया। इसका देखभाल करते हुये 01 हेक्टेयर में 70 क्विंटल धान प्राप्त हुआ। जबकि मेरे द्वारा लागत एवं कुल खर्च 15000 रूपये हुआ। जितना उत्पादन हुआ उसको मैने 1685 रुपए की दर से बेचा जिसमें मुझे कुल 117950 (एक लाभ सतरह हजार नौ सौ पचास) रूपया प्राप्त हुआ। इसमें लागत खर्च घटाने के बाद मुझे 102950 (एक लाभ दो हजार नौ सौ पचास) रूप्ये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। जो की मेरी परंपरागत खेती से तुलना में काफी लामकारी हुआ। मैं इस तरह से श्रीविधि धान की खेती से काफी उत्साहित हूँ और मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। अब मैं हमेशा हि श्रीविधि तकनीक से ही धान की खेती करूगाँ और मैं प्रखण्ड कृषि कार्यालय, सिमरी एवं कृषि विभाग तथा आत्मा के द्वारा प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण तथा प्रत्यक्ष योजनाओं को अच्छी तरह से करना चाहुगाँ और मैं कृषि विभाग एवं आत्मा ,बक्सर को अभार प्रकट करता हूँ साथ ही मेरे द्वारा आत्मा के द्वारा निबंधित कृषक हितार्थ समूह भी संचालित करता हूँ जिसका मैं अध्यक्ष हूँ। कृषक हितार्थ समूह मेरे देखरेख में संतोषजनक संचालित हो रहा है।

फलों एवं फसलों के उत्पादन कर रहे घनश्याम

परिचय

नामः-घनश्याम नारायण पाठक
पिता का नामः-श्री लक्ष्मी नारायण पाठक
पताः-ग्राम-नंदनडेरा, पोस्ट-नंदन, थाना-डुमरॉव ,प्रखण्ड- डुमरॉव, जिला- बक्सर (बिहार)
मोबाइल संख्याः-8709716993
खेती योग्य भूमि ; एकड़द्ध मे :- 08 हे0.
सिंचित क्षेत्र (एकड में):-08 हे0.
असिंचित क्षेत्र (एकड में):-00.
किसान का प्रकार-व्यक्तिगत

मैं घनश्याम नारायण पाठक पिता श्री लक्ष्मी नारायण पाठक ग्राम नंदन पंचायत-नंदन, पोस्ट-नंदन, थाना-डुमरॉव, जिला-बक्सर का निवासी हूँ।मैंने बी.ए. प्रतिष्ठा एवं विधि स्नातक की शिक्षा ली है।मेरे पास कृषिकार्य योग्य भूमि 08 हे0 जिसमें विभिन्न प्रकार की फसले धान, गेहूँ, ईख, चना, मसूर, सरसों, टमाटर इतयादि का खेती परम्परागत तरीके से करता हूँ। पर संतोषजनक लाभ नहीं मिल पाया।मेरे पास कुछ परम्परा गत तरीके का बगीचा भी था पर उसमें उतना फल नहीं आता था।
अतः मैंने प्रखण्ड कृषि कार्यालय, डुमरॉव तथा उद्यान विभा, बक्सर के सहयोग सेसन् 2011 में 400 पेड़ आम तथा 111 पेड़ अमरूद का लगाया गया। इसमें पूरा जैविक खाद (वर्मी कम्पोस्ट) का उपयोग किया गया। 02 साल बाद सन् 2013 से इस बगीचे से फल निकलना शुरू हुआ लागत खर्च में 02 वर्ष में लगभग 10,000 रू0 आया जिसमें खाद, कटाई, गुड़ाई, पानी इत्यादि शामिल है।

मेरा पूरा बगीचा 03 हे0 में फेला है जिसमें इस समय (वर्ष 2020-21) में तकरीबन 1100 पेड़ है। जिसमें 400 पेड़ आम (वेरायटी-दुधिया लंगड़ा, बम्बई फाजुली, आम्रपाली, सुकुल, चैसा, दशहरी) 700 पेड़ अमरूद (वेरायटी-इलाहाबादी, लखनउ-49), 10 पेड़ कटहल, 20 पेड़ ऑवला शामिल हैं। अगर कुल लागत की बात करें तो तकरीबन 02 लाख रूपये लगया जिसमें 1 लाख 40 हजार कटीले तारों से बाउन्ड्री कराने में, 40 हजार पम्पसेट, खुला बोरिंग करने में और 10,000 रूपये अन्य लागत में खर्च हुआ।
इसआम के बगीचे से हर साल लगभग 1,50,000- 1,60,000 रूपये तक आमदनी होती हैं। यह शुद्ध लाभ हैं मैं इस बगीचे से काफी उत्साहित हूँ तथा औरों को करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। मुझे वर्ष 2013 में लौकी प्रदर्शन पर आत्मा, बक्सर द्वारा जिलास्तरीय प्रदर्शनी प्रशस्ति पत्र भी दिया गया इसके अलावे वर्ष 2015 में अमरूद पर भी जिलास्तरीय प्रदर्शनी प्रशस्ति पत्र तथा वर्ष 2018 में जल-जीवन हरियाली मिशन में भी प्रशस्ति पत्र मिला। मैं इस कार्यहेतु प्रखण्ड कृषि कार्यालय, डुमरॉव, उद्यान विभाग, बक्सर तथा अत्मा बक्सर के समस्त कर्मियों का धन्यवाद देना चाहता हूँ कि समय-समय पर आकर मेरा मार्गदर्शन करते रहे तथा भविष्य में आत्मा, बक्सर के द्वारा संचालित सभी नवीनतम तकनीकि पर आधारित परिभ्रमण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेता रहूँगा जिससे इसको और बेहतर कर सकूँ।

13 पॉलीहाउस में दीप्ति कर रही फूल की खेती

परिचय

किसान का नाम **दीप्ति लेखा राय**
पता डी/ओ- कमलेश्वर कुमार
ग्राम पांडुइ, पोस्ट पांडुई
जिला जहानाबाद, बिहार
संपर्क विवरण 7004964993

फार्म का विवरण (आकार, स्थान, पानी की उपलब्धता आदि) पॉलीहाउस में जरबेरा फूल की खेती आकार- 1000 वर्ग मीटर, ग्राम- पांडुई, जहानाबाद, ड्रिप सिंचाई प्रणाली, स्वयं सहायता समूह के निमार्ताओं में सदस्यता सहकारी/कंपनी, सहकारी समिति आदि (विवरण दें) तृप्ति महिला मंडल समूह, ग्राम- पांडुई, जहानाबाद आत्मा, जहानाबाद द्वारा पंजीकृत, किसानों द्वारा उपयोग की जाने वाली केंद्रीय क्षेत्र / राज्य योजना का नाम और अवधि राज्य योजना- मुख्यमंत्री बागवानी मिशन (सीएमएचएम) वित्तीय वर्षः 2017-18 और 2018-19 प्रौद्योगिकियां/ अच्छी कृषि पद्धतियां/ सुविधाएं/ लाभ अच्छी कृषि पद्धतियां- ड्रिप सिंचाई प्रणाली के साथ पॉली हाउस में जरबेरा फूल की संरक्षित खेती और महिला सशक्तिकरण में भी। कृषि (बागवानी) की बुनियादी और मौलिक प्रथाएं। स्व-स्थापना और सुधार प्रौद्योगिकियों के अनुकूलन के कारण प्राप्त परिणाम का विवरण (मौसम के अनुसार उगाई गई फसलें, अपनाई गई तकनीक, प्राप्त परिणाम आदि) पॉलीहाउस संरचना में जरबेरा फूल की खेती में पॉलीहाउस की कुल लागत- रु. 945000/-
प्रति संयंत्र लागत- रु. 45/-
कुल संयंत्र- 6000
कुल संयंत्र लागत- रु. 27000/-
बिस्तर तैयार करने की लागत- रु. 10000/-
प्रति वर्ष लाभ- 650000/-
पांडुई, प्रखंड+जिला- जहानाबाद (बिहार)

उन्होंने 2007 में पश्चिमी चंपारण में शादी की थी। वहां उसने देखा कि खेती नई तकनीक से की जा रही है जो बहुत ही स्वीकार्य थी। तभी से खेती के प्रति रुचि जगी है। लेकिन समय और पारिवारिक जिम्मेदारी के अभाव में वह कुछ नहीं कर पाई। लेकिन कुछ न कुछ करने की ललक हमेशा रहती थी। तभी उन्हें खेती करने की इच्छा हुई, जिसमें उन्हें केवल फूलों की खेती करनी थी। फिर उन्होंने काफी शोध किया और पता चला कि पॉलीहाउस में फूलों की खेती की जा सकती है और आज तक पूरे बिहार में इस तरह की खेती कोई महिला नहीं करती थी। कुछ अलग करने की तमन्ना थी, उसने बस इतना तय किया कि उसे पॉलीहाउस में फूलों की खेती करनी है। तब उसे एक परिचित से सरकारी अनुदान के बारे में पता चला। वह पटना हॉर्टिकल्चर मिशन में गई और सब कुछ पता लगाना शुरू किया। सबसे बड़ी समस्या उसके पास जमीन नहीं थी, क्योंकि वह पटना में रहती है और जमीन उसके ससुराल में थी, जो पटना से बहुत दूर था। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करें। फिर उसने अपने पिता से बात की और मायके में जमीन पट्टे पर लेने और पॉलीहाउस स्थापित करने का फैसला किया। शुरूआत में कई मुश्किलें आईं, न तो उन्हें खेती का कोई ज्ञान था और न ही उन्हें अनुभव था। फिर उसने धीरे-धीरे सब कुछ सीखना शुरू कर दिया और पांडुई में अपने पिता से जमीन ले ली और आत्मा से संपर्क किया,जहानाबाद और एक महिला समूह का गठन किया और एटीएमए के साथ पंजीकृत किया और जाना कि कृषि विभाग, जहानाबाद में क्या तकनीक उपलब्ध है और पॉलीहाउस में पॉलीहाउस और जरबेरा फूल की खेती के लिए उसे सब्सिडी कहां से मिल सकती है। पांडुई में, उसने 1000 वर्ग मीटर का पॉलीहाउस स्थापित किया क्योंकि उसे पहले अनुभव प्राप्त करना था और सीखना था कि इसे कैसे करना है। उसके माता-पिता ने इस काम में बहुत मदद की। उन्होंने 2018 में एक पॉलीहाउस लगाया और आज वह इस क्षेत्र में 4 साल से काम कर रही हैं। फिर उसने हैप्पीयोलस की खेती भी की, जो खुले मैदानों में उगाई जाती है। शुरूआत में फूल बेचना बहुत मुश्किल था।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहां बेचा जाए। फिर वह पटना हनुमान मंदिर के पास फूल बाजार में जाकर खुद फूल बेचने लगी। जहां उसने पाया कि यह अजीब है कि एक महिला खुद फूल बेचने के लिए बाजार में आई थी, लोगों को भी अजीब लगा लेकिन फिर सभी ने मदद करना भी शुरू कर दिया। फिर क्या था पुलों का सिलसिला शुरू। जहानाबाद, पटना, गया, औरंगाबाद। उसने महसूस किया कि फूल बेचना उसके लिए कोई बड़ी समस्या नहीं है। तब साहस और जोश दोनों थे। फिर 2020 में पटना के पास चिरोरा गांव में दोबारा पॉलीहाउस लीज पर काम शुरू किया. आज के समय में उनके पास 8 पॉलीहाउस हैं जिनमें वह गुलाब, जरबेरा, शिमला मिर्च की खेती करती हैं। बाजार भी अब आसानी से उपलब्ध हैं। इन सब कामों को करते हुए उन्हें सबसे बड़ी खुशी इस बात की मिलती है कि वह गांव की कई महिलाओं को काम दे रही हैं। सभी महिलाएं भी बहुत खुश हैं, उन्हें काम के लिए बाहर जाने की जरूरत नहीं है। जहानाबाद के डीएम डॉ. आलोक रंजन घोष जब उनके पॉलीहाउस पहुंचे तो उन्होंने उनके बरी होने की सराहना की. उन्हें जहानाबाद के प्रभात खबर अखबार से अपराजिता पुरस्कार भी मिल चुका है।

14 शकुन्तला कर रहीं उद्यानिक फसलों की खेती

परिचय

किसान का नाम :- **शकुन्तला देवी**
पिता/पति का नाम :- सुरेश मंडल
पुरा पता :-ग्राम- फतेहपुर, पंचायत - जामुखरैया, थाना-प्रखंड- झाझा, जिला-जमई।
मोबाईल न0 :- 9162887998
खेती योग्य भूमि :- 1.25 एकड़
किसानकाप्रकार :- सिमान्त

श्रीमती शकुन्तला देवी , पति- सुरेश मंडल, ग्राम- फतेहपुर, पंचायत- जामुखरैया प्रखंड झाझा का निवासी है। इनके परिवार में माता पिता एंव इनके दो संतान है। ये अपने बच्चों को पढाती है। परिवार की सारी जिम्मेवारी इस पर निर्भर थी। ये मजदुरी करके अपने परिवार का भरन पोसन करती है चुकि ये एक सिमांत किसान है। खेती से सालभर का गुजारा नही हो पाता था। अपने परिवार की खुशहाली के लिए बहुत चिंतित रहती थी। खेती से ये सिर्फ साल में 2 बार फसल बेचकर ही मुनाफा कमाते थी। पंचायत जामुखरैया में आत्मा पदाधिकारियों द्वारा आम सभा का आयोजन किया गया था इस कार्यक्रम में शकुन्तला देवी भी उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन प्रखंड तकनीकी प्रबंधक श्री पुष्पेन्द्र नाथ एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक द्वारा किया गया था इस कार्यक्रम में उद्यान, कृषि एवं वानीकी प्रणाली, कृषकहित समुह एवं कृषि से संबंधित योजनाओं से अवगत कराया गया । इसी का लाभ उठाकर इन्होने एक समुह का निर्माण किया। जिसका नाम मां शरदा स्वंय सहायता समूह रखा एंव उन्नत खेती भी की एवं आय में भी वृद्वि प्राप्त किया।

श्रीमति शकुन्तला देवी जब आत्माकर्मियों के सर्म्पक में आई तो उसको खेती के प्रति रूचि में अधिकता आ गयी एवं उन्होने आस-पास के किसानों से विचार विर्मश किया और सभी कृषक बन्धुओं ने आत्मा कर्मियों से मिलकर आम सभा का सफल आयोजन किया गया। जिसमें प्रखंड तकनीकी प्रबंधक श्री पुष्पेन्द्र नाथ एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक मो0 सरताज एवं साकेत उपस्थित थें। आम सभा में कृषक बंधुओं ने यह निर्णय लिया कि आत्मा द्वारा एक समूह का निर्माण करेगें एवं कृषि संबंधित नयी नयी तकनीकों जो आत्मा पदाधिकारियों, द्वारा दी जाएँगी उसका लाभ लेगें और आधुनिक खेती करेगें। इसके फलस्वरूप कृषक बन्धुओ नें एक समूह का निर्माण आत्मा द्वारा किया और इस समूह का नाम मॉ शरदा स्वंय सहायता समूह रखा। श्रीमति शकुन्तला देवी ने अपने 1.25 एकड जमीन पे इन्होने उद्यानकृषि एवं वानिकी पर खेती की। इन्होंने उद्यानकृषि एवं वानीकी के लिए विभिन्न कृषि घटकों का इस्तेमाल किया जिसमें धान फसलें (रबी/खरीफ), बागवानी फसलें चारा उत्पादन, सागवान कि खेती के लिए किया । 50 प्रतिशत भुमि (0.6 एकड) के लिए इन्होने धान्य फसलों के लिए रखा। 20 प्रतिशत हिस्से में इन्होने बागवानी फसलें ली। इसमें इन्होने भिंडी, वीन्स, मकई, बैंगन पपीता एवं कदूवर्गीय सब्जी की खेती की इन्होने 5 प्रतिशत हिस्से मे चारा फसल उत्पादन किया जिसमें इन्होने मक्का, नेपियर घास को शामिल किया। शेष भूमि पर इन्होने बकरी पालन, गौपालन, एवं मशरूम उत्पादन किया। शकुन्तला देवी कहती है। कि जब से हम ने उद्यानकृषि एवं वानिकी अपनायी है। तब से हमारें आय में वृद्धि हुई। इससे पहले हमें सिर्फ रवि फसल एवं खरीफ फसल के बिकने पर ही पैसे मिलते थें। लेकिन अब हमें सालोभर आमदनी होती है। उद्यानकृषि एवं वानिकी पद्धति अपनाने सें आस पास के किसान भी इसे देखकर इसका लाभ उठा रहें है। शकुन्तला देवी बताती है। कि ये अपना उत्पादन झाझा बाजार में बेचते है एवं मुनाफा कमाते है। वे अपनी जीवन में पहले से ज्यादा खुशहाल है।

15 मंती ने समेकित कृषि को अपनाया

परिचय

नाम एंव पता –**श्रीमती मंती देवी**
पति-श्री सुरेन्द्र कुमार बिन्द,
ग्राम-मोहनपुर, पंचायत-मटिया,
प्रखंड-लक्ष्मीपुर,
जिला- जमुई(बिहार)
मो न0 - 9973963780

श्रीमती मंती देवी, एंक साधारण परिवार से संबंध रखती है इन्होने अपनी पढाई अष्ठम तक गाव के विद्यालय से पूरी की है। इसके आगे की पढ़ाई के लिए माता पिता आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण आगे की पठाई नहीं करा सके तथा कुछ दिनों के बाद इनकी शादी सुरेन्द्र कुमार बिन्द, ग्राम-मोहनपुर, पंचायत-मटिया, प्रखंड-लक्ष्मीपुर, जिला- जमुई(बिहार) के साथ कर दी गई इनके पति भी साधारण परिवार से संबंध रखते है इनके पास मात्र 2 एकड़ जमीन थी एंव उस पर भी पारम्परिक विधि से केवल धान गेहूं फसल का उत्पादन होता था धीरे-धीरे समय के साथ परिवार बढ़ता गया एंव दो लड़की की एंव एक लड़का है जिससे उनकी जरूरते भी बढ़ता गया लेकिन आमदनी सीमित रहने के कारण आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा था संसाधण-खेती योग्य भूमि 2 एकड़, कुआं, गाय, बकरी, कृषि से संबंधित आधुनीक यंत्र आत्मा जमुई, कृषि विभाग,आत्मा से जुडकर समूह के माध्यम से मैं देश के कई राज्यों एवं जिलों का परिभ्रमण एंव प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिससें नई-नई तकनीक की जानकारी प्राप्त हुई। जिसके उपरान्त मैने समेकित कृषि खेती करना शुरू किया और मुझे आत्मा द्वारा भिन्न-भिन्न प्रजाति के बीज भी प्राप्त हुई, और मैंने वैज्ञानिक तरीके से समेकित कृषि खेती 2 एकड़ में करने लगे, प्रौद्योगिकी और नवाचार- इनके द्वारा समेकित कृषि प्रणाली को अपनाया गया जिसमें फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, फल उत्पादन, बकरी पालन, गौ पालन, इत्यादि को एक साथ किया जा रहा है

उपलब्धि एंव परिणाम : नई - नई तकनीकी की जानकारी प्राप्त हुई। जिससे मैं समेकित कृषि मेरी आमदनी बढी जिससे आज मैं अपने पूरे परिवार का अच्छी तरह से भरण पोषण कर लेती हुं साथ ही अपने बच्चों को अच्छे विद्यालय में पढ़ाई करा रही हुं ताकि मेरे बच्चों को अच्छी शिक्षा एंव संस्कार मिले साथ ही भविष्य के लिए कुछ पैसे बचत भी कर रही हुं और मैं खुशहाल जीवन यापन कर रही हूं। उद्यम कि सफलता के लिए योगदान देने वाले कारक-कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा), जमुई, कृषि विभाग, परिवारीक सर्मथण, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक, सहायक तकनीकी प्रबंधक, के द्वारा तकनीकी सहयोग ससमय मिलता रहा।

हमें आत्मा, जमुई के द्वारा जिलास्तरीय प्रदर्शणी पुरस्कार दिया गया। अन्य किसान के लिए महत्व- ये अन्य किसानों के लिए कृषि के क्षेत्र में प्रेरणा के श्रोत के रूप में उभरी है इन्हे देख कर आस-पास के अन्य किसानो में भी जागरूकता आ रही है। सफलता की संक्षिप्त झलकिंयां-आज मेरी आमदनी बढ़ी जिससे आज मै अपने पूरे परिवार का अच्छी तरह से भरणपोषण कर लेती हुं साथ ही अपने बच्चों को अच्छे विद्याालय में पठाई करा रही हुं ताकि मेरे बच्चो को अच्छी शिक्षा एंव संस्कार मिले साथ ही भविष्य के लिए कुध पैसे बचत भी कर रही हुं और मै एंक खुशहाल जिन्दगीजी रही हुं

16 पपीता की खेती से बनाया पहचान

परिचय

नाम - **श्री सुरेन्द्र कुमार बिन्द,**
पति-श्री मेछोबिन्द,
ग्राम-मोहनपुर, पंचायत-मटिया,
प्रखंड-लक्ष्मीपुर, जिला-जमुई

श्री सुरेन्द्र कुमार बिन्द, पति-श्री मेछोबिन्द, ग्राम-मोहनपुर, पंचायत-मटिया, प्रखंड-लक्ष्मीपुर, जिला-जमुई की निवासी हुँ।मेरा उम्र 31 वर्ष है। मैं इन्टर तक पढाई की पढ़ाई के दौरान मैने गई कम्पीटीसन परिक्षा दिया पर सफलता नही मिली, फिर मैने सोचा क्यों नही खेती में हाथ अजमाया जाए। मेरे पिताजी के द्वारा परम्पर गत तरीके से खेती किया जा रहा था, जिससे कम आमदनी होता था, जिससे मेरे परिवार का आर्थिक स्थिति खराब होते जा रहा था।कुछ वर्ष पूर्व मेरे गाँव में कृषि चैपाल लगाया गया था, जिसमें आत्मा से कुछ पदाधिकारी एवं कर्मीआया हुए थे, मैं उन लोगों के माध्यम से एक मोहनपुर कृष्क स्वंय सहायता समूह का गठन किया।आत्मा के माध्यम से मैं देश के कई राज्यों एवं जिलों का परिभ्रमण किया, जिसमें नई-नई तकनीक की जानकारी प्राप्त हुई। जिसके उपरान्त मैने पपीता की खेती करना शुरू किया और मुझे आत्मा द्वारा भिन्न-भिन्न प्रजाति के पपीता के बीज प्राप्त हुई, और मैने वैज्ञानिक तरीके से पपीता की खेती 0.25 एकड़ में करने लगे है, जिससे मुझे हर साल 100000-1500000 आमदनी हो रही हैं। अब मैने वैज्ञानिक तरीके से पपीता की खेती की खेती करने लगा तथा ससमय प्रखंड तक्नीकी प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक अक्सर हमारे बीच आते रहते है जिससे मैं नई-नई तकनीक की परामर्श लेते रहता हुँ।कभी-कभी मैं किसान कॉल सेंटर नं0 18001801551 से भी तकनीकी जानकारी प्राप्त किया करता हुँ। मेरे द्वारा उत्पादित पपीता जमुई सब्जी मंडी में बेचता हुँ तथा कुछ लोकल स्तर पर बाजार में बेचा करता हुँ।आज में खुश हुँ क्योकि प्रतिवर्ष100000-1500000 लाख का शुद्व आय कमा लेता हुँ।

रमेश बड़े पैमाने पर कर रहे सब्जी का उत्पादन

परिचय

नाम -श्री रमेश कुमार
पति-श्री महादेव मंडल,
ग्राम-कर्णपुर, पंचायत-मडैया,
प्रखंड-लक्ष्मीपुर, जिला-जमुई

श्री रमेश कुमार, पति-श्री महादेव मंडल, ग्राम-कर्णपुर, पंचायत-मडैया, प्रखंड-लक्ष्मीपुर, जिला-जमुई की निवासी हुँ। मेरा उम्र 35 वर्ष है। मैं मैट्रिक तक पढ़ाई किया हुँ। मैने बहुत सारी सरकारी नौकरी में आवेदन दिया लेकिन मुझे असफलता और निराशा ही मिला, तब मुझे लगा क्यों ना खेती मे हाथ बटाया जाय। तब मैने आत्मा से जुडा तथा समुह का निर्माण हेत् प्रखंड तकनीकी प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक बरहट, जमुई द्वारा जानकारी प्राप्त किया।उसके बाद मेरे द्वारा एक हरिओम स्वंय सहायता समुह का निर्माण किया गया, तथा आत्मा द्वारा परिभ्रमण एवं प्रषिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।जिसमें नई-नई तकनीक की जानकारी प्राप्त हुई। वि×ीय वर्ष 2019-2020 में आत्मा जमुई द्वारा मेरे यहाँ किसान पाठषाला का आयोजन किया गया। जिसमे विभिन्न प्रजाति के सब्जी के बीज जैसे-ब्रोक्ली, शिमलामीर्च, लाल पत्तागोभी, चेरी टमाटर, लालमुली, चाईनीज पत्तागोभी आदि का बीज उपलब्ध कराया गया।तथा ससमय सहायक तकनीकी प्रबंधक अक्सर हमारे बीच आते रहते है जिसमें मैं नई-नई तकनीक की परामर्ष लेते रहता हुँ। कभी-कभी मैं किसान कॉलसेंटर न0 18001801551 से मै तकनीकी जानकारी प्राप्त किया करता हुँ । मेरे द्वारा उत्पादित सब्जी को जमुई सब्जी मंडी में बेचता हुँ। तथा ल ो कल स्तर पर बाजार में भी बेचा करता हुँ। आज में अपनी खेती से लगभग 1.25-1.50 लाख प्रतिवर्ष शुद्व आय कमा रहा हुँ। जिससे मै अपने बच्चों का अच्छी शिक्षा दिलाने में शक्ष्म हुँ। अपने एंव अपने परिवार के साथ आज एक खुषहाल जीवन वयतीत बिता रहा हुँ।

17 फलों की खेती को बनाया रोजगार

परिचय

कृषक का नामः- हेमन्त कुमार
पिता/पति का नामः- राजेन्द्र सिंह
पताः- ग्रामः- बम्बर, पो0ः- टेटिया बम्बर
पंचायतः- टेटिया, प्रखंडः- टेटिया बम्बर
जिलाः- मुंगेर,
मो0 नं0ः- 9801771905

पपीता एक ऐसा फल है जो किसान कम लागत मे आसानी से उत्पादन कर सकता है । इसके उत्पादन से किसानो के जिन्दगी मे बड़े स्तर पर बदलाव आ रहा है। जिले के टेटिया बम्बर प्रखण्ड के टेटिया पंचायत के बम्बर ग्राम के रहने वाले हेमन्त कुमार बागवानी खेती के उदाहरण है । बागवानी मे इनकी सफलता की चर्चा का विषय बनने के साथ ही क्षेत्रवासियों को प्रोत्साहित भी कर रहे है । हेमन्त कुमार उद्यान विभाग के सहायोग से परम्परागत खेती से इतर वृहत क्षेत्र मे पपीते एवं अन्य बागवानी फसले की खेती शुरू की है। प्रयोगधर्मी एवं प्रगतिशील कृषक के रूप मे हेमन्त कुमार की छवि कृषकों को प्रोत्साहित कर रही है। उन्होने बताया कि पहले हम परम्परागत रूप से कृषि कार्य कर रहे थे लेकिन मन कुछ बदलाव लाकर आज कई तरह के बागवानी फसल जैसे - पपीता, आम, इत्यादि उगा रहे है। कृषि मे नवाचार तथा तकनिकी ज्ञान के अभाव मे उत्पादन इतना कम था कि परिवार चलाना मुश्किल था लेकिन आज बागवानी फसल हमारे फार्म पर ही अच्छे मूल्य मे बिक जाता है इसमे हमारे परिवार का भी पूरा योगदान है। बागवानी फसलों की जानकारी उद्यान विभाग से जरूरी सहयोग एवं आत्मा के माध्यम से प्रशिक्षण मिलते ही हमने यह कार्य शुरू किया। हेमन्त कुमार ने कहा कि बागवानी फसलों से जुड़े खेती मे असीम सम्भावनाये है। कृषकों को उद्यानिक फसल की खेती को अपनाना चाहिए। उत्पन्न चिह्नित समस्याः- नजदीकी बाजार मे अधिक मूल्य नही मिलने के कारण दूर दराज भेजना पड़ता है इसके लिए परिवहन की सुविधा नहीं है। कई तरह के बीमारी बागवानी फसलों पे आती है जिसका सही समय पर उपचार करने के लिए रोगनाशक उपलब्ध नहीं हो पाता है। भण्डारण की भी सुविधा उपलब्ध नहीं है। उत्पन्न चिह्नित समस्या का निदान आपने कैसे किया :- विपणन के लिए पहले ही बड़े दुकानदार से सम्पर्क कर लेते है एव उत्पाद उनके द्वारा उठा लिया जाता है । बागवानी फसलों की बीमारी के लिए प्रखण्ड स्तर के कर्मी समय-समय पर फार्म पर आकर उचित सलाह देते है। उद्यान विभाग मुंगेर द्वारा हमे आम, पपीता, लत्तीतार सब्जी, का उनन्त किस्म का प्रभेद प्राप्त हुआ एवं कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण आत्मा मुंगेर के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किया । परम्परागत फसलों जैसे धान, गेहूँ से अधिक मुनाफा नहीं होने पर मैंने बागवनी फसलों की ओर आकर्षित हुआ और आज अच्छे मुकाम पर हूँ। परिवार की स्वास्थ का भी अच्छी तरह से देखभाल कर रहा हूँ । अपने फार्म पर ही घर मे प्रयोग होने वाली तरह - तरह की सब्जियों को जैविक विधि से उत्पादन करता हूँ । जमीन का आकार बड़ा रहने के कारण कुछ जमीन

परती रह जाती थी जिसमे बागवानी फसल लगाकर अधिक आमदनी प्राप्त कर रहा हूँ ।

पुरस्कार यदि कोई प्राप्त किये होः- नही ।

क्र0 सं0	लाभ	पहले	बाद में
1.	लागत	40,000/-	11,000/-
2.	मजदुरी	25,000/-	10,000/-
3.	बाजार	15,000/-	60,000/-

18 पपीता की खेती से सवारा भविष्य

परिचय

किसान का नाम- श्री नरेश कुमार
पिता/पति का नाम - मणिकान्त दास
पूरा पताः- गाँव/मुहल्ला - रंगराचैक, प्रखंड - रंगराचैक,
जिला -भागलपुर (बिहार)
मोबाइल सं0- 9931009042
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 0.4 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 0.4 हेक्टेयर
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- शून्य
किसान का प्रकार- सचिव-बाबा विसुराउत कृषक हित समूह

मेरा नाम नरेश कुमार है एवं मेरे पिता का नाम-श्री मणिकान्त दास है और मैं चापर दियरा का रहने वाला हूँ। मेरी उम्र अभी 40 वर्ष है। मैंने इन्टर तक की शिक्षा प्राप्त कर खेती को अपने जीवन का आधार बनाया। मेरे पास केवल 5 कट्ठा जमीन थी। अगल-बगल की जमीन को लिज पर लेकर मैंने 0.4 हेक्टेयर जमीन में सर्वप्रथम मक्का की खेती शुरू किया लेकिन मक्का की खेती से बहुत कम आमदनी होने के कारण घर-परिवार अच्छे से नहीं चल रहा था। इसलिए फिर मैंने सब्जी की खेती करनी शुरू किया। वर्ष 1999 में लहसुन की खेती किया, लहसुन की खेती से अच्छा लाभ प्राप्त किया। उसके बाद 2002 में प्याज और आलू की खेती किया। प्याज और आलू की खेती से अच्छा मुनाफा मिला।

वर्ष 2002 में ही मेरी शादी हो गई। मेरी धर्म पत्नी का नाम श्रीमति रेखा देवी हैं उन्होने मुझे सब्जी की खेती करने में पूरा सहयोग दिया और मैंनं 0.4 हेक्टेयर जमीन खरीद लिया तथा घर भी रहने लायक बना लिया। वर्ष 1999 से वर्ष 2013 तक मैंने सब्जी की खेती किया।

लेकिन सब्जी की खेती में परेशानी यह होती थी कि सीजन पर सब्जी सस्ती होने के कारण अच्छा भाव नहीं मिल पाता था। इससे मेरा मुनाफा प्रभावित होता था तथा मुझे परिवार के भरण-पोषण में परेशानी का सामना करना पड़ता था। वर्ष 2013 तक मेरी शादी हुए 10 वर्ष हो चुके थे और मेरे परिवार में मुझे दो पुत्र एवं दो पुत्री भी थी जिनके भविष्य की मुझे चिन्ता होती थी। वर्ष 2013 में मैंने 0.4 हेक्टेयर जमीन पर पपीता की खेती शुरू कि जिसकी प्रेरणा मुझे श्री उमेश मंडल पपीता कृषक, ग्राम-सधुआ, पंचायत-सधुआ चापर से मिली। उन्होंने मुझे पपीता की उन्नत खेती करने की सलाह, तकनिकी जानकारी एवं सहयोग दिया। उन्के दिशा निर्देश पर मैंने आत्मा कार्यालय भागलपुर से समर्पक कर पपीता की उन्नत खेती पर तकनिकी जानकारी प्राप्त किया और आत्मा के सहयोग से कृषि विज्ञान केन्द्र सबौर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। पपीता की खेती करने में मुझे अपने परिवार और पत्नी का काफी सहयोग प्रापत हुआ। कृषि विज्ञान केन्द्र के निर्देश के अनुसार मैंने पपीता के कुछ उन्नत प्रभेदों का चयन किया जो इस प्रकार हैं- (1) पूसा नन्हा (2) चड्डु सलेकसन(3) रेड लेडी आदि जो अच्छी किस्में साबित हुई और मुझे पपीता की उन्नत खेती में सफलता मिल गई। पपीता के पक्के फलों को लेने व्यपारी हमारे पपीता के बाग पर आते हैं और हमारे बाग से ही 20 रुपये प्रति किलो कि दस से पपीता क्रय कर ले जाते हैं। पपीता की खेती अच्छी आमदनी देती है लेकिन हमारा गाँव दियरा क्षेत्र होने के कारण प्रकृति आपदा की भेट चढ़ गया परन्तु मेंने हिम्मत नहीं हारी और पपीता के फसल की कमी रबी सीजन में टमाटर और मटर की खेती कर अपना खर्च निकाला तदोपरान्त इस वर्ष भी पपीता की खेती लगाई है और मेरी फसल अच्छी हैं

पहले के वर्षो में मुझे पपीता की खेती से अच्छी आमदनी होती रही है जिसके कारण मेरी आर्थिक स्थिति सबल है और मैं अच्छे से अपना जीवन यापन करने में सक्षम हूँ। मेरे पुत्र एवं पुत्री आज अच्छे स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

भगवान की कृपा से आज मैं पपीता की खेती 0.4 हेक्टेटयर जमीन में करता हूँ जिससे मुझे सालाना 3,30,000 रुपये की आमदनी होती है जिससे मेरी जीवन शैली अच्छी हो गई हैं।

आज पपीता की खेती करते हुये मुझे 8 वर्ष बीत चुके हें। समय-समय पर आत्मा की ओर से होने वाले प्रशिक्षणों के माध्यम से नई तकनिकी जानकारी एवं कृषि वैानिकों द्वारा सलाह प्राप्त होता रहता है इससे पपीता की खेती में मेरा तकनिकी ज्ञान एवं अनुीाव बढ़ा है। आत्मा के सहयोग से मैंने वर्ष 2015-16 राजधानी पटना में आयोजित बिहार दिवस के अवसर पर उद्यान प्रदर्शनी में मैंने भाग लिया था जो मेरे लिये हर्ष एवं प्रोत्साहन की बात है। पपीता की खेती का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। नर्सरी-नवम्बर के महीने में ये पपीता के बीजों को पालीथीन की थैलियों में बोते हैं और मिट्टी को इस प्रकार तैयार करते है। 2 भाग मिट्टी 1 भाग रेत 1 भाग गोबर की सड़ी खाद को मिलाकर उसमें बोते हैं। समय-समय पर पानी देते हैं और पौधों के उगने पर रोग रोधी दबा का छिड़काव करते हैं।

इस प्रकार मार्च के महीने तक पपीते के पौधे 15सेमी के हो जाते है फिर ये इन्हें पहले से चिन्हित गढ़ो में बोते हैं जिनको इन्होंने खाद और दवा से उपचारित कर भरा होता है। पौधे से पौधे की दूरी 6 फीट .6 फीट रखते हैं। लगभग 15 मई से पौंधो में फूल लगने लगते हैं इस समय ये प्रति 10 मादा पौधे पर 1 नर पौधा छोड़कर सभी नर पोधों को काटकर हटा देते है। अन्त सितम्बर से फल पकने लगते हैं तब ये फलों को तोड़कर व्यपारियों को बेचते हैं। इस प्रकार इन पौधों से जून-जूलाई तक फल प्राप्त होता रहता है। मार्च के महीने में ये नये पौधों को पुराने पोधों के बगल में लगाते हैं ताकि पुराने कम उपजाउ पौधों को बदला जा सके।

सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण तत्व/घटक- आत्मा से सहयोग स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव- पड़ोस एवं आस-पास गाँव के कृषक भी इनसे प्रेरणा लेकर पपीता की खेती के गुर सिखने आते हैं और पपीता की खेती कर रहे हैं।

सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र- पटना में आयोजित बिहार दिवस 2016 के अवसर पर उद्यान प्रर्दशनी में इन्होने अपने उतपाद पपीता के साथ भाग लिया था।

19 पपीता उत्पादन कर विजय शंकर ने बनाया पहचान

परिचय

किसान का नामः-विजयशंकर सिंह
पिता का नामः- शोभनाथ सिंह
पूरा पताः-ग्राम-गोबरछ, पोस्ट-पहड़ियॉ, पंचायत-पढ़ौती, प्रखण्ड-भगवानपुर, जिला-कैमूर (भभुआ)
किसान का मो0 न0- 7739977020
खेती योग्य भूमि (हे0में0)- 09 एकड़
सिंचित क्षेत्र (हे0 में0):- 8 एकड़
असिंचित क्षेत्र (हे0 में0):- 1 एकड़
किसान का प्रकारः-वृहत
(स्वयं सहायता समूह / कृषक हित समूह/ खाद्य सुरक्षा समूह (महिलायों के लिए) किसान उत्पादन संगठन के सदस्य/व्यक्तिगत अगर समूह/ संगठन के सदस्य हैं तो समूह का नाम , निबंधन करने वाली संस्था का नाम, निबंधन संख्या एवं तिथि का उल्लेख करें। जय किसान हितार्थ समूह, आत्मा कैमूर, निबंधन संख्या- दिनांक- 29.01.2019

मैं विजय शंकर सिंह , पिता-श्री शोभनाथ सिंह, ग्राम-गोबरछ, पोस्ट-पहड़ियॉ, पंचायत- पढ़ौती, प्रखण्ड-भगवानपुर, जिला-कैमूर (भभुआ) का निवासी हूँ। मेरा जन्म 17.01.1977 को मेरे पैतृक गॉव गोबरछ में हुआ। मैं अपने दो भाइयों में बड़ा भाई हुँ। मेरे तीन पुत्र है। मेरी प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विधालय गोबरछ में हुआ। दसवी उत्तीर्ण करने के बाद मेरे शादी कर दी गई। जिससे मेरी शिक्षा प्रभावीत हो गया। तब मैनें खेती करना प्रारम्भ कर दिया। मेरे पास कुल- 09 एकड़ कृषि योग्य भूमि है। मेरे द्वारा अपने पुरे परिवार का पालन पोषण एवं बच्चों का पढ़ाई का खर्च पूर्ण रूप से खेती पर आश्रित है। सर्वप्रथम हमें खाद्यान फसलों से उचित आय नहीं हो पाता था इसलिए आय का दुसरा श्रोत ढुँढ़ने लगा क्योंकी खेती में जितना लागत लगाते थे उसकी तुलना में मुनाफा कम होता था। मैं वर्ष 2013-14 में आत्मा कैमूर के सहयोग से कृषि विज्ञान केन्द्र, अधौरा में प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण के उदेश्य से गया। प्रशिक्षण सत्र के दौरान कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा पपीते की वैज्ञानीक खेती पर विस्तार रूप से जानकारी प्राप्त किया इसके बाद मैने यह ठान लिया की खाद्यान फसलों की अपेक्षा पपीता की खेती से अच्छ ामुनाफा होगा। प्रशिक्षण लेने के बाद अपने गॉव आकर बताये गये जानकारी के अनुसार खेत की तैयारी करना शुरू कर दिया। इसके बाद मैने अपने 1 बिंघे खेत में पपीता की खेती करना शुरू कर दिया। सर्वप्रथम हमने पपीता की रेड लेडी प्रजाति लगाया। जिससे पपीता कि अच्छी उपज प्राप्त हुई नजदीकी बाजार में बेचने पर उचित कीमत प्राप्त हुई। कृषि विज्ञान केन्द्र अधौरा में उद्यान प्रर्दशनी 2015-16 में पपीता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

यह सब आत्मा कैमूर एवं कृषि विज्ञान केन्द्र अधौरा के सहयोग से सम्भव हो सका । अगले वर्ष कृषि विज्ञान केन्द्र हाजीपुर के द्वारा चड्डा प्रजाती के पपीता लाकर अपने 1 एकड़ खेत में लगाया एवं समय-समय पर आत्मा कैमूर से सहयोग प्राप्त करते रहें जिससे मुझको कम लागत में अधिक मुनाफा प्राप्त हुआ, जिससे फलों की खेती में मेरी रूची बढ़ी और पपीता के साथ-साथ सब्जी की खेती भी करना शुरू कर दिया। जिससे हमारी आमदनी बढ़ि और आज के दिन में हमारी स्थिति बहुत ही सुदृढ़ हो गया और अपने क्षेत्र के किसानों के बिच प्रेरणा का श्रोत बन गया। मेरे द्वारा अपनाई गई फलों एव सब्जी कि खेती अन्य किसानों द्वारा भी अपनाई गई। आत्मा कैमूर, अधौरा , हाजीपुर से प्राप्त उन्नत बीज। कठिन परिश्रम तथा समूह बनाकर कार्य की महत्ता को पहचानना। स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभावः- यह अपने आस पास के गॉव में काफी प्रगतीशील एवं जुझारू किसान के रूप में जाने जाते है। इनको देख कर गॉव के कई किसान आत्मा के समूह से जुड़ना चाहते है एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर सफल किसान बनना चाहते है। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा) कैमूर द्वारा जिलास्तरीय उद्यान प्रदर्शनी वित्तीय वर्ष 2017-18 में नेनुआ एवं पपीता में प्रथम पुरस्कार जिला पदाधिकारी द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। तरकारी महोत्सव बिहार राज्य स्तरीय सब्जी प्रर्दशनी-सह-प्रतियोगिता पटना में मिर्च प्रादर्श के लिए तृतिय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

20 संतरा एवं पपीता की खेती ने दिलायी पहचान

परिचय

नाम -विनोद कुमार मंडल
पता- तिनटंगा, रूपौली, पूर्णिया, बिहार
मोबाइल नंबर- 9955521632
संतरा उत्पादन/बागवानी/ 500-600 फल प्रति पौधा/ फल का वजन- 100 ग्रा॰ से 200ग्रा॰,
जय गुरू गेहूँ उत्पादक स्वयं सहायता समूह, ग्राम- तिनटंगा, पंचायत- गोरियर पश्चिम, रूपौली
प्रत्यक्षण, किसान पाठशाला का संचालन, प्रशिक्षण, परिभ्रमण, आत्मा योजना अर्न्तगत लाभार्थी।

ऑरगेनिक फर्टिलाईजर एवं पेस्टीसाइट से संतरा एवं पपीता की खेती के साथ टमाटर की खेती, मक्का की खेती किया गया। प्रशिक्षणोपरान्त उपरोक्त सभी क्रियाकलापो का वैज्ञानिक विधी से संवर्द्धन एवं तत्पष्चात विक्रय से लाभ अर्जन। स्थानीय स्तर पर 20 से 25 प्रतिशत अधिक उपज की प्राप्ति, खेती की लागत मे बचत। स्वयं की बागवानी उत्पाद यथा संतरा एवं पपीता उत्पाद से स्वादिष्ट फल उत्पादन (संवर्द्धन) से लाभ की प्राप्ति। वर्ष भर मे लगभग 8 से 10 क्वी0 फल की बिक्री की जाती है जिससे अच्छा मुनाफा प्राप्त हो जाता है।

वैज्ञानिक विधी से फल उत्पादन तकनीक को ध्यान मे रखते हुए संतार एवं पपीता की तुडाई कर ली जाती है उसके बाद कार्टून या लकड़ी या पेपर में लपेट कर स्थानीय बाजार मे आसानी से विक्रय के लिए उपलब्ध कराया जाता है। संतरे के पत्तों के जमा कर गढढे में डालकर सडा कर कम्पोस्ट तैयार किया जाता हैं एवं उसी का प्रयोग कर फलन अधिक लिया जाता है।

सभी उत्पादन उतम क्वालिटी के प्राप्त होते है, जिससे स्थानीय बाजार मे विक्रय खरीदारो को आकर्षित होने पर मजबूर होना पडता है समय के साथ अनुभव आधारित खेतो के उत्पाद को भविष्य मे और बेहतर तरीके से उत्पादन किया जा सकेगा।

स्थानीय बाजारो मे अच्छे गुणवता वाले उत्पादो की मांग ज्यादा है इसलिए उत्पादन के पश्चात उत्पाद की विधी हेतु उपज मे लगाये जानेवाले खर्च स्वतः कम हो जाते है और मुनाफा का प्रतिषत बढ जाता है। आत्मा पूर्णिया की ओर से आयोजित कार्यक्रमो से आय हो जाती है। आत्मा (भोजपुर) कार्यालय, से आयोजित प्रषिक्षण, प्रत्यक्षण योजना, एवं किसान पाठषाला के माध्यम से कृषि वैज्ञानिको का मार्गदर्शन काफी प्रभावी एव लाभप्रद सिद्व हो रहा है। स्थानीय स्तर के लोगो मे एक सफल किसान के रूप मे पहचान मिली है तथा विभगीय स्तर पर भी मेरी राय को रखा जाने लगा है, जिसके कारण मेरे आंत्मविष्वास मे बद्वोतरी आई है। आषा है भविष्य मे मेरे द्वारा अन्य कार्यक्रम को भी अनपाया जाएगा। ताकि आमदनी को और अधिक बढाया जा सके।

21 मुन्ना कर रहे सब्जी एवं बागवानी की खेती

परिचय

किसान का नाम - मुन्ना पडित
पिता/पति का नाम - रामाशंकर पडित
पूरा पता - गॉव/मुहल्ला - कुईसाखुर्द, पो.- कुईसाखुर्द, थाना - कटेया, प्रखण्ड - पंचदेवरी, जिला - गोपालगंज
मोबाईल सं0- 7379654638
खेती योग्य भूमि (हे0 में) - 1.5 हे0
सिंचित क्षेत्र (हे0 में) - 1.5
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)
किसान का प्रकार - स्वयं सहायता समूह/कृषक हित समूह/खाद्य सुरक्षा (महिलाओं के लिए)/ किसान उत्पादन संगठन के सदस्य/व्यक्तिगत

मैं मुन्ना पड़ित, पिता- रामाशंकर पड़ित, ग्रम- कुईसाखुर्द का निवासी हूँ। मै अपने तीन भाईयों में सबसे बड़ा हूँ। मेरे पिताजी किसान तथा माताजी गृहणी है। मैनें स्नातक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान थावें से बी0टी0सी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की है। रोजगार की तलाश में काफी हाथ-पॉव चलाये मगर सफलता नहीं मिली। और मैं शिक्षित बेरोजगारी की मार झेलने के लिए विवश हो गया। थक-हार कर मैने खेती को ही अपने जीवन का आधार बनाना चाहा, परन्तु घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण तरह-तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ने लगा। फिर भी मैं पुस्तैनी जमीन पर धान, गेहूँ की खेती कर रहे अपने पिताजी के कार्यो में हाथ बटाने लगा। लेकिन खेती से प्राप्त आय से जीविका चलाना मुश्किल होने लगा। समय बीतता गया और एक दिन मेरी मुलाकात आत्मा के तकनिकी सहायक से हो गयी, मैने अपनी समस्या से उन्हे अवगत कराया और उनके द्वारा मुझे सब्जी एवं बागवानी की खेती करने के लिए प्रेरित किया गया।

मैं बचपन से तीक्ष्ण बुद्धि का था। और मेरे मन में समाज में एक नया कीर्तिमान स्थापित करने की इच्छा जागृति थी। परन्तु घर की आर्थिक स्थिती ठीक नहीं होने के कारण मुझे विवश होना पड़ता था। धीरे-धीरे आत्मा और कृषि विभाग के पदाधिकारीयों से सम्पर्क स्थापित किया। और आत्मा द्वारा मुझे तकनिकी जानकारी प्राप्त हुई। अब मेरी गाड़ी की पहिया धीरे-धीरे मंजील की ओर बढने लगी। परन्तु सिचाई का उचित साधन नहीं होने के कारण सिचांई में लागत अधिक आती थी। इस समस्या का निवारण भी कृषि विभाग, पंचदेवरी से सोलर पम्प अनुदान पर उपलब्ध कराकर समस्या का हल कर दिया गया। आज वर्तमान में मेरे खेत में टीशू कल्चर केला और पपीता की खेती लहलहा रही है। इसके साथ ही मैने अब नर्सरी की भी खेती करना प्रारम्भ कर दिया हूँ। मैं अपना उत्पाद स्थानीय बाजार में ही बेचता हूँ। खेती किसानी करते हुए मेरी जिन्दगी में एक ऐसा पल भी आया जब मुझे माननीय मंत्री श्री गिरीराज सिंह जी के द्वारा पूरे देश से आये किसानों में से सबसे कम उम्र के किसान के रूप में उद्यान रत्न से सम्मानित किया गया। प्रयोग के तौर पर अभी हमारे द्वारा सेव की खेती की जा रही है, जो कि अभी तक सफल रहा है। इससे मै बहुत खुश हुँ। और भविष्य में भी मै आत्मा से सहयोग लेता रहुगाँ। इस प्रकार यही मेरे सफलता की कहानी और यही मेरी जीविका का आधार है।

22

जन्मेजय कर रहे केला की खेती

परिचय

किसान का नाम – जन्मेजय तिवारी
पिता/पति का नाम - श्री अशोक तिवारी
पूरा पता - गाँव/मुहल्ला - अमेया पो0 - महुअवां थाना - कटेया, प्रखंड -कटेया, जिला - गोपालगंज
मोबाइल सं0- 8292095185
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 3
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 3
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 0
किसान का प्रकार- (स्वयं सहायता समूह/कृषक हित समूह/खाद्य सुरक्षा समूह (महिलाओं के लिए)/ किसान उत्पादक संगठन के सदस्य/व्यक्तिगत)

मै जन्मेजय तिवारी पिता श्री अशोक तिवारी ग्राम अमेया पो0 महुअवां प्रखण्ड कटेया जिला गोपालगंज (बिहार) का स्थाई निवासी हूँ हम लोग 3 भाई है, मै सबसे बडा हूँ मेरी दसवीं की पढाई फतेहमेमोरियल इण्टर कॉलेज तमकुही राज जिला कुशीनगर से हुई फिर 12 वी की पढाई के लिए गोरखपुर जाना पडा उसके बाद बीटेक करने के लिए नागपुर चला गया बीटेक की पढाई पूरी करने के बाद मै वहा विल्डर्स एण्ड डेवलेपर्स का काम सुरु किया चूकि तकनीकी शिक्षा की वजह से मै अपने आपको हर परिस्थिति में ढाल सकता था किंतु आपसी मतभेद पारिवारिक दायित्व के कारण वहा भभिस्य सुगम नही दिखा फिर मैने गांव का रुख किया मेरे लिए कृषि क्षेत्र मे उतरना चुनौती पूर्ण रहां मेरे बाबुजी श्री दिनेश तिवारी जीका सहयोग मेरे साथ शत प्रतिशत रहां मेरे सामने दो सवाल थे (1.) खेती करना (2.) व्यवसाय करना। फिर दौर शुरू हुआ जो हर किसान करता है धान और गेहूँ की खेती। अथक प्रयास करने के बाद भी किसी तरह से लागत निकाल पाना मुश्किल था फिर मेरी मुलाकात कृषि विभाग व आत्मा कार्यालय कटेया से हुई। तो मुझे

कुछ अलग कर दिखाने का जुनुन पैदा हुआ। मैने आत्मा कार्यालय कटेया से सम्पर्क किया और मुझे आत्मा कार्यालय से काफी संतोषजनक जानकारी मिलने के साथ ही उत्तम कृषि क्षेत्र से जुडे हुए प्रक्षेत्र, मेला, प्रदर्शनी,किसान गोष्ठी में जाने का अवसर मिला उसी बीच मैने अपने स्नातक की पढाई अंग्रेजी विषय से पूर्ण किया उसी बीच मेरी शादी हुई तब जिमेदारी और बढ गई सघर्ष पूर्ण जिवन के साथ मैने अपने खेती किसानी का काम के साथ-साथ केले की खेती शुरू की लाभ दिखने के साथ ही केले की खेती बडे स्तर पर शुरू किया और आज हमारे पास केले की खेती लगभग 50 एकड है। जिससे उच्च गुणवक्ता युक्त केले को पुरे भारत मे आपूर्ति करते है। खास बात नबे प्रतिशत केले की खेती लिज पर लेकर करते है लिज वाली भूमी को बीस साल में स्वतह मुक्त कर देने का लक्ष्य रखा गया है इस प्रकार भूस्वामी को रुपये भी मिल जाते है और मुझे अच्छा खासा मुनाफा हो जाता है इस केले की खेती में लगभग 60 से 70 मजदुर अपनी आजिविका चला रहे है पिछले 2 साल से केले के साथ गन्ने की सहः फसली खेती से अछा लाभ मिला है गन्ने के साथ केले की खेती जीक जैक विधी से अपनाकर काफी लाभ कमाया जा सकता है। अब मै केले से जुडे प्रोडक्ट पर काम करने जा रहा हूँ जिसमे केले का चिप्स, जैम,पाउडर,हेल्थ सप्लीमेंन्ट आदि तैयार कर सकूँ। केले के तना से धागा भी तैयार किया जा सके इसके लिए मै प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक श्री धर्मपाल ओझा को बहुत धन्यबाद देता हूँ जिन्होने विभाग के तरफ से माननीय जिला पदाधिकारी, गोपालगंज डा0 नवल किशोर चैधरी जी के सामने अपना प्रस्ताव रखने का मौका दिया तथा माननीय द्वारा हर सम्भव मदद करने का आश्वासन भी मिला मै पुनः आत्मा विभाग को हृदय से धन्यबाद देता हूँ। मै एक महान व्यक्ति की उस पंक्ति का हमेशा ही अनुश्रवण करता हूँ- सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण तत्व/घटक- (व्यक्तिगत प्रयास/आत्मा से सहयोग/अन्य विभाग से सहयोग) स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव- सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र-

दुग्ध उत्पादन से खुशहाल किसान

परिचय

किसान का नाम - अरुण यादव
पिता/पति का नाम - रामचन्द्र यादव
पूरा पता - गाँव/मुहल्ला - पडरौना, पो0 - लामीचैर, थाना -भोरे, प्रखंड - भोरे, जिला -गोपालगंज (बिहार)
किसान का दूरभाष/मोबाइल सं0- 9801068733
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 1 एकड़
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 1 एकड़
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- शून्य
किसान का प्रकार- व्यक्तिगत

मै अरुण यादव, पिता- रामचन्द्र यादव, ग्राम - पडरौना, पो0- लामीचैर, प्रखण्ड भोरे का स्थाई निवासी हूँ मै इण्टर पास होने के बाद रोजगार के चक्कर में इधर उधर भटक रहा था कि एक दिन मेरा मुलाकात आत्मा कृषि विभाग द्वारा प्रखण्ड ई किसान भवन पर आत्मा द्वारा किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया था जिसमें किसानों को रोजगार तथा खेती की नई तकनीकी से उत्पादन के बारे में बताया गया जिसमें प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक द्वारा बताया गया कि दुग्ध उत्पादन से भी अच्छा पैसा कमाया जा सकता है, और पैसा बचाया जा सकता है। तभी मैने सोचा की बाहर आने जाने से अच्छा है की यह व्यवस्था मेरे रोजी रोजगार के साथ साथ परिवार के पालन पोषण का कार्य चल सकता है। तभी से मैने गाय पालन तथा उसके प्रस्संकरण के बारे में आत्मा में कार्यालय में आकर उससे संबंधित सभी कार्यो के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की और तभी से मै दुग्ध उत्पादन के कार्य में जुट गया, और मैने गाय पालन शुरू किया और इस समय मेरे पास 15 गाय है और दुग्ध उत्पादन 120 लीटर प्रतिदिन होता है, और इसको बेचने में भी परेशानी नही होता है। और उससे जो आय होता है उससे परिवार के भरण पोषण के साथ साथ पैसों का बचत होता भी है। इस कार्य से मेरा परिवार काफी खुशहाल है तथा बगल के जो भी कृषक देखने आते है वे इस कार्य से काफी प्रभावित होते है तथा मुझसे इसके बारे में जानने के कोशिश करते है। मै आत्मा विभाग के पदाधिकारी तथा कर्मी को धन्यवाद का पात्र मानता हूँ जिन्होने ने मेरा पथ प्रर्दशन का सराहनीय कार्य किया। मैने सोचा की बाहर आने जाने से अच्छा है की यह व्यवस्था मेरे रोजी रोजगार के साथ साथ परिवार के पालन पोषण का कार्य चल सकता है। तभी से मैने गाय पालन तथा उसके प्रस्संकरण के बारे में आत्मा में कार्यालय में आकर उससे संबंधित सभी कार्यो के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की और तभी से मै दुग्ध उत्पादन के कार्य में जुट गया, और मैने गाय पालन शुरू किया और इस समय मेरे पास 15 गाय है और दुग्ध उत्पादन 120 लीटर प्रतिदिन होता है, जिससे मेरा महिने का बचत 70 हजार रुपये होता है और पशुओ को दाना भूसा का खर्च निकालकर शुद्व बचत 40 हजार रुपया होता है, और खुशी की बात तो यह है कि इतना कमाई मै बाहर जाकर भी नही कर सकता था जो आज अपने परिवार के बीच अपने मॉ बाप का सेवा करते हुए मै इतनी आनदनी करता हूँ इसी पैसे से मेरे बच्चे अच्छे स्कूल में पढते है और इसको बेचने में भी परेशानी नही होता है। और उससे जो आय होता है उससे परिवार के भरण पोषण के साथ साथ पैसों का बचत होता भी है। इस कार्य से मेरा परिवार काफी खुशहाल है तथा बगल के जो भी कृषक देखने आते है वे इस कार्य से काफी प्रभावित होते है तथा मुझसे इसके बारे में जानने के कोशिश करते है। मै आत्मा विभाग के पदाधिकारी तथा कर्मी को धन्यवाद का पात्र मानता हूँ जिन्होने ने मेरा पथ प्रर्दशन का सराहनीय कार्य किया।

23 चंदा कर रहे वैज्ञानिक तरीके से सब्जी की खेती

परिचय

किसान का नाम - चंदा देवी
पिता/पति का नाम - जयराम साह
पूरा पता - गाँव/मुहल्ला -मिनापुर बलहां, पो. - मिनापुर बलहां, थाना -पिपराही, प्रखंड -पिपराही, जिला -शिवहर (बिहार)
मोबाइल सं. - 6207759268
खेती योग्य भूमि (हे0 में) -2 एकड़
सिंचित क्षेत्र (हे0 में) -2 एकड़
असिंचित क्षेत्र (हे0 में) -नहीं।
किसान का प्रकार : कृषक हित समूह का कोषाध्यक्ष
खाद्य सुरक्षा समूह का नामः- ओम कृषक हित समूह, मीनापुर बलहां, पिपराही, शिवहर
निबंधन करने वाली संस्था :- आत्मा, शिवहर
निबंधन संख्या एवं तिथि :- 12/2017-18

मैं चंदा देवी, उम्र 40 साल, मेरी आर्थिक स्थिति इतना खराब था कि हमे रहने के लिए घर नहीं था और बच्चों के पढ़ाई लिखाई का खर्च तक वहन नही कर पा रही थी। महँगाई की मार इतनी ज्यादा थी कि घर का जिवकोपार्जन करना मुस्किल था।मेरे पति धन उपार्जन के लिए बड़े शहर का ओर रूख किये और मैं कृषि को विकल्प के रूप में चुनी। 2018.में आत्मा, शिवहर द्वारा चल रहे कार्यक्रम के बारे में हमे पता चला जिससे हमे वैज्ञानिक तरिके से सब्जी की खेती करने के बारे में बताया गया। जिसको अपना कर अपनी प्रतिदिन की आमदनी को बढ़ाया। मेरे गॉव में आत्मा, शिवहर के द्वाराकिसान चैपाल/किसान गोष्ठी/किसान पाठशाला का आयोजन हुआ, जिसमें मैंने भी भाग लिया। बैठक में वैज्ञानिक तकनीक से सब्जी की खेती के बारे में जानकारी दी गई तब से मैने भी वैज्ञानिक तरीके से सब्जी की खेती के बारे में जाना। समय-समय पर आत्मा, शिवहर से सम्पर्क स्थापित करते रहे साथ ही और अधिक तकनिकी जानकारी के लिए आत्मा, शिवहर के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु राज्य के अन्दर एवं राज्य के बाहर नई नई वैज्ञानिक तकनिक प्राप्त कर खेती और विसतार पुंवक किए। जिससे मेरी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। व्यक्तिगत प्रयास एवं आत्मा, शिवहर का सहयोग। स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव- प्रभावित होकर किसान भी वैज्ञानिक तरीके से खेती करना प्रारंभ कर दिये और वे अपने तकनीकी ज्ञान से अन्य किसानों को सहयोग करते है। साथ ही अन्य किसानों को लाभ पहुचाते है।

24 बाजार हमें खोजता है अमरजीत कुमार

परिचय

किसान- अमरजीत कुमार सिन्हा
पटना के दानापुर के गांव लोदीपुर चांदमारी
मो. 9934713788

पटना के दानापुर के गांव लोदीपुर चांदमारी के 54 वर्षीय प्रगतिशील किसान अमरजीत कुमार सिन्हा किसानों के लिए इन दिनों प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। वे 1989 से खेती करते आ रहे हैं। वे 16 एकड़ में खेती करते हैं। धान 4 एकड़, मटर छह एकड़, बैंगन एक एकड़, लहसून एक एकड़, बोरो बीज, कद्दू एक एकड़, टमाटर के अलावा प्याज के बीज की खेती करीब एक एकड़ में करते हैं। प्याज की बीज की इनकी दो किस्में पटना लाल एवं पटना चेचर किसानों के बीच में काफी लोकप्रिय है। बिहार के 100 से 150 किसान इन्हीं के प्याज का बीज अपने खेतों में लगाकर मुनाफा कमा रहे हैं। अमजीत का कहना है कि पटना लाल प्याज बीज की खासियत यह है कि खेत में बारिश हो जाए तो इस बीज सड़ता नहीं है। एक तरह से कहा जाए तो इस बीज में सहनशीलता की क्षमता अधिक होती है। वहीं बाजारों में मिलने वालें अधिकांशतः कंपनियों के बीज ऐसी स्थिति में सड़ जाती है। हमारे बीज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पैदावार होने के बाद भी कई दिनों तक किसान भाई भंडारण करते हैं। वहीं पटना चेचर प्याज का बीज हाजीपुर का किस्म हैं। जिसे कन्वर्ट किया गया है। इसमें झांस अधिक होता है। इसका फूटान थोड़ा देरी से होता है। उन्होंने कहा कि हम मार्केट को देखते हुए ही साल दर साल फसलों एवं सब्जियों का उपज करते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी कहना है कि किसानों को फसल की दोगुनी आय मिले। लेकिन आज हम तिगुणी आय प्राप्त कर रहे हैं। हम अपने उपजाए फसल एवं सब्जियों को दानापुर मंडी में बेचते हैं। दाम भी अधिक मिलता है। इसका वजह यह है कि हमारे उत्पाद अन्य किसानों से भिन्न रहता है। और ऊंचे दामों में बिकता है। हम खेती में क्वांलिटी और क्वांटिटी से समझौता नहीं करते हैं। एक तरह से यूं कहिये कि मुन्ना भाई के नाम से हमारे उत्पाद एवं बीज प्रचलित है। जो आज के दिनों में हमें लोकप्रिय बना रहा है। उनका कहना है कि बिहार के कई ऐसे किसान है जिनको खेती में लागत अधिक एवं मुनाफा कम होता है। इसका वजह यह है कि यदि वह सही तरीके एवं सूझ-बूझ रासायणिक खाद एवं कीटनाशक का इस्तेमाल सही मात्रा में करें तो उन्हें भी इसका लाभ मिलेगा। मैं इन दिनों अपने इलाकों के कई किसानों को किसान पाठशाला के तहत जानकारी एवं प्रशिक्षण के तौर पर बताते रहते हैं। कुछ किसान जागरूक भी हो रहे हैं और बेहतर खेती भी कर रहे हैं। केंद्र एवं राज्य की ओर से कृषि से संबंधित योजनाओं का लाभ मुझे मिलता रहता है। और मेरी कोशिश रहती है कि सभी किसान भाईयों को इसका लाभ मिले। कृषि विभाग की ओर से मुझे पावर टिलर, स्प्रिंकलर, स्प्रेयर, ब्रश कटर भी मिला है साथ ही गोदाम बनाने के लिए राज्य एवं केंद्र सरकार की ओर से मुझे मदद मिला है। गोदाम बनाने में 16 लाख मैंने अपना पूंजी लगाया और 4 लाख मुझे राज्य सरकार से मिला। इसी खेती की बदौलत मैंने अपने दोनों बच्चों को बीटेक तक की पढ़ाई करवाई। जिसमें बड़ा लड़का सुजीत इंजीनियरिंग की नौकरी छोड़कर खेती करने को सोच रहा है। उनका कहना है कि आज की तारीख में मार्केट हमको खोजता है हम मार्केट को नहीं खोजते हैं। यही हमारी खेती की पहचान है। जिसके लिए मुझे केंद्र एवं राज्य सरकार के कृषि विभागों ने विगत कई वर्षों से आज तक जिलास्तरीय से लेकर राष्ट्रीयस्तर तक कई बड़ें पुरस्कारों से हमें नवाजा है।

कृषि विभाग की ओर से मुझे पावर टिलर, स्प्रिंकलर, स्प्रेयर, ब्रश कटर भी मिला है साथ ही गोदाम बनाने के लिए राज्य एवं केंद्र सरकार की ओर से मुझे मदद मिला है। गोदाम बनाने में 16 लाख मैंने अपना पूंजी लगाया और 4 लाख मुझे राज्य सरकार से मिला। इसी खेती की बदौलत मैंने अपने दोनों बच्चों को बीटेक तक की पढ़ाई करवाई। जिसमें बड़ा लड़का सुजीत इंजीनियरिंग की नौकरी छोड़कर खेती करने को सोच रहा है। उनका कहना है कि आज की तारीख में मार्केट हमको खोजता है हम मार्केट को नहीं खोजते हैं। यही हमारी खेती की पहचान है।

25 सब्जी उत्पादन को बनाया आय का स्रोत

परिचय

किसान का नाम– महेन्द्र प्रसाद वर्मा
पिता का नाम– स्व० डोमन प्रसाद वर्मा
पूरा पता ग्राम– बागवन पंचायत बागवन प्रखंड बखरी, जिला– बेगूसराय (बिहार)
किसान का मोबाईल नं० 7369083838
किसान के पास खेती योग्य भूमि 15 एकड
सिंचित क्षेत्र 15 एकड़
असिंचित क्षेत्र– 00
किसान का प्रकार सीमान्त

सफलता के कहानी के पूर्व का संक्षिप्त विवरण महेन्द्र प्रसाद वर्मा के जीवन में गरीबी के कारण शिक्षा अध्यन पर विराम लग गया में अपने परिवार के भरण–पोषण हेतु छोटा मोटा व्यवसाय शुरू किया। व्यवसाय के रूप में हल्दी एवं मिर्च का व्यवसाय का चुनाव किया। इस व्यवसाय हेतु गांव के अन्य व्यक्ति के द्वारा कर्ज दिया गया। कारगिल युद्ध के समय यह व्यवसाय पूरी तरह असफल रहा। जमीन बेचकर महाजन को मूलधन एवं सूद सहित चुकता करने के बावजूद भी में कर्ज से विमुक्त नहीं हो पाया। इलाके में चर्चा का विषय था कि यह व्यक्ति आत्महत्या करेगा या किसी का बेईमानी करेगा या गांव छोड़कर भाग जायेगा। महेन्द्र प्रसाद वर्मा के द्वारा तय किया कि कृषि कार्य ही एकमात्र विकल्प है। मने कृषि को ही अपने सीने से लगाया।

बागवन गांव के ही किसान मो० अकबर मिया से बटाई पर खेत लिया साथ ही साथ मो० अकबर गियां के द्वारा खेती करने के लिए पूंजी भी दिया गया अकबर मिया के अलावा किसान श्री सुरेश यादव का भी योगदान रहा। अकबर मियां से मैं पाँच कट्ठा जमीन लेकर खेती शुरू किया। उस समय मुझे खेती का ज्ञान नहीं था। फिर आत्मा बेगूसराय द्वारा संचालित योजनान्तर्गत प्रशिक्षण परिभ्रमण कार्यक्रम में हिस्सा लेकर खेती से संबंधित ज्ञान में वृद्धि किया गया। दो वर्ष तक में पाँच कट्ठा जमीन में खेती करने के बाद देखा कि इस कार्य में अच्छी आमदनी है। इसके बाद में अन्य किसान मो० जुबेर आलम, मो० मोहीउद्दीन से पाँच विघा जमीन बटाई पर लेकर कृषि कार्य शुरू किया। खेती में करेला, परवल, लौकी, बेर, ओल मशरूम उत्पादन शुरू किया। इससे सब्जी उत्पादन से अच्छी आमदनी प्राप्त होने के पश्चात डेढ़ बीघा जमीन दूसरे किसान से क्रय किया जिसमे में मछली पालन का कार्य कर रहा हूँ। मछली पालन के साथ–साथ तालाब के मेड़ पर अमरूद, महोगनी एमसॉल आदि की खेती कर रहा हूँ। मैं अपने डेढ़ बीघा तालाब को समेकित कृषि प्रणाली के रूप में विकसित करने के लिए। प्रयासरत हूँ। कृषि कार्य में आवश्यक सहयोग आत्मा कर्मी के द्वारा प्राप्त होते रहता है। कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए विभिन्न कृषि संस्थानों द्वारा पुरुस्कार भी दिया गया है जिसके अन्तर्गत जिला स्तरीय किसान मेला बेगूसराय द्वारा पत्तागोभी में प्रथम स्थान का प्रमाण पत्र दिनांक 13.12.2007 को दिया गया। गेंदा फूल में द्वितीय स्थान का प्रमाणपत्र दिनांक 13.12. 2007 को दिया गया। मूली में तृतीय स्थान का पुरुस्कार गाजर में प्रथम स्थान कोहरा में द्वितीय स्थान का प्रमाण पत्र दिनांक 30.12. 2010 को दिया गया। राज्यस्तरीय कृषि मेला में पपीता में द्वितीय स्थान सतावर में द्वितीय स्थान दिनांक 05.02.2010 को प्रमाण पत्र दिया गया। पपीता उत्पादन में प्रथम स्थान का पुरुस्कार राज्य स्तरीय कृषि मेला दिनांक 0512.2016 को दिया गया। प्रगतिशील कृषक सम्मान पुरूस्कार 05.04.2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र खोदावंदपुर के द्वारा दिया गया। राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत संचालित किसान पाठशाला वित्तीय वर्ष 2009–10 में अनुभव प्रमाण पत्र दिया गया। राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत संचालित किसान पाठशाला वित्तीय वर्ष 2010–11 में प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। समेकित जीवनाशी प्रबंधन में प्रशिक्षण राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा बिहार के द्वारा दिनांक 29.03. 2005 से 31रू03.2005 तक दिया गया। वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन में प्रशिक्षण दिनांक 11.09.2006 से 13.09.2006 तक सब्जी उपदपादन में उन्नतशील तकनीक प्रशिक्षण भारतीय सब्जी अनुसंधान, वाराणसी के द्वारा दिनांक 29. 05.2007 से 02रू06–2007 तक, चारा उत्पादन एवं उपयोगिता विषय पर प्रशिक्षण भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान झाँसी द्वारा दिनाक 15.02.2010 से 20.02.2010 तक सब्जियों की संरक्षित खेती में प्रशिक्षण बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा दिनांक 09,092014 से 14.09.2014, व्यवसायिक बकरी पालन में प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केन्द्र खोदावंदपुर द्वारा दिनांक 20.09.2016 से 23.09.2016 तक मशरून स्पॉन उत्पादन में प्रशिक्षण बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा दिनांक 03.10.2016 से 04 102016 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया हुं। वित्तीय वर्ष 2019–20 में आत्मा बेगूसराय द्वारा संचालित मशरूम उत्पादन विषय पर आयोजित किसान पाठशाला में प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। इसी प्रशिक्षण के क्रम में में अपने बुद्धि विवेक एवं अर्जित ज्ञान का उपयोग कर बिना प्रयोगशाला का स्पॉन उत्पादन करने में सफलता हासिल की। पुन में वित्तीय वर्ष 2020–21 में आत्मा बेगूसराय द्वारा संचालित मशरूम उत्पादन विषय पर आयोजित किसान पाठशाला में प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। साथ ही साथ आत्मा बेगूसराय द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की तकनीकी जानकारी हासिल की। उक्त प्रशिक्षण से मुझे लगा कि यदि सब्जी की खेती बड़े पैमाने पर की जाय तो किसानों की आर्थिक स्थिति सदृढ़ हो सकती है। प्रशिक्षण के उपरांत सब्जी की खेती विस्तारपूर्वक वैज्ञानिक ढंग से करने लगे जिससे कि इनकी आर्थिक स्थिति सदृढ़ हो गई। आज वे अपने परिवार बच्चों का पालन पोषण अच्छे तरह से कर रहे हैं एवं इससे अच्छी आमदनी भी प्राप्त कर रहे हैं।

26 तकनीकी खेती ने दिलायी पहचान

परिचय

किसान का नामः– श्रीमती असर्फी देवी
पति का नाम :– श्री राजबंश सिंह
पूरा पताः– ग्राम– ओरगाई, पोस्ट–ओर्रा,
पंचायत– पढ़ौती, प्रखण्ड– भगवानपुर,
जिला कैमूर (भभुआ)
मो0 न0:– 6202628188
पंजीकरण संख्याः– 2331455295539
खेती योग्य भूमि (हे0में0):– 05 एकड़
सिंचित क्षेत्र (हे0 में0):– 3 एकड़
असिंचित क्षेत्र (हे0 में0):– 0 एकड़
किसान का प्रकार :–सिमांत
(स्वयं सहायता समूह / कृषक हित समूह/ खाद्य सुरक्षा समूह (महिलाओं के लिए) किसान उत्पादन संगठन के सदस्य/व्यक्तिगत अगर समूह/ संगठन के सदस्य हैं तो समूह का नाम , निबंधन करने वाली संस्था का नाम, निबंधन संख्या एवं तिथि का उल्लेख करें। किसान विकास समिति ओरगाई, आत्मा कैमूर, निबंधन संख्या– KAI/15-16/172 fnukad– 02.08.2016

मैं श्रीमती असर्फी देवी पति– श्री राजबंश सिंह ग्राम– ओरगाई, पोष्ट– ओरा प्रखण्ड भगवानपुर जिला कैमूर की महिला कृषक हुँ। मेरा जन्म एक साधारण किसान परिवार में हुआ मै अपने माता पिता में सबसे बडी होने के कारण परिवार की सभी जिम्मेवारीयॉ मेरे उपर थी। मै पढाई के साथ–साथ अपने पिता जी के साथ गॉव पर जो थोडा बहुत खेती योग्य भूमी थी उस पर सब्जी एवं खाद्यान फसल उगाने में उनकी मदद करती थी। मेरे 8वीं पास होने के पश्चात् मेरी शादी सन् 1972 में ओरगाई ग्राम निवासी श्री राजबंश सिंह के साथ कर दी गई। जहॉ मै सबसे बड़ी बहु के रूप मे आई जिसके कारण यहॉ भी मेरे उपर घर की सारी जिम्मेदारीयॉ आ गई। उसके पश्चात मुझे सात पुत्री एवं एक पुत्र पैदा हुए। जिसका लालन– पालन करना मेरे लिए काफी दुर्लभ होने लगा था। मेरे पास खेती योग्य भूमी मात्र 03 एकड़ ही थी। जिसमें वैज्ञानीक तरिके से खेती नहीं होती थी और किसी भी प्रकार का तकनीकी ज्ञान नहीं होने के कारण खेती में मुनाफा नहीं हो पा रहा था। जिसकी वजह से मेरे घर की आर्थिक स्थिती काफी दयनीय हो गई थी।

जैसा की हम पूर्व के भॉती ही परम्परागत तरीके से खेती करते आ रही थी लेकिन हमारी आर्थीक स्थिती में कोई सुधार नहीं हो पा रहा था इसी बीच हमारे गॉव में आत्मा योजना की एक बैठक बुलाई गयी। जिसमें हमारे प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी कार्यालय से कुछ लोग आये हुए थे जिसमें आत्मा योजना के बारे में प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक/सहायक तकनीकी प्रबंधक के द्वारा कृषक हित समूह, प्रशिक्षण, परिभ्रमण, श्च्च् किसान पुरस्कार, किसान पाठशाल आदि योजना के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया एवं किसानों को क्या लाभ प्राप्त होता है इसके बारे में उनके द्वारा बताया गया। साथ ही वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के बारे में भी बताया गया। फिर मैने बैठक में भाग लेने के पश्चात् यह निश्चय कर ली की आत्मा द्वारा जुडकर समूह का निर्माण करूँगी। फिर मैने गॉव के लोगो से मिलकर समूह निर्माण हेतु सदस्य को तैयार किया उसके प चात् प्रखण्ड आत्मा के पदाधिकारी को समूह निर्माण हेतु अपने गॉव बुलाकार समूह का निर्माण कराया। जिसका पंजीकरण आत्मा कैमूर में सन् 2015–16 में पंजीकरण कराया । जिसके पश्चात राष्ट्रीयकृत बैंक में खाता खोलवाया इसके बाद हमको प्रशिक्षण हेतु उद्यान महाविद्यालय नुरसराय नालंदा तीन दिवसीय प्रशिक्षण के लिए भेजा गया जिसमें सब्जी, फल, फुल की खेती के बारे में वैज्ञानीकों द्वारा विस्तार पुर्वक बताया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद गॉव पर जो खेती योग्य भूमी थी उसके कुछ हिस्सों में मैने वैज्ञानीक विधि से सब्जी का खेती करना प्रारम्भ

किया। जिससे मझे काफी फायदा समझ में आने लगा। इसके बाद मैने 2 एकड़ भूमी में आलु की खेती के साथ–साथ चना एवं मुली की खेती एक साथ किया जिससे मुझे काफी मुनाफा प्राप्त हुए मेरे परीवार कि आर्थीक स्थिती धीरे–धीरे काफी सुधार होने लगा। जिसे गॉव के लोग यह देख कर हैरान होने लगें। फिर मुझे 21 एवं 22 दिसम्बर 2017 में नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड आनन्द गुजराज भेजा गया। जहॉ पर मुझे दुग्ध उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् मेरी इच्छा खेती के साथ–साथ पशुपालन करने की भी होने लगी एवं मेरे द्वारा 1 गाय एवं 1 भैंस खरीद कर दुग्ध उत्पादन करना शुरू किया। जिससे मुझे काफी मुनाफा हुआ और मेरे परिवार की स्थिति और भी सुधरने लगी। इसके बाद मुझे आत्मा द्वारा झटज्ञ अधौरा सन् 2018 में मशरूम उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण हेतु भेजा गया। जहॉ पर मुझे मशरूम उगाने का वैज्ञानीक तरीका विस्तार पुर्वक बताया गया। प्रशिक्षण प्राप्त कर घर आने के पश्चात् उनके बताये गये तरीकों से मैंने 100 बैग मशरूम लगाना प्रारम्भ किया। जिससे मुझे अच्छा उपज प्राप्त हुआ जो कि अच्छे मुल्य पर बाजार में बिक गया जिससे मुझे कम खर्च में ज्यादा मुनाफा प्राप्त हुआ। फिर मैने मशरूम की खेती ज्यादा मात्रा में करना प्रारम्भ कर दिया। जिसके पश्चात् मेरे द्वारा जैम, जेली, मुरब्बा, एवं अचार बनाकर गॉव एवं बाजार में अच्छे मुल्य पर बेचना प्रारम्भ कर दिया जिससे मुझे मुनाफा होने लगा और मेरी आर्थिक स्थिती और मजबुत हो गई। फिर मुझे बामेती, पटना में प्रशिक्षण में भाग लेने एवं कार्यक्रम में उदघाटन करने का मौका मिला साथ ही जिला स्तर एवं प्रखण्ड स्तर पर भी मैने कई कार्यक्रमों में भाग लिया जिसके चलते मेरे कार्यो का क्षेत्र में काफी चर्चा है लोग मेरे यहॉ खेती के गुण सिखने के लिए आते रहते है। आज के दिन मेरी गिनती अपने क्षेत्र में महिला उद्यमी के रूप में जानी जाती है। मैं एक महिला होते हुए भी नयी–नयी तकनीक से खेती करती रहती हुॅ। आज मेरा परिवार काफी खुश हैं बच्चों को अच्छी स्कूली शिक्षा मिल रही है और मेरी आमदनी हर वर्ष लगभग लाखों रूपये का हो रहा है। मेरे कार्यो से प्रभावित हो कर कई विभाग के लोग मेरे यहॉ मिलने आते रहते हैं साथ ही किसी भी प्रकार की कठिनाई होने पर प्रखण्ड आत्मा कार्यालय के पदाधिकारी एवं कर्मी द्वारा मेरे घर आकर खेती से संबंधित सुझाव दी जाती है। जिससे मुझे काफी मदद मिलती है और मुनाफा होता है। आत्मा, कैमूर एवं कृषि वैज्ञानिक। स्थानीय स्तर पर सब्जी की खेती का रकबा दो गुना बढ़ गया यह देखने को मिला की कृषि कार्य में उत्तम क्रिया कलाप आत्मा का सहयोग, कृषि वैज्ञानिक के द्वारा तकनीकी जानकारी के हस्तानांतरण से प्रभावित हो कर किसान विकास समिति के सदस्यों के अलावा आस–पास के अन्य कृषक भी उसी प्रणाली का लाभ उठा रहें है। तथा छोटे एवं बडे आकार के सभी भूमी में सिर्फ सब्जी उत्पादन, पशुपालन, मशरूम उत्पादन हो रहा है। जिस कारण उपभोक्ता को रसायन रहित ताजा सब्जी दुध एवं मशरूम उपलब्ध हो पा रहा है।

27 शशि कर रहे सब्जी एवं मक्का का उत्पादन

परिचय

नाम : शशि भूषण सिंह
चांदी, रानीपतरा, पूर्णिया, बिहार
मोबाइल नंबर : 8083782919

सब्जी उत्पादन/मक्का उत्पादन/ 500-600 क्विटल प्रति एकड़

हिमालय मक्का उत्पादक स्वयं सहायता समूह, ग्राम-चांदी, पंचायत-चांदी, रानीपतरा पूर्णिया

किसान पुरस्कार, जिला एवं राज्य स्तर पर तरकारी महोत्सव में पुरस्कार प्राप्त, कई किसान मेला में पुरस्कार विजेता, प्रत्यक्षण, किसान पाठशाला का संचालन, प्रशिक्षण, परिभ्रमण, आत्मा योजना, कृषि विज्ञान केन्द्र, एवं भोला पासवान शास्त्री कॉलेज के प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण के अर्न्तगत लाभार्थी।

ऑरगेनिक फर्टिलाईजर एवं पेस्टीसाइट से आलू, गोभी, बैगन, मक्का, गेहूँ, मिर्च, कद्दू, करैला, टमाटर की खेती, किया गया। प्रशिक्षणोपरान्त उपरोक्त सभी क्रियाकलापो का वैज्ञानिक विधी से संवर्द्धन तत्पष्चात विक्रय से लाभ अर्जन। स्थानीय स्तर पर 20 से 25:अधिक उपज की प्राप्ति, खेती की लागत मे बचत। स्वयं की सभी सब्जी का नर्सरी उत्पाद से लाभ की प्राप्ति। वर्ष भर मे लगभग 600 क्वी0 की बिक्री की जाती है जिससे अच्छा मुनाफा प्राप्त हो जाता है।

वैज्ञानिक विधी से सब्जी उत्पादन तकनीक को ध्यान मे रखते हुए कद्दू, बैगन, फूल गोभी, बन्धागोभी, बीट, बरबट्टी, मूली गाजर की तुडाई कर ली जाती है उसके बाद स्थानीय बाजार मे आसानी से विक्रय के लिए

उपलब्ध कराया जाता है।

सब्जी उत्पादन-250 से 300 क्वी0 (01 हे०)

सब्जी उत्पादन से 3,50,000.00 रू0 गेहू एवं मक्का उत्पादन से 60,000.00 हजार तक (लगभग)

खडी फसलो मे आवश्यकतानुसार 04 छिडकाव प्रति सीजन।

15,000.00 से 20,000.00 रूपया के लगभग कुल 5 छिडकाव मे।

गोबर खाद का कम्पोस्ट तैयार किया जाता है एवं उसी का प्रयोग कर फलन अधिक लिया जाता है।

सभी उत्पादन उतम क्वालिटी के प्राप्त होते है, जिससे स्थानीय बाजार मे विक्रय खरीदारो को आकर्षित होने पर मजबूर होना पडता है समय के साथ अनुभव आधारित खेतो के उत्पाद को भविष्य मे और बेहतर तरीके से उत्पादन किया जा सकेगा।

स्थानीय बाजारो मे अच्छे गुणवता वाले उत्पादो की मांग ज्यादा है इसलिए उत्पादन के पश्चात उत्पाद की विधी हेतु उपज मे लगाये जानेवाले खर्च स्वतः कम हो जाते है और मुनाफा का प्रतिषत बढ जाता है।

आत्मा पूर्णिया की ओर से प्राप्त प्रशिक्षण उपरांत वैज्ञानिक विधि से सब्जी उत्पादन से आय हो जाती है। आत्मा पूर्णिया कार्यालय, से आयोजित प्रशिक्षण, प्रत्यक्षण योजना, एवं किसान पाठशाला के माध्यम से कृषि वैज्ञानिको का मार्गदर्शन काफी प्रभावी एव लाभप्रद सिद्व हो रहा है।

स्थानीय स्तर के लोगो मे एक सफल किसान के रूप मे पहचान मिली है तथा विभगीय स्तर पर भी मेरी राय को रखा जाने लगा है, जिसके कारण मेरे आंत्मविष्वास मे बद्वोतरी आई है। आशा है भविष्य मे मेरे द्वारा अन्य कार्यक्रम को भी अनपाया जाएगा। ताकि आमदनी को और अधिक बढाया जा सके।

28 ऑरगेनिक फर्टिलाईजर से कर रहे परवल की खेती

परिचय

नाम **मयानंद विश्वास**
पता- बनैली, सधुबैली, कसवाए पूर्णियाए बिहार
मो. नंबर 8809708702

सब्जी /मक्का/आलू उत्पादन/ 500-600 क्विटल प्रति एकड़/ क्तपच ंतपहंजपवद सब्जी उत्पादक स्वयं सहायता समूह, ग्राम-बनैली, पंचायत-बनैली, पूर्णिया, किसान पुरस्कार, जिला एवं राज्य स्तर पर तरकारी महोत्सव में पुरस्कार प्राप्त, कई किसान मेला में पुरस्कार विजेता, प्रत्यक्षण, किसान पाठशाला का संचालन, प्रशिक्षण, परिभ्रमण, आत्मा योजना, कृषि विज्ञान केन्द्र, एवं भोला पासवान शास्त्री कॉलेज, पूर्णिया के प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण के अर्न्तगत लाभार्थी।

ऑरगेनिक फर्टिलाईजर एवं पेस्टीसाइट से परवल, आलू, गोभी, बैगन, मक्का, गेहूँ, मिर्च, कद्दू, करैला, टमाटर, ड्रैगन फ्रूट की खेती, किया गया। प्रशिक्षणोपरान्त उपरोक्त सभी क्रियाकलापो का वैज्ञानिक विधी से संवर्द्धन तत्पष्चात विक्रय से लाभ अर्जन। स्थानीय स्तर पर 40 से 45:अधिक उपज की प्राप्ति, खेती की लागत मे बचत। स्वयं की सभी सब्जी का नर्सरी उत्पाद से लाभ की प्राप्ति। वर्ष भर मे लगभग 600 क्वी0 की बिक्री की जाती है जिससे अच्छा मुनाफा प्राप्त हो जाता है।

वैज्ञानिक विधी से परवल सब्जी उत्पादन तकनीक को ध्यान मे रखते हुए कद्दू, बैगन, फूल गोभी, बन्धागोभी, बीट, बरबट्टी, मूली गाजर की तुडाई कर ली जाती है उसके बाद स्थानीय बाजार मे आसानी से विक्रय के लिए उपलब्ध कराया जाता है। परवल का नया पौधा तैयार कर

व्यवसायिक तौर पर विक्रय किया जाता है।

सब्जी उत्पादन-300 से 400 क्वी0 (01 हे०)

सब्जी उत्पादन से 3,50,000 रू0 गेहू एवं मक्का उत्पादन से 65,000.00 हजार तक (लगभग)

खडी फसलो मे आवश्यकतानुसार 04 छिडकाव प्रति सीजन।

15,000.00 से 20,000 रूपया के लगभग कुल 5 छिडकाव मे।

गोबर खाद का कम्पोस्ट तैयार किया जाता है एवं उसी का प्रयोग कर फलन अधिक लिया जाता है।

सभी उत्पादन उतम क्वालिटी के प्राप्त होते है, जिससे स्थानीय बाजार मे विक्रय खरीदारो को आकर्षित होने पर मजबूर होना पडता है समय के साथ अनुभव आधारित खेतो के उत्पाद को भविष्य मे और बेहतर तरीके से उत्पादन किया जा सकेगा। स्थानीय बाजारो मे अच्छे गुणवता वाले उत्पादो की मांग ज्यादा है इसलिए उत्पादन के पश्चात उत्पाद की विधी हेतु उपज मे लगाये जानेवाले खर्च स्वतः कम हो जाते है और मुनाफा का प्रतिषत बढ जाता है। आत्मा पूर्णिया की ओर से प्राप्त प्रशिक्षण उपरांत वैज्ञानिक विधि से सब्जी उत्पादन से आय हो जाती है। आत्मा पूर्णिया कार्यालय, से आयोजित प्रशिक्षण, प्रत्यक्षण योजना, एवं किसान पाठशाला के माध्यम से कृषि वैज्ञानिको का मार्गदर्शन काफी प्रभावी एव लाभप्रद सिद्व हो रहा है। स्थानीय स्तर के लोगो मे एक सफल किसान के रूप मे पहचान मिली है तथा विभगीय स्तर पर भी मेरी राय को रखा जाने लगा है, जिसके कारण मेरे आंत्मविष्वास मे बद्वोतरी आई है। आशा है भविष्य मे मेरे द्वारा अन्य कार्यक्रम को भी अनपाया जाएगा। ताकि आमदनी को और अधिक बढाया जा सके।

29 पप्पू ने विदेशों तक पहुंचायी फूलों की सुगंध

परिचय

नाम पप्पू सिंह
पता- गांव विष्णुपुरा, प्रखंड- बिहटा
मोबाइल नंबर - 9939623980

21 सदी में खेती का स्वरूप बदला है। इसी का परिणाम है कि घाटे की माने जाने वाली खेती आज मुनाफे की ओर बढ़ रही है। इसका श्रेय जाता है भारतीय किसान अनुसंधान संस्थान को, जो गांवों में जाकर आधुनिक खेती का विकास हो रहा है. इसी के सहयोग से किसान कृषि क्षेत्र में तरक्की कर रहे हैं। उनमें से ही एक ऐसा किसान है, जिसका नाम है पप्पू सिंह। इन्होंने बीकॉम तक की पढ़ाई की है। बिहटा प्रखंड के विष्णुपुरा गांव में रहते हैं. इनकी गिनती प्रगतिशील किसानों में होती है. ये मदर फ्लोरी कल्चर फार्म हाउस नामक संस्था भी चलाते हैं. इन्हें कई पुरस्कार भी मिल चुके हैं. इनकी नर्सरी को देखने के लिए देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी लोग आते हैं।

ऐसे की खेती की शुरूआत

लगभग 12 एकड़ में फैले फूलों के इनके इस फार्म हाउस में गुलजार, रजनीगंधा डबल एवं सिंगल स्टिक, ग्लाइडोलस ,बेली, एरिका पाम, जरबेरा, कामिनी तथा गेंदा आदि के अलवा खास खस, अश्वगंधा, सर्पगंधा, ब्राह्मी जैसे औषधीय पौधे लगे हैं. इसके साथ ही साइकस के दस पौधे भी हैं. इसका एक पत्ता 20 से 25 रुपये में बिकता है. वर्ड ऑफ पराडाई में पांच वर्षो में फूल आता है इसके एक फूल की कीमत लगभग 150 से 200 रुपये तक होती है. इसके अलावा स्पाइडर लिली आदि फूलों के पत्ते के पौधे भी लगे हैं. ये फूल और पत्ते शादी विवाह में वाहन सजाने के काम में आते हैं. इस मौसम में 50 से 55 हजार रुपये से अधिक की आय वैवाहिक वाहन सजाने से हो जाती है. इसके फार्म हाउस में नींबू, आम में दशहरी, आम्रपाली तथा मल्लिका हैं जो केला एवं पपीते के साथ फल वाली लैकी का एक पौधा भी है जिसकी ऊंचाई लगभग सात फीट की होगी. इस पौधे में वर्ष के दसों महीने फल लगे रहते हैं. उन्होंने ने कहा कि 15 एकड़ में खेती करते हैं उसमें से ढाई एकड़ में नर्सरी की खेती होती है शेष में धान व गेंहू की खेती की जाती है. नर्सरी से ढाई लाख की आमदनी होती है.

ऐसे मिली सफलता

इसके लिए गांव की पगडंडियों से होते हुए खेती में सफलता की इस ऊंचाई पर पहुंचे का यह रास्ता आसान नहीं था. क्योंकि ये दवा व्यवसाय से जुड़े थे. इन्होंने अपने पहले के व्यवसाय को छोड़ कर खेती की नयी राह पर चलना तो कठिन था ही साथ अपनों का साथ भी छूटा जा रहा था. इन्होंने अपने इस व्यवसाय को छोड़ सब्जी की खेती की, उसके बाद सुगंधित एवं औषधीय पौधों की खेती ओर रूख किया. इसके साथ ही गुजरात, मध्यप्रदेश के लावा सिक्किम ,गंगटोक, कलिंपोंग तथा मेघालय, हिमाचल प्रदेश, पुणो, कोलकाता, उत्तर प्रदेश के बाराबंकी तथा लखनऊ आदि स्थानों में जाकर पौधे, बीज एवं बाजार का जायजा लिया. इसके बाद सब्जी तथा सुगंधित एवं औषधीय पौधों की खेती करते हुए आज फूलों की खेती कर सफलता के इस मुकाम तक पहुंचे. इस भ्रमण के दौरान इहें विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार के अच्छे बुरे अनुभव प्राप्त हुए. इस व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने में इन्हें लगभग 40 से 50 हजार रुपया खर्चा करना पड़ा. कोलकाता के बाजार से गुलाब एवं रजनीगंधा के हजारों पौधे तथा सकर्स(कंद) लाये जो बड़े ही घटिया किस्म के निकले जिससे उत्पादन में घाटा उठाना पड़ा. वाराणसी से भी कुछ फूलों के पौधे एवं बीज लाये.

सन, 2001 में सब्जी उसके बाद औषधीय पौधों तथा फूलों की खेती की शुरूआत करने पर गांव वालों तथा अपने भाइयों तक इन्हें उपेक्षित के नजरों से देखते थे. परंतु कुछ वर्षो में ही मन से की गयी खेती की सफलता को देख आसपास के कई किसान इसनके सहयोगी बन गये. आज वकील सिंह, ब्रजकिशोर सिंह, शिवजी सिंह, बक्सर, रोहतास तथा छपरा जिलों के कई किसान

रजनीगंधा,बेली तथा ग्लाइडोलस की खेती कर रहे हैं. इनमें से कई फूल उपादक किसान है जो इन्हीं के रास्ते पर चलकर अपना विकास कर रहें हैं. पप्पू सिंह वर्मी कम्पोस्ट मुर्गी की बीट ,सरसों एवं अरंडी की खली तथा हड्डी के चूर्ण पटना अथवा कोलकाता से लाते हैं. इनकी कीमत 25 से 35 रुपये प्रि किलो पड़ती है. इनका उपयोग फूलों की खेती में करते हैं. आवश्यकता पड़ने पर ही यूरिया, पोटाश, जिंक सल्फेट तथा सुपर फास्फोरस आदि रासायनिक खादों एवं दवाओं का उपयोग वैज्ञानिकों की सलाह पर करते हैं इसके अलावा स्वनिर्मित कीटनाशी के उपयोग पर विशेष ध्यान देते हैं. फूल की खेती में पप्पू के साथ 12 लोग काम करते हैं. जिनमें लगभग आठ से अधिक महिलाएं हैं जो फूल काटने से लेकर माला गूंथने का कार्य करती है. चार पुरुष सदस्य अधिक मेहनत लगने वाले कार्य को करते हैं.

वैज्ञानिक सहयोग से बढ़े आगे

इनका फूलों की सफलता का राज है वैज्ञानिकों का भरपूर सहयोग. कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के वैज्ञानिक एचपी मिश्र से तकनीकी ज्ञान, कृषि विज्ञान केंद्र,आरा के डॉ पीके द्विवेदी का सहयोग रहा. बागवानी का मिशन भारत सरकार की ओर से ग्लाइडोलस,रजनीगंधा तथा गुलाब के प्लांटिंग मेटेरियल के साथ 60 हजार रुपये की सब्सिडी दिया. राज्य कृषि विभाग द्वारा सिक्किम तथा प्रगति मैदान दिल्ली में लगने वाली प्रदर्शनी में भेजा जाना विशेष रूप से उपयोगी रहा . सौ-सौ के ग्रुप में तीन बार शाहाबाद क्षेत्र के किसानों के ग्रुप को केबीके आरा द्वारा इनके कृषि फार्म में शिविर लगाकर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया.

किसान पंडित पुरस्कार से सम्मानित

पप्पू सिंह सोनुरा मेला 2007 में लगी कृषि प्रदर्शनी में किसान उद्यान पंडित से सम्मानित किये गये जिसमें छह हजार रुपये तथा प्रशस्ति पत्र मिला. इसके अलावा भी उन्हे राज्य व जिला स्तरीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं. आज पप्पू सिंह को फूलों की खेती से लगभग ढाई से तीन लाख रुपये तक की आय हो रही है. उन्होंने कहा कि गांव से निकल कर खेतों की पगडंडियों से होता हुआ जो रास्ता सफलता की ऊंचाई तक ले जाता है उस रास्ते का साथी यदि आज का वैज्ञानिक हो तो आसानी से खेती की सफलता का एक नया अध्याय लिखा जा सकता है. उन्होंने कहा कि आस्ट्रेलिया, अमेरिका व अन्य देशों के लोग नर्सरी को देखने आते रहते हैं. और काफी प्रशंसा करते हैं.

30 जिज्ञासु पॉली हाउस में उगा रहे शिमला मिर्च

परिचय

नाम- **नीरज सिंह**
गांव-बखरी
प्रखंड- सुरसंड
जिला- सीतामढ़ी
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट कर की प्रशंसा

बिहार के सीतामढ़ी जिले के डुमरा प्रखंड के पमरा में नीरज सिंह जैसे किसान 2000 वर्गफीट के पॉली हाउस में शिमला मिर्च उपजा रहे हैं और साथ में मछली पालन भी। वहीं सुरसंड प्रखंड की कुम्मा पंचायत के बखरी गांव में जिज्ञासु सिंह की लहलहाती फसल देखकर मन खुशी से झूम उठता है। आज जिज्ञासु अपने गांव में रहकर केले और शिमला मिर्च की खेती करते हैं। जिज्ञासु सिंह की जिज्ञासा ने वैज्ञानिक पद्धति से खेती की नई इबारत लिख डाली है। कोरोना काल में परंपरागत खेती को मॉर्डन व आर्गेनिक खेती के रूप में अपनाया है। जिज्ञासु खुद अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं और सरकारी योजनाओं की मदद से किसानों की आय दस गुनी करना चाहते हैं। जिलाधिकारी अभिलाषा कुमारी शर्मा ने जिज्ञासु सिंह से मिलकर उन्हें बधाई दी और प्रशिस्त पत्र देकर सम्मानित भी किया।वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनकी खेती की प्रशंसा ट्वीट कर की। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार सीतामढ़ी के जिज्ञासु सिंह खेती में अद्भुत कार्य कर रहे हैं वह हर किसी में नई ऊर्जा भर देने वाला है। खेती से पहले जिज्ञासु एक बडे प्राइवेट फॉर्म में काम करते थे। खरबूज उगाने से हुआ नुकसान तो बदला खेती का तरीका कुम्मा के किसान जिज्ञासु सिंह सरकार की कृषि प्रोत्साहन योजना से सौर उर्जा से चलने वाले स्प्रीकलर व कृत्रिम बारिश करने वाली मशीनरी का इस्तेमाल खेती में कर रहे हैं। उनका कहना है कि कोरोना काल से पहले मैंने खरबूज की खेती की थी जिसमें अच्छा-खासा खर्च किया था। इसी बीच लॉकडाउन लग जाने से तैयार माल बिक नहीं पाया। खरबूज का बडा बाजार पटना व मुजफ्फरपुर में था। लॉकडाउन में खरबूज बाजार तक पहुंच नहीं पाया जिससे काफी नुकसान हुआ। मगर, इसी आपदा को हमने अवसर के रूप में बदल डाला। होली के ऐन मौके पर एसडीपीओ पुपरी, एएसपी सीतामढ़ी, बीडीओ सुरसंड, सीओ सुरसंड एवं सुरसंड थाना प्रभारी किसान जिज्ञासु सिंह की खेती-किसानी देखने उनके पॉली हाउस में पहुंचे। उनकी समेकित खेती की प्रशंसा की। प्रति एकड 80 हजार रु पये खर्च पर ढाई लाख रु पये का मुनाफा डुमरा प्रखंड के पमरा के नीरज सिंह बताते हैं कि प्रति एकड 80 हजार रु पये खर्च पर ढाई लाख रु पये का मुनाफा कमाने का दावा करते हैं। एक एकड में 12 हजार शिमला मिर्च के पौधे लगते हैं। प्रति एकड खेती में 75 से 80 हजार रु पए खर्च होता है। किसानों की आय में वृद्धि की संभावनाओं, आधुनिक कृषि को प्रोत्साहन एवं कृषि कल्याणकारी योजनाओं का फीडबैक लेने डीएम अभिलाषा कुमारी शर्मा भी उनके पॉली हाउस पहुंचीं तो खेती-किसानी देखकर गदगद हो उठीं। डीएम के साथ गए तमाम अफसरों ने भी नीरज सिंह की प्रशंसा की और दूसरों से भी उनका अनुसरण करने की अपील की। किसान नीरज कुमार सिंह ने बताया कि जिला उधान विभाग के सहयोग से पॉली हाउस का निर्माण किया है। योजना के अंतर्गत विभाग द्वारा पॉली हाउस के लिए 75 फीसद का अनुदान मिला। जिससे शिमला मिर्च की खेती की। पूर्व में भी अच्छी आय प्राप्त हुई है। उनके दो बच्चे पढ़-लिखकर किसानी में पूरा सहयोग दे रहे हैं। किसान नीरज ने अपने तालाब में आधुनिक तरीके से मछली बीज का पालन भी डीएम को दिखलाया। नीरज ने पॉली हाउस की समस्त गतिविधियों पर नजर रखने के लिए सीसी कैमरे लगवा रखे हैं। यह देख डीएम ने कृषि पदाधिकारी को निर्देश दिया कि नीरज सिंह जैसे किसानों को न सिर्फ प्रोत्साहित करें बल्कि, उन्हें केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ भी दिलवाएं।

31 हरेश ने 100 से अधिक आम के लगाए पौधे

परिचय

नाम- हरेश प्रसाद सिंह
पता - चरपखरा गांव, चकाई बाजार

बिहार के जमुई जिला वैसे तो चकाई की मिट्टी को कंकडीली, ऊसर एवं बागवानी के लिए अयोग्य बताने वाले हजारों में मिल जाएंगे लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने परिश्रम के बल पर इसी भूमि को स्वर्ग बना दिया है। ऐसे ही एक किसान हैं चकाई बाजार निवासी हरेश प्रसाद सिंह। उन्होंने लगभग 10 एकड भूमि पर एक हजार से भी अधिक विभिन्न तरह के फलदार एवं इमारती लकड़ियों के पौधे लगाया है। चकाई मुख्यालय से लगभग पांच किलोमीटर पूर्व में अवस्थित चरपखरा गांव में विस्तृत क्षेत्र में इनकी विशाल बगिया है। साथ ही 80 वर्ष से भी अधिक उम्र में भी पौधारोपण एवं खेती के प्रति जज्बे को देखकर लोग दंग हैं। वे बताते हैं कि रोज सुबह बाग में पहुंचकर घंटों इन वृक्षों के बीच समय व्यतीत करते हैं। फलदार वृक्ष लगाने का शौक शुरू से रहा है। अपने लिए एवं आसपास के लोगों को फल उपलब्ध हो पाए। ये पूछे जानें पर की इन फलदार वृक्षों से कितनी आमदनी हो जाती है तो उन्होंने कहा कि फलों को बेचता नहीं हूं, बल्कि इसका उपयोग स्वजनों, मित्रों एवं आसपास के गांवों के लोगों के लिए होता है। वहीं आसपास के ग्रामीण बताते हैं कि हरेश बाबू हम लोगों को मुफ्त में आम उपलब्ध कराते हैं। बदलें में उन्हें आश्वासन देना पडता है कि मैं भी फलदार पौधे लगाऊंगा। यही कारण है कि आसपास के लोग इस बगिया की रखवाली अपनी संपित्त समझकर करते हैं। अभी इनके उद्यान में लगभग एक हजार आम के वृक्ष हैं जिसमें मालदह, मिल्लका, कृष्णभोग, बंबइया, आम्रपाली आदि हैं। साथ ही 350 से अधिक अमरूद, 50 अनार, पांच जामुन, 50 लीची, दर्जनों खजूर सहित अन्य फलदार वृक्ष उद्यान की शोभा बढ़ा रहा है। यही नहीं, यहां शीशम, साल, मलेशियन सखुआ भी दर्जनों की संख्या में है। हरेश बाबू न केवल पौधारोपण करते हैं, बल्कि सब्जियों एवं अन्य फसलों की खेती भी करते हैं, जिसके कारण आसपास के दर्जनों लोगों को रोजगार भी उपलब्ध हो जाता है। कुल मिलाकर पौधारोपण के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का शानदार उदाहरण यहां देखने को मिल जाता है। जल संरक्षण मिशन में सारथी बने अजय को मिला सम्मान बक्सर जिले में भूगर्भ जलस्तर के नीचे जाने से पानी की समस्या उत्पन्न होने लगी है। डुमरांव में एक शख्स ऐसा भी है, जो पानी के मूल्य को समझते हुए एक-एक बूंद जल को संरिक्षत करने के लिए प्रयासरत है। सरकारी स्तर पर इस संकट को खत्म करने की ढेर सारी कोशिशें हुई लेकिन इलाके में जिस युवक की पहल को क्र ांतिकारी कदम माना जाता है, वह हैं जल-पुरु ष के नाम से चर्चित सामाजिक कार्यकर्ता अजय राय। इनका कहना है कि धरती की कोख में इतना पानी रहे कि जिदगानी चलती रहे। इसके लिए हर किसी को सोचना ही नहीं कुछ करना भी होगा। पानी को संरिक्षत करने के इस शख्स के जुनून का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि रास्ते में यदि उन्हें किसी टोंटी से पानी बहता दिखाई देता है तो अपनी गाडी रोककर उसे बंद कर देते हैं। इतना ही नहीं, वह स्कूलों व शिक्षण संस्थानों में घूम-घूमकर बच्चों को जल संरिक्षत करने के फायदे भी बताते है। फिलहाल बूंद-बूंद जल को सहेजने की मुहिम में डुमरांव का अजय न सिर्फ आइकॉन बने बल्कि अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का श्रोत भी है। पढ़ने लिखने की उम्र में बूंद-बूंद बचाने की बडी सोच रखने वाले यह युवक अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का श्रोत बना है। दरअसल जहां भी सार्वजनिक नलके से पानी टपकते देखते हैं, अपने पैसे से उसमें टैप लगा पानी की बबार्दी को रोकते हैं।

विनीता ने 10 कट्ठा में लगाए हैं 22 हजार पौधे

गया में जीविका समूह से जुड़ी महिलाएं पर्यावरण संरक्षण में भी अपना योगदान दे रही हैं। गया जिले में अनेक दीदियों ने अपनी निजी जमीन पर नर्सरी बना रखी है। इन नर्सरी से इन्हें आमदनी तो होती ही है। साथ ही आसपास के लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक भी करती हैं। गया जिले के खिजरसराय प्रखंड के कुतलूपुर पंचायत अंतर्गत जोलह बिगहा की रजिया देवी के यहां सबसे बड़ी नर्सरी है। रजिया बताती हैं कि डेढ़ एकड़ जमीन पर उनकी नर्सरी है। जिनमें अभी ढाई लाख पौधे तैयार हो रहे हैं। इनमें सागवान, महोगनी, शीशम, आंवला, अमरूद, करंज है। अभी ये कटहल व महुआ का भी बीज नर्सरी में डालने जा रही हैं। रजिया ने बताया कि पिछले साल मनरेगा को 50 हजार व वन विभाग को 26 हजार पौधे उपलब्ध कराए थे। पिछले साल ढाई लाख तक की आमदनी हुई थी। इस साल भी अच्छी आमदनी की उम्मीद है। खिजरसराय प्रखंड के शिसवर पंचायत अंतर्गत पहाड़पुर गांव में मां वैष्णो देवी स्वयं सहायता समूह से विनीता कुमारी जुड़ी हुई हैं। ये ग्रेजुएट हैं। इन्होंने अपनी नर्सरी से पिछले साल 21 हजार पौधे विभाग को उपलब्ध कराए थे। तब उन्हें 2.20 लाख रु पये मिले थे। विनीता ने पौधों की नर्सरी को अच्छी तरह से चलाने के लिए जीविका से प्रशिक्षण भी लिया है। वह बताती हैं कि इससे जहां रोजगार भी मिला है वहीं आसपास के लोगों को अब पौधा खरीदने के लिए दूर शहर तक नहीं जाना पड़ता है। आसपास के गांव वाले भी उनके इलाके में ही नर्सरी बन जाने से खुश हैं। इनकी नर्सरी में अभी सीसम, महोगोनी, अमरूद, आंवला, करंज तैयार है। हर दिन सुबह में अपनी नर्सरी में झरना से पानी देती हैं। नर्सरी की तकनीक की पूरी जानकारी विनीता को है। वे बताती हैं कि हर दिन दो से तीन घंटा नर्सरी में समय देना पड़ता है।

32 बागवानी लगाकर लोगों के लिए नजीर बन रहे हैं दुबौलिया के केशव

परिचय

नाम- **केशव कुमार**
गांव- दुबोलिया
प्रखंड- मझौलिया
जिला- पश्चिम चंपारण

बीस वर्ष पूर्व बागवानी से जुड़े अब प्रति वर्ष ले रहे अच्छी आमदनी। केशव कहते हैं कि एक बार बागवानी लगाएं और कई पीढ़ियों तक लेते रहें लाभ। सच्चे मायने में प्रकृति की पूजा पौधरोपण ही है। इसमें अच्छे पौधे लगाकर हम अपनी जीवन की प्रोफाइल ही बदल लेते हैं।

प्रकृति के संबंध में यह बात ठीक ही कही गई है कि इससे शाश्वत लगाव रखने वाला कभी खाली नहीं रहता है। प्राकृतिक स्रोत पेड़ पौधे हमसे लेते कुछ नहीं है, अपितु इससे हमें सदा मिलता ही रहता है। सच्चे मायने में प्रकृति की पूजा पौधरोपण ही है। इसमें अच्छे पौधे लगाकर हम अपनी जीवन की प्रोफाइल ही बदल लेते हैं। अच्छी आमदनी के चलते हमारा भविष्य ही सुरक्षित हो जाता है। प्रकृति का एक सच्चा पुत्र बागमवानी लगाकर न सिर्फ अपनी बल्कि अगली पीढ़ी के लिए आर्थिक आधार बना लिया है। मझौलिया प्रखंड के दुबौलिया गांव का केशव कुमार सिंह आज से 20 वर्ष पूर्व बागवानी से यह सोंचकर जुड़े कि इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ हमारा भविष्य भी सुरक्षित होगा। उन्होंने वर्ष 2000,2001 एवं 2002 में बागवानी पोधों के रूप में जर्दा एवं मालदह के पौधे लगाए। तीन वर्षो तक उन्होंने बागवाली वाली खेत में धान व गेहूं की भी खेती की। चैथे वर्ष से उन्हें बागवानी से भी आमदनी मिलने लगी। पांचवें वर्ष में उन्हें पांच एकड़ की बगीचे से ढ़ाई लाख रुपये का मुनाफा हुआ। आज वे इस बगीचे से पन्द्रह लाख रुपये से अधिक मूनाफा कमा रहे हैं। प्रगतिशील किसान श्री सिंह के अनुसार बागवानी एक ऐसा व्यवसाय है, जिसमें एक बार पौधा लगाने के बाद बहुत कम खर्च में प्रति वर्ष लाभ मिलता रहता है।

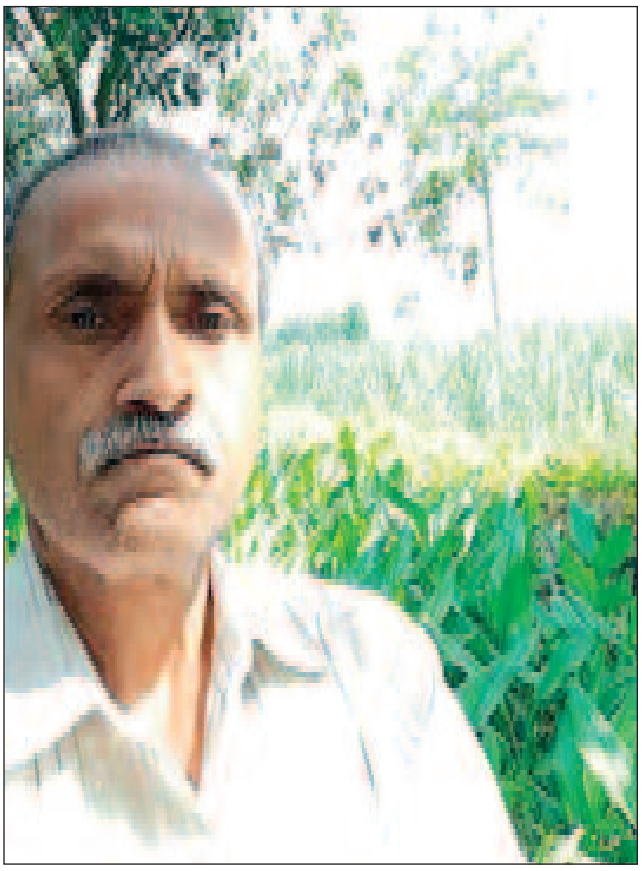

पेड़ों की बेहतर तरीके से देखभाल एवं रख-रखाव के लिए पूरे इलाके के किसानों के लिए नजीर बने हुए हैं।

वर्ष 2008 में आईसीएआर, नई दिल्ली से ले चुके हैं प्रशिक्षण बागवानी से जुड़ाव होने के कारण प्रगतिशील किसान केशाव ने वर्ष 2008 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पूसा रोड, नई दिल्ली से प्रशिक्षण हासिल की। इस प्रशिक्षण से उन्हें आम की बगीचे की देखभाल के लिए बेहतर जानकारी मिली। इतना ही नहीं खेती और बागवानी के क्षेत्र में उन्होंने औषधीय पौधों के लगाने के लिए कई अनुसंधान केन्द्र से प्रशिक्षण ली। सीमैप, लखनऊ से प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने आम की बगीचे में मेंथा की इंटर क्रापिंग शुरू की। श्री सिंह कहते हैं कि अन्तवर्ती फसलों से बागवानी में अलग से आमदनी होती है। इतना ही नहीं उन्होंने सेंटल डेयरी रिसर्च इंन्स्टीच्यूट, करनाल, हरियाणा से पशुपालन के क्षेत्र में जानकारी हासिल की। प्रगतिशील किसान के अनुसार यदि हम जैविक पद्धति से खेती करते हैं, तो इसके लिए हमें पशुपालन से भी जुड़ा रहना होगा। इसके अलावा बागवानी अनुसंधान केन्द्र, सोलन, हिमाचलप्रदेश, आलु अनुसंधान केन्द्र, खुफरी, हिमाचल प्रदेश से आवश्यक प्रशिक्षण लेते रहे हैं।

श्री सिंह कहते हैं कि अन्तवर्ती फसलों से बागवानी में अलग से आमदनी होती है। इतना ही नहीं उन्होंने सेंटल डेयरी रिसर्च इंन्स्टीच्यूट, करनाल, हरियाणा से पशुपालन के क्षेत्र में जानकारी हासिल की। प्रगतिशील किसान के अनुसार यदि हम जैविक पद्धति से खेती करते हैं, तो इसके लिए हमें पशुपालन से भी जुड़ा रहना होगा। इसके अलावा बागवानी अनुसंधान केन्द्र, सोलन, हिमाचलप्रदेश, आलु अनुसंधान केन्द्र, खुफरी, हिमाचल प्रदेश से आवश्यक प्रशिक्षण लेते रहे हैं।

33 पॉलीहाउस में कर रहे उन्नत विधि से शिमला मिर्च और खीरा की खेती

परिचय

नाम : मो० हसनैन
पिता का नाम– मो० सालिन हुसैन
पता : ग्राम प्रमुखारा, पंचायत प्रमुआरा प्रगसाईन पोस्ट पमसाईन.
थाना– अलीनगर प्रबद्ध अलीनगर, जिला–दरभंगा (बिहार)।
मोबाइल नं०– 9162718406
खेती योग्य भूमि (में) 2 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (O) 2 हेक्टेयर
असिचित क्षेत्र (0) शून्य ठ. किसान का प्रकार व्यस्मित

सफलता की कहानी के पूर्व का संक्षिप्त विवरणरू में अलीनगर प्रखंड के पंचायत प्रमुआरापगसाईन ग्राम प्रमुआरा निवासी स्व० तालिब हुसैन के पुत्र मो० हरानैन में तीन भाइयों में सबसे छोटा हूँ। मेरे पिता पेशे से लघु किसान थे में अपने पिता का छोटा बेटा होने के कारण अपने पिता के साथ खेती का कार्य और पढ़ाई करता रहा लेकिन घर की आर्थिक स्थित मजबूत नहीं रहने के कारण मेरी शिक्षा केवल इण्टरमीडिएट तक ही हो पाया। पढ़ाई खत्म होने बाद में अपने खेती के कार्य में लगा रहा सन् 2003 में मेरी शादी कर दी गयी। शादी के बाद मुझे कुछ ज्यादा परेशानी झेलनी पढ़ी लेकिन पत्नी की शिक्षा स्तर ठीक रहने के शिक्षिका के रूप में चयन हो गया। इसके बाद घर की स्थिति धीरे–धीरे सुधरने लगा कुछ कृषि से आमदनी और पत्नी की सैलरी से घर चलाना आसान होने लगा। पत्नी के शिक्षिका होने के बाद मेरा मनोबल थोड़ा बढ़ा उसके बाद में खेती में ज्यादा मन केन्द्रित किया और वर्ष 2005 में कृषि विभाग से अपना नाता जोड़ लिया फिर में जिला कृषि विभाग में आने जाने लगा विभाग से कुछ–कुछ जानकारी लेकर खेती करता रहा उसके बाद में आत्मा संस्था से 2010 में जुड़ गया, आत्मा संस्था से कुछ दिनो तक जुड़ाव रहने के कारण मुझे बकरी पालन की प्रशिक्षण के लिए बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय से मैं 2012–13 में प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण लेने के बाद में बकरी पालन का मन बना लिया और बकरी पालन शुरू कर दिया लेकिन बकरी का सही तरीका से देख–भाल और मेडिकल की व्यवस्था नहीं होने के कारण में सफल नहीं हो पाया। फिर हमने वर्ष 2014 में कृषि विभाग आत्मा द्वारा इन्दिरा गाँधी सहकारी प्रबंधन संस्था राजाजीपुरम, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से बाग. वानी पर प्रशिक्षण लिया। उसके बाद आत्मा के निर्देशानुसार हमने उद्यान विभाग का दामन थाम लिया और उद्यान विभाग से हमने 1एकड़ में आम की बागवानी करने के लिए कार्यालय में आम का पेड़ लेने के लिए आवेदन किया आवेदन करने के कुछ दिन बाद ही पेड़ हमको मिल गया आम के पेड़ को मेरे द्वारा 01 एकड़ में लगाया गया और जिसमे 70: पेड़ ही लग पाया। बगीचा से मुझे अच्छी आमदनी तो नहीं हो पाया लेकिन ज्ञान बहुत प्राप्त हुआ जिसका मुख्य कारण था कि मेरे द्वारा पेड़ो की देख भाग नहीं हो पाया जब तक किसी पेड़–पौधे व्यक्ति या पशु की देख भाल सही नहीं होगा तब तक हम उससे मुनाफा नहीं ले सकते हमने फिर दोबारा वर्ष 2014 में आत्मा के द्वारा सब्जी

की उन्नतशील खेती पर प्रशिक्षण लिया लेकिन धरातल पर अपने अनुभव और प्रशिक्षण को उतार न सका। इसी क्रम में मैं आत्मा के परियोजना निदेशक (आत्मा) श्रीपूर्णेन्दु नाथ झा से वर्ष 2020 में मुलाकात किया श्रीमान् के द्वारा बताया गया की प्रखंड स्तर पर हमारे प्रखंड तकनीकी प्रबंधक एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक नियुक्त है आप उनके मार्गदर्शन से नई तकनीकी का कार्य कर सकते है। तबसे में श्रीमान् से निरंतर सर्म्पक में बना हुआ हूँ।

हमने प्रखंड स्तर पर आत्मा के पदाधिकारी सहायक तकनीकी प्रबंधक अख्तर अली प्रखंड अलीनगर से बातचीत होने के क्रम में मैं उनको अपने बारे में सारी जानकारी विस्तृत रूप से दिया तो श्रीमान् के द्वारा मुझे मेरी बहुत परांशा की गई की आप इतने दिनों से विभाग से लगाव रखे हुये है आपके पास प्रशिक्षण भी कई क्षेत्र में प्राप्त किये हैं उसके बाद सर ने मुझे पॉलीहाउस लगाने के लिए सलाह दिया गया और उसने शिमला मिर्च की खेती करने को लेकर जागरूक किया गया हृदउपराप्त में उद्यान विभाग में श्रीमान् के बताने के अनुसार मैने पॉलीहाउस के लिए आवेदन कर दिया। एक एकड में पॉलीहाउस लगाने की कुल कीमत 24 लाख की रकम बताया गया उसके बाद मैं सोच में पड़ गया कि 24 लाख की रकम कहाँ से दे सकता हूँ तब श्रीमान् से में मुलाकात कर सारी जानकारी लिया तो श्रीमान् के द्वारा बताया गया कि कसान को केवल 6 लाख की ही रकम लगेगा बाकी शेष राशि उद्यान विभाग के द्वारा ही कम्पनी को दिया जायेगा। उसके बाद विभाग की स्वीकृत मिलने के बाद कम्पनी द्वारा मेरे खेत में 01 एकड़ क्षेत्र में अक्टूबर 2020 में निर्माण कार्य किया गया। उसके बाद हमने पॉलीहाउस में शिमला मिर्च एवं खीरा की खेती 01 एकड़ करने लगा, जिससे मुझे अब पॉलीहाउस के माध्यम से खेती करने पर समान्य विधि से खेती करने पर ज्यादा मुनाफा प्राप्त होने लगा है।

सफलता की कहानी का मुख्य घटक आत्मा दरगंगा का सहयोग सहायक अलीनगर के द्वारा। स्थानीय स्तर पर किसानो के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव पॉलीहाउस का निर्माण कार्य शुरू होते ही गाँव के लोग यह सोचने लगे की खेत में यह क्या किया जा रहा है। इसके अन्दर फसल कैसे लगाया जायेगा और इसमें तो सूर्य की रोशनी भी नहीं सही से पढ़ेगा तो फसल कैसे होगा। देखते–देखते जब फसल लगाया गया तो पौधा तैयार होने के बाद गाँव वाले जा जाकर देखने लगे और कहने लगे की इसके अन्दर पौधा तो बहुत अच्छा विका कर रहा है तो पॉलीहाउस मालिक ने बताया कि इस विधि से खेती करने पर पेड़ पौधा, सुरक्षित रहता है और रोग, कीड़ा, आदि का प्रकोप भी कम होता है। अब यह पॉलीहाउस सब्जी की खेती करने के लिए अलीनगर के किसानों का प्रेरणा स्त्रोत बना हुआ है। आस–पास प्रखंड के कुछ किसान की इसको देखने और इसकी जानकारी ले रहे हैं, यह बात पॉलीहाउस मालिक सह–किसान द्वारा बताया गया।

13. क्षेत्रवार लागत मूल्य, प्राप्त आमदनी एवं शुद्ध आय का विवरण (रूपया में) :–

क0 सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण			अपनाने के बाद का विवरण		
1	2	3	4	5	6	7	8
		प्रक्षेत्र–1	प्रक्षेत्र–2	कुल	प्रक्षेत्र–1	प्रक्षेत्र–2	कुल
1	फसल/क्षेत्र/कार्य का नाम	धान	गेहूँ	–	खीरा	शिमला मिर्च	–
2	फसल मौसम में फसल/उत्पादन की मात्रा(क्वी0में)	21	18	–	120	85	–
3	उत्पाद का बिकी मूल्य दर (रू0/ क्वी0) में	1650	1800	–	1500	4500	–
4	डपादान का मूल्य बीज खाद कीटनाशी,जुताई बुआई,सिंचाई,कटाई, दौनी अन्य	7500	6000	13500	32000	95000	127500
5	मजदूर खर्च (रूपया में)	3500	3000	6500	26000	42000	68000
6	अन्य लागत खर्च(रूपया में)	1000	1500	2500	10000	15000	25000
7	कुल लागत खर्च(रूपया में)	12000	10500	22500	68000	152000	220000
8	शुद्ध आय/बचत (रूपया में)	22650	21900	44550	112000	230500	342500

नोटः– यह आँकड़ा एक एकड़ भूमि में किये गये खेती का है।

34 संजीत उगा रहे कई तरह के पौधे

परिचय

किसान का नाम : **श्री संजीत कुमार**
पिता का नाम : श्री राजनन्दन सिंह
पता रू ग्राम- नरही, पंचायत- बारा, थाना/प्रखण्ड कुर्था, पोस्ट- नरही, जिला- अरवल।
मोबाईल नं0 . **9006836835**
किसान के पास खेती योग्य भूमिरू. 3 एकड़
सिंचित क्षेत्र : 2 एकड़
असिंचित क्षेत्र : 1 एकड़

मैं श्री संजीत कुमार, पिता- श्री राजनन्दन सिंह, ग्राम . नरही, प्रखण्ड . कुर्था, जिला - अरवल का स्थायी निवासी हूँ। मैं अपनी शिक्षा बी0ए0 ;स्नातकद्ध मगध विश्वविद्यालयए गया से पूर्ण किया हूँ। मेरे पास खेती का कुल रकवा 3.12 एकड़ है। जिसमें से मै कुल 1.25 एकड़ रकवा में बाग.बगीचा की खेती करता हूँ। मेरे परिवार में कुल सदस्यों की संख्या 7 है। मैं स्वयं खेती एवं बाग.बगीचों का देखभाल करता हूँ। मरे बगीचों

में विभिन्न प्रकार के बृक्ष लगे हूए है जिसका विवरणी इस प्रकार है । आम के पेड़ों की संख्या : 125 (प्रभेद) दुधिया माल्दह, दसहरी, आम्रपाली, अल्फासों, जर्रदालु, मलिका, हेमसागर, स्र्वण रेखा, सिपिया, गुलाब खास, सुकुल इत्यादी।
अमरूद के पेड़ों की संख्याः 100 (प्रभेद)
साबुदाना के पेड़ों की संख्या. 02
निम्बु के पेड़ों की संख्या . 04
साथ ही बगीचे में ओल (प्रभेद) गजेन्द्र 1 (आम आदी) सागवान : 200 बृक्ष इत्यादी के साथ टपक विधि सिंचाई का स्त्रोत लगा रखा हूँ। मेरे पास एक तालाब भी है जिसमें मत्स्य पालन भी करता हूँए समय.समय पर मैं अपने बाग-बगीचे की साफ.सफाई एवं कीट व्याधि की रोकथाम के लिए रसायनिक दवाओं का प्रगोग करता हूँ। मेरे पास दस मवेशी जिसमें 8 गायें एवं 2 भेंसे हैं। इसके मल.मूत्र से जैविक खाद तैयार कर अपने बाग.बगीचों में इसका प्रयोग करता आ रहा हूँ। जैविक खाद प्रयोग करने से मेरे बगीचे के सभी प्रकार के फल.फुल में अत्यधिक वृद्धि दिखाई पड़ता हैं। मैं कृषि विभाग एवं आत्मा आयोजित प्रशिक्षण में समय.समय पर भाग लेता हूँ एवं ज्ञान अर्जित करता हूँ।

मेरे प्रशिक्षण का विवरण इस प्रकार हैं .
जीण्वीण पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय से विभिन्न फसलों के क्षेत्र में

- पलांडू राँची से फल एवं सब्जी में प्रशिक्षण
- राँची से सामेकित कृषि प्रणाली में प्रशिक्षण
- कलकता से मत्स्य पालन में प्रशिक्षण
- पटना पशु महाविद्यालय से छः दिवसीय पशुपालन के क्षेत्र में

मैं अपनी बाग.बगीचे में सामेकित प्रणाली के तहत ओल की खेती भी पूरी परिश्रम के साथ किया जिसका निरिक्षण केण्वीण्के लोदीपुरए अरवल के कृषि वैज्ञानिकों ने किया था। जिसका अनुभव किसान वन्धुाओं के बीच में प्रसार किया।

मैं अपनी बाग.बगीचे की खेती से 600000 (छह लाख) रू0 तक सलाना मुनाफा कमाता हूँ, जिसमें वार्षिक लागत 100000 (एक लाख) रू0 लगभग आता है। श्री संजीत कुमार, कुर्था प्रखण्ड के अन्तर्गत एक सफल किसान के रूप में उभरे है जिसका श्रैय इनके कठिन परिश्रम एवं कृषि के क्षेत्र में प्रशिक्षण को जाता है। यह प्रशिक्षण मुख्यतयाः आत्मा अरवल द्वारा दिया जाता है। यह एक उत्तम कोटि के प्रगतिशील किसान है। जिसमें वृहत पैमाने पर सामेकित कृषि प्रणाली को बढ़ावा देने हेतु सरकार से आर्थिक मदद की आशा रखते है। ऐसा सम्भव होने पर यह अपनी साथ अपनी किसान वन्धुओं के लिए भी मील का पत्थर सावित हो सकते है। ;श्री शिवेन्द्र कुमारए सहायक तकनिकी प्रबंधक.सह.प्रखण्ड तकनिकी प्रबंधकए कुर्था अरवलद्ध।

35 जर्दालु आम ने दिलायी पहचान

परिचय

नाम- **अशोक चौधरी**
गांव- मेहशी
प्रखंड गुलतानगंज
जिला भागलपुर

कृषि विभाग, बिहार सरकार द्वारा 2020–21 में एक जिला एक उत्पाद योजनान्तर्गत में भागलपुर जिले में जर्दालु आम को चुना गया। उसके लिए आत्मा भागलपुर द्वारा वर्ष 2008 से 2012 तक जर्दातु आम नयाबाग क्षेत्र विस्तार योजना संचालित किया गया। सरकार के द्वारा 2007–08 से लगातार अभी तक जर्दातु आम को नई दिल्ली स्थित महानुभाव को उपहार स्वरूप उद्यान विभाग एवं आत्मा, भागलपुर द्वारा भेंट स्वरूप भेजकर एवं विभिन्न कार्यक्रमों से इसका प्रचार–प्रसार कराकर किसानों के आर्थिक स्थिति सुदृढ करने में जर्दालु आम का बढ़ा योगदान रहा है। आत्मा भागलपुर द्वारा जर्दालु आम के उत्पादन एवं विपणन के लिए किसान उत्पाद संगठन (थ्च्ब्) भी गठित कराया गया है।

श्री अशोक चौधरी (जर्दल आम)

मैं अशोक कुमार चौधरी पिता राजेन्द्र चौधरी ग्रामपंचायत महेशी प्रखंड गुलतानग. ंज जिला भागलपुर का स्थायी निवासी हूँ। मैने ठैब, स्स्ठ. ठच म्क. क्ल म्क, जैसी बड़ी–बड़ी विधियाँ हासिल कर 1992 से विद्यालय में शारिरीक शिक्षक के पद पर योगदान दिया परन्तु यह कार्य मेरी शिक्षा के अनुकूल नहीं लगा। इसके बाद मैंने अपने पद से इस्तीफा देकर अपने पुरखों के जीर्ण–शिर्ण बाग की ओर किया और उसके जीनोधार पर लग गया। इसके साथ–साथ पारम्परिक होती भी शुरू की धीरे–धीरे मेरी,, ख्वधानिक एवं वानिकी खेती की तरफ होने लगा। उधानिक फसलों की खेती के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु में वर्ष 2008 में आत्मा भागलपुर के सम्पर्क में आया और इससे जुड़ गया। वर्ष 2007–08 में आत्मा, भागलपुर से जुड़ने के बाद यहाँ के पदाधिकारियों ने मुझे इस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया साथ ही आत्मा के द्वारा राज्य के बाहर एवं अन्दर विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिलाकर मुझे अपने कार्य में दक्षता प्राप्त करने में सहयोग किया आत्मा, भागलपुर के द्वारा वर्ष 2007–08 में मुझे किसान श्री एवं अन्य प्रकार के सम्मान से भी सम्मानित भी किया गया।

आज की तारिख में मेरे द्वारा स्थापित मधुवन नर्सरी से राज्य के सभी जिला में लू आम सहित अन्य कई प्रभेदों के पौधों को किसानों उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही देश के गणमान्य व्यक्तियों यथा– महाम. हिम राष्ट्रपति माननीय प्रधानमंत्री माननीय राज्यपाल एवं बिहार के माननीय मुख्यमंत्री को जर्दालू आम को जिता प्रशासन द्वारा सप्रेम भेंट भेजी जाती है। आज मेरे संस्थान के द्वारा कई बेरोजगार शिक्षित पुषकों को रोजगार मुहैया कराया जा रहा है। मेरे द्वारा राज्य के प्रत्येक जिलों में पैसे कृषक जिनके पास खेती के लिए एक एकड़ खेत उपलब्ध है उन्हें प्रति वर्ष 04 05 की मेरे द्वारा अबतक आम की कई सारी किस्मों का उदभव किया गया है, आज मेरे द्वारा स्थापित मधुवन नर्सरी में जर्दालू आम के साथ–साथ हिन्दुस्तान में पाई जाने वाली आम की लगभग सभी किस्मों के पौधे तैयार किये जाते हैं, जिनकी संख्या लाखों में है।

36 पशुपालन से किया मुकाम हासिल

परिचय

नामः- **श्री दिलीप कुमार/श्री अरूण कुमार**
पिता का नाम :- स्व0 नागेश्वर सिंह
पूरा पत्ता :- ग्राम-झुनाठी पंचायत-नगवॉ प्रखण्ड-करपी जिला-अरवल।
मो0 न0-7250853454

इन्होने पशुपालन, उद्यान एवं कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। उन्होने नौकरी को प्राथमिकता नही देकर कृषि व्यवसाय को ही अपना व्यवसाय बनाये। प्रारम्भिक दौर में उन्होने कठिन परिश्रम करते हुऐ सफलता के मौकाम पर पहुँच गये हैं।

प्रशिक्षणः-उन्होने कृषि के व्यवसाय के लिए कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण आत्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र लोदीपुर, बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर एवं कम्पफेड पटना से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना व्यवसाय शुरू किये। दोनों भाईयो ने पशुपालन कि व्यवसाय में अपना बहुत ही अच्छा योगदान दिये हैं। शुरूआती दौर में उन्हाने एक गाय खरीदे थे जो संकर नस्ल का था। उसी गाय से दोनों भाईयों ने परिश्रम करते हुऐ आज कुल उनके पास 26 (छब्बीस) गाय हैं जिसमें भ्थ्ए जर्सी साहीवाल, ब्रीड रखे हुऐ है। सबसे अहम बात यह हैं कि उन्होने ग्रेडिग करते हुऐ पियोर ब्रीड भ्थ्ए एवं पियोर ब्रीड जर्सी बनाया गया हैं जो इस क्षेत्र का बहुत ही सराहनिय कार्य हैं भ्थ्ए गाय हैं जो 32 लीटर प्रति दिन एवं जर्सी गाय प्रति दिन 22 लीटर दुध देती हैं। उन दोनों भाईयों ने इस व्यवसाय को सफल बनाने के लिए बहुत ही कठीन परिश्रम किया हैं। जिसके कारण इनको सफलता मिला हैं। उन्होने गाय के खाने के लिए हरा चारा का उतम व्यवस्था किया हैं जो कि पुरे जिला का गौरव की बात हैं। उन्होने सुपर नैपियर हरा चारा का एक प्रभेद हैं जिसको इन्होने थाइलैण्ड से मगॅवाये हैं। इनके पास हरा चारा काटने के लिए थ्रेशर मशीन हैं जो वे राज्य के बाहर से लाया गया हैं। पशुपालन के साथ- साथ उद्यान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किऐ हैं इनके पास भिन्न-भिन्न प्रभेद के आम का पौध हैं जिसमें मुख्य रूप से मालदह, दशहरी, अमरपाली, जरदालू, गुलाबख्श आदि हैं। इसके साथ-साथ इनके बगीचा में केला का उतम प्रभेद जी-9 का पौध हैं। अमरूद का प्रभेद इलाहावादी सफेदा आदि भी हैं। इन्होने अपने बगीचा में जैविक उरर्वक का प्रयोग करते हैं जिससे उनको उत्पादन में काफी वृद्वि होता हैं। इनके पास बॉयगैय से निकला हुआ अवसिस्ट पदार्थ का उपयोग अपने कृषि कार्य में बहुलता से उपज को बढ़ाने में प्रयोग करते हैं। उनके पास धान की प्रभेद कोस्टलकिंग एवं सुपर का उत्पादन करते हैं। वे अपने कृषि कार्य में रसायनीक खाद का प्रयोग नहीं करते हैं।

आयः-इनका 62000 प्रति माह हैं।

पुरस्कारः-इन दोनों भाईयों को इस सफल कार्य के लिए कृषि विश्वविद्यायल सबैर एवं भूतपूर्व कृषि मंत्री श्री प्रेम कुमार के द्वारा पुरस्कार प्राप्त हुआ हैं। दूसरे किसान के लिए महत्वः- सुपर नैपियर घास को जिला राज्य एवं राज्य के बाहर किसानों को उपलब्ध कराया हैं इनके खेत से सुपर नेपियर घास का छोठा-छोठा टुकड़ा को अपने खेत में लगाने के लिए दूसरे जगह के किसान ले जाते हैं। शुद्व जैविक खाद से उपजा हुआ धान से चावल बना कर बाजर में भी बेचते हैं इन्होने अपने पंचायत के किसानों को काफी मदत करते हैं। पंचायत में कृत्रिम गर्भदान राज्य के बाहर से सिमेन मगवॉकर करते हैं जिससे नस्ल सुधारने में काफी योगदान किया हैं।

37 समेकित कृषि प्रणाली को अपनाया, हुआ मुनाफा

परिचय

किसान का नाम – **अमर सिंह**
पिता/पति का नाम - स्व0 भोला सिंह
पूरा पता - गाँव/मुहल्ला - मुश्कीपुर, पो0 - गोगरी जमालपुर, थाना - गोगरी, प्रखंड - गोगरी, जिला - खगड़िया, (बिहार)
मोबाइल सं0- 9006034056
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 2 हे0
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 2 हे0
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 0
किसान का प्रकार- सीमांत किसान

मै अमर सिंह 1973 में आठवीं तक की पढ़ाई की लेकिन गरीबी के कारण अपने पिता के साथ खेती में हीं सहयोग करने लगे। गेंहूँ, मक्का धान एवं दलहन की खेती मेरे पिता जी के द्वारा किया जाता था लेकिन उस खेती से मेरे परिवार की जीविका एवं भरण पोषण पूर्ण रूप से नहीं हो पाता था, जिससे मेरे परिवार की स्थिति काफी दयनीय था। मैं इस खेती से काफी निराश हो चुका था क्योंकि मेरा खेती योग्य भूमि जिस क्षेत्र में था उसमें हर साल बाढ़ के कारण मेरा फसल नष्ट हो जाता था। जिससे मेरा आर्थिक स्थिति बहुत गिर चुका था। बाद में मेरी शादी हुई और पिता जी के देहांत के बाद मैं पूर्ण रूप से टूट गया और पूरा जिम्मेवारी मेरे उपर आ चुका था, जिसका मैं कभी कर्ज या कोई अतिरिक्त कार्य कर निर्वहण कर रहा था। फिर मेरे नजदीकी किसान ने कृषि विभाग के बारे में बताया कि वहाँ पर कृषि की नई तकनीक एवं आवश्यक सहयोग मिलता है। तब मैं अपने प्रखंड गया जहाँ से कृषि विभाग एवं अन्य विभाग के बारे मे योजनाओं की जानकारी मिली। मैं किसी तरह 2 गाय खरीदा और कृषि विभाग के सहयोग से वर्मी वेड निर्माण कर वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन एवं दुग्ध उत्पादन कर अपने जीविका को सुदृढ़ करने लगा। आत्मा के सहायोग से मैं खेती की नई तकनीकी एवं समूह के गठन के बारे जाना और तकनीकी ढंग से खेती का कार्य करने लगे और एक समूह का गठन कर अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने लगा। मैं अपने सभी नजदीकी को भी खेती की नई तकनीक एवं योजना के बारे बताया और उन्हें भी उसी विधि से कार्य करने हेतु प्रेरित करने लगा एवं अभी भी कर रहा हूँ।

(किये जाने वाला कार्य के संबंध में शुरू से अंत तक की पूरी जानकारी, उत्पाद कब और कहाँ बेचते हैं तथा तकनीकी एवं वित्तीय सहायता कहाँ से प्राप्त की हैं का पूर्ण विवरण)
आत्मा से जुड़ने के बाद आत्मा द्वारा मुझे वर्मी कम्पोस्ट एवं सब्जी की उन्नत खेती के तकनीक की जानकारी मिली। आत्मा एवं के0भी0के0,

खगड़िया के द्वारा भी मुर्गीपालन, बकरीपालन, गायपालन, मशरूम की खेती एवं गोबर से उर्वरक तैयार करना, मकई धान का उन्नत किस्म का बीज तैयार करना एवं वैज्ञानिक तकनीकी से करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आत्मा द्वारा विभिन्न शिविरों में भाग लेते हुए सब्जी एवं गायपालन एवं जैविक खाद की तकनीक की जानकारी तथा कृषि वानिकी की आधुनिक तकनीक प्रशिक्षण दिल्ली ए0आर0आई एवं राज्य के अंदर सबौर कृषि महाविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त किया और परिभ्रमण में भाग लिया। जहॉ मुझे नई तकनीकी की अधिक जानकारी मिली। आज मैं आत्मा के माध्यम से उच्च तकनीकी से खेती करते हुए गाय पालते हुए दुग्ध उत्पादन, गोबर एवं अवशिष्ट पदार्थ से वर्मी कम्पोस्ट तैयार करना। आत्मा खगड़िया द्वारा राज्य के अंदर, बाहर प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण के उपरांत आज मैं केला, सब्जी एवं मिर्च की खेती करने से रूची बढ़ने लगा। अब मैं उत्साह पूर्वक कृषि वानिकी की ओर आगे बढ़ रहा हूँ। मैं कम जमीन एवं कम लागत से मिर्च की अधिक खेती कर अपनी आमदनी में बढोतरी किया अब मैं और मेरे परिवार के लोग काफी खुश रहते है। बच्चे की पढाई भी अच्छे से हो रही है। यह कार्य को देखते हुए सामाजिक कार्यकत्ता के रूप में यहॉ बहुत किसान दोस्त, समाज को अपने साथ-साथ उनके भी जीवकोपार्जन का कार्य करते है। मेरे इस कार्य को देखकर हमारे क्षेत्र में गायपालन, सब्जी की खेती, केला की खेती के साथ वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन काफी जोर-शोर से चल रहा है। बहुत दूर-दराज के जिला से भी लोग देखने एवं सहयोग लेने आते रहते है। सफलता के इस कड़ी के लिए आत्मा खगड़िया, कृषि विज्ञान केन्द्र खगड़िया, प्रखंड कृषि पदाधिकारी, पशुपालन पदाधिकारी, सहायक तकनीकी प्रबंधक एवं अन्य कृषि कर्मियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। स्थानीय स्तर पर सफलता की कहानी को किसानों के बीच नए तकनीक से खेती करना आदि कार्य के ललक में बहुत तेजी से बढ़ना।

क्र0सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण (वर्ष 1998–2002)			अपनाने के बाद का विवरण (वर्त्तमान में)			
		प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	कुल	प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	प्रक्षेत्र 3	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	फसल/क्षेत्र/कार्य का नाम	गेंहू,	मक्का		गाय –2	केला	सब्जी	
2	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वीं में)	40 क्वीं0	65 क्वी0		25 ली0	3086 पौधा प्रति हे0	5–7 क्वी प्रति सप्ताह एकड़	
3	उत्पाद का बिक्री मूल्य दर (रू0/क्वीं)	550	400		35 रू0 ली0	100–150 रू0 प्रति गौर	1500–2000 प्रति क्वीं0	
4	उपादान का मूल्य (बीज, खाद, कीटनाशी, जुताई–बुआई, सिंचाई, कटाई, दौनी एवं अन्य)	9200	10100		36000 प्रति गाय	1 लाख रू0 प्रति हे0	25–27 हजार प्रति मौसम	
5	मजदूर खर्च (रू0 में)	1000	1600		250 रू0 प्रति दिन	350 रू0 प्रति दिन	600 रू0 प्रति दिन	
6	अन्य लागत खर्च (रू0 में)	500	1000		5000	10000	6000	
7	कुल लागत खर्च (रू0 में)	18000	16200		75000	125000	50000	
8	शुद्ध आय/बचत (रू0 में)	7600	9800		82500	260750	70000	

38 समेकित खेती कर खुशहाल हुआ परिवार

परिचय

किसान का नाम - **मुकेश प्रियंक**
पिता/पति का नाम - स्व0 सागर सिंह
पूरा पता - गाँव/मुहल्ला - पड़री, पो0 - बुढ़वा,
थाना - अलौली, प्रखंड - अलौली,
जिला - खगड़िया, (बिहार)
मोबाइल सं0- 9546272703
किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 4.5 हे0
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 2 हे0
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 2.5 हे0
किसान का प्रकार- लघु किसान

मै मुकेश प्रियंक 1990 में मैट्रिक पास करने के उपरांत खेती के साथ-साथ जन हित का कार्य करने लगे। 1999 में मधुमक्खीपालन को एक अच्छा व्यवसाय के रूप में चुना और उस पर काम करने लगे। उसके बाद जीविका से जुड़कर महिलाओं को मधुमक्खीपालन के विषय में प्रशिक्षण भी देने लगे। उसके बाद 2008 में कृषि विज्ञान केन्द्र, टैम्ज और आत्मा के द्वारा चलाये गये विभिन्न योजनाओं के बारे में समझ कर और प्रशिक्षण लेकर खगड़िया जिले के सभी प्रखंडों, पंचायतों और गॉवों में जाकर किसानों को जागरूक कर उसके हित के लिए सही मार्गदर्शक के रूप में काम किये। 2011 में मत्स्यपालन का नया व्यवसाय शुरू किये जो हमें अच्छा लगा और उसके बाद मछलीपालन के विषय में आम किसानों को भी बताते थे और किसान बहुत खुश होते थे। उसके बाद 2016 में के0भी0के0 में नया तकनीक से घर में सब्जी (मशरूम) उत्पादन के बारे में जानकारी मिली। जानकारी मिलने के बाद बहुत खुशी हुई और हमनें अन्य किसानों के बीच जाकर भी बताया तो सभी खुश हुए। हम सब ने मिलकर एक समूह का निर्माण किया और मशरूम उत्पादन के बारे में प्रशिक्षण लिये। मशरूम का प्रशिक्षण लेने के बाद इस व्यवसाय को शुरू किये जिसमें हमें अच्छा आमदनी हुआ और आज हमनें मशरूम उत्पादन के साथ-साथ मछलीपालन/खेती (गेंहूँ, मक्का, धान, दलहन) की खेती करते है।

आत्मा से जुड़ने के बाद आत्मा द्वारा मुझे वर्मी कम्पोस्ट एवं सब्जी की उन्नत खेती के तकनीक की जानकारी मिली। आत्मा एवं के0भी0के0, खगड़िया के द्वारा भी मुर्गीपालन, बकरीपालन, गायपालन, मशरूम की खेती एवं गोबर से उर्वरक तैयार करना, मकई धान का उन्नत किस्म का बीज तैयार करना एवं वैज्ञानिक तकनीक

से खेती करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आत्मा, खगड़िया द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न शिविरों/प्रशिक्षण/परिभ्रमण कार्यक्रम में भाग लेते हुए सब्जी उत्पादन, मछलीपालन, गायपालन एवं जैविक खाद की तकनीक की अधिक जानकारी मिली।

आज मैं आत्मा के माध्यम से उन्नत तकनीकी से मशरूम की खेती करते हुए मधुमक्खीपालन, मछलीपालन का कार्य कर रहा हूँ। आत्मा खगड़िया द्वारा राज्य के अंदर, राज्य के बाहर प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण के उपरांत आज मैं कम जमीन एवं कम लागत से खेती कर अपनी आमदनी में बढोतरी किया अब मैं और मेरे परिवार के लोग खाफी खुश रहते है। बच्चे की पढाई भी अच्छे से हो रही है। यह कार्य को देखते हुए सामाजिक कार्यकत्ता के रूप में यहाँ बहुत किसान दोस्त, समाज को अपने साथ-साथ उनके भी जीवकोपार्जन का कार्य में भी मद्द करता हूँ।

सफलता के इस कड़ी के लिए आत्मा खगड़िया, कृषि विज्ञान केन्द्र खगड़िया, प्रखंड कृषि पदाधिकारी, सहायक तकनीकी प्रबंधक एवं अन्य कृषि कर्मियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

12. स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव-

स्थानीय स्तर पर सफलता की कहानी को किसानों के बीच नए तकनीक से खेती करना आदि कार्य के ललक में बहुत तेजी से बढ़ना।

13. सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र- नहीं

क्र0सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण (वर्ष 1998–2002)			अपनाने के बाद का विवरण (वर्त्तमान में)			
		प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	कुल	प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	प्रक्षेत्र 3	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	फसल/क्षेत्र/कार्य का नाम	गेंहू	मक्का		गाय –2	मशरूम (1000 कीट)	मछली प्रति एकड़	
2	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वीं में)	40 क्वीं0	65 क्वी0		25 ली0	1600 कि0ग्र0 प्रति माह	30 क्वीं0	
3	उत्पाद का बिक्री मूल्य दर (रू0/क्वीं)	550	400		35 रू0 ली0	128000 प्रति माह	450000	
4	उपादान का मूल्य (बीज, खाद, कीटनाशी, जुताई–बुआई, सिंचाई, कटाई, दौनी एवं अन्य)	9200	10100		36000 प्रति गाय	96000 प्रति माह	105000	
5	मजदूर खर्च (रू0 में)	1000	1600		250 रू0 प्रति दिन	600 रू0 प्रति दिन	900 रू0 प्रति दिन	
6	अन्य लागत खर्च (रू0 में)	500	1000		5000	2000 प्रति माह	10000	
7	कुल लागत खर्च (रू0 में)	18000	16200		75000	96000	223000	
8	शुद्ध आय/बचत (रू0 में)	7600	9800		82500	32000	227000	

39 इंद्रदेव पशुपालन को बनाया आमदनी का जरिया

मखाना की खेती

नाम – विनोद मुखिया
पिता का नाम – राम सागर मुखिया
पता-ग्राम/पो0 नहरवार, प्रखण्ड-महिषी, जिला-सहरसा।

मखाना की खेती हमारे यहाँ होती थी, लेकिन आमदनी कम होता था। आत्मा, सहरसा द्वारा मखाना की खेती का तकनीकी जानकारी मिला। हमलोग बताये गये तकनीक से मखाना की खेती किया तो कुछ आमदनी बढ़ा। इसके बाद ATM एवं BTM द्वारा 20 सदस्यों का एक समूह बनाकर मखाना की नई तकनीक से शुरू किया और समूह के प्रत्येक सदस्य द्वारा 100.00 (एक सौ) रूपया प्रति माह के दर से समूह में जमा करने लगा। उसके बाद मखाना का लावा खुद तैयार करके बाजार में बेचने लगा, जिससे मेरे समूह का आमदनी काफी बढ़ गया। अभी मैं मखाना में 1000 (एक हजार) कृषक को जोड़कर थ्च्व का गठन आत्मा, सहरसा द्वारा किया हूँ। आत्मा, सहरसा द्वारा हमलोगों को समय-समय पर प्रोत्साहित भी किया जाता है।

विजेंद्र कर रहे मछली पालन

नाम – विजेन्द्र महतो
पिता का नाम – स्व. नागेश्वर महतो
पता-ग्राम-कन्दाहा, पंचायत-पस्तवार, प्रखण्ड-महिषी, जिला-सहरसा।

मछली पालन के बारे में सबसे पहले मैं सुपौल जिला के सखुआ मत्स्य प्रशिक्षण केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस सत्र में मछजली पालन एवं इसके बीमारी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त किया। इससे पहले मछली पालन में मुनाफा कम होता था और समय अधिक लगता था, लेकिन प्रशिक्षण में बताये गये तकनीक से अब खर्च कम और मुनाफा ज्यादा होता है। आत्मा, सहरसा के ।ज्ड एवं ठज्ड के द्वारा प्रशिक्षण और सभी जानकारी मिलता रहा है। आत्मा, सहरसा के सहयोग से हमलोग माँ विषहरा मत्स्य पालन कृषक हितकारी समूह का गठन करवा दिये, जिसमें 20 सदस्य हैं। आत्मा, सहरसा द्वारा हमलोगों को समय-समय पर प्रोत्साहित भी किया जाता है।

परिचय

नाम - इन्द्रदेव प्रसाद यादव
पिता का नाम - जागेश्वर यादव
पता-ग्राम.प्रो0 कोपरिया$थाना-सलखुआ जिला-सहरसा।
मो0 नं0-8271827183

एक साधारण किसान जो हल बैल से खेती की शूरुआत हुई। मात्र एक बीघा जमीन से पहली बार पूरे इलाके में मक्का की खेती किया और एक बैल एक बीघा जमीन पटवन के लिए रस्सी से कन्टर वाला बाल्टी बाँघकर किया करता था जो की 1971-72 की बात है। आत्मा के द्वारा कराये गये परिभ्रमण में पटना में बाँस बोरिंग देखा और बोरिंग से पहली बार पटवन शुरू किया बैजनाथपुर में स्टेट वोरिग देखा तो जिज्ञासा से भरकर पूरे पंचायत में पहला बाँस बोरिंग करवाया पहली वार बाँस बोरिंग कामयाब नहीं हुआ। पुनः प्रयास में ज्यादा गहराई से बोरिंग करने पर पूरी कामयाबी मिली तत्पश्चात भूमि विकास बैंक से पम्पसेट लिया जिसे पटवन कार्य में भाड़ा चलाकर ज्यादा मुनाफा लिया। इसके साथ साथ पशुपालन में भैंस, गाय से अतिरिक्त मुनाफा होता रहा साथ साथ दो एकड़ जमीन बट्टेदारी लिया जिसमें फसल उत्पादन से मुनाफा और ज्यादा बढ़ता गया कोपरेंटिव बैंक से रसायनिक खाद मिला जो जो इस्तेमाल करने पर काफी फसल उत्पादन हुआ दो एकड़ से दस एकड़ बट्टेदारी बढ़या बट्टेदारी बढ़ती रही नीजी जमीन खरदते रहे जिसकी शुरूआत सन् 1980 से करते हुए उसके बाद निजी ट्रैक्टर भी लिया। इसके मैं गेहूँ का थ्रेसर भी लिया इसके बाद किसान संगठन 1995 में का नेतृत्व किया इसके बाद सन् 2002 में जिला किसान सभा अध्यक्ष बने इसके बाद बिहार राज्य किसान सभा के राज्य परिषद् के सदस्य बने इसके बाद जिला से मनोनीत होकर अखिल भारतिय किसान सभा के सम्मेलन में पश्चिम बंगाल के आत्मा से जुड़े मिदानपुर में भाग लिया आत्मा सहरसा द्वारा 2008-09 में प्रखंड स्तर पर किसान सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आत्मा द्वारा सन् 2017-18 में प्रखंड स्तर पर आत्मा सहरसा द्वारा किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। एक मामूली किसान से प्रखंड प्रमुख के पद तक पहुँचकर अपना नाम और कार्यो से सबको अपना साथ कदम से कदम मिलाकर बहुत बड़ा बुलंदी हासिल किया। आज भी वो सभी को अपना आर्दश मानते है ओर आज भी लगन के साथ कार्य किए जा रहे है।

कृषि एवं पशुपालन से बढ़ी आमदनी

परिचय

नाम - जितेन्द्र कुमार
पिता का नाम- स्वरुप मंडल
पता-ग्रम$प्रो0- कोपरिया थाना सलखुआ
जिला- सहरसा (बिहार)

मैं जितेन्द्र कुमार परिवार में दो भाई, पाँच बहन, पत्नी, चार लड़का, एक लडकी का परिवार है। वर्तमान में मैं मध्य विद्यालय कबीरा का प्रधानाध्यापक हूँ। मेरे पिता जी को 5 कट्ठा जमीन था। एक गाय, कुदाल और फूस का घर था। सन् 1979 में जब मैट्रिक पास करने के बाद ट्यूशन पढ़ाते थे एवं खेत बट्टेदारी करने के साथ साथ अपना भी पढ़ाई जारी रखे पिता बोले जब हम पढते थे तो रोशनी के अभाव में पत्ते जलाकर रोशनी का उपयोग लेते थे। इसी बात से आगे बढ़ने की ठानी ट्यूशन से एवं 5 बिघा बट्टेदारी से जो मुनाफा होता उसमें बचत करके भरण पोसन होता था सन् 1982 में एक पम्पसेट लिया उसको भाड़े पर चलाया इसके बाद पम्पसेट से चलने वाला थ्रेसर भाड़ा पर चलाने लगे पशुपालन में भी मुनाफा होता था। इसके बाद 1989 माहाराष्ट्र में टीचर ट्रेनिंग करने गये टेजनिंग के बाद खेती बारी पशुपालन 15 साल तक चलता रहा। इस दौरान बट्टेदारी की रकवा बढ़ती गई उससे अपनी भी नीजी जमीन खरीदते चले गये। सन् 1998-99 में ट्रैक्टर खरीदे तमाम उतार चढ़ाव को झेलते हुए आज लगभग 9 लाख सलाना शुद्ध आय कर रहे है। में शिक्षक में योगदान लेने के बाद कृषि एवं पशुपालन में किसी योजना से ज्यादा लाभान्वित नहीं हो सका, परन्तु कृषि एवं पशुपालन का कार्य वर्तमान में व्यापक पैमाने पर जारी रखा हुआ है। इस तमाम कार्य के लिए प्रेरणा दायक रहे एवं कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में सदा मशवारा देते रहे। 5 कट्ठा जमीन से मामूली इंसान आज अपने कठिन परिश्रम लगन से अपना निजी पक्का मकार टेज्क्टर भैंस एवं गाय एवं अपनी निजी जमीन के साथ 9 लाख प्रतिवर्ष की आय अर्जित कर रहा हूँ।

40 मुर्गी पालन से अनिल को मिली सफलता

परिचय

किसान का नामः- **अनिल कुमार**
पिता/पति का नामः- श्री रूपलाल मंडल
पता :- ग्रामः- ताजपुर, पो0ः- हवेली खड़गपुर
पंचायतः- बनगामा, प्रखंडः- टेटिया बम्बर
जिलाः- मुंगेर,
मो0 नं0ः- 8709116231

मैं तीन भाई हूँ जिसमे से मै सबसे बड़ा हूँ। मेरी पढ़ाई हवेली खड़गपुर से पूर्ण हुई। मैं इन्टरमिडियट तक पढ़ा हूँ। मैं पिछले आठ वर्श से मुर्गी पालन का कार्य कर रहा हूँ। इसके अलावे मे खेती (सब्जी, धान, गेहूँ, दाल) इत्यादि की भी खेती करता हूँ। मेरे पास 30 डीसमील का 2 (दो) मुर्गी फार्म है। जिसमे मै 5000 (पॉच हजार) मुर्गी प्रति महिना तैयार कर के बाजार मे उपलब्ध कराता हूँ। षुरूआत मे मुझे काफी कठिनाईयो का सामना करना पड़ा परन्तु अब मुर्गी पालन के व्यवसाई से अच्छा मुनाफा होता है। मुर्गी की चुजा से बाजार मे बेचने लायक बनाने मे 1 (एक) महीना का वक्त लगता है। 1 (एक) माह मे मुर्गी का वनज 1.100 (एक किला एक सौ ग्राम) से 1.500 (एक किला पॉच सौ ग्राम) तक हो जाता है। मुर्गी तैयार कर के बाजार मे बेचने तक मे मुझे 70,000/- (सत्तर हजार रूप्ये) का प्रतिमाह षुद्व मुनाफा होता है। मेरे घर की आर्थिक स्थिति मे बहुत सुधार हुआ है। मै इस व्यवसाय को और ज्यादा बड़ा करूगॉ।

उत्पन्न चिह्नित समस्याः- यातायात की समस्या (कच्ची सड़क) बाजार की समस्या, दाम मे चढ़ाव उतार आना। मुर्गा मे बिमारी होता है।

उत्पन्न चिह्नित समस्या का निदान आपने कैसे किया :- किसान के स्तर से टीकाकरण करवाया गया है। बिपणन के लिए नजदीक के दुकानदार से सम्पर्क किया गया। यातायात के लिए वाहन की व्यवस्था की गई है।

व्यक्ति अथवा संस्थान से प्राप्त सहायता का विवरणः- नही

कितने दिनो से उपरोक्त कार्य कर रहें हैः- आठ वर्श से।

उपरोक्त कार्य करने से प्राप्त सफलता का विवरणः- मुर्गी पालन करने से घर की आर्थिक समस्या मे सुधार हुआ एवं घर की आमदनी बढ़ी।

सफलता प्राप्ति के मुख्य कारकः- इस कार्य मे आमदनी ज्यादा रहने के कारण मुनाफा ज्यादा होता है एवं कम्पनी के द्वारा मुर्गा को तैयार होने के बाद ले लिया जाता है इस लिए बाजार के लिए ज्यादा नही सोचना होता है।

पुरस्कार यदि कोई प्राप्त किये होः- नही।

आर्थिक विषेलेशनः-

विषेश सुझाव यदि कोई होः- इन्हे आत्मा के द्वारा प्रषिक्षण दिया जाएगा।

अन्य कोई जानकारी यदि देना चाहते होः- हमारे यहा बहुत ज्यादा समस्या है। जिसमे चुजा बाहर से लाना पड़ता है जिससे परिवहन मे खर्च एवं चुजा का मूल्य भी ज्यादा लगता है। क्यो न ऐसा वयवस्था किया जाए कि हमे कम खर्च मे चुजा उपलब्ध हो सके।

क्र0 सं0	लाभ	पहले	बाद मे
1	लागत	4.50000/-	2.50000/-
2	मजदूरी	2.00000/-	75,000/-
3	बाजार	10,000/-	15,000/-
4	अन्य	30,000/-	40,000/-

क्र0 सं0	विविध	संख्या/रकबा	यंत्र/फसल/प्रजाति का नाम
1.	यांत्रिकरण	3 एकड़	पावर टिलर
2.	सिंचाई	3 एकड़	नदी, पम्पसेट
3.	खेती की तकनीक	3 एकड़	परम्परागत तकनिक से
4.	कृषि प्रसंस्करण	-	-
5.	कीटनाशी और उर्वरक	&	D. A. P, UREA, S S P, INSECTISIDE,
6.	फल फूल एवं सब्जी	1 एकड़	आलू, बैंगन, भिण्डी, टमाटर इत्यादि
7.	अन्य फसल	3 एकड़	गेहूँ, चना, धान, मूँग,
8.	मत्स्य	-	-
9.	पशुपालन	-	गाय, बकरी, भैंस
10.	डेयरी उद्योग	-	-
11.	मुर्गी पालन	30 डीसमील	मुर्गी (Broiler)
12.	[illegible]	-	-
13.	अन्य	-	-

41 रमेश ने मत्स्य पालन कर पायी सफलता

परिचय

नामः- **श्री रमेश प्रसाद सिंह**
पिता का नाम :- श्री देवचरण सिंह
पता :- ग्राम- ब्रह्मलाल बिगहा, पंचायत- माली, पो0-माली, थाना-करपी प्रखण्ड -वंशी, जिला-अरवल
मोबाईल नं0 :- **8296079914**
5. योग्यता :- मैट्रिक
खेती योग्य भूमिः- दो एकड़
बागवानीः -एक एकड़
मत्स्य पालनः- एक एकड़ कुल - 4 (चार) एकड़

ग्रामिण परिवेश मे पले बढ़े श्री रमेश प्रसाद सिंह प्रारंभ से ही व्यवसाय प्रविति के रहे है। मैट्रिक पास करने के बाद व्यवसाय की खोज में लुधियाना चले गए। वहाँ उन्होने हौजरी का उद्योग लगाया। पन्द्रह वर्षो तक इस व्यवसाय से जुड़े रहे। फिर अपने गाँव वापस आकर खेती प्रारंम्भ की। अपने पारमपरिक खेती को बदले के प्रयास मे सन् 2005 में एक एकड़ मे बगीचा लगाया। वर्तमान में आम के 22, कटहल के 12, लिचि के 02, ऑवला 01, और अमरूद 24 पौधे मौजुद है। आत्मा अरवल से इन्होने मत्स्य पालन का प्रशिक्षण लिया, विभिन्न विभागों से सर्म्पक करते हुए जनवरी 2020 में 125 फीट ग 108 फीट तालाब खुदवाया और मत्स्यपालन प्रारंम्भ किया। भारी मुनाफा को देखते हुए एक वर्ष मे ही तालाबों की संख्या तीन (03)हो गई।

एक तालाब का वर्ष भर कर लेखा जोखा
तालाब का निर्माण जल छाजन से किया गया।
तालाब की तैयारी में विधुत मोटर जाल, समेत कुल खर्च - 100000 (एक लाख)रूपया
मछली का जीरा 7 हजार (तीन सौ लाइन का) -37000 (सैतीस हजार) रूपया
चार महीने में मछली को खिलाने का खर्च - 250000 (दो लाख पचास हजार) रूपया
अन्य खर्च - 50000 (पचास हजार) रूपया
कुल खर्च (।) - 297000 (दो लाख सनतानवे हजार)
तालाब खर्च का 10ः (10 हजार)शमिल है।
दो महीने बाद पुनः जीरा डाला गया 10 हजार, खर्च 55 हजार छः महीने में मछली को खिलाने का खर्च - 350000 (तीन लाख पचास हजार) रूपया
अन्य खर्च - 50000 (पचास हजार)रूपया
कुल खर्च : 400000 (चार लाख)
पूरे वर्ष भर का खर्च ।.ठ त्र 697000 (छः लाख सनतानवे हजार)

आमदनी

दो बार जासर मछली बेची गई (45$50) 95 क्विन्टल ग 8500 रूपया प्रति क्विन्टलत्र807500 (आठ लाख सात हजार पॉच सौ)
दो बार तीलपिया मछली बेची गई (5$5) 10 क्वीन्टल ग 15000 रूपया प्रति क्वीन्टलत्र150000 (एक लाख पचास हजार)
एक बार रोहु मछली बेची गई 5 क्वीन्टल ग 18000 रूपया प्रति क्वीन्टलत्र90000 (नबे हजार)
कुल आमदनी - 1047500
कुल खर्च - 697000
कुल लाभ - 350500
इनके भारी मुनाफा को देखते हुए आस-पास के किसान जैसे - रामविनोद तिवारी, ग्राम- शेरपुर, सुनिल तिवारी , ग्राम -सरवाली, मनोज कुमार,ग्राम-माली इनसे प्रेरणा लेकर तालाब खुदवा चुके है और मत्स्य पालन प्रारंम्भ कर दिये है। बगीचे से भी एक लाख रूपया प्रतिवर्ष आमदनी हो जाती है। जो खाद्यान फसलों के अतिरिक्त है। भविष्य में इनकी योजना बटेर पालन की है। साथ ही बतक पालन, पशुपालन की भी है। यह अपने क्षेत्र के आईकोन बने हुए है।

42

मछली पालन कर पंकज बने प्रेरणास्रोत

परिचय

नाम- **पंकज कुमार**
गांव- सियालदह
जिला- रोहतास

नौकरी से बेहतर स्वरोजगार को समझ कर शहर की चकाचैंध भरी दुनिया छोड़कर नौहटा प्रखंड के कैमूर पहाड़ी से सटे सियालदह गांव आ गए। यहां शुरू किया मत्स्य पालन का कार्य

बिहार के रोहतास जिले के डेहरी ऑन सोन में एमबीए की डिग्री हासिल करने के बाद युवाओं का सपना मल्टी नेशनल कंपनियों में हाईप्रोफाइल नौकरी करने का होता है। लेकिन कुछ ऐसे भी युवा हैं जो कुछ अलग करने की चाहत रखते हैं। ऐसे ही हैं पंकज कुमार। स्वरोजगार की ललक में वे अनुमंडल के कैमूर पहाडी के सुदूर इलाकों में मत्स्य पालन कर रहे हैं। करीब दस वर्षों तक अच्छे पद पर नौकरी करने के बाद पंकज की ललक स्वरोजगार के प्रति जगी। नौकरी से बेहतर स्वरोजगार को समझ कर शहर की चकाचैंध भरी दुनिया छोड़कर नौहटा प्रखंड के कैमूर पहाड़ी से सटे सियालदह गांव आ गए। यहां मत्स्य पालन का कार्य शुरू किया। पंकज लोगों को समझा रहे हैं कि इस व्यवसाय में काफी कमाई होगी। आपकी लागत की रकम से दोगुनी कमाई छह महीने में जरूर हो जाएगी। अगर तीन लाख रु पये पूंजी लगाई जाए तो छह महीने में मत्स्य पालन कर इसे दोगुनी की जा सकती है। गांव और आसपास के युवकों को भी नीली क्रांति से जुड़कर रोजगार सृजन के लिए प्रेरित कर रहे है। जल, जीवन, हरियाली और मनरेगा से तालाब की खुदाई करवाकर मत्स्य पालन का कारोबार शुरू करने में लोगों की मदद भी कर रहे है। सियालदह गांव के पंकज कुमार सिंह रांची यूनिवर्सिटी से बीकॉम करने के पश्चात नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी से प्रोग्रामिंग का कोर्स किया। इसके बाद लिर्निंग शिक्षा पद्धति के माध्यम से एमबीए कर यूरेका फॉर्ब्स लिमिटेड मध्यप्रदेश में टेरिटरी मैनेजर के रूप में सात वर्षों तक कार्य किया। इसके बाद एनएचएआइ में प्रॉपर्टी मैनेजर के पद पर तीन वर्षों तक कार्य किया। अच्छी सैलरी के बावजूद उन?होंने नौकरी छोड़ दी और गांव लौट आए। उन्होंने फरवरी 2019 में अपने गांव में खुद के पैसे लगाकर और मनरेगा कार्यक्र म के तहत तीन तालाब की खुदाई करवाई और मत्स्य पालन का कार्य शुरू किया। साथ ही गांव के ही प्रिंस कुमार सिंह, अभिषेक कुमार सिंह समेत कई नवयुवकों को सरकारी और निजी भूमि पर तलाब खुदवा कर मत्स्य पालन के लिए प्रेरित किया। प्रखंड मुख्यालय से पंचायत तक के अधिकारी और जनप्रतिनिधि से मिलकर तालाब खुदवाने का कार्य शुरू कर दिया। ताकि घर में रहकर अधिक से अधिक आय हो सके और अन्य लोगों को भी आय का स्रोत उपलब्ध करा सकें। पंकज कुमार सिंह ने कहा कि अभी तीन तालाब में पंगास, रोहू, ठाकुर रूपचंदा, कोमल कार, मांगुर मछलियों का पालन कर रहे हैं। आगे इसी वित्तीय वर्ष में और 11 तालाब खुदवाने की योजना है। अभी गांव और आसपास के तीन लड़के पवन कुमार सिंह, रिंकू पटेल और रोहित कुमार को इससे रोजगार मिला है। भविष्य में अधिक से अधिक लोगों को स्वरोजगार से जोड़ने की योजना है।

43 कई प्रजातियों का मछलियां का पालन कर रहा दिलीप

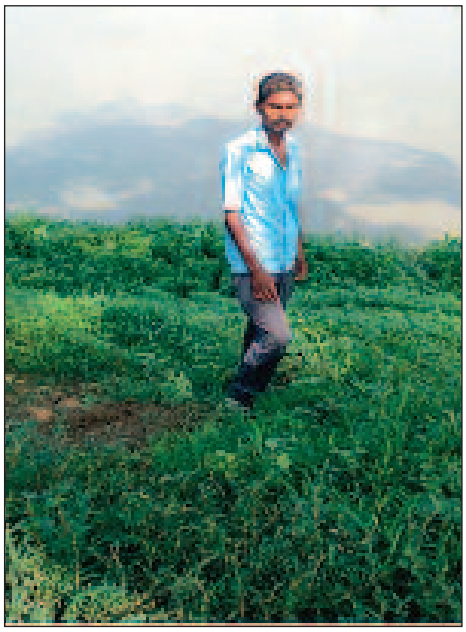

मेरा नाम दिलीप चैधरी पिता बालमुकुन्द चैधरी है। मैं ग्राम कोराजी, पो0 माधोडीह, पंचायत-रामपुर, प्रखंड-संग्रामपुर जिला-मुंगेर, बिहार का निवासी हूँ। मैं पहले मुर्गी पालन करता था लेकिन जानकारी के अभाव मुझे बहुत नुकसान हुआ। फिर मेरे मित्र के सहयेाग से मैने मछली पालन करना षुरू किया। जिससे मैं काफी संतुश्ट हूँ। मै मछली के विभिन्न प्रजाति की मछलियां का पालन करता हूँ। जिसमें रेहु, कतला, बिरगेट, सिल्भर, ग्लास कप, रूपचन्द्रा, सीलन इत्यादि पालन करता हूँ। मैं लगभग 10 बीघा में मछली पालन करता हूँ। जिसमें मेरी लागत राषि 197000/- रू0 आता है। जिसमें 2 क्वि0 बीज डालने पर 20 क्वि0 मछली तैयार होता है जो लगभग 400000/- लाख रू0 में बिकता है जिसमें 20300/- रू0 का मुनाफा होता है। जिससे मैं काफी संतुश्ट हूँ।

उत्पन्न चिन्हित समस्याः- पुंजी का अभाव एवं जानकारी का अभाव।

उत्पन्न चिन्हित समस्या का निदान आपने कैसे कियाः- हमारे मित्र जो बगल के रहने वाले है। उन्हीं के सहयोग एवं मार्गदर्षन से मैं यह कार्य करने में सफल हुआ।

परिचय

कृषक का नाम :- **श्री दिलीप चैधरी**
पिता/पति का नामः- श्री बालमुकुन्द चैधरी
पता :- ग्राम-कोराजी, पो0-माधोडीह, पंचायत-रामपुर
प्रखंड-संग्रामपुर, जिला-मुंगेर,
मो0 नं0:-9801628969

व्यक्ति अथवा संस्थान से प्राप्त सहायता का विवरणः- कितने दिनो से उपरोक्त कार्य कर रहें है।:-विगत 20 वर्शो से ।

उपरोक्त कार्य करने से प्राप्त सफलता का विवरणः-मैने मछली पालन करना षुरू किया। मुझे षुरू से ही फायदा हुआ। जिससे मैं काफी संतुश्ट हूँ और कुछ लोगों को रोजगार भी दे रहा हूँ। मैं मछली का दुकान भी चलाता हूँ।

सफलता प्राप्ति के मुख्य कारकः-आत्मा कर्मचारी , संग्रामपुर, मुंगेर के दिषा निर्देष से।

पुरस्कार यदि कोई प्राप्त किये होः-नहीं

44 मुर्गी, बकरी एवं मत्स्य पालन कर पायी सफलता

परिचय

किसान का नामः- सतीश कुमार
पिता का नाम :- दिनानाथ राम
पताः- ग्राम- लक्ष्मणपुर बाथे, पंचायत- कामता, पो.- कामता, थाना-परासी, प्रखण्ड -कलेर, जिला-अरवल, पिन कोड- 804428
मोबाईल नं0 :- **9931388587**
योग्यता :- स्नातक (ठ।)
किसान के पास खेती योग्य भूमिः- दो एकड़

मेरा नाम सतीश कुमार, पिता-श्री दिनानाथ राम , ग्राम- लक्ष्मणपुर बाथे, जिला अरवल का निवासी हूँ। मैने अपनी शिक्षा BA (स्नातक) S.D College kaler से प्रथम श्रेणी में उर्तीण किया। मैंने अपना करियर बनाने कई कोचिंग संस्थान एवं कई प्रायोगिक परिक्षाओं में भाग लिया परंतु सफलता नहीं मिली। मेरे पिता ने नौकरी हेतु श्रीलंका भेजा पर मेरे मन में व्यवसाय की इच्छा थी इसलिए मैने नौकरी को छोड़कर अपने धर वापस आया और कृषि विभाग एवं आत्मा से जुड़कर मैंने मुर्गीपालन, मत्स्य पालन एवं पशुपालन का प्रशिक्षण लिया एवं अपने ग्राम में निजि जमीन पर मुर्गी फार्म एवं मत्स्य पालन एवं बकरीपालन के लिए फार्म खोला।

मेरा मुर्गीपालन का फार्म लगभग 1 एकड़ जमीन में है जिसमें लगभग 5000 चूजे एक बार मे तैयार हो जाता है जो प्रतिदिन 8 फीट तक हो जाता है। मुगीपालन से प्रतिवर्ष वार्षिक आमदनी लगभग 5 लाख तक हो जाता है।

मत्स्य पालन के लिए तालाब लगभग 5 कटठा में है जिसमें रोहू, कतला एवं नजन मछलीपालन करता हूँ। इससे प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख की आमदनी हो जाती है। मेरे पास एक बकरी फार्म भी है जिसमें लगभग 50 बकरीयाँ है जो कि देशी नस्ल की है इससे भी मेरी आमदनी लगभग 2 लाख तक हो जाती है। इस व्यवसाय से शुरूआत में लगभग में 7 लाख रू0 तक की वार्षिक आमदनी हो जाती थी पर अब मेरी आमदनी 8-9 लाख रू0 वार्षिक है। मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले 5 वर्षो में 15-20 लाख तक कर लुगा। जो कि मुझे लगभग है कि नौकरी से अच्छा एवं ज्यादा है इस लिए कृषि क्षेत्र मं व्यवसाय करना अच्छा लगा। मैं कृषि विभाग एवं आत्मा आयोजित प्रशिक्षण मे समय-समय पर भाग लेता हूँ एवं ज्ञान अर्जित करता हूँ।

(श्री विकास कुमार निराला एवं श्री नीरज कुमार, सहायक तकनीकी प्रबंधक, प्रखण्ड -कलेर)

45 केशरंजन बना मत्स्य उत्पादक

परिचय

नाम:-केशरंजन राय
पिता का नाम:-ब्रह्मदेव राय
पता:-ग्राम-मठिला पोस्ट-मठिला, थाना-कोरान सराय, प्रखण्ड-डुमरॉव, जिला-बक्सर(बिहार)
दूरभाष संख्या:-9065146362
खेती योग्य भूमि (एकड़) मे:- 03 एकड़
सिंचित क्षेत्र (एकड में):- 02 एकड़
असिंचित क्षेत्र (एकड में):- 01 एकड़
किसानकाप्रकार-व्यक्तिगत

केशरंजन राय, पिता- ब्रह्मदेव राय , ग्राम - मठिला, पंचायत-मठिला, प्रखण्ड डुमरॉव, जिला बक्सर बिहार का निवासी हूँ। मैं हाईस्कूल की शिक्षा ली है।मेरे पास 03 एकड़ कृषि योग्य भूमि है जिसमें मैं परम्परागत खेती धान तथा गेहूँ का करता हूँ। लेकिन संतोषजनक उत्पादन नहीं हो पाता था । इसके बाद मैं प्रखण्ड कृषि कार्यालय डुमरॉव से सम्पर्क कर किसान सलाहकार मठिला के द्वारा परामर्श से वर्ष 2013-14 में मत्स्य पालन के उद्देश्य से एक तालाब का निर्माण स्वयं की राशि से करवाया जिसका लागत लगभग 01 लाख रूप्या जो क्षेत्रफल में 60 फीग 40 फीट था। साथ में एक पम्पसेट, खूलाबोरिं और एक कमरा बनवाया जिसका लागत खर्च लगभग एक लाख 20 हजार रूपया आया। प्रथम तलाब में पहली बार मछली का जीरा (प्यासी) लगभग 6000 (संख्या) छोड़ा गया जो बक्सर जिला से क्रय किया गया जिसका लागत लगभग 40,000 रुपए आया और साथ में मछली को तैयार हो ने तक (5-6 महीना) लगभग 125 बोरी (35 किलो/बोरी) का जिसका लागत राशि लगभग 2 लाख 16 हजार रूपया आया । मछली की तैयारी तक लगने वाले रोगों के लिए एन्टीबायोटिक, एन्टीफंगल, एन्ओ पैरासीटीक तथा पानी को साफ रखने के लिए पोटैशियम इत्यादि दवाओं को खरीदने में पूरा खर्च 6000 रूपया का आया। मेरी मजदूरी को भी शामिल कर लिया जाय तो 6 महिने का मजदूरी 54 हजार होता है। इस तरह से प्रथम तालाब में पूरा लागत खर्च मछली को तैयारी तक 3 लाख 16 हजार आता है। प्रथम तलाब से उत्पादन लगभग मछली (प्यासी) का 42 क्विंटल होता है। बिक्री तालाब से हो जाता है । एक किलो मछली का किमत लगभग 100 रू. होता है। इस प्रकार 42 क्विंटल मछली का कीमत 4 लाख 20 हजार होता है। इस प्रकार प्रथम वर्ष में मूनाफा लगभग 1 लाख 4 हजार रूपया का हुआ। चूँकि हमारा क्षेत्र निचली क्षेत्र के अंतर्गत आता है जहाँ पर 06 महिना तक जल-जमाव रहता है जिसके कारण फसल उतनी अच्छी नहीं हो पाती है। और प्रथम तालाब से लाभ होता देख दूसरा तालाब वर्ष 2015-16 में खुदवाया जिसका साइज 80 फीट X 60 फीट है तथा लागत लगभग 01 लाख 50 हजार आया । मछली का जीरा 8000 (संख्या में) जिसका लागत 60,000 रूपया एवं मछली तैयारी तक 70 बैग (एक बैग 35 किलो का) जिसका कीमत 01 लाख 12 हजार रुपया होता है। पूरा दवा खर्च 10,000 रूपया । इस तालाब मे विभिन्न प्रकार के मछलियॉ जैसे - रोहू, कतला, नैनी, कमलकात शामिल है जिनको तैयार होने में 12-14 महीना लगता है, डलवाया। मेरी मजदूरी लगभग 50,000 रुपये होता है। कुल खर्च 02 लाख 32 हजार रुपये हुआ। इन मछलियों का कुल उत्पादन लगभग पहले सीजन में 30 क्विंटल हुआ । जिसका बिक्रय मूल्य औसत मछली दर 160 रुपये के हिसाब से 04 लाख 80 हजार रुपये हुआ। इस तरह कुल लाभ 02 लाख 48 हजार रुपये हुआ। दोनों तालाबों का कुल लाभ की गणना की जाय तो 03 लाख 52 हजार होता है। इस सीजन में दोनों तालाब से अच्छी आमदनी होती है । इसको बिक्री करने में कोई परेशानी नहीं होती है। इस तालाब का स्वयं मै देख-रेख करता हूँ । अभी तक मुझे विभाग से प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है तथा आत्मा, बक्सर के प्रशिक्षण और परिभ्रमण कार्यक्रम में हमेशा जाने को उत्सुक हूँ ताकि मत्स्य पालन में और बेहतर कर सकता हूँ। और अंत में प्रखण्ड कृषि कार्यालय, डुमरॉव तथा आत्मा बक्सर का धन्यवाद देना चाहता हूँ कि मुझे इस सफलता की कहानी में मुझे चुना गया।

दुग्ध उत्पादन से करते हैं आमदनी

धान, गेहू मेरा मुख्य फसल है धान एवं गेहू में खाद में खर्च भी अधिक हो रहा था और फसलो में रसायनिक खाद एवं कीटनाशक दवा का कुप्रभाव भी दिख रहा था अ मिट्टी की स्थिती भी खराब हो रही थी अ जानकारी के आभाव में खेती भी ठीक से नही हो पा रहा था अ खैर करते ही क्या ? जीवित रहने के लिए कोई विकल्प तो चाहिए ही था अ इसी दौरान मेरी मुलाकात इटाढ़ी प्रखंड के सहायक तकनीकी प्रबंधक से उनके छेत्र भ्रमण के दौरान हुई अ उन्होंने खेती के साथ साथ गाय पालन करने की सलाह दी जिससे दूध बेचकर अच्छी कमाई कर सकते है साथ साथ वर्मीकम्पोस्ट का भी उत्पादन सुरु हो सके जिससे खेत में लगने वाले खाद उर्वरक एवं दवाओं की लागत में थोड़ी कमी भी हो सके और फिर मैंने एक शाहिवाल और दो जर्सी गाय का क्रय किया, लेकिन गाय को दिए जाने वाला चारा एवं दाना का संपूर्ण ज्ञान मेरे पास नही था जिसके चलते दूध में कमी भी हो जाती थी और भी दिक्कतों का सामना करना परता था। इसी बीच आत्मा द्वारा चलाये जा रहे गोपालन पर मुझे प्रशिक्षण में भेजा गया। प्रशिक्षण निःशुल्क था। प्रशिक्षण में मुझे गोपालन की उन्नत तकनीक, देख रेख, इत्यादि विषयों पर विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी जिससे पशुपालन की ओर मेरे रुझान और भी बढ़ गया। प्रतिदिन मेरे पास 45-48 लीटर दूध हो जाता है तथा प्रतिदिन लगभग 1000 रुपये का शुद्ध बचत होता है। जिससे मेरा परिवार सुखमय जीवन व्यतीत कर रहा है।

परिचय

किसान का नाम : दिनेश कुमार सिंह
पिता का नाम : स्वर्गीय हरेश्वर सिंह
पूरा पता : ग्राम- बकसड़ा, पोस्ट- इटाढ़ी, थाना- इटाढ़ी, जिला- बक्सर
मोबाइल नं. : 9973509083
खेती योग्य भूमि : 1 हेक्टेयर
सिंचित - 1 हेक्टेयर

46

ओमप्रकाश कर रहे मत्स्यपालन

परिचय

किसान का नाम - ओम प्रकाश सिंह
पिता/पति का नाम - नन्दजी सिंह
पूरा पता - गाँव/मुहल्ला - मठगौतम, पो0 - धतिवना, थाना - थावे, प्रखंड - थावे,
जिला - गोपालगंज (बिहार)
मोबाइल सं0- 7033320651
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 05 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 05 है
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)-

मैं ओम प्रकाश सिंह पिता- नन्दजी सिंह ग्राम- मठगौतम पंचायत- धतिवना प्रखण्ड- थावे जिला- गोपालगंज का स्थाई निवासी हुँ मैं अपने भूमि पर धान, गेहुँ, मक्का इत्यादि का खेती करता था जिससे मुझे संतोष जनक आमदनी नहीं हो पाता था जिससे मुझे अपने परिवारिक लालन-पालन में परेशानी होत था। अपने परिवार में मैं दो भाई में बड़े भाई होने के नाते सारी परिवारिक बोझ मेरे उपर आ गई और जानकारी के अभाव में पुस्तैनी खेती पर हो रहे धान, गेहुँ की खेती ही कर रहा था। घर की जिम्मेदारी होने के कारण मैं 10वीं तक ही पढ़ाई कर पाया और जिससे सरकारी नौकरी मिल पाना मुश्किल था तो मैं व्यवहारिक जीवन यापन करने को सोंचा इसके लिए मैंने तरह-तरह के कृषि मद को चुना इसमें से मुझे मत्स्यपालन सबसे रूचीकर लगा। इसके लिए मैं शुरूआती दौर गॉव के मित्रों के साथ मिलकर छोटे स्तर पर मत्स्यपालन का कार्य प्रारम्भ किया, लेकिन अच्छी खासी आमदनी नहीं हो पाया। मैंने आमदनी बढ़ाने के लिए सोचा तब मुझे कृषि विभाग में सम्पर्क किया जहॉ से आत्मा कर्मियों से सम्पर्क करने को कहा गया जो मुझे प्रशिक्षण दिलवाने में अहम भूमिका निभाई। मैं प्रशिक्षण के ए बामेती, पटना, बैरकपुर (कोलकाता), लखनउ (उ0प्र0) आदि जगह पर जाकर तकनीकी ज्ञान अर्जित किया। मैं प्रशिक्षण प्राप्ति के पश्चात मैं अपना खुद का तालाब निर्माण 1.5 एकड़ में मत्स्यपालन तकनीकी ढ़ंग से करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे आमदनी में लगातार वृद्वि होने लगा। अब मैं 01 हेक्टेयर की भूमि पर मत्स्यपालन करता हुँ मैं इसी वर्ष कृषि विभाग से ह्वजल जीवन हरियालीह्व योजना के अन्तर्गत एक तालाब का निर्माण बरवाया है, और आगे भी मत्स्यपालन का दायरा बढ़ाते हुए समेकित कृषि प्रणाली का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। समेकित कृषि प्रणाली के तौर पर स्प्रींकलर सिंचाई पद्वति के साथ 1/2 एकड़ भूमि पर लीची की खेती प्रारम्भ किया है। अब मैं एक प्रगतिशील कृषकों के श्रेणियों में अपना स्थान प्रतिस्थापित करने में सक्षम हुआ हुँ और आस-पास के कृषकों के लिए प्रेरणा स्रोत भी। किये जाने वाला कार्य के संबंध में शुरू से अंत तक की पूरी जानकारी, उत्पाद कब और कहाँ बेचते हैं तथा तकनीकी एवं वित्तीय सहायता कहाँ से प्राप्त की हैं का पूर्ण

विवरण। मैं शुरूआत में मित्रों के साथ मछलीपालन करना प्रारम्भ किया लेकिन मैं अच्छे निर्णय लेने में परेशानी का सामना करना पड़ता था फिर मैंने बामेती, पटना में प्रशिक्षण का शुरूआत किया वहॉ से फिर मैं अपने दम पर मत्स्यपालन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। शुरूआत में मैं गोपालगंज से ही बीज खरीद कर काय करता था। अब मैं मत्स्यपालन बीज कोलकाता से लाकर एवं दाना गोरखपुर से खरीदकर 01 हेक्टेयर में मत्स्यपालन के साथ और दायरा बढ़ा रहा हुँ। मेरे तालाब से उत्पादन मछली को अपने ही तालाब पर व्यापारिक तौर पर गोपालगंज, बेतिया, सिवान, के मण्डी व्यापारी तक मैं बेचता हुँ एवं अब मैं समेकित कृषि प्रणाली के बारे में भी मुझे हाजीपुर से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है। जिससे मैं बागवानी आम, की खेती भी शुरूआत किया है।

सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण तत्व/घटक- (व्यक्तिगत प्रयास/आत्मा से सहयोग/अन्य विभाग से सहयोग)

स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव- स्थानीय कृषकों ने भी मेरे तालाब से प्रेरणा लेकर लगभग 20 कृषकों को भी मत्स्यपालन का कार्य शुरूआत किये हैं और वे सभी कृषकों का मानना है मेहनत अगर मेरे तालाब तन-मन से किया तो सफलता पाने से कोई रोक नहीं सकता और यहॉ कृषक भी उन्नती कार्य प्रारम्भ कर दिये हैं।

मशरूम ने बदल दी जिन्दगी अमरनाथ

परिचय

किसान का नामः- अमरनाथ शर्मा
पिता/पति का नामः- वशिष्ठ नारायण शर्मा
पूरा पताः- ग्राम/पोस्ट-पताही जगरनाथ, पंचायत- पताही, प्रखण्ड - मुशहरी, जिला - मुजफ्फरपुर
मो0न0ः- 9234810744
खेती योग्य भूमिः- 0.38 हे0
असिंचित क्षेत्र (ह0 में):- 0.38 हे0
किसान का प्रकारः- व्यक्तिगत

मेरा नाम अमर नाथ शर्मा, उम्र 51 वर्ष है एवं मेरे पिता का नाम-वशिष्ठ नारायण शर्मा है। मैं पताही जगरनाथ ग्राम जो पताही पंचायत, प्रखण्ड मुशहरी का रहने वाला हूँ। मेरे पास 0.38 हे0 असिंचित कृषि योग्य भू मि है जो प्रखण्ड एव ं जिला मुख्यालय से 20 किलो मीटर सूदरू है। मैं पारंपरिक सोच एव ं पारंपरिक तकनीकी से प्रभावित था और उसी के आधार परंपरागत धान एवं गेहूँ की खेती करना था लेकिन खेती से मुझे उचित आमदनी नहीं हो ं पाता था। जिसके परिणामस्वरूप मुझे अलग से जीवकोपार्जन करने के लिए मजदूरी करना पड़ता था। गरीबी के कारण मेरे जीवन में रूखा-सूखा खाना, घर-परिवार चलाना, मजदूरी करना एव ं परपं रागत तरीके से धान एवं गेहूँ की खते ी की खेती पर गुजर वसर करना हमारी दिनचर्या वन गई थी । कृषि विभाग से अवगत नहीं था यह कहानी इनकी नहीं, लगभग इस गावँ के लगभग सभी किसानों की थी। वर्ष 2019 में मेरी मुलाकात स्तुति झा प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, मुशहरी से एक आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान हअु ा। उनके माध्यम से मुझे आत्मा मुजफ्फरपुर के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। उन्हानें मुझे मशरूम की प्रशिक्षण लेने एव ं मशरूम की खते ी के लिए जागरूक की। फिर मैंने आत्मा मुजफ्फरपुर द्वारा आर्यो जत मशरूम की तकनीकी प्रशिक्षण में भाग लिया और मशरूम उगाना शुरू कर दिया।

फिर समय-समय पर प्रखण्ड आत्मा कार्यालय मुशहरी। द्वारा तकनीकी ज्ञान दिया गया और उनके मार्गदर्शन म ं डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय पूसा से स्पॉउन माँगवाया और 20 बैग व्लमेजमत मशरूम लगाया जिस में प्रति बैग 2-2.5 किलो ग्राम मशरूम उत्पादन हुआ, 200 रूपया प्रति किलो ग्राम की दर से स्थानीय बाजार में बेचना शुरू किया। फिर मैंने डपसाल मशरूम की भी खेती शुरू कर दिया। अब मैंने 80 बैग मशरूम की खेती करना शुरू कर दिया मेरा। मशरूम उत्पादक क्षेत्र 3030 वर्ग फीट है। इससे मेरी आमदनी बढ़ गई।

47 अभिषेक ने बायोफ्लॉक विधि से मछली का उत्पादन

परिचय

नाम- **अभिषेक कुमार**
गांव कन्हौली
जिला वैशाली

बिहार के वैशाली जिला के कन्हौली गांव के युवा किसान अभिषेक कुमार ने पूरे जिले के मछली पालकों के लिए नजीर बन गए हैं। उनका जन्म एक किसान परिवार में हुआ है। वे बीएससी नॉटिकल सांइस में डिग्री लेने बाद में शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया जो कि भारत सरकार का ही एक उपक्रम है। इसमें तीन साल नौकरी करने के बाद वहाँ के व्यस्त और भीड़ भाड़ वाली जिन्दगी से उब कर अपनी नौकरी छोड़ दी। देश के प्रधानमंत्री की ओर से मछली पालका के लिए मत्स्य संपदा योजना पिछले साल 2020 लागू की गयी । इस योजनाओं से प्रोत्साहित होकर अभिषेक ने अपनी पुस्तैनी काम में भविष्य बनाने के लिए और अपने साथ-साथ अपने प्रदेश के युवा भाई को भी रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बिहार लौट आया। मैरीन लाईन के क्षेत्र में नौकरी करने के कारण। ुनंबनसजनतम बनसजनतम पदकनेजतल को बहुत करीब से देखा. और समझा था।इसी कारण वे अपना भविष्य बनान मछली पालन के क्षेत्र में उचित समझा जो कि कृषि का एक सुरिक्षत अंग हैं। 2015 से ही इंटरनेट के माध्यम से इजरायलए इंडोनेशियाए थाईलैंड और अमेरिका के मछली पालन के तकनीक को देखा और समझा। बिहार आने के बाद पटना के मीठापुर स्थित आईसीएआर में मत्स्य विभाग में संपर्क किया लेकिन वहां से बायोफ्लौक तकनीक से मछली पालने का जानकारी प्राप्त किया। फिर वे आंध्र प्रदेशए बालासोर ओडिसा और राँची के सरकारी संस्थान में इंसेंटिब कल्चर का जानकारी तो मिला लेकिन वे पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हुए। इंटरनेट पर प्राइवेट लोगों के द्वारा ट्रेनिंग और प्रचार देखकर और भी भ्रमति हो गया। इसी प्रकार बायोफ्लौक तकनीक के बारे में जानकारी के लिए खोजबीन करता रहा। उनके बड़े भाई ने ब्ध्ध्. प्ब्ा मोतीपुर के संचालक वैज्ञानिक डॉ अकलाकुर से मुलाकात कारवाई। वे उनके मार्गदर्शन से पुरी तरह संतुष्ट हुआ। उनके मार्गदर्शन में उन्होंने 50-50 हजार लीटर क्षमता के चार सीमेंट टैंक का निर्माण किया। साथ ही इसमें दो लाख लीटर पानी के क्षमता वाले टैंक में मैं 95000 पंगेशियस मछली की सीड स्टॉक किया । इन्होंने जिले में पहली बार मछली पालन की आधुनिकतम तकनीक बायोफ्लॉक विधि को अपनाया है। जिसमें कम खर्च, कम चारा, कम जगह और कम पानी में मछली का ज्यादा उत्पादन संभव है।

बताते है कि नॉटिकल सिसेज कम हो रहा है ऐसी स्थिति में पर्यावरण व मौसम की अनुकूलता को देखते हुए 1900 स्कावयर फीट में इस विधि से मछली उत्पादन शुरू किया । इससे बनाने में करीब में करीब 19-20 लाख रुपये खर्च हुआ । 50-50 हजार लीटर क्षमता के चार सीमेंट टैंक में सिर्फ पंगेसियस का 95000 जीरा डाला। यदि मछली के दाना की खपत की बात की जाय तो छह महीने पर चार - पांच लाख रुपये खर्च होता है । 24 घंटे बिजली के लिए दो जेनरेटर, दो इनर्वटर , बैट्री , वातावरण के अनुकूल बनानो के लिए शेड , मोटर , दो एडियेटर, एरियसन पाइप सामग्री को लगाया गया है। मछली का उत्पादन लगगभग 16-20 टन होगा। वहीं वैशाली जिला का पहला है। आसपास के किसान के प्रभाति हो रहे हैं। आने वाले 1 साल में अपने 2 लाख लीटर के क्षमता को बढा कर 10 लाख लीटर करए 80 से 100 टन उत्पादन का लक्ष्य रखा है। सभी युवाओं और किसान भाईयों से कहना चाहूँगा कि मछली पालन के क्षेत्र में आप सभी बायोफ्लॉक तकनीक से कम जगह और नियंत्रित वातावरण में 10 गुना तक अधिक उत्पादन लेकर अपना भविष्य बना सकते हैं।

48 बायोफ्लॉक तकनीक अपनाकर यशवन्त कर रहे मत्स्यपालन

परिचय

किसान का नाम - **श्री यशवन्त कुमार**
पिता/पति का नाम - श्री जितेन्द्र प्रताप सिंह
पूरा पता - गॉव/मुहल्ला- कोईलवर, पोस्ट कोईलवर, थाना- कोईलवर, प्रखंड - कोईलवर, जिला-भोजपुर (बिहार)
मोबाइल सं0- 9931281041
खेती योग्य भूमि (हे0में) - 5 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हे0 में) - 0
असिंचित क्षेत्र (हे0 में) - 5 हेक्टेयर
किसान का प्रकार - समुह का गठन किया जा रहा है। (स्वयं सहायता समूह/कृषक हित समूह/खाद्य सुरक्षा समूह (महिलाओं के लिए)/ किसान उत्पादक संगठन के सदस्य/व्यक्तिगत)

यशवन्त 2012 में Civil इन्जीनियरिंग की पढ़ाई पास करने के उपरांत 2013 में Multi National Company में Civil इन्जीनियर के तौर पर कार्य करने लगे। लेकिन वे हमेशा कृषि के क्षेत्र में अपना ध्यान लगाते रहें। जब भी समय मिलता वे कृषि विभाग आत्मा के पदाधिकारियों से सम्पर्क कर कृषि के क्षेत्र में कुछ करने का जानकारी प्राप्त करने प्रयास करते। आखिर अंत में उन्होने बायोफ्लॉक तकनीक से मछली पालन करने का मन बनाया और 2019 में नौकरी छोड़ दी। उस समय बायोफ्लॉक तकनीक पर प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए केवीके छतीसगढ़ गये।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत आत्मा भोजपुर के दिशा निर्देश में सर्वप्रथम 10 बायोफ्लॉक टैंक का निर्माण किया जो तारपोलिन का था। इसके लिए आत्मा भोजपुर के द्वारा उन्होने 50,000 रू० नवाचार गतिविधि कार्य करने के लिए प्रदान किया। उनके बायोफ्लॉक का उद्घाटन जिला पदाधिकारी भोजपुर श्री रौशन कुशवाहा के द्वारा किया गया। उनके सार्थक प्रयास से 23 तारपोलिन का बायोफ्लॉक टैंक एवं 04 सिमेंटेड अधिक है, जिससे वे सलाना 12 लाख रू० का आय प्राप्त कर रहे है। आत्मा के सहयोग से उन्हे बैंक के द्वारा लोन भी प्रदान किया गया एवं मत्स्य विभाग के द्वारा बायोफ्लॉक पर अनुदान की राशि भी प्रदान की गई है।

इनके सहयोग से आत्मा भोजपुर के तत्वाधान में लगभग 70 से अधिक किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इनके देख रेख में अभी तक जिले में 10 और कृषकों के द्वारा बायोफ्लॉक लगाया गया है। इनके प्रयोग पर 200 से अधिक किसानों का प्ररिभ्रमण भी कराया गया है। इनके द्वारा वर्तमान में 07 बीधे मे तलाब निर्माण कराया जा रहा है। जो भोजपुर जिला में मिशाल है। वर्तमान में मछली पालन व्यवसाय में आशा के अिनुरूप सफलता को देखते हुए उनके द्वारा 7 बीघा में खुला तालाब बनाया गया है जिससे इस वर्ष 06 लाख रू० मुनाफा कमाया। इनके बायोफ्लॉक प्रक्षेत्र पर विभिन्न जिलो के किसानों को इनके द्वारा प्रशिक्षण देने का भी कार्य कराया जा रहा है। किसानों के रूची को देखते हुए इनके द्वारा अपने प्रक्षेत्र परा प्रशिक्षण हॉल का निर्माण भी कराया गया है। इनके द्वारा जिले के विभिन्न प्रखण्डों के किसानों को बायोफ्लॉक के बारे में जादकारी दी जा रही है। यह कि मैं अपने आस-पास और पूरे राज्य में 400 किसानों को अपने इस क्षेत्र में आने के लिए तैयार किया और 1000 लोगों को बॉयो फ्लॉक और पॉन्ड फार्मिंग का प्रशिक्षण दिया।

49 जय प्रकाश ने उद्यानिक खेती कर बढ़ाया जिले का मान

परिचय

नाम - श्री जय प्रकाश सिंह,
पिताः स्व0 सुदर्शन सिंह
ग्रामः- कृपालपुर, पोस्टः- देवहलिया, पंचायतः कल्याणपुर, प्रखण्डः- दुर्गावती, जिलाः- कैमूर (भभुआं)
मो0 न0: 6206258349
खेती योग्य भूमि (हे0) में-2.0
सिंचित क्षेत्र (हे0) में 2.0
हरित क्रांति स्वयं सहायता समूह-क्र0स0-ज्ञ।ऋ13.14ऋ53

पुरस्कारः-

उद्यान पंडित प्रतियोगिता, कैमूर
पपीता में तृतीय स्थान -2007 में
कोहड़ा में प्रथम पूरस्कार-2007 में
करेला में द्वितीय स्थान - 2007 में
अमरूद् में तृतीय स्थान - 2007 में
लौकी में द्वितीय स्थान - 2017 में
पातगोभी में द्वितीय स्थान - 2017 में
31 अगस्त 2007 को किसान श्री पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रशिक्षणः-

8-10 फरवरी 2010 में आत्मा के सहयोग से फैजाबाद में श्फसल उत्पादनश विषय पर प्रशिक्षण लिया।
20.11.2012 से 24.11.2012 तक प्रशिक्षण लिए। श्करनाल हरियाणाश में श्वैज्ञानिक विधि से पशुपालनश विषय पर।
28.06.2014 से 30.06.2014 तक श्औषधिय एवं सुगंधित पौधों का प्रोपेगेशन तकनीकश पर आत्मा, कैमूर की तरफ से प्रशिक्षण।
गौ- विज्ञान अनुशंधान केन्द्र देवलापार,नागपुर में 04-1-20-8-1-20 तक जैविक खेती पर प्रशिक्षण।

परिभ्रमणः-

09-10 सिंतम्बर 2013 में महात्मा मंदिर गांधीनगर में आयोजित श्वाईब्रेट गुजरात वैश्विक कृषि समिट 2013 में भाग लिए।

मै जय प्रकाश सिंह, पिताः स्व0 सुदर्शन सिंह ग्रामः कृपालपुर, पोस्ट-देवहलिया,(821110) पंचायतः कल्याणपुर, प्रखण्डः दुर्गावती, जिलाः कैमूर (भभुआं) का निवासी हुँ। मेरे दो पुत्र और एक पुत्री है।, जिनका नामः अदित्य,विवेक और अनुष्का है। मै एक सामान्य परिवार से हुँ। मेरे परिवार के जीविको पार्जन का मुख्य अधार खेती ही थी जिसको हमारे पिता जी करते थे। एक दिन अचानक पिता जी का तबियत खराब हो गया, हमलोग डाक्टर के याहां लेकर गये दवा होने के बाद कुछ दिन ठीक रहे, लेकिन दुबारा तबियत खराब जल्दी ही हो गया और हम लोग काफी इलाज कराये लेकिन पिता जी को नही बचा पाये। और पिता जी हमें सन् 2003 में ही छोड़कर चले गये। उस दौरान हम पढ़ाई कर रहे थे। लेकिन एकाएक परिवार की पुरी जिम्मेदारी मेरे कंधो पर आ गयी और हम खेती-बारी करने लगे। लेकिन खेती-बारी से हमारे परिवार का भरण पोषण नही हो पाता था। क्योंकि अब बच्चे बड़े होने लगे परिवार बढ़ने लगा। अब परिवार का खर्च भी बढ़ने लगा। पारंपरिक खेती एवं वर्षा अधारित खेती होने के कारण तथा कृषि में मौसम की अनिश्चितता होने के कारण वार्षिक आय घटने लगा। और पुरा परिवार परेशान रहने लगा, आये दिन घर में झगड़ा होता रहता था। आर्थिक तंगी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। इसलिए गृह क्लेश खतम होने का नाम नही ले रहा था, और मै काफी परेशान रहने लगा कुछ समझ मे नही आ रहा था। कि परेशानी से कैसे निकला जाय, क्या किया जाय। मै खेती से पुरी तरह निराश होकर कही दुसरे प्रदेश में जाकर नौकरी करने का विचार मन में आने लगा। तभी मुझे पता चला कि हमारे प्रखण्ड में किसान गोष्ठी का आयेजन है जिसमें जिला के कृषि विभाग के पदाधिकारी आयेगें। तब मेरे मन में भी इस गोष्ठी में शामिल होने का विचार आया और मै भी बहुत से किसानों के साथ उस गोष्ठी में सामिल हुआ। उस गोष्ठी में कृषि विभाग के पदाधिकारियों ने बताया कि किसानों को परंपरिक खेती को छोड़कर नई पद्धति से खेती करनी चाहिए। नयी तकनीक के प्रयोग करने से उत्पादन कैसे बढेगा, गुणवत्तायुक्त उत्पादन कैसे मिलेगा। और उत्पादन लागत कैसे कम आयेगी तथा उत्पाद का सुरक्षित रख-रखाव करने एवं अपने उत्पाद को सही समय पर बेचकर अधिक मुनाफा कैसे प्राप्त करेगें इत्यादि विषयो पर विस्तृत जानकारी हम सभी किसानों को दिये और पुरानी पद्धति से जो किसान खेती करते आ रहे है। उसको कैसे किसान छोड़े इन सभी बातो को हम किसान भाईयों को सहज शब्दो में बताया गया। जिससे मै उन लोगों की बातों को सुनकर काफी प्रभावित हुआ। तथा मैने निश्चय किया, कि अब मै परंपरिक खेती का त्याग करके नई विकसित प्रणाली से खेती करूगां। उस किसान गोष्ठी के बाद हमने सब्जी एवं फलों की खेती वैज्ञानिक पद्धति से करनी शुरू कर दी तथा खेती में समय-समय पर आने वाली परेशानियों को प्रखण्ड एवं जिला के कृषि पदाधिकारियों से सुझाव लेकर जैसे-बीज का चयन,खरपतवारनाशी का प्रयोग, पौधों में लगने वाले कीट एवं रोग इत्यादि के निदान हेतु सलाह लेकर लेकर करने लगे। जिसके परिणामस्वरूप मेरा उत्पादन बढ़ने लगा एवं उत्पाद की गुणवता में भी सुधार होने लगा। जिससे मेरी आर्थिक स्थिति पहले से सुधरने लगी। और मेरा अपनी खेती में रूझान धिरे-धिरे बढ़ने लगा।

मै उद्यान पंडित प्रतियोगिता 2007 में भाग लेकर निम्नलिखित पुरस्कार पायाः-

पपीता में जिला में तृतीय स्थान आने पर पुरस्कार मिला।
कोहड़ा में जिला मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त किये।
करेला में जिला में द्वितीय स्थान प्राप्त किये।

अमरूद में जिला में तृतीय स्थान प्राप्त किये।

और मुझे 31 अगस्त 2007 को किसान श्री पुरस्कार से समानित किया गया जिसके तहत बिहार सरकार द्वारा एक लाख रुपए का नगद इनाम दिया गया।

8-10 फरवरी 2010 में नरेन्द्र देव कृषि प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमार गंज फैजाबाद में फसल उत्पादन विषय पर राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत जिला कृषि विभाग कैमूर बिहार के सौजन्य से प्रशिक्षण प्राप्त किये।

20.11.2012 से 24.11.2012 तक कृषि विज्ञान केन्द्र एवं डेयरी प्रशिक्षण केन्द्र राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान,करनाल (हरियाणा) द्वारा आयोजित वैज्ञानिक विधि से पशुपालन विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किये।

गुजरात सरकार द्वारा दिनांक 9-10 सितंम्बर 2013 को महात्मा मंदिर, गांधीनगर में आयोजित वाईबेट गुजरात वैश्विक कृषि समिट 2013 में देशभर के प्रगतिशील किसानों बुद्धजीवियों, नितिनिर्धारकों, वैज्ञानिकों शिक्षाविदो पौद्योगिकविदों इत्यादि के साथ विचार विमर्श के लिए एवं अपने अनुभव को साझा करने के लिए आमत्रित किया गया था। जिसमें हमको सम्मानित किया गया, तथा 51 हजार रुपए का इनाम दिया गया।

28.06.2014 से 30.06.2014 तक औषधिय एवं सुगंधित पौधों का प्रोपोगेशन तकनीक विषय पर आत्मा, कैमूर की तरफ से राज्य स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किये।

इस प्रकार से हम समय-समय पर खेती में होने वाले परिवर्तन तथा वैज्ञानिक पद्धति से होने वाली खेती की नई-नई तकनीकी की जानकारी लेने के लिए जिला के अंदर तथा राज्य के बाहर प्रशिक्षण लेते रहते है।और प्रशिक्षण होने के बाद अपने खेती पर उसका प्रयोग करते है। तथा उस प्रयोग को अगल-बगल के किसानों को तथा आत्मा द्वारा बनाये गये किसान हित समूह के सदस्यों को भी जानकारी देते है। जिससे वो भी हमारे खेती को देखकर प्रेरित होने के बाद करते है। जिससे उन सभी किसान भाइयों को लाभ मिलता है।

खेती की नई-नई तकनीक की जानकारी लेने के लिए मै प्रखण्ड के आत्मा स्टाप से एवं जिला के उपपरियोजना निदेशक एवं परियोजना निदेशक (आत्मा) से समय-समय पर मिलकर जानकारी लेता रहता हुॅं।

इसी क्रम में सन 2013 में मै जाकर आत्मा के परियोजना निदेशक (आत्मा) कैमूर से मिला तो उन्होने हमें बहुत ही अच्छी- अच्छी जानकारी दिये जिसके तहत उन्होने बताया कि आत्मा किसानों का समूह बनवाती है। एवं समय-समय पर उन सभी समूह के किसानों को प्रशिक्षण तथा खेती में नई तकनीक उपज जहां होती वैसी जगहो का परिभ्रमण भी करवाती है। जिससे किसान प्रेरित होकर उन नई-नई तकनीक का अपनी खेती में प्रयोग करते है। और किसानों को उससे काफी लाभ मिलता है।

उस जानकारी से मै बहुत संतुष्ट हुआ तथा अपने गांव में आकर किसानों केा आत्मा द्वारा बनने वाले समूह के बारे में बताया तो गांव के हमारे किसान भी किसान समूह से होने वाले लाभ के बारे में जानकर उत्सुक हुये और समूह बनाने के लिए तैयार हो गये।

तत्पश्चात मैने गांव में किसानों की बैठक रखकर आत्मा के पदाधिकारियों की बैठक अपने गांव के किसानों के साथ करवाके हमलोगों ने किसान हित समूह का निर्माण कराया तथा समूह के सदस्यों की सहमति से अपने समूह का नाम हरितक्रंति स्वयं सहायता समूह रखा।

जिसका क्र0स0 ज्ञ।ष्ध्13.14ध्53 है।

अब हम सभी छोटे एवं बड़े किसान समूह में होकर अपनी खेती करने लगे। जिससे हमें कई प्रकार से लाभ होने लगा।

समूह में खेती करने से हमको अपना बीज, दवाई,खाद, इत्यादि खरीदने एवं अपने उत्पाद

जैसे- धान, गेहूॅं, मूंग, दूध, मेंथा, तेल इत्यादि को एक साथ बेचने एवं खरीदने में काफी सहुलियत मिलने लगी और समूह के सभी सदस्यों को काफी लाभ होने लगा।

इसी क्रम में हम सन् 2014 में औषधिय पौधों का प्रोपेगेशन तकनीक पर प्रशिक्षण लेकर आत्मा मुंगेर की तरफ से आये और हमारे मन में भी औषधीय पौधों की खेती करने की उत्सुकता हुई और इसकी खेती करने के बारे में हम अपने समूह के सदस्यों से चर्चा किये तो किसान समूह के सभी सदस्यों ने निश्चय किया कि हम सभी मेंथा की खेती करेगें तभी कुछ सदस्यों ने कहा कि मेंथा की पेराई कहां किया जायेगा। तभी हमने जिला उद्यान विभाग में जाकर पता किया तो बताया गया कि डिस्टेलेशन यूनिट लगवाने पर 50 प्रतिशत अनुदान है। तभी हमने डिस्टेलेशन यूनिट लगवाने के लिए आवेदन कर दिये। और मेरा आवेदन स्वीकृत हो गया।जिसके तहत हम अपने यहां 50 प्रतिशत अनुदान पर जिसमें हमें दो लाख रुपए का अनुदान मिला था। डिस्टेलेशन यूनिट लगवाकर मेंथा की खेती हम सभी लोगों ने शुरू कर दिया जिससे हम सभी लोगों को मेंथा की पेराई कराने के लिए कहीं दूर नही जाना पड़ा। जिससे हमलोगों को काफी लाभ होने लगा।

सन् 2017 में उद्यान पंडित प्रतियोगिता में भाग लेकर लौकी में द्वितीय स्थान तथा पातगोभी में भी द्वितीय स्थान प्राप्त किये।

खेती में मुख्तः धान,गेहूॅं,मूंग,मेंथा इत्यादि की फसल मै लेता हूॅं। जिस कारण से मेरे पास भूसा की प्रर्याप्त मात्रा हो जाती थी। जिसको बेचने पर उचित मुल्य नही मिल पाता था। तथा खेती सीजन-सीजन होने के कारण मेरे पास प्रर्याप्त समय बच जाता था। जिस करण से मेरे मन में विचार पशुपालन करने का आय और यही धंधा ऐसा है। जिससे प्रतिदिन हमको कुछ पैसे देगा। इसलिए मैने पशुपालन करने का निश्चय किया लेकिन पशुपालन संबंधित जानकारी मुझे नही थी। इसलिए पशुपालन संबंधित जानकारी के लिए मैने सन् 2011-2012 में कृषि विज्ञान केन्द्र एवं डेयरी प्रशिक्षण केन्द्र राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल हरियाणा से वैज्ञानिक विधि से पशुपालन विषय पर प्रशिक्षण लेने के बाद हमने अपने यहां पशुपालन का काम शूरू कर दिया, जिसमें

हम 15 गाय रखे है। जो निम्नलिखित प्रजाति की है:- जैसे- फिजिशियन,साहीवाल

पशुपालन करने से हम अपने फसल के अवशेष का भूसा बनाकर पशु को खिलाते है। तथा समुचित उपयोग कर लेते है। और हमें पशु के चारा के लिए कहीं भटकनानही पड़ता है। और पशु से जो हमें गोबर प्राप्त होता है। उसको गोबर गैस के रूप में इस्तेमाल करके घर का खाना बनाने में उपयोग कर लेते है। बाकी जो गोबर बचता था, उसको मै वर्मी कम्पोस्ट बनाने में प्रयोग कर लेता हुँ। और पशु के दूध का विक्री हम अपने यहां के लोकल बजार तथा सुधा डेयरी पर बेचकर लगभग 186400/ रुपए की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त कर लेते है। हम अपने याहां 1/2 एकड़ में तालाब खोदवाये है। जिसमें मछली पालन का काम करते है। हम अपने तालाब में रोहु,कतला प्रजाति का पालन करते है। जिसको हम अपने लोकल बजार में बेचकर 14000/ रुपए की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त कर लेते है। जिससे हमारे खाली समय का सद्पयोग भी हो जाता है। और आय भी प्राप्त होती है।

ख्हम अपने तालाब के चारो तरफ अच्छी मेड़बन्दी किये है। जिससे उन मेंड़ो पर चारो तरफ काष्ठी बृक्षारोपण किये है। जिससे तालाब में छाया भी रहता है। तथा आने वाले समय में उन पेड़ों से हमारी अच्छी खासी पूंजी भी तैयार हो जायेगी। और उससे हमको अच्छा लाभ प्राप्त होगा, उन लकड़ी को बेचकर,

अब मै जैविक खेती करना चाहता हुँ। जिसके लिए मैने अपने घर पर कृषि विभागकी तरफ सन् 2019-20 में 20 यूनिट का वर्मी कम्पोस्ट बनवाये है। जिससे हम अपने फसल अवशेष तथा पशु के गोबर का वर्मी कम्पोस्ट बनाने में इस्तेमाल कर लेते है। अब हमारे यहां वर्मी कम्पोस्ट निकलना प्रारंभ हो गया है। जिसका प्रयोग हम अपने खेतों में करना शुरू कर दिये है। जिससे

हमारे खेतों में मित्र किट की संख्या भी बढ़नी शुरू हो गयी है। तथा मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बनी रहेगी। एवं मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा भी बढ़ रही है। जिससे हमको जैविक खेती करने में हमारी मिट्टी काफी सहयोग करेगी। इसलिए हमने जैविक खेती करने के लिए गो-विज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार,नागपुर से दिनांक 04.01.2020 से 08.01.2020 को आयेजित जैविक खेती, केचुआं खाद निर्माण का प्रशिक्षण लेकर खेती की शुरूआत कर दी है। आज के वर्तमान परिवेश में हम किसान भाईयों के लिए समेकित कृषि प्रणाली का माडल अपने यहां के भूमि संरचना, जलवायु एवं अवश्यकतानुसार चयन करके समेकित कृषि करने से काफी लाभ होगा। इस कृषि में हमको अपने परिवार की आवश्यकतापूर्ति के साथ-साथ धनार्जन करने में भी काफी लाभदायक है। क्योंकि समेकित कृषि में हम व्यवसायिक तरीके से सब कु छ करते है। जिससे हम किसान भाईयों को काफी लाभ होता है। इसलिए हम अपने यहां पशुधन आधारित समेकित कृषि प्रणाली को अपनाकर खुशहाल जीवन जी रहे है। क्योंकि समेकित कृषि प्रणाली में एक घटक का अवशेष दुसरे घटक में मुख्य रूप से सामिल होकर हमें काफी लाभ पहुंचाता है। इसलिए हम अपने कृषि में फसल- पशु- मस्यिकी को सामिल किये है। जिससे कि हमारे फसल से जो अवशेष प्राप्त होता है, उस अवशेष को पशु को चारा के रूप में खिला देते है। तथा चारा के लिए हमें अतिरिक्त व्यय नही करना पड़ता है। तथा बाकी अवशेष का वर्मीकम्पोस्ट बनाने में इस्तेमाल कर लेते है। एवं पशु से दूध प्राप्त होता है। उसको बेचकर हमे आय भी प्राप्त होती है। तथा पशु से हमे गोबर प्राप्त होता है। इसको गोबरगैस में भी प्रयोग कर लेते है। जिससे हमारे घर के ईंधन की भी समस्या दूर हो जाती है। तथा बचे हुये गोबर को वर्मीकम्पोस्ट बनाने में एवं तालाब में भी इस्तेमाल कर लते है। तथा गौमुत्र का जैविक खेती मे भी प्रयोग कर लेने से हमें जो भी अवशेष प्राप्त होगा उसका समुचित उपयोग हो जाता है। इसलिए समेकित कृषि प्रणाली अपनाने से सभी घटकों का समूचित प्रयोग हो जाता है। एवं हम अपने यहां 1/2 एकड़ में तालाब खोदवाये है, जिसके चारो तरफ चैड़ा मेंड़ बनवाये है। जिसपर काष्ठीय बृक्षारोपण किये है, तथा चारो तरफ तार से घेराबन्दी किये है। जिसपर सब्जियों को चढ़ा देते है, जिससे हमारी शुद्ध आय में बचत होती है। तालाब के चारो मेंड़ पर काष्ठीय बृक्षारोपण किये है, जिसके लिए हमें किसी भी प्रकार का अतिरिक्त व्यय नही करना पड़ता है। जो कि आने वाले समय में हमारी एक नगद पूंजी तैयार हो जयेगी और पेड़ों के कारण हमारे तालाब में छाया भी बना रहता है। जिससे हमारे तालाब की मछली जल्दी तैयार हो जाती है। और उसको हम बेचकर वर्ष भर आय प्राप्त करते है।,

इस प्रकार समेकित कृषि प्रणाली अपनाने से हमारे सभी घटक का एक दुसरे का पूरक होने के कारण सभी घटकों समूचित उपयोग हो जाता है। जिससे कम जगह एवं कम लागत में अधिक मुनाफा प्राप्त हो जाता तथा सभी संसाधनों का समुचित उपयोग हो जाता है।

आज के वर्तमान परिवेश में हम अपने उत्पाद को जैसे- धन,गेहूँ,मूंग,दूध,मछली इत्यादि को स्थानीय बजार एवं सरकारी क्रय केन्दों पर तथा दूध को डेयरी फार्म पर भी बेच देते है।

पशुधन अधारित समेकित कृषि प्रणाली अपनाने से हमको अपने कृषि से 389400 रुपए की शुद्ध वार्षिक आय हो जाती है। जिससे मै और मेरा पूरा परिवार खुशहाल जीवन जी रहे रहे है। तथा पारंपरिक कृषि को छोड़कर समेकित कृषि करने से हमको काफी लाभ हुआ है। जहां पारंपरकि खेती करने मे लागत अधिक आता था। तथा लाभ कम प्राप्त होता था तथा कभी- कभी तो लागत पूंजी भी निकलना मुश्किल हो जाता था।

पारंपरिक खेती करके जहां मै अधिक पूजीं लगाकर भी कृषि में नुकसान उठाता था,वहीं आज मै कृषि विभाग, आत्मा,उद्यान विभाग के सहयोग से मै और मेरा पूरा परिवार वर्ष भर कृषि के कार्यों में ब्यस्त रहता है। जिसके कारण मेरा परिवार खुशहाल रहता है। हमको समेकित कृषि प्रणाली करते हुए देखकर बहुत से किसान समेकित कृषि प्रणाली को अपनाये है। तथा हमसे समय-समय पर हमसे जानकारी लेकर इस प्रणाली को अपनाकर लाभान्वित हो रहे है।

50 लाल बाबु ने डेयरी फॉर्म प्रबंधन में अपनाया उन्नत तकनीक

परिचय

किसान का नामः-लाल बाबु सिंह
पिता का नामः-श्री सुरेन्द्र सिंह
पताः-ग्राम-मठिला डेरा,पोस्ट-मठिला, थाना-कोरान सराय, प्रखण्ड-डुमरॉव, जिला- बक्सर(बिहार)
दूरभाष संख्याः - 8809470275
खेती योग्य भूमि (एकड़) मे :- 02 एकड़
सिंचित .क्षेत्र (एकड में):- 00 एकड़
असिंचित क्षेत्र (एकड में):- 02 एकड़
किसान का प्रकार-व्यक्ति गत

मैं लाल बाबु सिंह पिता श्री सुरेन्द्र सिंह ग्राम- मठिला डेरा, पंचायत-मठिला प्रखण्ड-डुमरॉव जिला बक्सर (बिहार) का निवासी हूँ । मै मैट्रिक की शिक्षा ली है।मेरे पास कुल कृषि योग्य भूमि 2 एकड़ है तथा कुछ बटॉइ, मालगुजारी पर भी खेती करता हूँ जिसमें मुख्य रूप से धान गेहूँ का फसल उगाता हूँ । मैंने ज्यादा पढ़ाई-लिखाई नहीं किया तो कोई ढंग का नौकरी भी नहीं मिला । अतः इस परम्परा गत कृषि कार्य से जुड़ गया पर संतोष जनक लाभा नहीं मिल पाया जिससे मैं अपने परिवार का भरण-पोषण अच्छे तरीके स` कर सकूँ । कुछ समय बाद ऐसा जानकारी मिला कि पशुपालन पर प्रशिक्षण मिल रहा है। अतः मैंने इस परम्परागत कृषि के साथ-साथ पशुपालन करने का मन बनाया ।इस तरह से मैंने वर्ष - 2018 में क्छै क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान, शास्त्री नगर, पटना में पशुपोषण एवं डेरी फार्म प्रबंधन का उन्नत तकनीक विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया । तदोपरांत घर के समीप में ही खाली जगह पर एक आधी पक्की शेड का निर्माण कराया जिसका साइज 30 फीट7 12 फीट है । कच्ची शेड बनवाने में लगभग 8000 रू0 का लागत आया । फीर मैंने 7 पशु जिसमे 3 पाड़ी (भैंस की बछिया) 1 दुधारू भैंस (बछिया सहित) तथा एक उन्नक विदेशी नस्ल का गाय (बछड़ा सहित) खरीदा गया। स्वयं की राशि से लगभग एक लाख रू0 की खरीदने में लागत आया। पशुओं के चारे में शरीर वजन के मुताबिक तथा दूधारू पशुओं के लिए अलग चारा की व्यवस्था किया जिसमें हरा चारा (बरसीम, बाजरा, जई) सूखा चारा- खली, चोकर, मकई का दाना, गेहूँ तथा जौ का दर्रा, कैल्सियम मिनरल मिश्रण इत्यादि शामिल जिसकी महीने की लागत लगभग 8000 रू0 होता हैं इस तरह पूरा साल में लगभग 96,000 रू. पशुओं के चारे पर खर्च हो जाता है। दोनों दुधारू पशुओं से दूध का उत्पादन लगभग 25 लीटर/दिन होता है जिसकी लगभग 900 रू. प्रतिदिन होता है तथा मासिक आय 27,000 रू0 होता है। शुद्ध लाभ हर महिने 19,000 रू0 का होता है और हर साल दो-तीन पशुओं को तैयार करके बेचा जाता है। जिससे 1 लाख 50 हजार की आमदनी होती है। इस प्रकार पशुपालन करके 2 लाख से 2 लाख 50 हजार की शुद्ध आमदनी हर साल हो जाती है। परम्परागत कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी करके मैं काफी खुश हूँ तथा इससे मेरी अब दैनिक जरूरतें भी अच्छे से पूरी हो रही है। मैं आत्मा बक्सर से संचालित विभिन्न प्रकार की परिभ्रमण, प्रशिक्षण कार्यक्रम में जाना चाहता हूँ कि मैं इस पशुपालन तथा इससे संबधित तमाम इकाइयों में बेहतर कर सकूँ। अंत में, मैं प्रखण्ड कृषि कार्यालय, डुमरॉव, अत्मा बक्सर का आभार प्रकट करता हूँ कि इस सफलता की कहानी हेतु मुझे चूना गया और भविष्य में और बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

मटर और सरसों की खेती कर भोला ने बनाया पहचान

परिचय

भोला प्रसाद सिंह,
सिमरी गांव, समस्तीपुर
मो. 8210460362

कृषि कार्य में बढ़ रहे खर्च के दबाव में जहां किसान खेती से मुंह मोड़ है हैं वहीं प्रखंड के सिमरी गांव के किसान भोला प्रसाद सिंह ने मटर और सरसों की खेती कर अपनी लागत का बीस गुणा अधिक आमदनी कमाकर एक मिसाल कायम कर दिखाया है।

सरकार के कृषि के क्षेत्र में सराहनीय कदम से जुड़ने और आमदनी को देख इनके हौसला बुलंद है। चार साल से मटर की खेती से अच्छी आमदनी प्राप्त कर इनके चेहरे गदगद है। एक एकड़ खेत में मटर के फाउंडेशन बीज 20 किलो बुआई के लिए कृषि विभाग से मुफ्त में मिला था जिस पर मात्र वर्मी कम्पोस्ट, पोटास, डीएपी, यूरिया आदि में 31 सौ रुपये खर्च कर 50 से 60 हजार की आमदनी प्रति साल प्राप्त हो रही है। मटर की ढाई इंच लंबी छीमी में 10 से 12 दाने लगे होते है। छीमी में भरे दाने को लेकर गांव से शहर के दलसिंहसराय, बाजितपुर, मोहीउद्दीननगर, बरौनी तक के मंडी में इसकी मांग बढ़ी है। बिक्री और आमदनी देख गांव के अन्य किसानों ने भी मटर की खेती शुरू कर दी है। किसानों की आमदनी के साथ मजदूरों और मालवाहकों को भी रोजगार के अवसर बढ़े हैं। किसान भोला प्रसाद सिंह ने बताया कि मटर को लाही से बचाने के लिए पीला सरसों लगाया गया है। लाही सरसों पर टीक जाता है और सरसों से आय भी होती है। वे जय जवान कृषक हित समूह से अध्यक्ष है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में उच्च उत्पादक एवं आय के लिए उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण में भी भाग लिए, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन की ट्रेनिंग, दियारा विकास परियोजना ट्रेनिंग, कृषक प्रशिक्षण में भाग, लीची उत्पादन में 2008 में जिला में प्रथम रहे, अमरूद उत्पादन में अभिव्यक्ति संस्था द्वारा सम्मानित हुए, बगीचा बचाओं के सदस्य आदि कार्यक्रम में भी भाग लेकर खेती के क्षेत्र में किसानों के बीच प्रेरणा के श्रोत बने है।

मिला चुका है सम्मान

खर्च से बीच गुना अधिक हो रही आमदनी
सरकार के कार्यक्रम से हो रहा फायदा
बीची उत्पादन में जिले में बने थे प्रथम, अमरूद उत्पादन में मिला सम्मान

51 खस की खेती ने बदली मो. हमीद की तकदीर

परिचय

किसान मो. हामिद के
मो. नं. 9955818835

विगत एक दशक में बिहार में औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती की ओर किसानों का झुकाव ज्यादा हुआ है. जिसका मुख्य कारण है लागत कम और मुनाफा ज्यादा. हालांकि राज्य स्तर पर इन पौधों अथवा बीज के साथ इनकी खेती से होने वाले उत्पादन के खरीद बिक्री की सुविधा न के बराबर ही है. पर किसानों में कुछ कर गुजरने की ललक ने उन्हें इसकी खेती की जानकारी एवं इसके उत्पाद की बिक्री के लिए दूसरे प्रदेशों तक पहुंचा दिया. इसी का परिणाम है कि अब राज्य का प्रगतिशील किसान नई ऊंचाइयां छूने को तत्पर है. परंपरागत खेती जैसे दलहन, तिलहन, धान एवं गेहूं आदि से इतनी कम आय होती है कि किसानों के लिए खेती घाटे का सौदा बन कर रह गयी है. परंतु कुछ प्रयोगधर्मी किसान हैं जो खेती में नफा-नुकसान की ज्यादा चिंता न कर नित नये प्रयोग करते रहते हैं. इन्हीं में से एक है राज्य के सीवान जिले के हसनपुर प्रखंड के लहेजी गांव निवासी प्रगतिशील किसान मोहम्द हामिद खां. इन्हें जिला व राज्य स्तरीय कई पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं.

खस की खेती कर तेल का उत्पादन

आज से लगभग तीन वर्ष पूर्व खस की खेती की शुरूआत करने वाले मो. हामिद खां सीवान, छपरा एवं गोपालगंज आदि जिले के दर्जनों किसानों को प्रशिक्षण दे कर खस की खेती करा रहे है. जिससे इन किसानों के जीवन की तसवीर बदल गयी है. इसकी खेती से किसानों को कम लागत में प्रति वर्ष लाखों की आय हो रही है. राज्य में नील गायों का उत्पात काफी है ऐसी स्थिति से निपटने के लिए यहां के किसानों को एक वैकल्पिक फसल की जरूरत थी. जो खस, सतावर, कालमेघ, मेंथा, पामारोजा, सेट्रोनेला, लेमनग्रास, आटीर्मीसिया तथा कोलियस आदि की खेती से पूरी होने की उम्मीद जगी है. बिहार के इन तीनों जिलों में अभी लगभग दस एकड़ में खस की खेती कर तेल का उत्पादन किया जा रहा है. यह फसल एक वर्ष में तैयार हो जाती है यदि अच्छी फसल हुई तो प्रति कट्ठा (1350 वर्ग फुट) 400 से 700 ग्राम तक तेल निकलता है जिसकी कीमत 15 से 18 हजार रुपये प्रति लीटर होती है. फरवरी में इस फसल की खुदाई कर आसवन विधि द्वारा तेल निकाला जाता है. इस मौसम में तेल की मात्र ज्यादा मिलती है. जड़ निकाल कर बचे हुए पौधों को फिर से नई फसल के लिए खेत में लगाया जा सकता है.

इत्र बनाने वाली कंपनियां, खस तेल की खरीदार

खस की खेती करने वाले ऐसे किसान जिनके पास तेल निकालने का साधन नहीं है उनके द्वारा उत्पादित जड़ मोहम्द हामिद 6000.00 रुपये प्रति क्विंटल खरीदने के साथ ही हजार से लेकर एक हजार पांच सौ रुपये प्रति कट्ठे की दर से खेत में लगी फसल खरीदने के बाद जड़ों की खुदाई कर स्वयं तेल निकालते हैं. इसका तेल लखनऊ तथा बाराबंकी आदि स्थानों पर इत्र बनाने वाली कंपनियां तथा व्यापारी 10 से 12 हजार रुपये प्रति लीटर खरीद कर ले जाते हैं. मो. हामिद सीमेप लखनऊ से दो रुपये प्रति पौधा लाकर नर्सरी तैयार करने के बाद एक रुपये प्रति पौधे की दर से किसानों को बेचते हैं. वैसे तो इसकी रोपाई पूरे वर्ष की जा सकती है परंतु दिसंबर से मार्च तक का समय इसकी रोपनी के लिए ज्यादा अनुकूल होता है. इसकी खेती छह माह तक जल-जमाव वाले खेत में भी की जा सकती है. कई विशेषज्ञों का ऐसा भी मानना है कि खस के पौधे यदि दो-तीन माह तक पानी में पूरी तरह से डूबे रह जाते हैं तब भी इसकी फसल पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ता हैं.

जुलाई माह में होती रोपाई

सीमेप लखनऊ के वरीय वैज्ञानिक वीरेंद्र कुमार सिंह तोमर का कहना है कि राज्य की मिट्टी विशेष रूप से दियारा की मिट्टी के लिए यह फसल ज्यादा लाभकारी है. जल जमाव वाली भूमि पर फरवरी एवं मार्च तथा सामान्य भूमि में जुलाई माह में वर्षा होने पर खस की रोपाई कर अच्छी फसल तैयार की जा सकती है. यदि खस की नर्सरी तैयार करना हो तो फरवरी अथवा मार्च में पौधे लगाने के एक माह बाद डीएपी खाद की एक सीमित मात्र डाल कर नर्सरी की गुड़ाई एवं सिंचाई के साथ उचित देखरेख करते रहने से तीन माह में एक पौधे में 18 से 20 कल्ले तक निकल आते हैं जिसे बाद में दूसरे खेतों में फसल के रूप में लगाया जाना चाहिए.

राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपुर के वैज्ञानिक डा. हांडू का कहना है कि बिहार की मिट्टी एवं जलवायु खस की खेती के लिए अनुकूल है. यहां के किसान इसकी खेती कर अपनी माली हालत सुधार सकते हैं. साथ ही उनका यह भी मानना है कि खस की खेती पर बाढ़ एवं सूखे का ज्यादा असर नहीं होता है. इसकी खेती बंजर भूमि में भी की जा सकती है. पशु इसके कड़े डंठलों को नहीं खाते हैं इसलिए इसकी फसल की ज्यादा देखभाल की जरूरत नहीं पड़ती है.

वैज्ञानिकों का सहयोग

अपनी इस सफलता का श्रेय सीमेप लखनऊ के वैज्ञानिक डा. कलीम अहमद तथा वरीय वैज्ञानिक वीरेंद्र कुमार सिंह तोमर, डा. एच.पी. सिंह आदि को देते हुए कहते हैं कि यदि आज का प्रगतिशील किसान वैज्ञानिकों के सहयोग एवं अपनी सूझबूझ के साथ औषधीय खेती करें तो अच्छी आय अर्जित कर अपने जीवन स्तर को ऊपर उठा सकता है.

प्रति एकड़ 40 हजार रुपये की आय

प्रगतिशील किसान मो. हामिद खां ने कहा कि खस की खेती से एक वर्ष में प्रति एकड़ 40 हजार रुपये की आय प्राप्त होती है. किसान यदि फरवरी में खस को काट कर मेंथा की सह फसल लेते हैं तो प्रति एकड़ 15 से 20 हजार रुपये की अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है. प्रयोग के तौर पर मो. हामिद पापुलर के साथ पामारोजा, सेट्रोनेला तथा खस की खेती कर रहे हैं जो सफल है. के एसवन में गुलाबी, केसरी तथा धारणी तीन प्रजातियां है जबकि समृद्धि किस्म अकेले है. केएस वन किस्म से 10 से 12 माह में तेल निकाला जाता है. फरवरी माह की गुलाबी ठंड का मौसम तेल प्राप्त करने का सबसे अनुकूल मौसम होता है. समृद्धि खस से डेढ़ वर्ष में तेल निकलता है. ढाई से तीन कट्ठे में एक क्विंटल जड़ निकलती है. तेल की मात्र लगभग डेढ़ लीटर प्रति क्विंटल होती है. मो. हामिद द्वारा चार एकड़ में छह से 14 फुट की दूरी पर पापुलर लगाया गया है जिसके बीज में सह फसल ली जाती है. इनका मानना है कि पापुलर का 400 पौधा प्रति एकड़ लगा कर सात वर्षो में तीन हजार रुपये प्रति पेड़ की दर से लाखों रुपये की आय अर्जित की जा सकती है. खस के पौधों में दीमक लगते हैं जिससे बचाव के लिए ट्राइसेल 20 इसी 200 ग्राम प्रति एकड़ डाल कर खेत की अच्छी तरह जुताई करनी चाहिए. खस के पौधे से पौधे की दूरी डेढ़ फुट तथा लाइन की दूरी दो-दो फुट की होनी चाहिए. केंद्रीय औषधि एवं सगंध पौधा संस्थान, लखनऊ द्वारा आयोजित औषधीय एवं सुगंध पौधों के उत्पादन हेतु उन्नत प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम लहेली गांव में किया गया था जिससे यहां के किसानों को काफी जानकारी मिली. यकिसान हामिद द्वारा ढाई लाख की लागत से स्टील डिस्टिलेशन प्लांट भी लगाया गया है. एक टन की क्षमता वाले इस प्लांट में आठ क्विंटल खस की जड़ भर कर 72 घंटे में तेल निकाला जाता है. इसी प्लांट से लेमनग्रास, पामारोजा, सिट्रोनेला तथा मेंथा का भी तेल निकाला जाता है. उपरोक्त तीनों फसलों से साल में तीन से चार कटिंग कर तथा मेंथा से एक कटिंग कर प्रति कट्ठा एक से सवा लीटर तेल प्राप्त करते हैं. खस एवं पॉपलर की खेती के विषय में।

52

अनिल कर रहे ड्रिप सिंचाई एवं प्लास्टिक मलचिंग उपयोग

परिचय

किसान का नामः- श्री अनिल कुमार सिंह
पिता का नामः- श्री रामकेर सिंह
पूरा पताः- ग्राम/पो0 - सकरी, ग्राम पंचायत- सकरी प्रखण्ड-कुदरा, थाना-कुदरा, जिला-कैमूर (भभुआ) पिन कोड-821108, बिहार।
किसान का मो. नंः- 7633819350
खेती योग्य भूमी (हे0मे0):- 1.0
सिंचित क्षेत्र (हे0मे):- 1.0
असिंचित क्षेत्र (हे0मे):- शून्य
किसान का प्रकारः- प्रगतिशील किसान।

कहते है अगर हौसला बुलन्द हो तो पत्थर को भी काट कर रास्ता बनाया जा सकता है। इन सभी मुहावरों को सच कर दिखाया कैमूर जिले के कुदरा प्रखण्ड अन्तर्गत सकरी गाँव के रहने वाले अनील सिंह ने, उन्होने बताया की मैं मैट्रिक पास करने के बाद नौकरी के तलाष में कई राज्यो एवं शहरो में भटकता रहा अन्तः मुझे हरियाणा के स्टील प्लान्ट में हेल्फर की नौकरी मिली जिसकी तनख्वाह मात्र 5000/- रु महीना मिलता था जिसके एवज में मूझे 12-14 घंटे काम करना पडता था कई वर्ष नौकरी करने के बाद भी मैं अपने परिवार का पालन पोषण नहीं कर पाता था। जिसके कारण मेरा मन वहाँ पर नहीं लगा मैने हरियाणा में अन्य किसानो को स्ट्राबेरी की खेती करते देखा जिसके उपरान्त मेरे मन में अपने गांव में इसकी खेती करने का विचार आया वहाँ उपस्थित किसानो से जानकारी लेने की कोशिष की परन्तु मुझे इसकी सच्चाई किसी ने नहीं बताया और बोला की तुम से ये काम नहीं हो पायेगा और ना ही तुम्हारे मिट्टी में होगा, उस दिन मैं वहाँ उस किसान से कह कर आया की मैं अपने क्षेत्र एवं अपने जिले में इसकी खेती कर के दिखाऊगा और उसके बाद खेती करने के लिए मैं अपनी नौकरी छोड़ कर पुनः अपने घर चला आया। यहाँ आने के बाद मैं आत्मा कार्यालय कैमूर (भभुआ) से संपर्क किया जहाँ पर मुझे बताया गया की औरंगाबाद में स्ट्रबेरी की खेती बडे पैमाने पर हो रही है, तथा मैं वहाँ पर गया और वहाँ के किसानो से संपर्क किया परन्तु वहाँ भी किसानो के द्वारा बतलाया गया की स्ट्राबेरी की खेती के लिए आपके यहाँ की मिट्टी एवं जलवायु अनुकूल नहीं है तथा लागत खर्च बहुत अधिक आता है। जिसके कारण आप इसकी खेती नहीं कर पायेगे। गाँव के कई लोगो ने भी स्ट्रबेरी कि खेती में समय एवं मेहनत बर्बाद करने से मना किया, अपने धुन के पक्के अनील सिंह कहाँ मानने वाले थे, उन्होने भी मन से ठान लिया की मुझे अपने स्वयं के खेतों में इसकी खेती करनी है, तथा मैं हरियाण से ट्रायल करने के लिए 50 पौधे लाकर अपने गाँव की मिट्टी में लगाया जिसमें मुझे एक पौधे से लगभग 01 किलोग्राम फल प्राप्त हुआ था। और मै उस फल को आपने लोकल मार्केट में बेचा जिसमे मुझे अच्छा मुनाफा हुआ।

मै श्री अनील कुमार सिंह, ग्राम-सकरी, प्रखण्ड कुदरा, जिला-कैमूर का एक युवा किसान हुँ। मै नौकरी को छोड कर खेती के तरफ अन्य किसानो को देखने की वजह से पूर्णतः खेती का मन बना लिया और कुछ नई तकनीक आपनाकर अपने प्रखण्ड एवं गाँव का नाम रौशन करने की ठान ली इसके बाद मैं प्रखण्ड आत्मा कार्यालय कुदरा में पदस्थापित श्री राहुल कमार (प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक-सह- प्रखण्ड उद्यान पदाधिकारी) से मिला उन्होने मुझे नई तकनीक के बारे में जानकारी दी तथा उद्यान विभाग द्वारा ड्रिप सिंचाई एवं प्लास्टिक मलचिंग मुझे अनुदान पर विभाग के द्वारा उपलब्ध कराया। इसके बाद मैं पुणे (महाराष्ट्र) से एक एकड़ खेत के लिए पौधा लाया और खेती की जिसमें मेरा लागत खर्च बहुत अधिक लगा आर्थिक स्थिति सही नहीं थी इसके बवाजुद भी मैने हौसला नहीं हारा और आज मैं अपने साथ कुल 10 किसानों को रोजगार के साथ-साथ अपने परिवार का पालन पोषण अच्छे ढंग से कर पा रहा हूँ। पिछले वर्ष उत्पादित फल को मैं अपने लोकल मार्केट एवं औरंगाबाद के व्यापारी के यहाँ बेचा जिसमें मुझे मार्केट नहीं होने के कारण व्यापारी द्वारा भुगतान नहीं किया गया जिसके कारण मुझे लागत मुल्य का 50-60 हजार रुपये का नुकसान सहना पड़ा। परन्तु इस वर्ष श्री राहुल कमार (प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक-सह- प्रखण्ड उद्यान पदाधिकारी) द्वारा मुझे कलकत्ता के 02-03 व्यापारियों से संपर्क कराया गया जिसमें मुझे अपनी लागत मूल्य का 1,50,000/- रुपये मुनाफा हुआ अतः अब सभी राज्यों में छोटे-बड़े व्यापारियों से संपर्क हो गया है, जिसके कारण मुझे उत्पादन एवं मार्केटिग में कोई दिक्कत नहीं है। मेरे परिवार में कुल 06 सदस्य है, मैं अपने बच्चो को अपनी लगन एवं मेहनत के बल पर उच्च षिक्षा दे पा रहा हुँ। मैने अपने फार्म पर एक छोटा सा आउटलेट (मौर्या स्ट्राबेरी फार्म) के नाम से खोला है, जहाँ पर स्ट्राबेरी की पैकेजिंग एवं ग्रेडिंग का काम किया जाता है। स्ट्राबेरी की खेती के साथ-साथ टमाटर एवं फूलगोभी की भी खेती करता हूँ। जिसके उत्पादन के बाद अपने लोकल मार्केट मे बेच दिया जाता तथा साथ ही एक भैस एवं छः बकरीयाँ पाली जाती है। जिससे अपने खाने हेतु दुध का उपयोग किया जाता है। इस सराहनीय कार्यो में आत्मा कार्यालय के सभी पदाधिकारी एवं कर्मियों का मैं अभार व्यक्त करता हूँ।

11 सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व/घटक (व्यक्तिगत प्रयास) /आत्मा के सहयोग/अन्य विभाग से सहयोग कृषि विभाग।

53 समेकित खेती कर खुशहाल हुआ परिवार

परिचय

किसान का नाम - विजय कुमार राय
पिता/पति का नाम - श्री जवाहर राय
पूरा पताः- गाँव/मुहल्ला - असुरार, पो0 - हरिपुर, थाना - अलौली, प्रखंड - अलौली, जिला - खगड़िया,
मोबाइल सं0- 7250603441
किसान के पास खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 2 हे0
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 2 हे0
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 0
किसान का प्रकार- सिमांत किसान

मैं विजय कुमार राय 1980 में मैट्रिक पास करने के उपरांत खेती के साथ-साथ जनहित का कार्य करने लगे। खेती में धान, मकई, गेंहू, तेलहन, दलहन आदि। खेती पूर्व व्यवस्था से करते थे, लेकिन खेती से कोई खास आमदनी नहीं होता था। मुझे खेती से रूची हटने लगी, मेरे परिवार कि स्थिति दयनिय होने लगी। इसी बीच दो बच्चों की शादी भी जमीन बेचकर करना पड़ा तथा समाज की दूर्दशा को देखते हुए हमने 1985-86 में अपने क्षेत्र में दुग्ध उत्पादक सहयोग समिति का गठन सुधा डेयरी से संपर्क कर दुग्ध को दुग्ध शीतल केन्द्र, खगड़िया भेजने लगा। मैंने सामाजिक स्तर पर अपने आस-पास के लोगों को बिमारी में सहयोग कर अच्छे डाक्टर से इलाज करवाने का कार्य भी किया। जनहित में महिला सशाक्तिकरण हेतु स्वयं सहायता समूह का महिला संगठन पंचायत स्तर पर निर्माण करने का कार्य किया। वर्ष 1994 से पंचायत स्तर पर लोगों को साक्षर बनने के लिए प्रेरित किया एवं साक्षर बनाया। साक्षरता के माध्यम से बी0डी0ओ0 एवं डी0एम0 से भी संपर्क बढ़ने लगा। तब तक मैं बहुत गरीबी से लड़ता रहा। इसी क्रम में पॉच बार बाढ़ का कहर भी हमलोंगों का कमर तोड़ दिया। वर्ष 2008 में बैंक से के0सी0सी0 लोन लेकर मैंने एक गाय खरीदा। अब खेती के साथ-साथ दुग्ध उत्पादक का कार्य करने लगा। इसी क्रम में मेरा एक साथी मुकेश प्रियंक ने सलाह दिये कि आप आत्मा के संपर्क में रहें। आत्मा के द्वारा नई-नई तकनीक की जानकारी दी जाती है।

10. सफलता की कहानीः -

(किये जाने वाला कार्य के संबंध में शुरू से अंत तक की पूरी जानकारी, उत्पाद कब और कहाँ बेचते हैं तथा तकनीकी एवं वित्तीय सहायता कहाँ से प्राप्त की हैं का पूर्ण विवरण)

आत्मा से जुड़ने के बाद आत्मा द्वारा मुझे उन्नत खेती, मुर्गी एवं बकरी पालन के तकनीक की जानकारी मिली। आत्मा एवं के0भी0के0, खगड़िया के द्वारा भी मुगीर्पालन, बकरीपालन, गायपालन, मशरूम की खेती एवं गोबर से उर्वरक तैयार करना, मकई धान का उन्नत किस्म का बीज तैयार करना एवं वैज्ञानिक तकनीकी से करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आत्मा द्वारा विभिन्न शिविरों में भाग लेते हुए मुर्गी से अंडा एवं बकरीपालन की तकनीक की जानकारी तथा कृषि वानिकी की आधुनिक तकनीक प्रशिक्षण

नैनिताल से प्राप्त किया और परिभ्रमण में भाग लिया।
आज मैं आत्मा के माध्यम से उच्च तकनीकी से खेती करते हुए गाय पालते हुए दुग्ध उत्पादन मुर्गी से अंडा उत्पादन, बकरी पालन, गोबर एवं अवशिष्ट पदार्थ से वर्मी कम्पोस्ट तैयार करना। आत्मा खगड़िया द्वारा राज्य के अंदर, बाहर प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण के उपरांत आज अंडा, दुग्ध, मांस उत्पादन करने से रूची बढ़ने लगा। अब मैं उत्साह पूर्वक लेयर मुर्गीपालन के साथ कृषि वानिकी की ओर आगे बढ़ रहें है। मैं कम जमीन एवं कम लागत से बांस का फार्म तैयार कर लेयर 200 चूजा से अंडा उत्पादन करता हूँ। दुग्ध उत्पादन, खेती, अंडा, मांस एवं वर्मी कम्पोस्ट, बकरी से मुझे अच्छा आमदनी आने लगा है। अब मैं और मेरे परिवार के लोग खाफी खुश रहते है। बच्चे की पढाई भी अच्छे से हो रही है। यह कार्य को देखते हुए सामाजिक कार्यकत्रा के रूप में यहाँ बहुत किसान दोस्त, समाज को अपने साथ-साथ उनके भी जीवकोपार्जन का कार्य करते है। मेरे इस कार्य को देखकर हमारे क्षेत्र में गायपालन, मुर्गी एवं बकरी पालन के साथ वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन काफी जोर-शोर से चल रहा है। बहुत दूर-दराज के जिला से भी लोग देखने एवं सहयोग लेने आते रहते है। अभी मेरे पास दो दुधारू गाय, 200 मुर्गी, 20 बकरी है।

सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण तत्व/घटक- (व्यक्तिगत प्रयास/आत्मा से सहयोग/अन्य विभाग से सहयोग)
सफलता के इस कड़ी के लिए आत्मा खगड़िया, कृषि विज्ञान केन्द्र खगड़िया, प्रखंड कृषि पदाधिकारी, पशुपालन पदाधिकारी, सहायक तकनीकी प्रबंधक एवं अन्य कृषि कर्मियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।
स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव- स्थानीय स्तर पर सफलता की कहानी को किसानों के बीच नए तकनीक से खेती करना आदि कार्य के ललक में बहुत तेजी से बढ़ना।
13. सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र- नहीं

क्र0सं0	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण (वर्ष 1998–2002)			अपनाने के बाद का विवरण (वर्त्तमान में)			
		प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	कुल	प्रक्षेत्र 1	प्रक्षेत्र 2	प्रक्षेत्र 3	कुल
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	फसल/क्षेत्र/कार्य का नाम	गेंहू	मक्का		गाय –2	मुर्गी–200	बकरी–20	
2	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (क्वीं में)	40 क्वीं0	65 क्वी0		30 ली0	160 अंडा	–	
3	उत्पाद का बिक्री मूल्य दर (रू0/क्वीं)	550	400		35 रू0 ली0	6. 00 रू0	–	
4	फसल मौसम में कुल लागत मूल्य	8000	3500		300 रू0 प्रति दिन	400 रू0 प्रति दिन	200 रू0 प्रति दिन	
5	उपादान का मूल्य (बीज, खाद, कीटनाशी, जुताई–बुआई, सिंचाई, कटाई, दौनी एवं अन्य)	9200	10100		40000 प्रति गाय	7000 रू0 चुजा	2000 रू0 प्रति बकरी का बच्चा	
6	मजदूर खर्च (रू0 में)	1000	1600		250 रू0 प्रति दिन	150 रू0 प्रति दिन	150 रू0 प्रति दिन	
7	अन्य लागत खर्च (रू0 में)	500	1000		5000	5000	4000	
8	कुल लागत खर्च (रू0 में)	18000	16200		186000	66000	170000	
9	शुद्ध आय/बचत (रू0 में)	7600	9800		97500	279600	150000	

54 जल संरक्षण मिशन में सारथी बने अजय को मिला सम्मान

परिचय

नाम– अजय राय
पता– डुमरांव

बिहार के बक्सर जिले में भूगर्भ जलस्तर के नीचे जाने से पानी की समस्या उत्पन्न होने लगी है। डुमरांव में एक शख्स ऐसा भी है, जो पानी के मूल्य को समझते हुए एक–एक बूंद जल को संरक्षित करने के लिए प्रयासरत है। सरकारी स्तर पर इस संकट को खत्म करने की ढेर सारी कोशिशें हुईं लेकिन इलाके में जिस युवक की पहल को क्रांतिकारी कदम माना जाता है, वह हैं जल–पुरुष के नाम से चर्चित सामाजिक कार्यकर्ता अजय राय। इनका कहना है कि धरती की कोख में इतना पानी रहे कि जिदगानी चलती रहे। इसके लिए हर किसी को सोचना ही नहीं कुछ करना भी होगा। पानी को संरक्षित करने के इस शख्स के जुनून का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि रास्ते में यदि उन्हें किसी टोंटी से पानी बहता दिखाई देता है तो अपनी गाडी रोककर उसे बंद कर देते हैं। इतना ही नहीं, वह स्कूलों व शिक्षण संस्थानों में घूम–घूमकर बच्चों को जल संरक्षित करने के फायदे भी बताते है। फिलहाल बूंद–बूंद जल को सहेजने की मुहिम में डुमरांव का अजय न सिर्फ आइकॉन बने बल्कि अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्नोत भी है। पढ़ने लिखने की उम्र में बूंद–बूंद बचाने की बडी सोच रखने वाले यह युवक अन्य लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्नोत बना है। दरअसल जहां भी सार्वजनिक नलके से पानी टपकते देखते हैं, अपने पैसे से उसमें टैप लगा पानी की बर्बादी को रोकते हैं। स्थानीय नगर के दक्षिण टोला में रहने वाले बृजन राय के पुत्न अजय राय 22 वर्ष पिछले चार वर्षो से नगर में जहां भी टोटी के अभाव में नल से पानी की बर्बादी दिख जाती उसे मरम्मत को तत्पर हो जाते हैं। अब तक पूरे नगर ही नहीं इलाके में आस–पास के गांवों में भी सैकडों जगह पर नल की टोटी लगाकर पानी की बर्बादी रोक चुके अजय आम लोगों से भी पानी की बर्बादी को रोकने की अपील करते हैं। वह बताते हैं कि कालेज जाने के क्र म में नया थाना, शिक्त द्वार, राज हाई स्कूल के सामने और कडवी मोहल्ला सहित अन्य कई जगहों पर टोटी के अभाव में पानी बर्बाद होते दिखा जो उन्हें बहुत बुरा लगा। कालेज से लौटते समय अपने पैसे से टोटी खरीदें और इन जगहों पर लगाए जिससे पानी का बहाव रु क गया। इससे उन्हें बहुत खुशी मिली। उसी समय से इस कार्य को उन्होंने अपना रूटीन कार्य बना लिया। पिछले दिनों बिहार दिवस और विश्व जल दिवस के अवसर पर जिला मुख्यालय में आयोजित कार्यक्र म में अजय राय को जल संरक्षण क्षेत्न में बेहतर कार्य करने को लेकर जिला पदाधिकारी अमन समीर और पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार सिंह के द्वारा सम्मानित किया गया। वे जल संरक्षण के लिए कई बार राज्य स्तर पर सम्मानित भी हो चुके है। एसडीओ ने कहा कि जल संरक्षण के क्षेत्न में युवक अजय राय की सोच निश्चित रूप से सराहनीय है। इससे आम लोगों को प्रेरित होने की आवश्यकता है। पानी की हर बूंद जल संरक्षण हर लोगों का नैतिक और सामाजिक दायित्व है।

कृषकों की सफलता की कहानी

परिचय

नाम– पूनम देवी
ग्राम– चकला, पो०–छोहार,
प्रखण्ड समेली जिला–कटिहार।

आज मानव समाज की उन्नति में महिलाओं का किसी भी क्षेत्र के विकास में अग्रसर होना अति आवश्यक समझा जाता है। उसी कड़ी में मैं पूनम देवी एक अल्प विकसित परिवार से संबंधित महिला हूं। मैं आत्मा द्वारा जुड़ने के पश्चात समूह का निर्माण कर छोटी आय को संग्रहित करने लगी तथा अपने समूह के विकास के बारे में सोचने लगी। धीरे धीरे मेरे समूह को कुछ पैसा हुआ । उस पैसे को सभी महिलाओं के सदस्यों से सहमति प्राप्त कर एक ऐसे उद्योग में समूह का पैसा लगाया जो आज दिन दूना धन राशि बढ़ रहा है तथा सभी सदस्यों का मनोबल भी आगे कौशल विकास की ओर अग्रसर है। वह क्षेत्र है कृ षि विभाग का एक अभिन्न अंग (मत्स्य पालन) से जुड़ा यह समूह आज अच्छा मुनाफा कमा रहा है। आज वर्तमान समय के परिवेश में चल रही आर्थिक तंगी को सुलझाने में समूह से जुड़ना तथा अपने समय को नष्ट होने से बचाने हेतु सब्जी सुखाना, आचार बनाना, पापड बनाना, बडी बनाना सत्तु बनाना इत्यादि छोटी छोटी इकाई को तैयार कर महिलाओं को अपने घरेलू काम धाम के अलावा बचे समय का सदुपयोग करना आत्मा के निर्देशन में आगे बढना । हम महिलाओं से सीधा तथा आगे आने वाले समय में जो भी आत्मा से जुड़ा रहेगा वह सदैव आगे बढता रहेगा ।

55 पुष्पा कर रही दुग्ध उत्पादन

श्रीमति पुष्पा देवी, पति-श्री संजय कुमार सिंह, ग्राम-भतुआचक, प्रखंड-नाथनगर के निवासी हैं। इनके पास दो पुत्र हें, दोनों को ये पढ़ाते हैं, एक कक्षा 3 एवं दूसरा कक्षा 6 में है। इनकी शादी के 14 वर्ष हो गये हैं। जब इनकी शादी हुई थी, तो इनके पास कुछ नहीं था, पति ट्रैक्टर चलाते थे एवं ये खुद सिलाई करके किसी तरह परिवार चलाती थी। शादी बाद 1 वर्ष तक पुष्पा देवी मायके में ही नाना-नानी के पास रही, जीवन यापन में काफी कठिनाई हो रही थी, कोई रास्ता ही नहीं दिख रहा था। इनके माता-पिता भी नहीं थे। शादी के वक्त ही मामाजी ने इन्हें 51 डी0 जमीन दी थी। फिर इन्होने सोचा ऐसे काम नहीं चलने वाला है, अपने एवं परिवार की देख-रेख हेतु कोई व्यवसाय शुरू करना होगा, जिससे सुचारू रूप से रोजी-रोटी चल सके एवं बच्चों को शिक्षा दिला सके।

परिचय

नाम - **श्रीमति पुष्पा देवी**
पिता का नाम - श्री संजय कुमार सिंह
पताः- गाँव/मुहल्ला - भतुआचक, पोस्ट-भतौड़िया,थाना-मसुदनपुर प्रखंड - नाथनगर, जिला -भागलपुर (बिहार)
मोबाइल नंबर- 8877428962
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 0.51 हे0 (51 डी0)
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 0.51 हे0
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- शून्य
किसान का प्रकार- अध्यक्ष
अगर समूह/संगठन के सदस्य हैं तो समूह का नाम, निबंधन करने वाली संस्था का नाम, निबंधन संख्या एवं तिथि का उल्लेख करें - माँ शारदे महिला हित समूह निबंधन संख्या-145/2014-15 तिथि 15.01.2015

कहते है अगर कुछ पाने की चाहत हो और हौसला बुलंद हो तो हर काम को पूरा किया जा सकता है। ऐसे लोगों में ही श्रीमति पुष्पा देवी हैं जो एक गृहणी के साथ-साथ गाय पालन कर सुधा डेयरी में दूध सप्लाई करती हैं एवं सफलतापूर्वक अपने बच्चों का भरण-पोषण कर उन्हें शिक्षा दिला रही हैं। इनके पति श्री संजय कुमार सिंह ने भी इनके काम में साथ दिया एव हमेशा प्रोत्साहित किया। आत्मा ने दिखाई राह-किसी भी रोजगार को चलाने के लिएपैसा का होना बहुत जरूरी होता है। आत्मा द्वारा बैठक का आयोजन कर बताया गया कि समूह गठन कर किस प्रकार बचत कर एवं ऋण लेकर कोई व्यवसाय शुरू किया जा सकता है। एवं संबंधित विषय पर प्रशिक्षण भी किसानों को दिया जाता है। इससे प्रेरित होकर इन्होंने 2013 में आत्मा से जुड़कर गाय पालन पर 15 मलिाओं का समूह बनाया। फिर समूह में पैसा जमा करके एवं लेन-देन करके धीरे-धीरे गाय खरीदना शुरू किया एवं दूध उत्पादन का व्यवसाय आरंभ किया। पुष्पा जी अभी सुधा उेयरी से जुड़ी हुई है एवं वहाँ की एल0आर0पी0 हैं। प्रतिदिन डेयरी में 01 क्विंटल दूध सप्लाई करती है। इसके अलावे आत्मा से इन्हें समय-समय पर मवेशी के बीमारी की जानकारी एवं दवाई मिल जाता हैं, जिससे मवेशी कम बीमार पड़ते हैं एवं दूध के उतपादन में भी वृद्धि होता है। ये लोग सिर्फ दुध से ही नहीं बल्कि पशु से प्राप्त गोबर से भी पैसा कमा रहे हैं। ये आज अपनी उद्यमशीलता से संपन्नता का स्वाद चख रहे हें। इनकी स्थिति आज पहले से काफी बेहतर है।

56 गाय पालन एवं सब्जी की खेती कर रही शोभा

परिचय

किसान का नाम - **श्रीमति शोभा देवी**
पति का नाम- **श्री सुभाष चन्द्र ठाकुर**
पूरा पताः- गाँव/मुहल्ला - लत्तीपुर, पोस्ट-लत्तीपुर, थाना-बिहपुर प्रखंड - बिहपुर, जिला -भागलपुर
किसान का दूरभाष/मोबाइल सं0- 7549182812
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 3.5 एकड़
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 1.5 एकड़
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)- 2 एकड़
किसान का प्रकार- महाषक्ति महिला कृषक हित समूह

मैं श्रीमति शोभा देवी पति- सुभाष चन्द्र ठाकुर, ग्राम- लत्तीपुर, प्रखंड-बिहपुर, जिला-भागलपुर की निवासी हूँ। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण 7वीं तक पढ़ाई कर पायी। आगे की पढ़ाई एक सपना ही रह गया। मैं आगे बढ़कर कुछ करना चाहती थी जिसमें परिवार का साथ तो था लेकिन आर्थिक बोझ से इतनी दबी थी कि आगे चारो तरफ अंधेरा था वही समाजिक कुरीतियों के आगे दिवाल बनकर खड़ा था। सन् 2011 में आत्मा के बारे जानकारी मिला जिसमें मुझे समूह बनाने एवं इसको लेकर भविष्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा दिया। उनके दिशा निदेर्शानुसार मेंने समूह का गठन किया सर्च प्रथम समूह को साक्षर बनाने का कार्य किया। तदनुपरांत महिला सशक्तिकरण के बारे में जानकारी देते हुए घर से बाहर निकलने की प्रेरणा देने का कार्य किया जिससे वर्षो से चली आ रही समाजिक कुरितियों से बाहर किया जा सके। मेरी हिम्मत लगन को आत्मा परिवार ने आगे बढ़ने एवं रास्ता दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ा। पहलीवार मुझे आतमा के तरफ से लखनऊ जाने का मौका मिला जहाँ लघु व्यवसाय जेसे पशुपालन, मुर्गी पालन एवं बहुत कुछ ऐसे व्यवसाय के बारे में जानकारी मिला जिसे मेंने घर आकर शुरू किया एवं समूह समूह को भी इस दिशा में कार्य करने को प्रेरित किया। इन लोगों में विश्वास बढ़ा कुछ ही दिनों में आय का स्त्रोत नजर आने लगा। आजतक जो महिलाएँ घरों में चुल्हा-चैका तक सिमित थें उन्हें आज परिवार को दो वक्त का भोजन जुटाने की साहस था। इतना ही नहीं मैंनं बिहार परायोजित मलिा सशक्तिकरण से संबंधि सरकार के द्वारा उठाये गये हरेक योजना में हिस्सा लिया एवं उसे धरातल पर उतारने का हरसीाव प्रयास सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर किया।

मेरी जीवन शैली एवं कार्य की सफलता का श्रेय आत्मा को देती हूँ, जिन्होनें मेरे जीवन के आर्थिक स्थिति में परिवत्र्तन के शुरूआती कदम से हरेक चरण में गाइड लाइन प्रोतसाहन एवं आर्थिक मदद मिलने की राह में साथ रहें। जिनके बदोलत एक महिला होकर भी अपने समाज की अनपढ़ महिलाओं को साथ लेकर महिला शक्ति को सुदृढ कर एक अलग पहचान दिलाने में सफल रही। आत्मा के दिशा निदेर्शानुसार महिला वर्ग का सर्वप्रामि समूह बनाई। जिसे एक नियमानुसार सुशज्जित किया। आत्मा द्वारा परिभ्रमण एंव प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल हुए। जिसमें कम पूंजी में अधिक से अधिक मुनाफा से संबंधि जानकारी में पशुपालन एवं सब्जी उतपादन तथा गाय के गोबर एवं अवशिष्ट पदार्थ से वर्मी कम्पोष्ट तैयार कर जैविक खाद्य का उतपादन संबंधित जानकारी मिला। जिसे मैंने घर आकर एक गाय लोन से लेकर व्यवसाय शुरू की। शुरूआती दोर में काफी परेशानी हुआ। जैसे गायों की बिमारी दूध की खपत, चारे की परेशानी आदि। लेकिन धीरे-धीरे गाय की संख्या को बढ़ाकर 3 कर दी जिससे मुनाफा काफी बढ़ गया। इसके साथ जैविक खाद्य से अच्छी उपज भी मिला एवं रासायनि खाद्य से मुक्ति भी मिला। मेरे व्यवसाय से प्रभावित होकर समूह के कई लोग भी शुरू किया। गाय की दूध की बिक्री हेतु घर में ही आस पड़ोस के हलुवाई एवं चाय दुकानदार द्वारा हो जाता है। जिससे अच्छी किमत मिलने लगा। आत्मा द्वारा परिभ्रमण कार्यक्रम में शामिल होकर वहाँ से इकट्ठा किये जानकारी को समूह/ग्रुप तक पहूँचायी। जैसे ग्रुप के महिला को साक्षर करना, कोषमनी का निर्माण पशुपालन से धन उर्पाजन करने के तरीके, कुटीर उद्योग हेतु आवाश्यक राशि हेतु ऋण की उपलब्धता एवं उसे क्रियान्वित कर बाजार में अलग पहचान दिलाते हुए उचित भाव में बिक्री करना। इस कठिन कार्य हेतु प्रशिक्षु या अनुभवी व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण देने का कार्य आत्मा परिवार अनुीावी व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण देने का कार्य आत्मा परिवार के सदस्य द्वारा मिला। इसके आलावा बिहार सरकार के अन्य कार्यक्रम विभिन्नों शहरों में परिभ्रमण संगोष्ठी, किसान मेला, शिविर में जाने का अवसर मिला एवं वहाँ की महिला कलचर से रूबहू हुए, 2015 में आत्मा के द्वारा गया जाने का मौका मिला जिसमें नई किस्म एवं तकनिकी द्वारा सब्जी उतपादन की विधि की जानकारी बर्मी कम्पोष्ट जो बेकार अवशिष्ट पदार्थ इधर उधर फेकते है। जिससे प्रदूषण की संभावना बनी रहती है। उसका उपयोग कर जैविक खाद्य निर्माण एवं उसकी महत्ता की जानकारी। महाशक्ति कृषक हित महिला समूह को सिलाई, कढ़ाई आदि का प्रशिक्षण उपरांत कुटीर उद्योग द्वारा बेकार समय को आर्थिक रूप में परिवर्तण कर मेरी सफलता का अंश रहा। नवार्ड के तरफ से कलकत्ता गई जिसमें केले के पौधे से रेसा निकालकर बैग तैयार करना, गृह कार्य हेतु अन्य समग्री डलीया, चटाई इत्यादि का निर्माण करना जैसी कार्य का प्रशिक्षण लिया। भारत सरकार एवं राज्य सरकार के परायोजित कार्यक्रम में अच्छी कार्य योजना हेतु अनेक बार पुरस्कृत भी हुई। आकशवाणी केन्द्र भागलपुर में महिला सशक्तिकरण पर प्रोग्राम में भी हिस्सा लेनेा का अवसर मिला। अपनी 52 साल के सफर में मात्र 7 सतवीं तक की पढ़ाई कर मुझे जीवन में इतनी बड़ी सफलता मिल सकती है इसकी मैं कल्पना भी नहीं किया था। अपने समाज के साथ अपनी परिवार की आय स्त्रोत में वृद्धि एवं सबों को स्वरोजगार मुहैया कराना बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाना आदि सफलता का धोतक रहीं।.

57 सत्येंद्र ने पशुपालन को बनाया व्यवसाय

परिचय

कृषक का नामः- श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह
पिता/पति का नामः- स्व0 छेदी सिंह
पताः- ग्राम- गोगाचक पो0-तारापुर, पंचायत- तारापुर
प्रखंड- तारापुर, जिला-मुंगेर
मो0 नं0:- 8810310913

कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), मुंगेर
कृषकों के सफलता की कहानी
आप माधोडीह गनैली उच्च विद्यालय से सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक है और सेवा के दौरान कृषि कार्य से जुड़े रहे। सेवानिवृत्ति के बाद अपना अधिकतम समय कृषि एवं कृषि से संबंधित सहायक क्रियाओं को देते है। ये कृषि के साथ-साथ आधुनिक तरीके से पशुपालन से जुड़े रहे। ये वर्षभर कृषि कार्य करते रहते है और लगातार कई वर्षो से एक वर्ष में तीन फसलें (धान-गेहूँ-मूँग अथवा धान-मक्का-मूँग) या फिर अन्य फसलें लेकर फसल सधनता का संतुलित उपयोग कर रहे है। ये रसायनिक उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग करते हुए प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर बल देते है। आप लघु किसानों के लिए प्रेरणास्त्रोत है क्योंकि लगातार 2-3 एकड़ में विभिन्न प्रकार के फसलचक्र को अपनाकर अधिकतम उत्पादन करना एक उच्च प्रबंधन तकनीक को दर्षाता है तथा हमारे देष की पारिस्थितिकी मे लघु एवं सीमांत किसानों के लिए अनुकरणीय है। भविष्य में आधुनिक तरीके से डेयरी कार्य करने की भी योजना है और उन्नत गोवंष विकसित करने के लिए आधुनिक पद्यति पर आधारित गोषाला निर्माणधीन है।

उत्पन्न चिन्हित समस्याः-

1. टिड्डों द्वारा फसलक्षति
2. गेहूँ में झूलसा बिमारी/रोग
3. चना में उकठा रोग
6. उत्पन्न चिन्हित समस्या का निदान आपने कैसे कियाः-
1. किसान सलाहकार से संपर्क स्थापित किया।
2. कृषि विभाग के उच्च अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों के सुझाव प्राप्त किए और निदान हो गया।

व्यक्ति अथवा संस्थान से प्राप्त सहायता का विवरणः-
किसान सलाहकार-परमेष कुमार, प्रखंड कृषि कार्यालय, तारापुर एवं जिला कृषि कार्यालय, मुंगेर एवं कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण, मुंगेर

कितने दिनों से उपरोक्त कार्य कर रहे हैः- 30 वर्षो से
उपरोक्त कार्य करने से प्राप्त सफलता का विवरणः-
खाधान्न की अधिकतम प्राप्ति (कृषि कार्य से)
नियमित कृषि से आय की प्राप्ति
भविष्य के लिए बागवानी द्वारा भविष्य निधि की तैयारी
सफलता प्राप्ति के मुख्य कारकः-
समयानुकुल एवं कृषि जलवायु आधारित फसलों का चयन एवं उच्च उत्पादक क्षमता वाले बीज का प्रयोग।
कृषि उत्पादनों का उचित समय पर प्रयोग
मृदा एवंज ल संरक्षण करते हुए कृषि कार्य
फसल विविधीकरण एवं फसलचक्र
सही समय पर निकाई-गुडाई एवं पीड़क प्रबंधन
सही समय पर कटाई एवं फस्ल अवषेष प्रबंधन
पुरस्कार यदि कोई प्राप्त किये होः- नही
आर्थिक विषलेषनः-

क्रं0सं0	लाभ	पहले	बाद में
1	लागत	24000	32000
2	मजदुरी	7000	10000
3	बाजार	तारापुर	तारापुर
4	अन्य	5000	7000
5	लाभ	42000	78000

महत्वपूर्ण फसलों से संबधित कीटों एवं खरपतवारों के नियंत्रण हेतु अचूक जैविक कीटनाषी एवं खरपतवाषी का पैकेज उपलब्ध होना चाहिए।

58 मशरुम तथा हर्बल गुलाल से रेखा बनी उद्यमी

परिचय

किसान का नाम – श्रीमति रेखा कुमारी
पिता/पति का नाम -अश्विनी कुमार
पूरा पता - गाँव/मुहल्ला - हथुआ, पो0 -हथुआ, थाना -हथुआ, प्रखंड - हथुआ, जिला-गोपालगंज
मोबाइल सं0- 9708920937
खेती योग्य भूमि (हे0 में)- 1.5 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हे0 में)-
असिंचित क्षेत्र (हे0 में)-
अगर समूह/संगठन के सदस्य हैं तो समूह का नाम, निबंधन करने वाली संस्था का नाम, निबंधन संख्या एवं तिथि का उल्लेख करें -

यह कहानी हथुआ प्रखंड के हथुआ गॉव निवासी रेखा कुमारी कुमारी की है। जिला के बरौली प्रखंड के बखरौर नदी गॉव निवासी विश्वनाथ श्रीवास्तव की पुत्री रेखा कुमारी शादी होने के बाद हथुआ के प्रतिष्ठित घराने बृज बाबु की बहु बनकर अपने ससुराल आई। स्नातक तक पढ़ी लिखी रेखा कुमारी के पति अश्वनी कुमार भारतीय जीवन बीमा निगम मे काम करते है। पति अपने काम पर चले जाते थे और रेखा कुमारी अपने हवेलीनुमा घर में बैठ कर अपने भविष्य के सपने बुनती रहती थी, और अपने आप को बेरोजगार महसुस करती थी। इसी बीच उन्हे अखबार के माध्यम से मशरुम के बारे में जानकारी मिली तथा उन्होने कृषि विभाग के आत्मा कर्मी से उनका मुलाकात हुआ। चैपाल के दौरान, आत्मा कर्मी के सुझाव और सहयोग से उन्होने मशरुम की खेती करन की जानकारी ली और अपना भविश्य सवारने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हो गई। रेखा कुमारी बताती है कि वो अपने हवेलीनुमा घर में ही मशरुम कि खेती करना शुरू कि इसी बिच उन्होने आत्मा विभाग के समुह में जुड़कर मशरुम कि खेती करने कि जानकारी लिया। रेखा कुमारी ने कृषि विज्ञान केन्द्र सिपाया तथा डा0 राजेन्द्र कृषि विश्वविधालय से भी मशरुम कि खेती करने कि प्रशिक्षण ली और बड़े स्तर पर खेती करना शुरू किया। उन्होनें मशरुम की विभिन्न प्रकार की उत्पाद बनाना शुरू किया जैसेः-मशरुम पाउडर, आचार, पापड़, बरी, नमकीन, बिसकीट ईत्यादी और कुछ दिनों के बाद इसके अलावा उन्होनें हर्बल गुलाल, चना, सत्तू एवं बेसन, आम एवं कटहल का अचार बनाने लगी। उन्होनें अपना उत्पाद(मशरुम) नजदीकी मार्केट और घर से ही बेचती है तथा दूर दराज से भी उनके यहॉ लोग खरिदने के लिए पहुचते है। श्रीमती रेखा कुमारी बताती है कि वे दुसरे औरतों को भी प्रशिक्षण देती है और मशरुम की खेती के लिए जागरुक करती है, आज वो अपने काम से बहुत खुश है। उनके प्रत्येक महिने का आय 40-45 हजार रुपया है। आज अपने आप को वो एक सफल महिला क रुप में देखती है और दुसरे महिला को भी अपने जैसा ही मशरुम कि खेती में सफल बनाना चाहती है।

59 ओमप्रकश ने मशरूम उत्पादन कर पायी सफलता

परिचय

किसान का नाम : श्री ओम प्रकाश सिंह
पिता/पति का नाम : श्री रामदयाल सिंह
पूरा पता : ग्राम- तियराघाट, पंचायत- डिहरा, प्रखण्ड - भभुआ, जिला - कैमूर
मोबाईल नं0 : 8873944049
खेती योग्य भूमी (हे0 में) : 2.5
किसान का प्रकार : लघु
कृषक हितार्थ समूह : माँ मुण्डेष्वरी कृशक हितार्थ समूह, ग्रामः- तियराघाट, पंचायत :- डिहरा, प्रखण्डः- भभुआ, जिलाः- कैमूर
निबंधन संस्था का नाम : आत्मा, कैमूर
निबंधन संख्या एवं तिथि : 05/03/2021

मेरा नाम ओम प्रकाष सिंह है, मेरे पिता का नाम श्री राम दयाल सिंह है मैं एक छोटा किसान हूँ। मेरी कुल खेती योग्य भूमि 2.5 हे0 है। पहले मैं परम्परागत तरीके से खेती करता था। मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। बचपन से ही पिता जी की खेती बारी के कामों मे मैं हॉथ बटाता था, जिसके कारण मुझे खेती करने का अनुभव शुरू से ही प्राप्त था। खेती में मुझे लागत अधिक लगता था, और उत्पादन बेचने के बाद शुद्ध आय बहुत कम प्राप्त होता था। पहले मैं 2019-20 में फसल के रूप में 2.5 हे0 प्लॉट में गेहूँ एवं धान की खेती करता था। जिसमें मौसम प्रतिकूल होने से गेहूँ की क्षति हो गई और मुझे गेहूँ फसल से शुद्ध आय मात्र 52000रू0 ही रहा और जो धान लगाया था उससे मात्र शुद्ध आय 123000रू0 का ही रहा। अतः कुल मिलाकर मुझे वित्तीय वर्श 2019-20 में मात्र 175000रू0 ही शुद्ध आय प्राप्त हुआ। इस कारण मेरी अर्थिक स्थिति कमजोर हो गई जिसकी वजह से मेरे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर काफी असर पड़ने लगा। जिसके कारण मैं कृशि के अलावा आमदनी के किसी अन्य विकल्प के बारे में सोचने लगा। मैं अपना ध्यान कृशि से हटाने लगा तथा रोजगार हेतु दूसरे राज्य में जाने का योजना बनाने लगा लेकिन कृशि के अलावा मुझे किसी अन्य क्षेत्र में कोई अनुभव नहीं था। जिसके कारण दूसरे राज्य में जाकर मजदुरी के अलावा मेरे पास कोई विकल्प नहीं बचा था। ऐसी स्थिति में मैं हतास एवं पूरी तरह से परेषान रहने लगा था। मैं ओम प्रकाष सिंह, ग्राम- तियराघाट, पंचायत- डिहरा, प्रखण्ड - भभुआ, जिला- कैमूर का एक छोटा सा किसान हूँ। क्षेत्र भ्रमण के दौरान आत्मा प्रसार कर्मी प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, भभुआ श्री रजनीष कुमार से मुलाकात हुई। उसके बाद मैं पिछले वर्ष आत्मा से जुड़ा तथा माँ मुण्डेष्वरी कृशक हितार्थ समूह का निर्माण कर आत्मा कार्यालय मे पंजीयन कराया। उसके बाद आत्मा द्वारा प्रषिक्षण कार्यक्रम के दौरान बिहार कृशि विष्वविद्यालय, भागलपुर में भाग लिया जिसके अंर्तगत कृशि उत्पादन की नई तकनीक के बारे में जानकारी प्राप्त हुई तथा कम लागत एवं अधिक उपज के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी गई। उसके उपरांत आत्मा प्रसार कमीर्यो द्वारा मेरे प्रक्षेत्र पर रबी वर्श 2020-21 में मषरूम उत्पादन पर किसान पाठषाला का संचालन किया गया जिसमें कुल छः प्रषिक्षण सत्र में मषरूम उत्पादन से सम्बन्धित तकनीकी जानकारी दी गई तथा समय-समय पर प्रखण्ड आत्मा कार्यालय, भभुआ में उपस्थित सहायक तकनीकी प्रबंधक श्री सुनील कुमार पटेल द्वारा निरीक्षण भी किया गया।

वित्तीय वर्ष 2020-21 में ट्रेनिंग एवं मषरूम उत्पादन पर किसान पाठषाला के बाद मैनें स्वरोजगार एवं आय के अतिरिक्त विकल्प के रूप में मषरूम उत्पादन करने का मन बना लिया तथा मैने मषरूम उत्पादन को अवसर के रूप में देखा। मषरूम उत्पादन आमदनी का एक ऐसा विकल्प है जिसमें भूमि की आवष्यकता ही नहीं है। इस रोजगार को अपनाने से मेरी परम्परागत कृशि पर भी कोई असर नहीं होगा। आत्मा कार्यालय द्वारा संचालित किसान पाठषाला को मैं अपने जीवन में एक बदलाव के रूप में देखता हूँ। जिला उद्यान कार्यालय एवं आत्मा कार्यालय के सहयोग से मषरूम सम्बन्धित 250 कीट अनुदानित दर पर प्राप्त हुआ। इसके लिए मैने अपनी छोटी सी जमीन पर 80ग30 फीट षेड का निर्माण कराया। उसके बाद मैं आत्मा प्रखण्ड कार्यालय से जुड़ा रहा जिससे मुझे समय-समय पर मषरूम प्रबन्धन एवं उत्पादन सम्बन्धित जानकारी मिलती रही, इसके दौरान मैनें उत्पादित हुये मषरूम को बाजार भेजना प्रारम्भ किया जिसमें मुझे 200 ग्राम के पैकेट के उचित मूल्य 40रू मिलते थे। मषरूम उत्पादन के दौरान मैनें सूखे मषरूम का भी विपणन किया जिसमें मुझे 1200रू/किलो के हिसाब से उचित मूल्य मिला। सूखे ओयस्टर मषरूम को पाउडर के रूप में मैं राँची (झारखण्ड) में व्यापारी के यहा भेजने लगा। यह मेरा विकल्प के रूप में अपनाया गया रोजगार नियमित आय का श्रोत बन गया। लोगों ने मेरे द्वारा जागरूकता के कारण मषरूम के उपयोग जैसे - सब्जी, आचार, पनीर, चटनी, मुरब्बा, इत्यादि कर रहे हैं। मेरे यहाँ से लोगों के द्वारा षादी, रेस्टॉरेन्ट, इत्यादि में ओयस्टर मषरूम का आर्डर आने लगा। लोगों में पौश्टिकता व बिमारी से बचने का आसान उपाय मिल गया। मुझे प्रखण्ड आत्मा प्रसार कमीर्यो द्वारा समय-समय पर मषरूम उत्पादन के विपणन हेतु उचित सुझाव एवं मार्गदर्षन मिलता रहा। इस मषरूम के उत्पादन को मैं आत्मा द्वारा निर्माण किये गये समूह के साथ मिलकर उन्हे भी तकनीकी जानकारी दे रहा हूँ। मुझे पहले के पारम्परिक खेती की तुलना में आय का अन्तर दिखने लगा जिससे मेरे बच्चो की गुणवत्ता युक्त पढ़ाई एवं पारिवारिक लालन-पालन में वृद्धि हुआ, इसलिए मैं मषरूम की खेती बड़े ही सुचारू रूप से करता हूँ तथा अन्य को भी करने की सलाह देता हूँ।

60 मशरूम का सुखौता ने दिलायी पहचान

कृषक राखी सिन्हा की कहानी कि शुरूआत होती है इनके पति से जो कि अपने ग्राम बेलाढी मे रोजी-रोटी की जुगाड़ के लिए एक ठेला पर फास्टफूड कि दुकान चलाते है आमदनी कम और खर्च अधिक होने से पूरा परिवार परेशान रहते थे। गाँव में किसानी से जूड़े रहने के कारण किसान राखी सिन्हा ने अपने पति हरिओम कुमार श्रीवास्तव को कृषि विज्ञान केन्द्र सिरिस, औरंगाबाद जाने की सलाह देती है। पति हरिओम कुमार श्रीवास्तव वर्ष 2019 में कृषि विज्ञान केन्द्र सिरिस, औरंगाबाद जाते है। वहाँ पर डा0 सुनिता कुमारी से मशरूम फार्मींग के बारे मे जानकारी मिलती है घर पर आकर किसान राखी सिन्हा और माता-पिता के साथ सलाह करते है। घर में मशरूम फार्मिंग सभी को अच्दा लगता है उसके बाद किसान राखी सिन्हा और पति हरिओम कुमार श्रीवास्तव डा0 सुनिता कुमारी के सलाह पर मशरूम की खेती की शुरूआत किया। किसान राखी सिन्हा मशरूम की खेती के लिए और लोगों को जानकारी देती है मशरूम से प्रोडक्ट भी बनाती है जैसे मशरूम बिस्किट, मशरूम सब्जी मशाला, मशरूम आचार, मशरूम प्रोटिन पाउडर इत्यादि। किसान राखी सिन्हा और पति हरिओम कुमार श्रीवास्तव जब वर्ष 2019 में मशरूम फार्म लगाया तब उन्हे मार्केट का ज्ञान नही था मशरूम फुटिंग आया तो फल की तुडाई करके मार्केट मे जाने के बाद औने पौने दाम पर बेचना पड़ता था यह बात प्रखण्ड तकनिकी प्रबंधक अमरनाथ कुमार, कृषि समन्वयक अखिलेश कुमार, एवं सहायक तकनिकी प्रबंधक महिमा कुमारी मार्केटिंग की सलाह दिए । किसान मार्केट में काफी संधर्ष करने के बाद आज मार्केट में अच्छा जगह बना पाई है। किसान राखी सिन्हा की प्रेरणा से करीब 12 किसान मशरूम की खेती करके अच्छा कमाई कर रहे हैं किसान राखी सिन्हा और पति हरिओम श्रीवास्तव दोनो मिलकर पुरे वर्ष सफलपूर्वक मशरूम की खेती कर रहे है। मशरूम की प्रजाति जैसे ओयेस्टर मशरूम पुरे 12 महिने उत्पादन करते है। ओयेस्टर मे व्हाईट ओयेस्टर, पिंक ओयेस्टर, ग्रे ओयेस्टर (सजोर काजू), रेड ओयेस्टर । अक्टुबर महिने मे बटरी मशरूम का कम्पोस्ट स्वंय बनाती है और नवम्बर महिने में बिजाई करके फरवरी महिने तक बटरी मशरूम प्राप्त कर बाजार में बिक्री करती है। मई महिने से अक्टुबर महिने तक मिल्की (दुधिया) मशरूम और पैडी स्ट्रा (पुआल मशरूम) की खेती सफलता पूर्वक करती है कोरोना काल मे लॉकडाउन होने से किसान राखी सिन्हा का अर्थव्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पडा लॉकडाउन होने के कारण ताजा मशरूम की बिक्री जरूर कम हुआ पर मशरूम को खराब नहीं होने दिया गया वे राखी सिन्हा सभी ताजा मशरूम को धूप में सुखाकर लॉकडाउन खुलने के बाद सभी मशरूम का सुखौता बेचने लगी और सुखौता को पाउडर बनाकर बिस्किट ओर प्रोटिन पाउडर भी बनाकर अच्छे दामों पर सफलपूर्वक बेच रही है। कम लागत मे अच्छा मुनाफा पाकर किसान राखी सिन्हा अपने पूरे परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी बिता रही है।

परिचय

कृषक का नाम :- **राखी सिन्हा**
पति का नाम :- हरिओम कुमार श्रीवास्तव
पता झ ग्राम- बेलाढी, पंचायत+पो0- तरारी
प्रखण्डझ दाउदनगर, जिला- औरंगाबाद (बिहार)

इ स ा बेरोजगारी एवं गरीबी से जूझते समय में कई कहानियां लोगों के लिये प्रेरणा स्त्रोत बन रही है, औरंगाबाद जिले के देव प्रखण्ड के ग्राम जंगी मुहल्ला की रहने वाली अनु देवी की कहानी भी एक उदाहरण है, उनके पति की एक छोटी सी इलेक्ट्रोनिक की दुकान से आमदनी मात्र से घर जैसे-तैसे चलता था, जिससे घर की तंगी हालत बनी रहती थी और बच्चों के लालन पालन में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अनु देवी अगस्त 2020 में भगवान भास्कर महिला हितार्थ समूह 15 महिलाओं के साथ मिलकर बना दी। भगवान भास्कर महिला हितार्थ समूह से जुड़ी महिलायें अनु देवी के लिए संबल बनी और उन्हे महिलाओं की शक्ति से अवगत कराया। तथा प्रत्येक माह 100 रू0 की छोटी रकम प्रति महिला संयुक्त रूप से जमा करने लगी। समूह की बैढक में नियमित शामिल होने से अनु देवी को ताकत मिली और उन्हें लगा कि अब वो स्वरोजगार के जरिए अपने भविष्य को साकार कर सकती है। जब कुछ पैसे समूह में आ गये, तो इन्होने एक छोटी शुरूआत से मशरूम का उत्पादन शुरू किया तथा बाद में इन्होने फएळ्कएवं आत्मा योजना अन्तर्गत समूह मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण प्राप्त कर ली थी। जिसके लिये इन्हे मशरूम ट्रेनिंग का प्रमाण पत्र मिला था। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद मशरूम उत्पादन का तरिका विकसित कर मशरूम का अधिक उत्पादन करने लगी तथा उत्पादित मशरूम को पैकेट में पैक कर लोकल मंडी में भेजने लगी, जिससे इन्हे प्रति माह चार से पांच हजार रुपए का मुनाफा हो रहा है। समूह से ऋण लेने-देने और सामानों की खरीद बिक्री में भी समूह के दीदीयों ने भी सहयोग दिया है। अब हालात सुधर रहे हैं। इनकी आर्थिक स्थिति थोड़ी ठीक हुई है। अनु देवी के पति बताते हैं कि अब उनका परिवार बेहतर जिन्दगी जिने लगा है और अनु देवी बताती हैं कि प्राप्त आमदनी से उनके हौसलों को बल और परिवार में उनका मान बढ़ा है। अब इस पहल को वो और आगे ले जाना चाहेंगी जिससे और भी महिलायें मशरूम उत्पादन में शामिल हो सकें और अपनी आर्थिक स्थिति को ठीक कर सकें।

परिचय

किसान का नाम :- **अनु देवी**
पति का नाम :- भोला सिंह
ग्राम : जंगी मुहल्ला, देव प्रखण्ड :- देव।
मोबाईल संख्या :- 9310276406

61 मशरूम उत्पादन को बनाया आय का स्रोत

परिचय

किसान का नाम : श्री शशिकान्त प्रजापति
पिता/पति का नाम : श्री मुन्नु प्रजापति
पूरा पता : ग्राम-चितहां, पो0- उपरी, थाना- रामगढ़, प्रखण्ड- रामगढ़, जिला- कैमूर (बिहार)
मोबाईल नं0 : 8298973993
खेती योग्य भूमी (हे.मे) : 2 हेक्टेयर
खेती का विवरण : मशरूम उत्पादन, झोपड़ी का आकार ल0-50फिट, चै0-30फिट, उ0-12फिट कमरा की संख्या-05
क्षेत्रफल (वर्गफिट में) : 1500 वर्गफिट
8. किसान का प्रकार : सिमांत
(स्वयं सहायता/कृषक हित समूह/खाद्य सुरक्षा समूह (महिलाओं के लिए)/कृषक उत्पादक संगठन के

मेरी सफलताओं का श्रेय मेरे पिताजी एवं हमारे दादाजी को जाता है, क्योकिं मै बहुत गरीब परिवार से आता था। हमलोग का जीवन-यापन खेती किसानी पर ही निर्भर था, हमलोग के पास कम खेत रहते हुए भी दूसरों का खेत लेकर खेती करते थे। उस समय मुख्य रूप से अनाज और कुछ हद तक परिवार के जरूरतों के लिए आवश्यक फसलों की खेती करते थे। मुझे उन्नत फसलों के उत्पादन करने की जानकारी नही थी। मै उन दिनों बारहवीं एवं स्नातक की पढ़ाई अपने गॉव से करीब 15 किलोमीटर दूर रामगढ़ करने जाया करता था। घर से आने-जाने के वजह से पिताजी एवं दादाजी के साथ खेती मे भी काफी सहयोग करता था। उनलोगों की कड़ी मेहनत के बावजुद उत्पादन उतना ही हो पाता था जितना से की गुजारा चल सकें इसी को देखकर मेरे दिमाग मे बार-बार कुछ न कुछ अलग करने की इच्छा जागृत होती थी, जिससे कि काफी मुनाफा कमाया जा सके। इसी बीच मै सन् 2018 मे आत्मा कैमूर के माध्यम से परिभ्रमण हेतू डा0 राजेन्द्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर गया तो मशरूम की खेती के बारे मे सुना, देखा और सिखा। जब मै उच्च विद्यालय, रामगढ़ से दसवीं एवं बारहवीं, स्नातक जी0बी0 कॉलेज, रामगढ़ से परीक्षा उ×ीर्ण किया तो मुझे समझ मे नही आ रहा था कि मै क्या करू क्योकि मै बेरोजगार था, काम का तलाश कर रहा था लेकिन कोई काम नहीं मिल रहा था। मै किसान का पुत्र होने के नाते मेरे भी दिमाग मे आया कि मै भी उन्नत तकनीक से प्रशिक्षण प्राप्त कर खेती क्यों न करू ? लेकिन मै तो उस समय सिर्फ परम्परागत खेती धान, गेहूँ, चना, सरसों एवं कुछ सब्जियों का खेती करना जानता था और खेती करना शुरू कर दिया। पहले तो मुझे बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा, मेरे घर के लोग कहने लगे कि पढ़-लिखकर अब तुम खेती करोगे तुम्हे नौकरी करना चाहिए। मै किसी की बातों को न सुनते हुए पिताजी एवं दादाजी को समझा-बुझाकर अपने घर के 4 एकड़ जमीन और दुसरों का 2 एकड जमीन से खेती करना आरम्भ कर दिया। समेकित कृषि प्रणाली को अपनाकर कुछ अच्छा अलग और अधिक से अधिक मुनाफा कमाने के उद्देश्य से लग गया। अपने प्रक्षेत्र पर निरन्तर नये-नये प्रयोग भी किए, इसी क्रम में आत्मा कैमर, कृषि विभाग एवं ज्ञटज्ञ अधौरा से काफी मदद भी मिली कुछ ही समय में मेरे परिवार एवं गॉव वाले मेरी प्रसंशा करने लगे। क्योकि मै खेती से अच्छा मुनाफा कमाने लगा था। लेकिन इतना करने के बाद भी मुझे लगा कि पारंपरिक खेती से हटकर कुछ अलग किया जाय। तभी इसी बीच सन् 2018 मे मुझे आत्मा कैमूर के प्रखण्ड स्तरीय सहायक तकनीकी प्रबंधक, प्रभात कुमार सिंह के माध्यम से किसान मेला डा0 राजेन्द्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर मे लगे तीन दिवसीय किसान मेला घुमने का अवसर मिला और मै वहॉ पहुँचकर बहुत सारी फसलों के बारे मे अवलोकन किया और बहुत सारी जानकारी इकट्ठा किया जिसमे मुझे खाद्यान उत्पादन को छोड़कर मशरूम उत्पादन करने की तकनीक मुझे भा गई और मै विश्वविद्यालय परिसर मे ही आवश्यक प्रारंभिक प्रशिक्षण लिया और मशरूम उत्पादन करने का पुरी तरह से मन बना लिया। घर जाकर मशरूम उत्पादन के लिए सबसे पहले मै एक 10ग10 वर्गफिट के एक कमरे मे खेती करना प्रारम्भ किया। मैने किसी तरह से बीज की व्यवस्था की और जानकारी के अभाव मे मुनाफा नहीं कमा पाया। क्योकि न ही मुझे खेती पूर्णतः जानकारी थी और न ही बेचना जानता था। फसल तैयार होने पर बेचूं कहॉ पता ही नहीं था। बहुत लोगों को मैने बताया तो लोग इसे जहर समझते थे, कोई स्वीकार नहीं करता था। लेकिन मै हिम्मत नहीं हारा मै निरंतर प्रयास करता रहा और जब मै मशरूम को बाजार मे बेचना चाहा तो वहॉ पर कुछ लोग मशरूम जानते थे लेकिन वो बटन मशरूम ही जानते थे, लेकिन मै तो ओयेस्टर मशरूम की खेती करता था, फिर भी लोगो को मशरूम के प्रति जागरूक करना शुरू किया प्रत्येक गॉव मे कैम्प लगाकर मशरूम के बारे मे बताता था और फ्री मे मशरूम कुछ लोगो को देता था। धिरे-धिरे मे मशरूम को सुखाकर बाहर के बाजार मे बेचना प्रारम्भ कर दिया। बहुत सारे होटल, सब्जी के दुकानों पर भी मेरा मशरूम जाने लगा। मै बाहर से मशरूम का स्पॉन लाता था क्योकि हमारे जिले मे स्पॉन (बीज) का कोई लैब नहीं था। मै धिरे-धिरे खेती को बढ़ाना चालू किया शुरू मे 100 बैग और अब 1500 से 2000 बैग का खेती करता हूँ। मै प्रत्येक साल दो से तीन लाख रुपए तक कमा लेता हूँ। इसके साथ-साथ मशरूम के अपशिष्ट से जैविक खाद बनाकर करीब आधा एकड़ मे लहसून, प्याज एवं सब्जी की खेती करता हूँ इससे भी मुझे काफी मुनाफा होता है, साथ ही चार एकड़ जमीन पर धान, गेहूँ, दलहन, तेलहन की खेती उन्नत तकनीक से करता हूँ जिससे मुझे इससे भी काफी अच्छा मुनाफा करीब 1 से 1.50 लाख रुपए कमा लेता हूँ। आज मै नौकरी मे नहीं हूँ इसका पछतावा मुझे नहीं होता है। मै आज कम से कम अपने जिले के 80 से 100 किसानों से मशरूम की खेती कराता हूँ और इनके फसल को बेचने मे पूर्णतः मदद करता हूँ। मुझे बहुत खुशी है कि आत्मा कैमूर से कई योजनाओं का लाभ मिला। मशरूम के क्षेत्र मे कई प्रशिक्षण कराया गया। मुझे साबौर कृषि विश्वविद्यालय मे रहकर प्रशिक्षण लेने का अवसर मिला। आत्मा योजना अन्तर्गत मशरूम उत्पादन पर किसान पाठशाला दिया गया जिसमे 25 किसानों को जोड़कर मशरूम उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। आज मै 1500 वर्गफिट मे ओयेस्टर, गेनोडर्मा और बटन तीनो प्रजाति के मशरूम का खेती करता हूँ बहुज जगह मुझे इस कार्य के प्रति सम्मानित किया गया, अपने आस-पास के कई छोटे शहरों एवं बाजारों मे मशरूम का स्टॉल लगाकर इससे बने आचार मशरूम प्रोटिन पावडर तथा पकौड़े बेचकर भी कम से कम साल भर मे 2 से 2.50 लाख रुपए तक का आमदनी कर लेता हुँ। मै रॉची, कोलकाता, पुणे जैसे मशरूम के अच्छे खपत वाले जगहों पर जाकर अध्ययन करता रहा, आज मै मशरूम के क्षेत्र मे अलग पहचान बनाकर लगातार जागरूक करने का प्रयास कर रहा हूँ। मै अपने स्तर से खेती तो करता ही था। लेकिन सरकारी योजना से वंचित रह जाता था। इन्हीं सभी क्रमों मे प्रखण्ड स्तरीय सहायक तकनीकी प्रबंधक, प्रभात कुमार सिंह एवं रंजन कुमार से मुझे बताया गया कि मशरूम स्पॉन (बीज) उत्पादन इकाई लगाने हेतू बेहतर प्रशिक्षण के लिए सोलन, शिमला भेजने की बात कही गई है।

62 अरूणी देवी ने मशरूम उत्पादन से बढ़ायी आमदनी

परिचय

किसानकानामः- श्रीमति अरूणी देवी
ग्राम- शास्त्री कॉलनी, नगर परिशद्, जमुई
वार्ड न0- 07, प्रखंड- जमुई
मोबाईल नं0:- 9931265016
समूह का नामः-शिव स्वयं सहायता समूह

श्रीमति अरूणी देवी, पति- स्व0 कैलाश मंडल, ग्राम-शास्त्री कॉलनी, नगर परिशद्, जमुई वार्ड न0- 07, प्रखंड-जमुई, जिला-जमुई की निवासी हैं। गरीबी के कारण ये मात्र पंचम वर्ग तक ही पढ़ाई कर पाई। इनके पति के देहान्त होने के उपरान्त घर की सारी जिम्मेवारी इनके कन्धों पर आ गई। लड़की की षादि करने के उपरान्त अनकी आर्थिक स्थिती बहुत ही दयनीय हो गई। इनके गुजर-बसर के लिए मात्र 01 हेक्टेयर ही जमीन है। इस जमीन पर कठिन मेहनत कर किसी प्रकार से अपने परिवार का भरन-पोशण कर रही थी। फिर इन्होने सोचा कि कुछ और भी कार्य कर आय को बढ़ाया जाय। इसी दरमियान में कृषि विभाग के आत्मा द्वारा लगाए गये मेला का भ्रमण वर्श 2012 में किया। जिसमें इन्होंने बहुत से महिलाओं को स्टॉल लगाए हुए देखा और उन से जानकारी लेकर मंच पर बैठे उप परियोजना निदेशक, आत्मा से मिलकर बात-चीत की। उप परियोजना निदेशक द्वारा इन्हे समूह के महत्व एवं समूह बनाकर कार्य करने की प्रेरणा दी गई। जिसके बाद इन्होने अपने मूहल्ले में अन्य महिलाओं से सम्पर्क कर 15 महिलाओं का एक समूह बनाया गया। जिसका संबंधन इन्होने आत्मा कार्यालय से कराया। आत्मा द्वारा इन्हे मशरूम की खेती के लिए प्रेरित किया गया तथा मशरूम उत्पादन करने हेतु प्रशिक्षण राजगीर, नालन्दा में कराया गया। प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्होने ढ़िगरी मशरूम उत्पादन प्रारंभ किया। मशरूम उत्पादन से इन्हे कुछ आय होने लगा। तब इन्होने मशरूम उत्पान में बढ़ोतरी करने की ठान ली। इनके द्वारा अपने समूह की सभी महिलाओं को मशरूम की खेती करने हेतु प्रेरित किया गया। मशरूम उत्पादन उपरान्त स्थानीय बाजार में बिक्री कर अत्यधिक आमदनी होने लगी। प्रत्येक माह में मशरूम उत्पादन द्वारा इनकी आमदनी 15-20 हजार रुपए होने लगी। मशरूम उत्पादन द्वारा होनेवाली आमदनी से इनकी आर्थिक हालत सुदृढ होने लगी। घर बनाने हेतु बैंक से ली गई ऋण की राशि को भी धीरे-धीरे चुक्ता कर दिया। इनके द्वारा किए गए कार्यो से प्रेरित होकर मोहल्ले की अन्य महिलाए भी इनसे जुडी एवं सफलता का राज पुछा तो इनहोने उन्हे समूह बनाकर कार्य करने की प्रेरणा दी। इनके द्वारा पाँच समूहो का निर्माणकर आत्मा से संबंधन कराया गया है। जिन्हें ये मषरूम उत्पादन का प्रषिक्षण भी घर-घर जाकर देती है। अब ये अपने परिवार का बड़ी सहजता से भरण-पोशण कर रही हैं।

नीलम कर रहीं ब्रोकली की खेती

परिचय

नाम - **नीलम देवी**
पति - धनंज
स्थान ग्राम - चिल्हकी बिगहा पंचायत- अम्बा पोस्ट- अम्बा प्रखण्ड- कुटुंबा जिला- औरंगाबाद (बिहार)

कृषक नीलम वर्मा की कहानी की शुरूआत होती है इनके पति से जो कि वर्ष 2005 मे रोजी रोटी की तलाश में घर से बाहर हैदराबाद के एक शॉपिंग मॉल मे काम करते थे। उन्होने वहाँ देखा कि फूलगोभी जैसा दिखने वाला एक हारा रंग का सब्जी है जिसकी कीमत सामान्य फूलगोभी से 5 गुना तक ज्यादा थी। ये बात उन्होने अपनी पत्नी नीलम वर्मा को बताई। और यहीं से किसान नीलम वर्मा की जीवन में परिवर्तन कि शुरूआत हुई। नीलम वर्मा ने ब्रोकली की खेती कि शुरूआत तब अपने 5 कट्ठा जमीन से कि थी। बड़ी मुश्किल से बीज का प्रबंध हो पाया था। अब उनके सामने सबसे बड़ा सवाल यह था कि उत्पादित ब्रोकली को बेचेंगे कहाँ? जानकारी के अभाव में, या फिर कहें कि ब्रोकली इस सरजमीं पर नया था इसलिए इसे उत्पादन के अनुरूप खरीददार नहीं मिल रहे थे। दिलीप कुमार (संवाददाता, हिंदुस्तान) को इसकी खबर लगी तो इन्होने पाने अखबार में इसका एक लेख छापा। इस मीडिया की अहम भूमिका के कारण अब किसान को अच्छी आमदनी होने लगी। जिला उद्यान पदाधिकारी (2012-13) को इसकी जानकारी मिली तो उन्होने विभागीय मदद से 90% अनुदान पर वहाँ पोलिहाउस का निर्माण कराया। अब नीलम देवी ब्रोकली के साथ साथ रीी-ी२२ खीरा शिमला मिर्च का का उत्पादन शुरू कर दी। किसान नीलम वर्मा ने कृषि की यात्रा आगे बढ़ते हुये बटेर पालन के बारे में योजना बनाने लगी। बटेर का बच्चा औरंगाबाद में मिलना असंभव प्रतीत हो रहा था परंतु उन्होने हार नही मानी और हाजीपुर से बटेर के बच्चों को आयात की।

अब चिलहकी बिगहा में बड़े पैमाने पर स्ट्रॉबेरी की खेती होती है। नीलम वर्मा ब्रोकली, शिमला मिर्च एवं रीी-ी२२ खीरा के साथ साथ स्ट्रॉबेरी की भी खेती करती है। स्ट्रॉबेरी की खेती इतना सुप्रसिद्ध हआ कि उसका अवलोकन करने एवं किसानो को उत्साहवर्धन करने माननीय मुख्य मंत्री श्री नितीश कुमार खुद चल कर चिलहक बिगहा आए। नीलम वर्मा अब अनेक सब्जियों की खेती लिज पर जमीन लेकर कर रही है। आमदनी अच्छी हुई तो परिवार का जीवन स्तर भी ऊपर हुआ है। अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे रही है। उनका उदेश्य पाने बच्चे को कृषि शिक्षा देने की है जिससे उनका बच्चा उनका कृषि मार्गदर्शक के रूप मे उभरे एवं उनको कृषि की जानकारी दे।

63 मशरूम व मधुमक्खी पालन ने दिलायी पहचान

परिचय

किसान का नामः- श्री राकेश कुमार
पिता का नाम :- श्री राजेन्द्र सिंह
पताः- ग्राम- दाउदपुर, पंचायत- चमण्डी, थाना-मानिकपुर, प्रखण्ड -वंशी, जिला-अरवल
मोबाईल नं0 :- **6204657180**
योग्यता :- मैट्रिक
किसान के पास खेती योग्य भूमिः- दो एकड़

अत्यन्त साधरण किसान परिवार में जन्मे श्री राकेश कुमार बचपन से ही संधर्षमय रहे। मात्र 1.5 एकड़ जमीन के कारण आर्थिक स्थिति दयनीय रही। मैट्रिक पास करके रोजगार की तलाश में पंजाब गऐ। संतुष्टी न मिलने के कारण 10 वर्षो बाद वापस आकर कृषि को ही व्यवसाय बनाया। आत्मा अरवल से उन्होने मधुमक्खीपालन, मशरूम उत्पादन, समेकित कृषि प्रणाली का प्रशिक्षण लेकर और परिभ्रमण कर के अपना कार्य आगे बढ़ाया। वर्तमान में ये एफ0आई0जी0 चलाते है। इसनी पत्नी सविता देवी एफ0एस0जी0 चलाती है। समूह के माध्यम से और आत्मा अरवल के सहयोग से इन्होने मशरूम उत्पादन का व्यवसाय शुरू किया और बड़े पैमाने पर कुर्था, मानिकपुर के बाजार में मशरूम की बिकरी की गई। इससे इन्हे अच्छा मुनाफा हुआ। पुनः इन्होने मधुमक्खीपालन को व्यवसायिक रूप दिया। मधुमक्खीपालन से भी अच्छी आमदनी कर रहे है। समूह के माध्यम से सब्जियॉ भी उगाई जा रही है। साथ ही ठत्ठछ के ळतवूमत थ्तउमत में इनका निबंधन है। समूह के माध्यम से पूरे गाँव की भलाई और आमदनी बढ़ाने में योगदान करते है। कृषि विज्ञान केन्द्र लोदीपुर से इनके समूह को जेम, जेली, शोश इत्यादी बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिससे इनका समूह पूरे वर्ष भर आमदनी कर सके।इन्होने बताया की मशरूम उत्पादन मे प्रति बैग 50 से 60 रुपए का खर्च आता है। जब की आमदनी 200 रुपए के आस-पास होती है। महिलाये कुटिर उद्योग द्वारा अच्छी आमदनी कर सकती है। इनकी वार्षिक आय दो लाख रुपए से अधिक है। सचमुच ये अपने क्षेत्र के किसानों के लिए आईकोन है।

64 मशरूम उत्पादन कर रहे सरोज

परिचय

किसान का नामः- **श्री सरोज कुमार**
पिता का नाम :- श्री रामलखन सिंह
पूरा पत्ता :- ग्राम- राजा बिगहा, पंचायत-खभैनी, प्रखण्ड-अरवल, जिला-अरवल
किसान का मोबाईल नं0:-9905456897

इंसान के इरादे और हौसले अगर बुलंद हो, तो उनके लिए कोई भी काम मुश्किल और नामुमकिन नहीं होता। जी हाँ, कुछ ऐसी ही मिशाल पेश की अरवल जिले, अरवल प्रखण्ड के किसान श्री सरोज कुमार ने। श्री सरोज कुमार अरवल जिले के अरवल प्रखण्ड के खभैनी पंचायत के राजा बिगहा के निवासी है, जिन्होने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सेना में भत्री होने की तैयारी करने लगे, लेकिन शारिरिक दुर्बलता के कारण सेना में जाने का सपना पूर्ण नही को सका और इसी बीच सन् 2009 को उनकी शादी श्रीमती संगीता कुमारी से हो गई। और इनके कंधो पर परिवार की जिम्मेदारी बढ़ गई साथ ही साथ परिवार की आर्थिक तंगी से गुजरने लगा। जीविका चलाने के लिए काम की खोज करने लगा और बहुत मुश्किल से प्राईवेट स्कूल मानस विधालय बलिदाद में शिक्षक के रूप में बच्चों को पढ़ाने का काम किया। बच्चों को पढ़ा कर कोई इतनी आमदनी नहीं हो पाती थी। जिससे की परिवार का भरण पोषण और मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में कठिनाई होने लगी और कार्य करने में मन नहीं लगने लगा। इसी क्रम में वर्ष 2014 में मेरी मुलकात कृषि समन्वयक श्री चन्द्र प्रताप सिंह जी से हुई, जिन्होने मुझे कृषि विभाग के समस्त योजनाओं की जानकारी दी और कृषि के प्रति मेरा लगाव पैदा करने की कोशिश की, लेकिन पूंजी और जमीन के अभाव में मैं अपने आप को कृषि कार्य करने के लिए असहज महसुस करने लगा। आत्मा कमीर्यो के क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान गाँव पर ही हमारी मुलाकात कृषि समन्वयक और सहायक तकनीकी प्रबंधक श्री सतीश कुमार से हुई उस समय उन्होने मुझे कम लागत में अच्छी पूंजी कमाने के लिए मशरूम की खेती के बारे मुं बताया और मेरा मन भी मशरूम की खेती करने की उत्सुक हो गया। लेकिन मैं और मेरा गाँव के लोग इससे बहुत अनजान थे। फिर मैं कृषि समन्वयक और सहायक तकनीकी प्रबंधक की मदद से आत्मा कार्यालय अरवल मे सर्म्पक किया। जहाँ पर मुझे एक दिन का प्रशिक्षण दिया गया और साथ ही साथ 500 ग्राम मशरूम के बीज का एक पैकेट मिला। जिसे में प्रशिक्षण में बताए हुए विधि के अनुसार लगाया और 30 (तीस) दिनों के अन्दर मशरूम निकला जो की शुरूआत फैल गई की यह फालतु है और जहरीली भी है इस बात की पुष्टि के लिए मैं फिर सहायक तकनीकी प्रबंधक श्री सतीश कुमार से सर्म्पक किया और हमारे गाँव पर इस भ्रम को दुर किए कि यह जहरीला है और मशरूम बनाकर खाने प्रक्रिया और इसके लाभ को गाँव के लोगो को बताया। तत्पश्चात मशरूम का सब्जी अपने धर में भी बनाया और पड़ोस के लोगो ने भी बनाकर बहुत पसंद किया। तब मेरा मन मशरूम के प्रति और आकर्षित हो गया। लेकिन व्यवसायिक रूप में मशरूम की खेती की ग्रहण करने के लिए मुझे और भी प्रशिक्षण की आवश्यकता थी क्योकि मैं पूंजी क आभाव में कोई भी जोखिम नही लेना चाहता था।

फिर मैं आत्मा अरवल द्वारा कौशल विकास योजना के तहत मशरूम की खेती पर 30 (तीस) दिनों का आवसीय प्रशिक्षण प्राप्त किया जैसेः-बटन मशरूम, दुधिया मशरूम और ऑस्टर मशरूम की खेती करने लगा। इस बीच मुझे आत्मा अरवल के द्वारा राज्य के बाहर प्रशिक्षण हेतु बनारस ले जाया गया और प्रशिक्षण प्राप्त कर मैं और कुशल हो गया। मशरूम का उत्पादन तो मैं प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद करने लगा लेकिन फिर सबसे बड़ी समस्या मशरूम को बेचने और ग्राहक की समस्या थी फिर मैं अपने साईकिल पर ही झोले में डालकर गाँव-गाँव और क्षेत्रीय बाजार में इसका प्रचार-प्रसार और बिक्री करने लगा।

लेकिन वर्तमान में स्थिति यह है कि बाजार और लोगों का रूझान मशरूम के प्रति इतना ज्यादा हो गया कि मैं उनकी माँगो को कभी-कभी पूरा नही कर पाता हूँ।आत्मा अरवल के द्वारा हमारे गाँव में एक महिला समूह का निर्माण किया गया है जिसमें वर्तमान में सभी महिलाएँ मशरूम उत्पादन का कार्य करके अच्छी आमदनी कर रही है।

शुरूआत में मैं एक छोटे से 17ह्यह्यग 8ह्यह्य (17 फीट ग 8 फीट) एक ठण्डे छायादार कमरे से इसकी शुरूआत की जिससे मुझे पन्द्रह हजार की लागत पर लगभग 80000(अस्सी हजार) रू0 की आमदनी हो जाती है। अब मैं इसे बड़े पैमाने पर लगभग तीन से चार लाख रुपए तक की आमदनी कर पा रहा हँ। और मैं अब उसे अपना पेशा बना लिया हूँ। अब मैं और मेरा परिवार खुश है।

(श्री सतीश कुमार एवं श्री दीपक कुमार सहायक तकनीकी प्रबंधक अरवल)

65 मशरूम की खेती से आमदनी हुई दोगुनी

परिचय

कृषक का नाम :- **श्री प्रमोद कुमार**
पिता/पति का नामः- स्व0 लक्ष्मण प्रसाद
पता :- ग्राम - खड़िया, पो0- खड़िया, पंचायत.- करहरिया दक्षिणी, प्रखंड- बरियारपुर, जिला- मुंगेर ,
मो0 नं0:- 9771290533

मैं श्री प्रमोद कुमार पिताजी श्री लक्ष्मण प्रसाद डण्। ;ळमवहतंचीलद्ध हूॅं। मैं एक किसान का पुत्र होते हुए भी षुरूआती दिनों मे नवोदय में षिक्षक के रूप में कार्यरत रह चुका हूॅं। करीब पॉच वर्षो तक मैने शेखपुरा, खगड़िया, गया में विधार्थियों को पढ़ाया उसके बाद मैने 2005 मे अपना विधालय स्थापित किया और करीब 10 वर्षो तक अपना विधालय चलाया लेकिन इनके बाबजुद चुकी अकेले भाई होने के कारण पिताजी की खेती में बराबर सहायता करते रहता था जिसकारण मेरा खेती में धीरे-धीरे रूझान और बढ़ते रहा और अंत में वर्ष 2015 के बाद में पूरी तरीके से खेती में लग गया और अपने गॉव खड़िया मे ही रहने लगा। इसी दौरान वर्ष 2020 में मुझे आत्मा, मुंगेर के ठज्ड द्वारा प्रषिक्षण दिया गया और मषरूम की बहुत सारी उपयोगिता एवं गुणवता के बारे में बताया गया। तब मुझे लगा की धान, गेहॅं से तो अच्छा है कि कम लागत में मषरूम लगाने की खेती की जाय, तब मैने अपने ही घर मे मषरूम लगाने के बारे में सोचा। इसके बाद मैंने आत्मा, मुंगेर के बरियारपुर प्रखंड के ठज्ड से संपर्क किया और मुझे स्पॉन उपलब्ध करासा गया। पहली बार मैंने अपने ही एक कमरे में जैविक तथा रसायनिक विधि से बैग तैयार किया और मुझे अच्छी सफलता मिली। तभी मैंने बड़े पैमाने पर करने के लिए ठान लिया और लोगों मे जागरूकता बढ़ाने के लिए उन्हें भी इसके विषय मे बताना शुरू किया ताकि यह एक बड़ा रोजगार के रूप मे उभर कर आ सके।

उत्पन्न चिह्नित समस्याः-. जहॉं तक इसके बाजार का प्रष्न है तो इसकी भी कोई समस्या नहीं है क्योंकि अभी इसकी मॉग काफी अधिक है और अभी भी आपूर्ति मॉग की तुलना में काफी कम और लोग इसे काफी पसन्द भी कर रहे है। इसलिए मषरूम की खेती करके मै काफी खुष हूॅं।

उत्पन्न चिह्नित समस्या का निदान आपने कैसे किया :- वैसे तो कोई विषेष समस्या उत्पन्न नही हुई। बस समय-समय पर ये ध्यान रखता है कि कोई बाहरी कीट से नुकसान न हो। धरेलु स्तर पर हमें चुहों से थोड़ा बचाना होता है इसके लिए अब इसे तांग कर रखे और समय-समय पर पानी का छींटा देते रहे।

व्यक्ति अथवा संस्थान से प्राप्त सहायता का विवरणः- कृषि प्रोधोगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा) मुंगेर से सहायता प्राप्त किया तथा उनके माध्यम से ही मषरूम का प्रषिक्षण कराया गया और उनके मार्गदर्षन पर ही रहकर हमारे उत्पाद में काफी बढ़ोतरी हुई। यहॉं तक की स्पॉन भी आत्मा द्वारा ही प्राप्त हुआ।

कितने दिनो से उपरोक्त कार्य कर रहें हैः- 1 वर्षो से।

उपरोक्त कार्य करने से प्राप्त सफलता का विवरणः- एक किसान होने की एक बड़ी उपलब्धि है कि आसपड़ोस के बाजार और हाट का अच्छा अनुभव था। बाजारों की उचित व्यवस्था तथा रेलवे स्टेषन का भी नजदीक होना। उत्पादन मे भी काफी अच्छी बुद्धि 10-15 दिनों में तैयार हो जाना। जिससें मॉग बनी रही। अच्छी कीट नाषक का प्रयोग कर भूया का उपयोग करना। कमरे की उचित साफ-सफाई रखना तथा अनावष्यक प्रवेष नही करना। समय-समय पर और भी जानकारी रख-रखाव के लिए लेते रहना और देख रेख करते रहना।

सफलता प्राप्ति के मुख्य कारकः- इस कार्य में परिवार का विषेष सहयोग मिला जिसके कारण अच्छा उत्पादन हुआ और मुनाफा भी अच्छा हुआ। लोगो और आस-पड़ोस ने हाथों-हाथ लियर जिससें की बाजार में कैसे बिक्री होगी इस पारे में ज्यादा नहीं सोचना पड़ा। अब तो कई हौटलों और भोजनालय मे भी मषरूम की मॉग काफी बड़ गई है।

पुरस्कार यदि कोई प्राप्त कियो होः- कृषि क्षेत्र में अबतक नहीं।

आर्थिक विषलेषनः-
क्र0 सं0 लाभ पहले बाद में
लागत (400 बैग) 1,200 (950 बैग) 29,450
मजदुरी 2,000 4,000
बाजार मुंगेर (बरियारपुर) म्ुंगेर, सुल्तानगंज (भागलपुर अन्य

विषेष सुझाव यदि कोई होः- मषरूम लगाते वक्त तापमान, नमी, रोषनी, कार्बन डायऑक्साइड ब्व2 का भी विष्लेषण कर लें। अच्छे स्पॉन का प्रयोग करे। फल आने पर कीटनाषी का प्रयोग नही करें। ज्यादा कड़ा ना होने दे और समय-समय पर किसी संस्था से जुड़ कर प्रषिक्षण लेते रहे। ताकि नई जानकारियों का लाभा उठा सकें।

अन्य कोई जानकारी यदि देना चाहते होः- . अभी के बदलते दौर में अति आवष्यक हो गया है कि किसान भाई सिर्फ परंपरागत खेती ही न करें बल्कि साथ ही साथ सहायक क्रिया के रूप मे बहुत सारे कृषि कार्य को कर सकते है और अपने आय को बठाने का प्रयास कर सकते है।

क्र0 सं0	विविध	संख्या/रकबा	यंत्र/फसल/प्रजाति का नाम
1.	यांत्रिकरण	02 एकड	ट्रेक्टर, स्प्रेयर, पॉवर टीलर
2.	सिंचाई	02 एकड	पम्पसेट
3.	खेती की तकनीक	आधुनिक	दलहनी, तेलहनी तथा धान, गेंहूॅ
4.	खाद्य प्रसंस्करण	नही	–
5.	कीटनाशी और उर्वरक	02 एकड	रसायन (डी0ए0पी0, यूरिया), गोबर खाद, कम्पोस्ट
6.	फल, फूल एवं सब्जी	निजी आवश्यकता के लिए 1/2 एकड	मौसमी सब्जियो आवश्यकता अनुसार । आम 6 पेड
7.	अन्य फसल	2 एकडत्र	धान, गेंहूॅ, चना, मसूर तीसी, सरसो
8.	मत्स्य	नही	
9.	पशुपालन	हॉं	गाय–02, बकरी
10.	डेयरी उद्योग	लघु	निजी प्रयोग के लिए।
11.	मुर्गी पालन	अतिलघु	1–2 घरेलु स्तर पर
12.	सामुदायिक कोशिष	सहकारिता का सहयोग	
13.	अन्य	मशरूम	

66 रिंकु ने मशरूम उपजाकर बनी स्वावलम्बन

परिचय

नाम – **श्रीमती रिंकु देवी**
पति – श्री पवन कुमार बैद्य
पता – ग्राम– झिरवा, पंचायत – लकड़ीकोला, प्रखंड– बांका जिला– बांका
मो0– 7667402204

- श्रीमती रिंकु देवी के मशरूम युनिट का समय–समय पर जिलाधिकारी द्वारा निरीक्षण किया गया।
- बांस के पत्ते और गन्ने के पत्ते पर मशरूम का उत्पादन।
- आईडीबीआई बैंक द्वारा पचास हजार ऋण प्राप्त।
- मशरूम उत्पादन एंव प्रशिक्षण के साथ सब्जी को नर्सरी से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रही हैं।
- विभिन्न संस्थाओं द्वारा ढेरों पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।
- अनेक पत्र–पत्रिकाओं में इनकी सफलता की कहानी प्रकाशित हो चुकी है।

बांका प्रखण्ड के झिरवा गॉव की श्रीमती रिंकु देवी का जीवन आर्थिक तंगी से गुजर रहा था, गॉव की अन्य महिलाओं की तरह घर की जिम्मेदारियों के साथ तीन बीघा जमीन पर खेती करती थी। खेती से जो आमदनी होती थी उससे घर परिवार चलाना मुश्किल हो गया था, जो चिंता का विषय था। इसी दौरान जिला आत्मा कार्यालय, बांका और कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आयीं, जहाँ से इन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर मशरूम उत्पादन की शुरूआत की और शुरूआती दौर में ही आमदनी बढ़ने लगी। मशरूम उत्पादन की आमदनी से मन उत्साहित हुआ और इसे अधिक बढ़ाने की ओर कदम बढ़ा।

आत्मा बांका के राकेश कुमार, सहायक तकनीकी प्रबंधक द्वारा श्रीमती रिंकु देवी के यहाँ किसान पाठशाला का संचालन किया गया, जहाँ पर महिलाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त कर और रिंकु देवी से प्रेरित होकर मशरूम उत्पादन की ओर अग्रसर हुई। इसी दौरान झिरवा गॉव की 22 महिलाएं संगठित होकर शिव हितकारी समूह का गठन किया। अब ये महिलाएं समूह में मशरूम का उत्पादन कर जिले का नाम रौशन करते हुए, महिला सशक्तिकरण की एक मिशाल पेश कर रही है। श्रीमती रिंकु देवी ने बताया कि मास्टर ट्रेनर के रूप में बांका जिला के कटोरिया, बौंसी, बेलहर, फुल्लीडुमर, अमरपुर एवं चांदन प्रखण्ड के बेरोजगार युवकों एवं युवतियों को प्रशिक्षण देकर मशरूम उत्पादन प्रारम्भ करवा चुकी हैं। श्रीमती रिंकु देवी द्वारा उत्पादति मशरूम बिहार के अनेक जिलों के साथ झारखण्ड राज्य में विपण्न किया जा रहा है अब इनकी आमदनी 15 से 16 हजार रूपये प्रति माह हो चुकी है। मशरूम की आमदनी से बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और परिवार में खुशहाली का वातावरण फैला है। क्षेत्र में सम्मान की नजर से देखा जा रहा

67

मशरूम को बनाया आय का स्रोत

परिचय

नामः– इन्द्रासनी देवी
पति का नामः– गिरजा पासवान
पूरा पताः– ग्राम – उत्तमपुर
पंचायत– बारूपुर
प्रखण्ड – राजपुर
जिला – बक्सर (बिहार)
मोबाईल संख्याः– 9262343402
खेती योग्य भूमिः– 04 बिगहा
किसान का प्रकारः– खुशबू (महिला) खाद्य सुरक्षा समूह के सदस्य

मेरे पति को पूर्वजों से मिली जमीन पर खेती परम्परागत तरीके से करते थे और आज भी कर रहे हैं। मेरा परिवार एक लम्बा परिवार है, जिसमे कुल 06 सदस्य है। जिनमें 01 बेटा तथा तीन बेटियाँ है। सभी तीनों बेटियों की ॉादी हो चुकी हूँ। मेरे ससुराल की आर्थिक स्थिति मेरे ॉादी होने के पहले से ही काफी खराब थी जिस वजह से मेरे बच्चों की परविश करने में मुझे तथा मेरे पति को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। मुझसे मेरे घर के हालात देखा नहीं जा रहा था। मै भी अपने पति के साथ अपने परिवार में आय के सृजन में अपना योगदान देना चाहती थी क्योंकि अपने परम्परागत खेती से घर तो चल जा रहा था किन्तु जीवनशैली को और अधिक बेहतर बनाना अतिआवश्यक हो गया था। वर्ष 2020 में मेरे पंचायत में आत्मा, बक्सर अंर्तगत किसान चौपाल का आयोजन किया गया जिसमें आत्मा के कर्मियों द्वारा कृशि विभाग के विभिन्न प्रकार के संचालित योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। इसी क्रम में आत्मा बक्सर द्वारा कृशक हितार्थ समूह और महिला खाद्य सुरक्षा समूह के विशय पर जानकारी दी गई, जिससे मैं काफी प्रभावित हुई। वर्श 2020 मे पुनः आत्मा, राजपुर के द्वारा मेरे ग्राम में महिला खाद्य सुरक्षा समूह का गठन किया गया, जिसमें किसानों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने की बात कही गई। मैने भी इसमें सदस्यता ले ली। आगे चलकर नवम्बर 2021 में प्रखण्ड राजपुर के ई– किसान भवन के सभागार में आत्मा, बक्सर के द्वारा आयोजित म ारूम उत्पादन तकनीकी विशय पर दो दिवसीय प्र ाक्षण दिया गया। इस प्र ाक्षण में म ारूम के बारे में संपूर्ण जानकारी दिया गया तथा उसका प्रत्यक्षण कर के भी किसानों को दिखाया गया और फलतः एक म ारूम का बैग दिया गया वह म ारूम का बैग घर पर लाने पर कुछ ही दिनों बाद बहुत ही अच्छा उत्पादित हुआ। उत्पादन होने के बाद हमने इसका उपयोग खाने के तौर पर किया । जो कि काफी स्वादिश्ट था। कुछ दिनों के बाद आत्मा, राजपुर के द्वारा एकदिवसीय परिभ्रमण में श्री राजीव रंजन मैसर्स कोचस में म ारूम पर प्रयोगात्मक अध्ययन को दिखाने के लिए ले जाया गया। वहां पर हम समूह के महिला किसानों को म ारूम के बारे में और अत्यधिक जानकारी दी गई। म ारूम का उत्पादन इतना आसान और कम खर्चीला होने के कारण मैने इसको स्वयं करने का फैसला किया। वर्श 2022 में प्रखण्ड उद्यान कार्यालय, राजपुर के द्वारा मुझे म ारूम उत्पादन के लिए चुना गया। अक्टूबर माह में प्रखण्ड उद्यान कार्यालय, राजपुर के द्वारा व्यावसायिक स्तर पर म ारूम का उत्पादन करने के लिए पूरी लागत पर अनुदान दिया गया जिसमें कुल लागत 01 लाख 79 हजार के करीब आया और अनुदान के रूप में 89 हजार दिया गया।

एक हजार मशरूम बैग लगाने का लक्ष्य रखा गया जिसमें 700 मशरूम बैग लगाया जा चुका है और अभी लगाने का कार्य जारी है। मशरूम लगाने के डेढ़ महीने बाद प्रथम तुडाई पर लगभग 50 कि0ग्रा0 मशरूम प्राप्त हुआ। जिसमें से 40 कि0ग्रा0 मशरूम 120 रू0/ कि0ग्रा0 के दर से बाजार में बेचा गया जिससे मुझे 4800 रूपये का लाभ प्राप्त हुआ।

एक हजार मशरूम बैग लगाने का लक्ष्य रखा गया जिसमें 700 मशरूम बैग लगाया जा चुका है और अभी लगाने का कार्य जारी है। मशरूम लगाने के डेढ़ महीने बाद प्रथम तुडाई पर लगभग 50 कि0ग्रा0 मशरूम प्राप्त हुआ। जिसमें से 40 कि0ग्रा0 मशरूम 120 रू0 / कि0ग्रा0 के दर से बाजार में बेचा गया जिससे मुझे 4800 रूपये का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन 10 कि0ग्रा0 मशरूम की तुडाई होती है जिससे लगभग 1200.1400 रूपया मिल जाता है। अब तक कुल 70 हजार रू पये प्राप्त हुए। यह आमदनी का बहुत ही अच्छा श्रोत है। इससे मेरे परिवार की जीवनशैली में काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। मेरे परिवार का भी मुझे काफी सहायोग प्राप्त हुआ है। मै आभार व्यक्त करना चाहूगी आत्मा, राजपुर के कर्मियों का जिन्होनें मुझे समय–समय पर खाद्य सुरक्षा समूह के माध्यम से मुझे प्रोत्साहित करते हुए मशरूम की खेती करने के लिए आगे बढाया और मैं चाहूँगी की मेरे पंचायत / ग्राम के इच्छुक किसान आत्मा बक्सर के योजनाओं से लाभांवित होकर अपने जीवन ौली तथा अपने परिवार का अच्छे से भरण–पोशण करें।

68

मिश्रित खेती कर ने बनायी पहचान

परिचय

किसान का नाम–श्रीमती अंजू देवी

पंजीकरण संख्या–21111342000042

पिता/पति का नाम–श्री जयप्रकाश सिंह

पूरा पता– ग्राम–नया टोला बेलौरी, पोस्ट–रानीपतरा

थाना–रानीपतरा, प्रखण्ड–पूर्णियाँ पूर्व

जिला–पूर्णियाँ (बिहार)

दूरभाष/मोबाईल नम्बर–9304601902

खेती योग्य भूमि–1.5 हे०

सिंचित क्षेत्र (हे० में)–1.5 हे०

किसान का प्रकार– कोषाध्यक्ष, शिव शंकर सब्जी उत्पादक महिला खाद्य सुरक्षा समूह।

निबंधन संख्या– 18/2021–22

आज हम बात कर रहे है किसान श्रीमती अंजू देवी का जो ग्राम–नया टोला, बेलौरी, प्रखण्ड–पूर्णियाँ पूर्व की निवासी है। इनके परिवार में कुल 6 सदस्य है पति श्री जय प्रकाश सिंह तथा 2 पुत्र एवं 2 पुत्री है और चारों बच्चों को ये पढ़ा रहे हैं। इस सोच से कि जितनी मेहनत इन्हें करना पड़ा अपने जीवन में इनके बच्चों को न करना पड़े। इनके परिवार का पालन पोषण तथा ि ाक्षण सब कृषि पे आश्रित था और कृषि में उतना आय न हो पाने के कारण परिवार का पालन पोषण बड़ी कठिनाई से होता था उस वक्त उनकों लगा और उन्होंने अपने पति से कृषि छोड़ बाहर जाकर कोई और कार्य करने को कहा जिससे आय हो सके और परिवार का पोषण तथा बच्चों की ि ाक्षा दोनों सुचारू रूप से चल सके। उस समय इनकी स्थिति बहुत खराब थी और स्वास्थ्य भी खराब रहता था। खेती योग्य भूमि होते हुए भी नई तकनीकी के अभाव में खेती ठीक से नहीं हो पा रही थी और खेती छोड़ने तक का निर्णय ले लिया था। पहले यह पारम्परिक विधि से केवल धान, गेहूँ तथा मक्का की खेती करते थे तकनीकी जानकारी के अभाव में इन फसलों से उतना फायदा नहीं होता था। एक बार इनके दरवाजे पर आत्मा के कर्मी ठज्ड तथा ।ज्ड द्वारा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें इन्होंने भाग लिया। बैठक में मिट्टी जाँच, नयी–नयी तकनीकों से धान, मक्का तथा सब्जी की खेती के बारे में बताया गया तथा इन्हें प ुपालन में कुछ गाय के नस्लों, मिश्रित खेती तथा नए कृषि तकनीकों को अपनाकर ये अपने फसलों का उत्पादन बढ़ा सकती है और अन्ततः अपना आय बढ़ा सकती है। इन्हें यह भी बताया गया कि आत्मा द्वारा किसानों को परिभ्रमण तथा प्र ि ाक्षण के लिए जिला के अन्दर, राज्य के अन्दर तथा राज्य से बाहर भेजा जाता है। इनकी इच्छा शक्ति को देखते हुए इन्हें बीज उत्पादन विषय पर बिहार कृषि वि वविद्यालय, सबौर, भागलपुर तथा म ारूम की खेती पर प्र ि ाक्षण हेतु श्रीनायक नामक म ारूम उत्पादन यूनिट भेजा गया और प्र ि ाक्षण उपरान्त म ारूम किट दिया गया, जिसे इन्होंने अपने घर पर उगाया और बेचा। इन्होंने नियमित रूप से खरीफ तथा रबी

कर्म ाला में भाग लेना शुरू किया तथा किसान वैज्ञानिक मिलन में उपस्थित होकर अपने समस्याओं के बारे में वैज्ञानिकों से बताया और बताये हुए तकनीकों को अपनाना शुरू किया। इनके बाद आत्मा पूर्णियाँ द्वारा साल 2016–17 में सब्जी उत्पादन विषय पर किसान पाठ ाला दिया गया जिसके संचालन इनके द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। परिभ्रमण के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र एवं ठै।ब पूर्णियाँ भेजा गया, रूची दिखाते हुए वैज्ञानिकों से मिलकर मिश्रित खेती के बारे में जाना और ये समझा कि अगर मिश्रित खेती बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक तकनीक से किया जाए तो इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सकती है। इसके बाद इन्होंने मिश्रित खेती शुरू की और कृषि में आए नए तकनीकी जैसे– लाईन सोईंग विधि से धान की खेती, कीट व्याधि नियंत्रण के लिए ऐलो स्टीक ट्रेप्स तथा फेरोमोन ट्रेप्स का प्रयोग सब्जी की खेती, मक्का, धनिया इत्यादि में प्रयोग करना शुरू किया। साथ–साथ प ुपालन ;भ्वसेजमपद थ्तपमेपंदद्ध शुरू किया आज वे अपने परिवार, बच्चों का पालन पोषण तथा ि ाक्षण अच्छे तरह से कर रहे है।

फसलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व/घटक – आत्मा से सहयोग।

व्यक्तिगत प्रयासः– प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक तथा सहायक तकनीकी प्रबंधक, पूर्णियाँ पूर्व द्वारा आत्मा पुरूस्कार योजना के बारे में बतलाया गया जिससे उनमें प्रतियोगिता का भाव उत्पन्न हुआ और अच्छा उत्पादन करने का प्रयास किया।

स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव :–

(1) सब्जी उत्पादन विषय पर आत्मा द्वारा किसान पाठ ाला का संचालन किया।

(2) धान की खेती में कीट व्याधि नियंत्रण पर किसान पाठ ाला का संचालन किया।

सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/प्रशस्ति–पत्र :–

2020–21 में आत्मा पुरस्कार योजना अन्तर्गत कृषि प्रक्षेत्र मक्का में प्रखण्ड स्तर पर सार्वाधिक उत्पादन के लिए इनके पति को किसान श्री पुरस्कार एवं प्र ास्ति–पत्र प्रदान किया गया।

पुरस्कार/प्रशस्ति–पत्र :–

2020–21 में आत्मा पुरस्कार योजना अन्तर्गत कृषि प्रक्षेत्र मक्का में प्रखण्ड स्तर पर सार्वाधिक उत्पादन के लिए इनके पति को किसान श्री पुरस्कार एवं प्र ास्ति–पत्र प्रदान किया गया।

क्र. सं.	विवरण	अपनाने के पूर्व का विवरण			अपनाने के बाद का विवरण			
		प्रक्षेत्र–1	प्रक्षेत्र–2	कुल	प्रक्षेत्र–1	प्रक्षेत्र–2	प्रक्षेत्र–3	कुल
1	फसल/क्षेत्र/कार्य का नाम	गुटराज मक्का/धान	आलु		अराईज 6444	कुफरी पोखराज	पशुपालन	
2	फसल मौसम में फसल/उत्पाद की मात्रा (वि0 में)	40	150		55	200	2	
3	उत्पाद का बिक्री मूल्य दर (रू./वि0)	1450	105000		1575	650	40 लीटर	
4	फसल मौसम में कुल लागत मूल्य	28000	73000		30000	75000	80000	
5	उपादन का मूल्य (बीज, खाद्य, कीटनाशी, जुताई–बुआई, सिंचाई, कटाई, दौनी एवं अन्य)	20000	40000		22000	40000	–	
6	मजदूर खर्च (रू0 में)	4000	15000		4000	15000	–	
7	अन्य लागत खर्च (रू0 में)	4000	10000		4000	10000	–	
8	कुल लागत खर्च (रू0 में)	28000	75000		30000	75000	80000	
9	शुद्ध आय/बचत (रू0 में)	30000	30000	60000	56625	55000	40000	151625

69 समेकित कृषि प्रणाली सफलता की नई राह

परिचय

नाम–रामनरेश कुँवर
पिता– भज्जुराम कुँवर,
ग्राम पोस्ट मनिअप्पा, थाना प्रखंड मटिहानी,
जिला– बेगूसराय

रामनरेश कुँवर पिता– भज्जुराम कुँवर, ग्राम पोस्ट मनिअप्पा थानाप्रखंड मटिहानी, जिला– बेगूसराय वर्ष 1980 में पुलिस सेवा में बहाल हुए एवं वर्ष 2014 में पुलिस उपाध्यक्ष झारखंड के पद से सेवा निवृत हुए हैं। पुलिस विभाग में इनके उत्कृष्ट सेवा अदम साहस कार्य हेतु अनेकों पुरष्कार मिले हैं। जिसमें मुख्य तौर पर मुख्यमंत्री झारखंड सरकार द्वारा मुख्यमंत्री वीरता पदक तथा राष्ट्रपति भारत सरकार द्वारा 2010 में राष्ट्रपति वीरता पदक से सम्मानित किया गया। सेवा निवृति के पश्चात अन्य कार्यों का सम्पादन कर कृषि, बागवानी एवं मछली पालन में कार्य करने की प्रेरणा डी०डी नेशनल किसान चौनल पर कृषि एवं बागवानी के कार्यकर्मों को देखने से मिली। आत्मा बेगूसराय के संपर्क में आने के पश्चात श्री रामनरेश कुँवर ने आत्मा बेगूसराय के विभिन्न कार्यक्रमों में रूचि दिखाई तथा किसान परिभ्रमण किसान गोष्ठी के कार्यक्रम में भाग लिया। कृषि के अनेक कार्यक्रमों से जानकारी प्राप्त कर कृषि कार्य के प्रति जागरूकता तथा रूचि दिखाई। कृषि की विभिन्न गतिविधियों जैसे– पशुपालन, सब्जी उत्पादन, मछली पालन फल उत्पादन में इनकी विशेष अभिरूचि है। वर्ष 2019 में लगभग सात एकड़ की जमीन में कटीले तार से घेरा बंदी कर नील गाय एवं जंगली जानवर से बचाव सुनिश्चिति कर बागवानी में नगदी एवं नए किस्म के पौधों का चयन कर एक एकड़ में ऐपल बेर एक एकड में कागजी नीबू, संतरा, आवंला एवं एक एकड़ में ड्रेगन फुट का पौधा लगाए तथा उनकी देखभाल में निरंतर लगे रहते हैं। उपरोक्त पौधों का रोपन अक्टूबर 2019 में किया गया।

सुनिश्चित देखभाल के कारण वर्ष 2020 के नवम्बर, दिसम्बर में ऐपल बेर में फल देना प्रारम्भ किया और जनवनी 2021 में मात्र एक वर्ष पश्चात 30 विपी० बेर की बिक्री हुई वर्ष–2020 में जिला उद्यान कार्यालय, बेगूसराय बिहार बागवानी विभाग के सौजन्य से 1 हेक्टे0 में टिश्यू कल्चर 69 प्रभेद का केला का पौधा उपलब्ध कराया गया। जिसका रोपन किया गया। साथ ही बिहार बागवानी मिशन योजना अन्तर्गत प्रखंड उद्यान पदाधिकारी के सहयोग से प्रधानमंत्री कृषि सिचाई योजना के तहत 5 एकड़ जमीन में टपक सिंचाई विधि का प्रयोग किया गया है। उक्त प्रबंधन के पश्चात केला में सिचाई आसान हो गई। समय, मजदूर एवं फर्टिलाइजर की बचत हुई तथा समुचित सिचाई की वजह से केला का फसल अच्छी तरह विकसित हुई है। अब केला के पौधों में फल आने लगा है। डेढ वर्ष के पश्चात ड्रेगन फुट के पौधों में भी फल लगने शुरू हो गए हैं। ड्रेगन फ्रुट के फल काफी स्वादिष्ट मिठासयुक्त तथा गुणवत्ता पूर्ण होते हैं।

वर्ष 2021 में आत्मा एवं कृषि विभाग के सौजन्य से समेकित कृषि प्रणाली की ओर कृषि विभाग के द्वारा जल जीवन हरियाली योजना अन्तर्गत तालाब का निमार्ण किया गया। अब मछली एवं बत्तख पालन हेतु तालाब बनकर तैयार है। इस वर्ष मछली एवं बत्तख पालन का कार्य इनके द्वारा शुरू कर दिया गया है। समय–समय पर आत्मा बेगूसराय कर्मी के द्वारा नई तकनीक की जानकारी दी जाती है।

इनके द्वारा कृषि के क्षेत्र में किये गए उत्कृष्ट कार्यों को देखने के लिए किसान परिभ्रमण कार्य क्रम के अन्तर्गत नवादा जिला से किसान आये थे तथा इनके कार्य से काफी प्रेरित हो अपने जिला में भी समेकित कृषि प्राणली को अपनाने की जागरूकता फैला रहें है। आत्मा, बेगूसराय के द्वारा इनके कार्यों को लोगों तक पहुंच. ाने हेतु किसान गोष्ठी का आयोजन पहले ही किया जा चुका है। इस प्रकार रामनरेश कुँवर अपने कृषि के प्रति रूचि, लगन एवं कड़ी मेहनत से नई तकनीकी समेकित कृषि प्रणाली के अन्तर्गत खेती कर अपनी आय बढ़ाई तथा स्वालंबी हो दुसरे किसानों के लिए एक प्रेरणा के स्रोतः बन गये हैं। कृषि के बारे में नकारात्मक सोच रखने वाले लोगों के लिए रामनरेश जी की सफलता ये समझाने के लिए ये काफी है कि कृषि क्षेत्र में नई तकनीक, बेहतर योजना एवं कड़ी मेहनत से मिट्टी से सोना उगाया जा सकता है।

प्रेमचंद कर रहे फूलगोभी की बीज वैज्ञानिक तरीके से खेती

परिचय

नाम– प्रेमचन्द्र मंडल
ग्राम खैरा, प्रखण्ड समेली
जिला–कटिहार
मोबाइल –

मेमचन्द मंडल ग्राम एवं हार का स्थायी निवासी हूँ। मेरा से ही खेती का जिज्ञासा रहा है। मुझे खेती करने का बहुत शौक था। म साल मुम्बई में रहे। हमने यह सम किया कि अब मुम्बई में नौकरी नहीं करना है ती करना है। वहा से 2007 में ही शुरू किया। समझ में नहीं आता था किसी तरह पूछताछ कर खेती करते थे उससे मुझे मुनाफा नहीं होता था तब मेरे गांव में किसान की का उपाधि का खिताब मिला वो व्यक्ति है बिनोद कुमार किसान श्री जो मेरे गांव के है तब हम उससे सम्पर्क किया एक दो साल के बाद विनोद जी ने मुझे एक किसान डायरी दिये जो कि आत्मा से मिला था। वर्ष 2008 व में डायरी के माध्यम से सब्जी की खेती शुरू किया। जिसमें की फूलगोभी की बीज वैज्ञानिक तरीके से नर्सरी तैयार किया तथा खेत में लगाया फसल बहुत अच्छा हुआ मात्र 24 डिसमिल खेत में 32,000ध– रूपया मुनाफा मिला। फिर उसी जमीन में टमाटर, बैगन की खेती बारी बारी से किया जिसमें मुझे 25,000/– रुपया का मुनाफा हुआ । किसान श्री की दिखाना बहुत प्रसन्न हुए तब उन्होंने हमको आत्मा, कटिहार के उपनिदेशक श्री शशिकात झाजी द्वारा बकरी पालन के लिए फतेहपुर (मथुरा) बहुत बड़ा बकरी अनुसंधान है हमको भेजा गया कि दस दिन का ट्रेनिंग करवाकर प्रमाण पत्र के साथ वापस घर आया। अभी हमलैक बंगाल बकरी का पालन कर रहे है जिससे मुझे वर्ष में 60,000/– रुपया का मुनाफा मिल रहा है। आत्मा कार्यालय, कटिहार द्वारा मुझे एक से एक नये नये तकनीक की जानकारी मिलती गई और मैं इसका अनुपालन कर आगे बढ़ता गया । आज हम आत्मा से जुड़कर कृषि से अपने परिवार का भरण पोषण अच्छी तरह कर रहे है तथा खुशहाल है। आज में समूह से जुड़ा हुआ है जिसका नाम है मा भगवती कृषक हित रागृह जो बहुत अच्छी स्थिति में चल रहा है। मेरा संदेश है सारे बिहार वासियों को आत्मा से जुड़े अपने अपने गांव में समूह का गठन करें। अपना एवं अपने समूह के सभी सदस्यों के आर्थिक स्थिति सुदृढ एवं सबल बनायें।

70 मशरूम उत्पादन से अरूणी देवी कर रही अच्छी आमदनी

परिचय

नाम : श्रीमति अरूणी देवी
पताः शास्त्री कॉलनी नगर परिषद, जमुई, वार्ड 0–07
मोबाईल न
समूह का नाम : शिव समूह

श्रीमति अरूणी देवी पति स्व० कैलाश मंडल ग्राम शास्त्री कॉलनी नगर परिषद जमुई, वार्ड न0 07 प्रखंड–जमुई जिला– जमुई की निवासी है गरीबी के कारण ये मात्र पंचम वर्ग तक ही पढ़ाई कर पाई। इनके पति के देहान्त होने के उपरान्त घर की सारी जिम्मेवारी इनके कन्धों पर आ गई। लड़की की शादि करने के उपरान्त उनकी आर्थिक स्थिती बहुत ही दयनीय हो गई। इनके गुजर–बसर के लिए मात्र 01 हेक्टेयर ही जमीन है। इस जमीन पर कठिन मेहनत कर किसी प्रकार से अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही थी। फिर इन्होंने सोचा कि कुछ और भी कार्य कर आप को बढ़ाया जाए। इसी दरमियान में कृषि विभाग के द्वारा लगाए गये मेला का भ्रमण वर्ष 2012 में किया। जिसमें इन्होंने बहुत से महिलाओं को स्टॉल लगाए हुए देखा और उनसे जानकारी लेकर मंच पर बैठे उप परियोजना निर्देशक, आत्मा से मिलकर बातचीत की। उप परियोजना निर्देशक द्वारा इन्हें समूह के महत्व एवं समूह बनाकर कार्य करने की प्रेरणा दी गई। जिसके बाद इन्होंने अपने मुहल्ले में अन्य महिलाओं से सम्पर्क कर 15 महिलाओं का एक समूह बनाया गया। जिसका संबन इन्होंने आत्मा कार्यालय से कराया। आत्मा द्वारा इन्हें मशरूम की खेती के लिए प्रेरित किया गया तथा मशरूम उत्पादन करने हेतु प्रशिक्षण राजगीर, नालन्दा में कराया गया। प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्होंने डिगरी मशरूम उत्पादन प्रारंभ किया। मशरूम उत्पादन से इन्हें कुछ आय होने लगा। तब इन्होंने मशरूम उत्पान में बढ़ोतरी करने की ठान ली। इनके द्वारा अपने समूह की सभी महिलाओं को मशरूम की खेती करने हेतु प्रेरित किया गया। मशरूम उत्पादन उपरान्त स्थानीय बाजार में बिक्री कर अत्यधिक आमदनी होने लगी। प्रत्येक माह में मशरूम उत्पादन द्वारा इनकी आमदनी 15–20 हजार रुपये होने लगी। मशरूम उत्पादन द्वारा होने वाली आमदनी से इनकी आर्थिक सलत सुदृढ़ होने लगी। घर बनाने हेतु बैंक से ली गई ऋण की राशि को भी धीरे–धीरे घुक्ता कर दिया। इनके द्वारा किए गए कार्यों से प्रेरित होकर मोहल्ले की अन्य महिलाएं भी इनसे जुडी एवं सफलता का राज पुछा तो इन्होंने उन्हें समूह बनाकर कार्य करने की प्रेरणा दी। इनके द्वारा पाँच समूहों का निर्माण कर आत्मा से संबंधन कराया गया है जिन्हें ये मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण भी घर–घर जाकर देती है। अब ये अपने परिवार का बड़ी सहजता से भरण–पोषण कर रही हैं।

मधुमक्खी पालन करना मेरा सपना

परिचय

नाम–सिओ कुमार
पिता–महेन्द्र यादव
ग्राम– कुर्मदान टोला पंचायत सिटानाद, प्रखण्ड अख्तियारपुर
मोबाईल–9534791965

मैं सिओ कुमार पिता–महेन्द्र यादव ग्राम–कुर्मदान टोला पंचायत सिटानादप्रखण्ड अख्तियारपुर का रहने वाला हूँ। में मजदूरी का कार्य करता था रोजगार के लिए पिछले 10 वर्ष से पंजाब, हरियाना प्रांत चला जाया करता था। अन्य प्रदेशों में जाकर मैं कृषक मजदूरी का कार्य किया करता था। इसी क्रम में मुझे पंजाब में पिछले 03 वर्षों से मधुमक्खी फारम में मजदूरी का कार्य मिला ह मुझको मधुगधी के बक्से का देखभाल एवं लाने ले जाने का कार्य मिला। तीन वर्षों तक कार्य करते हुए मैं इस व्यवसाय के लाभ से अवगत हुआ। मगर स्वयं का मधुमक्खी पालन करना मेरा सपना ही था। वर्ष 2012 में जब मैं अपने घर वापस आया तो मुझे आत्मा एवं उद्यान विभाग के कार्य एवं प्रशिक्षण की जानकारी मिली। मैंने आत्मा कार्यालय से मिलकर शंकर जी कृषक हितार्थ समूह का गठन गाँव के अन्य नवयुवकों के साथ मिलकर किया समूह का आत्मा सहरसा द्वारा क्षमता विकास का कार्यक्रम हुआ। आत्मा, सहरसा द्वारा उस ग्राम में इच्छुक नवयुवकों को देखते हुए मधुमक्खी पालन पर एक कृषक

पावशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मधुमक्खी पालन के विभिन्न कार्यों की जानक. री रख–रखा बीमारी मौसमों एवं विभिन्न फूलों द्वारा मधु उत्पादन की जानकारी सह प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। कृषक के सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र दिया गया। इस पाठशाला से सभी सदस्य काफी लाभानियत एवं प्रभावित हुए तथा इस उद्योग को अपनाकर आर्थिक सुधार करने का इरादा बनाया।
जिला उद्यान विभाग द्वारा मुझे एवं अन्य प्रशिक्षित नवयुवकों को 30–30 मधुमक्खी पालन वक्ता एवं मधुनिष्कासन 90: अनुदानित दर पर प्राप्त हुआ। अब मैं एवं अन्य कृषकगण अपना मधुमक्खीपालन कर रहा हूँ एवं अन्य प्रदेशों में जाकर रोजगार प्राप्त करने की जगह स्वयं अपने क्षेत्र में अपना कार्य कर इज्जत की जिंदगी जी रहा हूँ। इस रोजगार से मुझे एवं अन्य साथियों को अच्छी आमदनी भी हो रही है। अब मुझे देखकर अन्य युवक भी इस कार्य को करने के लिए उत्सुक है।

71 समेकित कृषि प्रणाली को अपनाया

परिचय

नाम– पिताषु कुमार
पिता नागेश्वर मिश्रा
प्रखंड– बढ़ी ऐघु, जिला– बेगूसराय

में पिताषु कुमार पिता नागेश्वर मिश्रा बढ़ी ऐघु बेगूसराय प्रखंड का रहने वाला हूँ। मेरी उम्र 25 साल है। मैंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा बेगूसराय से पूरी करने के बाद उच्च विक्षा हेतु पंजाब चला गया। यहां गुरु नानक देव विश्वविद्यालय से मैंने खाद्य प्रसंस्करण से बी टेक किया पढ़ाई पूरी करने के बाद मैंने 6 महीने बिस्किट फैक्ट्री में नौकरी किया पर में कुछ अलग करना चाहता था मे उहापोह में था इसी बीच में पर आ गया। बेगूसराय आकर जब मैंने अपने पिता को परंपरागत तरीके से खेती करते देखा तो मैंने नई तकनीकी से खेती करने का निर्णय लिया। जब मैंने घर वाले को बताया की में खेती करना चाहता हूँ तो उन्होंने साफ मना कर दिया की इतनी पढ़ाई करके खेती करोगे क्योंकि हमारे समाज की एक सोच है कि खेती पढ़े लिखे लोगो के लिए नहीं है। लेकिन में अपनी बात पर अडिग रहा कि मुझे एक मौका दिया जाए अगर में असफल रहा तो जो मुझे आप कहेंगे में दो करूंगा। इसी क्रम में में मेरे पड़ोस के किसान सुनील कुमार सिंह से मिला जो आत्मा योजना अंतर्गत किसान पाठपाला कार्यक्रम में संचालक के रूप में कार्य कर रहे थे। मैं पाठपाला में गया और आत्मा विभाग के अधिकारियों से मिला मैने उन्हें अपने विचारों से अवगत कराया मुझे उन्होंने काफी प्रोत्साहित किया और मेरे यहां आत्मा विभाग के द्वारा कृषक हित बनाया गया जिसका नाम मा लक्ष्मी कृषक हित समूह रखा गया तब समूह के अंतर्गत समेकित कृषि प्रणाली का कार्य पुरु किया गया। प्रणाली के अन्तर्गतमैने सर्वप्रथम फार्म हाउस का निर्माण किया, जिसके अंतर्गत में गाय का पालन, बकरी पालन मछली पालन मषरूम उत्पादन एवं सब्जि की खेती और देशी मुर्गे का पालन कर रहा हूँ।15 एकड़ में समेकित कृषि का कार्य कर रहा हूँ। इस क्षेत्र में मेरे कार्य रूचि को देखते हुए मुझे आत्मा कार्यालय, कृषि विभाग, उद्यान विभाग ००० खोदावदपुर ने मेरा पूरा मदद किया समेकित कृषि मे संसाधन का भरपुर उपयोग होना है मैने तालाब के उपर पंड बनाकर मुर्गी पालन कर रहा हूँ। मछलियों के लिए भुर्गों और बकरी का मीट अमृत समान है। इस तरह से प्रयोग करने से मछलियों के भोजन में होने वाले वा में 30 प्रतिषत की कमी आती है। मगरूम के कम्पोष्ट गोदर आदि को मैं खाद के रूप में प्रयोग करता हूँ। जिसके कारण रासायनिक खाद पर मेरी निर्भरता बहुत कम हो गयी है। मेरी सलाना लाभ 3 लाख रुपये है। मे अभी नयी–नयी तकनीकी का प्रयोग कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि मैं अपनी मेहनत और आत्मा विभाग के सहयोग से नित नये सफलता की ओर बढ़ता जाऊंगा।

मशरूम उत्पादन कर रहे रामशरण

परिचय

मैं रामशरण चौधरी,
पिता– स्व० रघुनन्दन चौधरी,
ग्राम– नन्दगोला, पो०– पत्थरघट्टा, पंचायत– अंतीचक, प्रखंड कहलगाँव, जिला– भागलपुर

मैं रामशरण चौधरी, पिता– स्व० रघुनन्दन चौधरी, ग्राम– नन्दगोला, पो०– पत्थरघट्टा, पंचायत– अंतीचक, प्रखंड कहलगाँव, जिला– भागलपुर का स्थायी निवासी हूँ। मैं आत्मा, भागलपुर से जुड़ने से पहले मान्यता प्राप्त कॉलेज में व्याख्याता के पद पर अवैतनिक काम कर रहा था, परन्तु उससे मेरा और मेरे परिवार का भरण–पोषण नहीं हो पा रहा था। मेरे पिताजी एक किसान थे, मैं अपने कॉलेज को छोड़कर पिताजी के घर आ गया और मशरूम की खेती करने लगा। मशरूम बेचने में जब परेशानी होने लगी तो 2010–11 में एक दिन प्रखंड के ही विषय वस्तु विशेषज्ञ के माध्यम से मुझे आत्मा, भागलपुर के संबंध में जानकारी प्राप्त हुई इससे लाभ के बारे में जानकारी दी गई। आत्मा, भागलपुर द्वारा मशरूम उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए मुझे बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर तथा निदेशालय, मशरूम शोध संस्थान, सोलन द्वारा कई तरह के तकनीकी ज्ञान की जानकारी मिली। मुझे प्रशिक्षण कराया गया, जिससे कि मुझे वैज्ञानिक तरीके से खेती करने, प्रबंधन तथा रख–रखाव, बाजार के बारे में वृहत जानकारी प्राप्त हुआ, जिस कारण मैं अच्छी तरह से मशरूम की खेती एवं किसानों को प्रशिक्षण का विशेषज्ञ बन गया। मैं आज बटन, ऑइस्टर तथा मिल्की मशरूम का उत्पादन करने में सक्षम हूँ तथा इसका प्रशिक्षण भी देता हूँ। मेरे जीवन में आत्मा भागलपुर के कारण बहुत बड़ा बदलाव आया मेरी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। आज मुझे "मशरूम मैनष के नाम से भी जाना जाता है। यह मान सम्मान और सम्पन्नता मुझे आत्मा भागलपुर की वजह से मिला है।

72 स्ट्रॉबेरी की खेती कर रहे रविशंकर

परिचय

नाम रवि शंकर
पिता का नाम : श्री उमेश शर्मा
माता का नाम श्रीमती शकुन्तला देवी
पता ग्राम भवनी टोला, पंचायत का नाम किता चौहतर मध्य, प्रखण्ड मनेर
थाना– मनेर, पिन कोड– 801108, जिला पटना, राज्य बिहार
किसान का दूरभाष संख्या –7352900333
किसान के पास खेती योग्य भूमि रू–5 एकड़
सिंचित क्षेत्र (एकड़ में)
अभिधित क्षेत्र (एकड़ में)
किसान का प्रकार
– 4 एकड़
–1 एकड़
– कृषि ६ कृषक

कर खेती Strawberry बन गया मेरा Success Story"

स्ट्रॉबेरी की खेती कर किसान बन रहे खुशहाल

जहाँ कभी नहीं सुनी थी नाम स्ट्रॉबेरी, वहाँ चख रहे है लोग स्वादिष्ट स्ट्रॉबेरी

मैं रवि शंकर ग्राम भवानी टोला प्रखण्ड भनेर जिला– पटना का स्थायी निवासी हूँ मे सन् 2011 में पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन से ग्रेजुएशन किया है। इसके बाद मैं लोक सेवा आयोग (च्नइसपब ैमतअपबम ब्वउउपेपवद) का तैयारी कर रहा हूँ। पढ़ाई के दौरान कोरोना की वजह से मैं अपनी तैयारी गाँव में रहकर करने को सोचा गाँव में मैंने देखा की मेरे यहां परमपरागत तरीके से खेती होती है, जिसमें सिर्फ घर भर खाने के लिए ही अनाज उपज पाता था। कभी घटा तो कभी मुनाफा का कम लगा रहता था एवं जंगली सुअर से भी मैं काफी परेशान था। फिर एक दिन प्रखण्ड कृषि कार्यालय भनेर में किसी कार्य से गया और जहाँ में है मिला और बातों बातों में स्ट्रॉबेरी की खेती का सुझाव मुझे मिला में इस बात को घर पर बताया लेकिन लागत ज्यादा एवं पहली बार इसकी खेती से घर के लोग हिचक रहे थे। फिर मैंने सोचा की नहीं कुछ अलग एवं नया करना है और इसकी शुरूआत कर दी।

11. सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व पटक व आत्मा से सहयोग किए जाने वाले कार्य के संबंध में शुरू से अंत तक पूरी जानकारी उत्पाद कब और कहाँ बिकते है तथा तकनीकी जानकारी जिससे उत्पाद की गुणवत्ता अच्छे हो सके एवं वित्तीय सहायता कहाँ से प्राप्त करे इसकी पूर्ण जानकारी।

आज मैंने 10 कढ़ा के खेत में स्ट्रॉबेरी मल्च बेड तरीके से आत्मा के सहयोग से स्ट्रॉबेरी की खेती की पहली शुरूआत अपने प्रखण्ड मनेर में किया खेती की शुरुआत करने से पहले ऑनलाईन ट्रेनिंग किया जिससे मुझे खेती के विषय में जानकारी मिला। जुलाई के महीने में आत्मा के कर्मी से मिला और मिलकर इस नई तकनीक से खेती की विधि के बारे में जाना। कोरोना की वजह से शुरुआती दिनों में बहुत परेशानी भी हुई लेकिन अपनी इच्छा शक्ति को बनाये रखा और अपनी कोशिश जारी रखा स्ट्रॉबेरी के पौधा को बाहर से मँगवाये क्योंकि स्ट्रॉबेरी के पधि को खुद तैयार करना मुश्किल होता है। पौधा मंगवाने में भी जीको सहयोग रही, क्योंकि शुरूआती दौड़ में जानकारी की कमी के कारण मुझे स्ट्रॉबेरी की खेती की ज्यादा जानकारी नहीं थी। फिर मैंने दो प्रभेद विनटर डाउन (पदजमत क्वूद) और नबीला (छंइपसं) को अपने खेत में लगाया। खेत को पहले तैयार किया चूकि स्ट्रॉबेरी की खेती (त्पेमक इमक लेजमउ) और डनसबी से तैयार किया जाता है। उसके बाद छोटे–छोटे पौधे को लगाया। कुल पौधा 5200 पौधे जिसमें विनंटर डाउन 3300 एवं नवीला 1900 थी। अक्टूबर की अंतिम सप्ताह में मैंने पौधा का अपने खेत में लगाया और फुल जनवरी में लगभग सारे पौधे में आ गए एवं फल जनवरी में लगने शुरू हो गए। स्ट्रॉबेरी की खेती में समय–समय पर खाद्य एवं खरपतवार की निकौनी करना बहुत आवश्यक होता है। इसका भी ध्यान मैंने रखा एवं अंत में फसल अच्छी हुई पंकिंग कर स्ट्रॉबेरी को बाजार में मिला।

स्ट्रॉबेरी फल होती है. जिसमें गुण बहुत होते है अपजंउपदे से भरपुर होने वजह इसमें मुनाफा ज्यादा होता है। टोला इसके पहले लोग नाम भी नहीं जानते लेकिन आज स्ट्रॉबेरी का स्वाद भी जानते है जिससे आज अपने प्रखंड में परच. लित हुआ एवं अन्य नवयुवक किसान भी इसकी खेती के विषय में मुझसे जानकारी लेते हैं इस खेती करने इच्छा जताते हैं।

अपनी और इस साल लगभग में खेती करूगाँ नई तकनीक को अपना कर खेती करने का अनुभव काफी सुखद रहा एवं लोगों बीच सम्मान प्राप्त हुए। इस क्षेत्र में और अच्छा करना चाहता हूँ और लक्ष्य प्राप्ति में इन दिनों आत्मा पटना सहयोग प्रदान रहा इस में प्रखंड तकनीकी प्रबंधक श्रीमती रूपा कुमारी एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक श्री अश्वीनी कुमार और श्रीमती सिन्हा के द्वारा दी जानकारी सुझाव से मैं प्रेरणादायक कृषक के रूप में अपने प्रखण्ड सफल हुआ हूँ। आत्मा आयोजित अंदर परिभ्रमण में स्ट्रॉबेरी मल्व बेड से खेती करने के तरीकों किसानों के बीच जागरूक हेतु आमंत्रण दिये ताकी अपने किसानों के बीच साझा करू मेरे को देखने आत्मा पटना के साथ कुछ अन्य वैज्ञानिक सदस्य मेरी स्ट्रॉबेरी खेत में आए और सुझाव साथ जानकारी दी। इससे मेरा हौसला और बढ़ गया। कुल लागत 91000ध्– लगा एवं 2100,000ध्– हुआ। इस कार्य देख कर अब मेरे पिताजी श्री उमेश कुमार शर्मा खुश रहते हैं एवं खेती सहयोग करते हैं. आगे भी मैं अपनी कोशिश जारी रखू इसका समर्थन करते है।

73 सुधीर ने स्ट्रॉबेरी की खेती कर बना आत्मनिर्भर

बांका जिला के लिए अभिनव प्रयोग।

स्ट्रॉबेरी की खेती बढ़ी आमदनी, मिली प्रतिष्ठा।

पॉच कट्ठे से 90 हजार की आमदनी।

स्ट्रॉबेरी के साथ बिदेशी सब्जियों के उत्पादन की ओर बढ़ी रूझान।

बांका जिले का वनबरसा गॉव; जो फुल्लीडुमर प्रखण्ड के खेसर पंचायत में आता है। यहाँ के एक किसान श्री सुधीर रजक जो पुराने ढर्रे पर खेती करते थे, खेती में लागत की अपेक्षा आमदनी नदारत थी। इसके कारण परिवार का भरण–पोषण मुश्किल था और समाज में प्रतिष्ठा नदारत। भ्रमण के दौरान सिलीगुड़ी में स्ट्रॉबेरी की खेती देखकर मन में जागृत हुआ कि स्ट्रॉबेरी और विदेशी सब्जियों की खेती प्रयोग किया जाय, खैर मन में कुछ करने की तमन्ना हो और लगन हो तो निश्चित तौर पर सफलता हासिल होती है।

श्री सुधीर रजक ने 5 कट्ठे में स्ट्रॉबेरी की खेती की और 90 हजार शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। यह इनके लिए सफलता का प्रथम चरण था, मन उत्साहित हुआ आगे और कुछ करने की सोच से इन्होंने रेड कैबेज और ब्रोकली की खेती की इसमें भी सफल रहे। स्ट्रॉबेरी की खेती बांका जिले के लिए काफी नया था, जिसके लिए बाजार मिलना इनके लिए चुनौती थी, क्योंकि उत्पादन के बाद जब बाजार व्यवस्था सुनिश्चत हो तब सफलता और नजदीक आ जाती है। सुधीर रजक का कहना है कि कृषि विभाग, आत्मा एवं उद्यान विभाग हमारे साथ हैं, तो उनके सहयोग से स्ट्रॉबेरी की खेती को बांका जिले में एक नया मुकाम मिलेगा। किसानों को प्रशिक्षणों के माध्यम से समझाने में सफल हो रहे हैं, दूसरे किसान रूचि ले रहे हैं। जिसका परिणाम होगा कि आने वाले समय में स्ट्रॉबेरी की खेती कस रकवा बढ़ेगा, किसानों की आमदनी और समाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अब सुधीर रजक अधिक से अधिक क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी की खेती करना चाहते हैं जिससे आर्थिक आजादी का यह जरिया बन सके और समाज में प्रतिष्ठा। आज सुधीर रजक उत्साहित है यह निश्चित तौर पर आने वाले समय के लिए शुभ संकेत है।

परिचय

नाम – श्री सुधीर रजक
पिता – अमीर रजक
पता – ग्राम– वनबरसा, पंचायत– खेसर
प्रखंड– फुल्लीडूमर, जिला– बांका
मो0– 8757317592

74 आचार तैयार कर गौतम ने बनाया अलग पहचान

परिचय

नाम -**गौतम कुमार**
पता- ग्रामः टिकठी, पो.- परसियॉ, जिला- भोजपुर
मो. : 620067001
आदर्श कृषक हित समूह, टिकठी
(रजि0नं0-46/1901/2020-21)

श्री विधी से धान प्रत्यक्षण, किसान पाठशाला का संचालन, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना अर्न्तगत लाभार्थी। श्री विधी से धान प्रत्यक्षण, हाटिकल्चर एक्टिवीटी, वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण, एवं प्रयोग। प्रशिक्षणोपरान्त उपरोक्त सभी क्रियाकलापो का वैज्ञानिक विधी से संवर्द्धन एवं तत्पष्चात विक्रय से लाभ अर्जन। स्थानीय स्तर पर श्री तकनीक से 20 से 25ः अधिक उपज की प्राप्ति, खेती की लागत मे बचत। स्वयं की बागवानी उत्पाद यथा आम एवंअन्य मसाला उत्पाद से स्वादिष्ट आचार उत्पादन(संवर्द्धन) से लाभ की प्राप्ति।वर्ष भर मे लगभग 8 से 10 क्वी0 आचार की बिक्री की जाती है जिससे अच्छा मुनाफा प्राप्त हो जाता है।

वैज्ञानिक विधी से आम उत्पादन तकनीक को ध्यान मे रखते हुए कच्चे आमो की तुडाई कर ली जाती है उसके बाद मसाला उत्पादो के बेहतर अनुपात के मिश्रण से आचार का बेहद स्वादिष्ट उत्पाद तैयार किया जाता है और स्थानीय बाजार मे आसानी से विक्रय के लिए उपलब्ध कराया जाता है। संरक्षण तकनीकी के उत्पाद से अधिक दिन तक भंडारण योग्य बनाया जाता है। आम उत्पादन- 15 से 20 क्वी0 (लगभग) गेहूँ उत्पदान- 35 क्वी0 प्रति हे0 (लगभग),धान उत्पादन- 55 क्वी0 हे0 (लगभग) औषधिय पौधा मेथा एम्सटैक्ट - 20से 25 ली0 (लगभग) मसाला उत्पादन- हल्दी, धनिया, मिर्च का उत्पादन आम उत्पादन से 25000 रू0 गेहू उत्पादन से 10से 20हजार तक धान उत्पादन से 15000 से 20000 प्रति हे0 लगभग औषधिय पौधा 20000 से 25000 तक (लगभग) खडी फसलों में आवश्यकतानुसार दो- दो छिडकाव प्रति सीजन। 2000 से 3500 के लगभग कुल 4 छिडकाव मे। बगवानी के परिणाम स्वरूप मृदा क्षरण मे कमी आई है तथा मिटी की उर्वरता मे उतरोतर वृद्वि हो रही है, जल धारण की अत्यधिक क्षमता खेती दिखाई देती है। सभी उत्पादन उतम क्वालिटी के प्राप्त होते है, जिससे स्थानीय बाजार मे विक्रय खरीदारो को आकर्षित होने पर मजबूर होना पडता है समय के साथ अनुभव आधारित खेतो के उत्पाद को भविष्य मे और बेहतर तरीके से उत्पादन किया जा सकेगा। स्थानीय बाजारो मे अच्छे गुणवता वाले उत्पादो की मॉग ज्यादा है इसलिए उत्पादन के पश्चात उत्पाद की विधी हेतु उपज मे लगाये जानेवाले खर्च स्वतः कम हो जाते है और मुनाफा का प्रतिषत बढ जाता है।

कृषि विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रमो सं आय हो जाती है। आत्मा (भोजपुर) कार्यालय, से आयोजित प्रशिक्षण, प्रत्यक्षण योजना, एवं किसान पाठशाला के माध्यम से कृषि वैज्ञानिको का मार्गदर्शन काफी प्रभावी एव लाभप्रद सिद्व हो रहा है।
स्थानीय स्तर के लोगो मे एक सफल किसान के रूप मे पहचान मिली है तथा विभगीय स्तर पर भी मेरी राय को रखा जाने लगा है, जिसके कारण मेरे आंत्मविश्वास मे बढ़ोतरी आई है। आषा है भविष्य मे मेरे द्वारा अन्य कार्यक्रम को भी अनपाया जाएगा। ताकि आमदनी को और अधिक बढाया जा सके।

75 कौशल ने स्टॉबेरी की खेती कर हासिल किया मुकाम

परिचय

किसान का नाम - **कौशल सिंह**
पिता/पति का नाम - श्री राम अश्वमेध सिंह
पूरा पता - गॉव/मुहल्ला- विशुनपुरा पोस्ट-विषुनपुरा, डुमरियॉ, थाना- कोइलवर, प्रखंड - कोइलवर, जिला-भोजपुर (बिहार)
मोबाइल सं0- 9110962325
खेती योग्य भूमि (हे0में) - 1 हेक्टेयर
सिंचित क्षेत्र (हे0 में) - 1 हेक्टेयर
असिंचित क्षेत्र (हे0 में) - सिमान्त
किसान का प्रकार - जय श्री राम कृषक हित समुह, (स्वयं सहायता समूह/कृषक हित समूह/खाद्य सुरक्षा समूह (महिलाओं के लिए)/ किसान उत्पादक संगठन के सदस्य/व्यक्तिगत)

मैं कौशल सिंह, पिता-श्री राम अश्वमेध सिंह, ग्राम-विशुनपुरा, प्रखंड-कोइलवर, जिला-भोजपुर का निवासी हूँ। किसान परिवार में मेरा जन्म 02.01.1981 में हुआ है। गॉव के ही स्कूल में शिक्षा प्राप्त किया। घर के सभी लोग खेती करते थे, परन्तु मेरा ध्यान नौकरी और व्यापार में था। मेरे घर के लोग धान, गेहूँ, चना, मसूर, तीसी, तेलहन आदि की खेती करते थें। मेहनत के अनुसार उपज नहीं हो पा रहा था। जिसके कारण आर्थिक लाभ नहीं हो रहा था। इसी कारण हमने खेती छोड़कर व्यापार करने को सोचा। उस समय मेरा मुलाकात परियोजना निदेशक एवं उप परियोजना निदेशक, आत्मा, भोजपुर से हुआ। उनके द्वारा बताया गया कि औषधीय फसल या आधुनिक तरीके से उद्यानिक फसल का खेती करे तो उसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। उनके द्वारा बताया गया कि उद्यान विभाग के माध्यम से नेट हाऊस लगाकर ड्रीप सिंचाई से स्ट्राबेरी करे।

सर्वप्रथम मुझे स्ट्राबेरी की खेती करने की प्रेरणा उप परियोजना निदेशक, आत्मा, भोजपुर से मिला। हमारे क्षेत्र में स्ट्राबेरी की खेती नहीं होती है क्योकि स्ट्राबेरी की खेती करने योग्य यहॉ का मौसम अनुकूल नहीं है। इसलिए मैंने उद्यान विभाग से नेट हाऊस लगाने का आवेदन किया उसके बाद करीब चैदह कट्ठा में नेट हाऊस लगवाया। उसमें फवारा और ड्रीप लगवाया। इसके बाद मैंने कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक से संपर्क किया उनके सलाह के अनुसार खेत में मैंने सड़ा हुआ धान का भुसी लकड़ी का कुंदी, सरसो का खली और नीम का खली देकर खेत तैयार किया।

उसके बाद हिमाचल प्रदेश से स्ट्राबेरी का दस हजार पौधा अक्टूबर माह में मंगाया। पौधा मंगाने में हमको अस्सी हजार रू0 का लागत आया। उसके बाद बेड़ बनाकर प्लास्टिक मल्चींग किया इसके बाद पौधा लगाने के तुरंत बाद हल्का सिंचाई ड्रीप के माध्यम से किया, फसल तैयार होने के बाद मार्केट से डुला खरीदकर उसमें पैक कर लोकल मार्केट में पॉच सौ से छः सौ रू0 के दर से बेचे। हमको हर पौधा से 400-500 ग्राम इल्ड प्राप्त हुआ। लागत खर्च छोड़कर हमको एक लाख अस्सी हजार रू0 का लाभ हुआ।

सफलता के लिए महत्वपूर्ण तत्व/घटक - आत्मा, भोजपुर से सहयोग
(व्यक्तिगत प्रयास/आत्मा से सहयोग/अन्य विभाग से सहयोग)

स्थानीय स्तर पर किसानों के बीच सफलता की कहानी का प्रभाव - स्थानीय स्तर पर किसानों के द्वारा स्ट्राबेरी की खेती की सफलता को देखते हुए सैकड़ों की संख्या में किसान प्रेरित हुए एवं अन्य कृशकों के भी खेती करने की व्यवस्था उपलब्ध हो रही है।

सफलता की कहानी के लिए प्राप्त पुरस्कार/प्रशस्ति पत्र - आत्मा, भोजपुर के द्वारा इन्हें 35000/रु0 नवाचार गतिविधि अंतर्गत प्रदान कर आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग प्रदान किया गया है।

76 कृषि बैंक यंत्र से मिला रोजगार

परिचय

नाम - **श्री विनय प्रसाद**
पिता - बच्चु प्रसाद
पता - ग्राम- छोटी भरतशीला, पंचायत- भरतशीला
प्रखंड- शंभूगंज, जिला- बांका
मो0- 9507506485

शम्भूगंज प्रखण्ड का छोटी भरतशीला गॉव के श्री विनय प्रसाद एक प्रगतिशील किसान है। श्री विधि से धान की खेती करते हैं इसके पास 6 एकड़ खेत है जिसमें धान के आलावा दूसरी फसलों को भी लगाते हैं परन्तु खेती में उतनी आमदनी नहीं है जितना इन्हें आवश्यकता थी। किसी रोजगार के लिए प्रयासरत थे इसी दौरान जिला कृषि पदाधिकारी एवं परियोजना निदेशक आत्मा, बांका से इनकी मुलाकात हुई जिला कृषि पदाधिकारी एवं परियोजना निदेशक आत्मा के द्वारा श्री विनय प्रसाद को कृषि यंत्र बैंक खोलने की सलाह दी । उन्होंने कहा कि आपको कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है अपने गॉव में रोजगार कीजिए इससे दूसरे किसानों का भी भला होगा और आपको बेहतर रोजगार मिल जायेगा। विनय प्रसाद ने अपने गॉव में कृषि यंत्र बैंक का शुभारम्भ किया, आज इनके पास कृषि के 12 यंत्र हैं इसे और आगे बढ़ाने की योजना है। कृषि यंत्र को दूसरे किसानों को किराए पर देते हैं, इससे लगभग साल में 10 लाख रुपए की आमदनी प्राप्त हो रही है। सभी किसानों को कृषि यंत्र खरीदने की क्षमता नहीं होती है ऐसी दशा में भाड़े पर यंत्र लेकर उपयोग करते हैं। अब सभी किसानों को अपने गॉव में ही कृषि यंत्र मिल जा रहा है। विनय प्रसार को हारवेंस्टर से 2000 रुपए प्रति एकड़ भाड़ा प्राप्त होता है। इसी प्रकार लेवलर, स्ट्रॉरीपर एवं रोटावेटर से 1200 रूपया प्रति एकड़ तथा ट्रैक्टर से 800 प्रति एकड़ आमदनी हो रही है।

विनय प्रसाद कृषि यंत्र बैंक से काफी खुश हैं अपने गॉव में जहाँ इन्हें रोजगार प्राप्त हैं वहीं इससे दूसरे किसानों की मदद हो रही है। यह निश्चितौर पर एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

- **कृषि यंत्र बैंक से सलाना 10 लाख रूपया की आमदनी।**
- **गॉव में रोजगार का बेहतर अवसर।**
- **दूसरे किसानों को समय पर अपने गॉव में ही कृषि यंत्र उपलब्ध।**

77 किसानों के जीवन में मिठास घोल रहे रमेश

परिचय

रमेश रंजन
तिलक नगर रोड नं. 2 जगदेव पथ पटना
मो. 9835497609

बिहार के 39 साल के रमेश रंजन स्मार्ट युवा अपने अभिनव कौशल से 400 किसानों के जीवन में समृद्धि की मिठास घोल रहे हैं। इन्होंने मधुमखी पालन व शहद उत्पादन को ही अपने जीवन यापन का जरिया बनाया है। रमेश रंजन एक मध्यम वर्गीय परिवार से आते है, इनके पिता सरकारी सेवा में रहे है, स्वाभाविक तौर पर हर भारतीय परिवार की तरह इनके घर वाले भी यह चाहते थे कि लडका सरकारी नौकरी करें, पर इन्होंने कुछ और ही सोच रखा था। जीवन में बहुत आगे बढने व लोगो से जुडकर जमीनी स्तर पर काम करने की इच्छा थी जिससे हम स्वयं सहित अन्य लोगो के जीवन में सुखद व सकारात्मक बदलाव के वाहक बन सके और सब के लिए समृद्धि का मार्ग बना सके जिससे कि सतत व स्थायी आमदनी सुनिश्चित किया जा सके इस कारण किसी भी नौकरी के बारे में सोचा ही नहीं। शुरूआत बिल्कुल भी आसान नही था। लागे मजाक उडाते थे। घर वालो का दवाब अलग सब मेरी बेहतरी के लिए चिंतित रहते थे उत्पादन व वितरण से सबंधित चुनौतियां भी कम नहीं थी। बेहतर प्रशिक्षण व सधी शुरूआत से काम धीरे-धीरे आसान हुआ। महज 7 बक्से से मधुमख्खी पालन व शहद उत्पादन के क्षेत्र में कदम रखा। उस समय पारपं रिक तरीक े स े मधमु खी का पालन किया जाता था जिसमे कुछ खास मुनाफा नहीं होता था। तब 2008 मे खाधी ग्रामोद्योग आयोग से मधुमखी पालन व शहद उत्पादन की अत्याधुि नक और वैज्ञानिक तकनीक का प्रशिक्षण लिया तथा च्डम्ळच के अंतर्गत लोन लेकर अपना काम शुरू किया । जब मेहनत को तकनीक का साथ मिला तो दिन बदलते देर न लगी। आज 1500 से अधिक स्वयं के बक्से है और 400 स े अधिक किसान बिहार प्रदशे ा स े जुडे.हुए है। सब मिलाकर 10,000 से अधिक बक्से है। अब सेवानिवृति के बाद पिता जी का भी सहयोग मिलता है। उन्होंने कहा कि यह सफर कतई आसान नहीं रहा। पहल े पहल सारा काम खदु करना होता था। लोग जागरुक नहीं थे, मजदूरों को लगता था कि मधुमख्खी डंक मार देगी, कोई सहयोग को उपलब्ध नहीं होता था, कभी-कभी तो स्वयं बक्से को गाड़ी पर चढ़ाने व उतारने का काम करना पड़ा। आज 25 लोग नियमति तौर पर इनके फार्म पर काम करते है। वर्तमान में अब रमेश प्रतिवर्ष औसतन 250-300 टन शहद की बिक्री कर लेते है। इसमे स्वयं के उत्पादन (60 टन) के साथ-साथ सभी किसानों का उत्पादन (250 टन औसतन) शामिल है। ये किसानों को बाजार भी उपलब्ध कराते है। इनका शहद पाचं सितारा हाटे ला ें तक है इनके द्वारा उत्पादित शहद की माँग भी है। आज देश में कई बड़ी-बड़ी कंपनियां शुद्ध शहद नहीं उपलब्ध करा रही है, उस दौर में रमेश रंजन पटना सहित पूरे देश में शुद्ध शहद उपलब्ध कराने की गारंटी माने जाते हैं। इनके द्वारा उत्पादित शहद के मानकों को तो पूरा करता ही है, साथ ही ै 9001:2008 क े विश्वस्तरीय गणु वत्ता क े मापदडं को भी पूरा करता है। तभी तो इनके द्वारा उत्पादित शहद देश के विभिन्न राज्यों में केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक में भेजा जाता है। इसके साथ ही मधुमख्खी के छत्ते सहित पूरी तरह प्राकृतिक शहद की आपूर्ति मुंबई दिल्ली के पाँच सितारा होटलों तक की जाती है। उन्हें पूरे देश-प्रदेश से मिल रहा है सम्मान इनके योगदान को देखते हुए, देश के प्रतिष्ठित औद्योि गक समहू महिद्रं ा एण्ड महिद्रं ा क े द्वारा इन्हें महिद्रं ा समृद्धि ऐग्री अवार्ड 2020 के रास्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसके पहले , राज्य मधुमख्खी पालन व प्रसार केंद्र (बिहार) ने भी इनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना की है। इसके लिए वर्ष 2018 में सम्मान पत्र (प्रमाण पत्र) भी दिया है। 2018 मे इन्होने च्डळम्च से एडवांस लेवेल की मास्टर ट्रेनर की ट्रेनिंग भी की जिससे इनके काम मे बहुत जायदा फाइदा मिला। डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद बहु-उद्योगीय प्रशिक्षण संस्थान सहित देश व राज्य के आधा दर्जन से अधिक संस्थानों ने इन्हें प्रमाणपत्र दिया है। इनसे जुडने के बाद किसानों की आमदनी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। बकौल रमेश रंजन इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं मौजूद है। युवा इससे जुडकर अच्छा भविष्य सुनिश्चित कर सकते है। रमेश रंजन यह मानते है कि आज जो भी इनके पास है और जहाँ तक पहुँचे है वह सच्ची मेहनत, धैर्य, काम के प्रति समपर्ण व बहुत सारे लोगों के सकारात्मक सहयोग व मार्गदर्शन के कारण संभव हो पाया है। इस कारण रमेश रंजन भी लगातार लोगों को जागरुक करने व उनतक मदद पहुँचाने में लगे हुए है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए आम लोगों के लिए जो मधुमखी पालन व शहद उत्पादन के क्षेत्र में आना चाहते है, उनके लिए निशुल्क प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहे है। बहुत जल्द शहद के, प्रोसेसिंग के लिए अत्याधुनिक और आटोमेटिक शहद पैकिंग यूनिट भी लगाने की योजना है। जिसके बाद शहद को प्रोसेस करने क बाद बिहार से बाहर भेजा जाएगा जिससे किसानों को आपने शहद का ज्यादा मूल्य प्राप्त हो पाएगा। रमेश शहद उत्पादन के साथ-साथ हाल के दिनों में गौ पालन में भी अपना पहचान बना रहे हैं। अभी इनके पास 35 देसी गाय हैं। इनका दुध उत्पादन कर पटना के शहरों में रंजन डेयरी के नाम से बोतल बंद दुध उपलब्ध करा रहे हैं। इसका और भी विस्तार करने में लगे है। केंद व राज्य सरकार की योजनाओं के लिए आवेदन भी किया है।

78 आचार, पापड़ एवं बड़ी को बनाया उद्योग

परिचय

नाम- श्री अमित प्रकाश
पता ग्राम : काजीचक,
नगर प्रखण्ड के नैली पंचायत
जिला-गया
मोबाईल नम्बर 7004436440

श्री अमित प्रकाश गया जिला के नगर प्रखण्ड के नैली पंचायत के काजीचक ग्राम के निवासी हैं। इन्होने टेली कम्यूनिकेषन में इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है और सात वर्षो तक बड़ी कम्पनी में कार्य किया है। इसके पश्चात इनका रुझान खेती और इससे जुडे. व्यवसाय की ओर हुआ है। प्रारम्भ में इन्होने कृषि मषीनरी के व्यवसाय को प्रमुखता से अपनाया और किसानों को पैडी ट्रान्सप्लान्टर से धान की खेती के लिये प्रषिक्षित कर खेती करायी। 2014-15 में श्री अमित प्रकाष ने आहार फाउण्डेषन नामक संस्था बनायी और वे वर्तमान उसके अध्यक्ष है। इस संस्था से लगभग 500 किसान जुडे. हुये हैं और ये संस्था के माध्यम से मषरुम उत्पादन, पपीता की खेती, आलू के चिप्स आदि उत्पादित कर रहे हैं। समूह के साथ लगभग 120 महिला किसान भी जुड़ी हुई हैं। महिला किसानों को आत्मा गया के माध्यम से प्रषिक्षित कराकर मषरुम का उत्पादन करा रहे हैं। उत्पादित मषरुम को आचार, पापड़, बड़ी आदि बनवाकर उसकी पैकेजिंग कर ऑनलाईन प्लेटफार्म म रंतनतंज मोबाईल एप के माध्यम से बिक्री कर महिला किसानों को स्वावलंबी बना रहे हैं। श्री अमित प्रकाष का मोबाईल नम्बर 7004436440 है।

संगीता ने जूट ज्वेलरी को तैयार कर जिले का मान बढ़ाया

परिचय

किसानकानामः- श्रीमति संगीता कुमारी
ग्राम-पो0 :- प्रधानचक
प्रखंड :- खैरा
मोबाईल नं0:- **8877735869**
समूह का नामः-माँ काली स्वयं सहायता समूह

श्रीमति संगीता कुमारी, पति- अधिक कुमार सिंह, ग्राम-पो0-प्रधानचक, प्रखंड- खैरा, जमुई जिला की निवासी हैं। इनके पति ऑटो ड्राईवर है जो बमुषकिल से घर का खर्च चला पाते थे। कम जमीन होने के कारण पूरे परिवार का भरण पोशण ठीक ढंग से नहीं हो पाता था। संगीता के द्वारा वर्श 2010 में व्तदंउमदज जतंपदपदहए श्रनजम मतअपबम ब्मदजतम च्जदं में प्रषिक्षण प्राप्त कर जूट ज्वेलरी का निर्माण षुरू किया गया जिससे इन्हें कुछ आय होने लगी। तत्पष्चात ये महिलाओं का एक स्वय सहायता समूह बनाकर आत्मा से जुड़ी। आत्मा में जिला स्तरीय प्रषिक्षण में इन्हें इनके उत्पादकता को बढ़ावा एवं बिक्री करने के तरीके के बारे में बताया गया। इसके साथ ही इन्हें जिला एवं राज्य स्तर पर आयोजित कृशि मेला में स्टॉल लगाकर उत्पाद की बिक्री कराई जाती रही। जिससे इनको लगातार बाजार उपलब्ध होता रहा। इस प्रकार के मेले से इन्हें अच्छी आमदनी होने लगी जिससे प्रेरित होकर इनके द्वारा कई षहरों यथा- हुग्ली, चैन्नई, विषाखापत्तनम, भुवनेष्वर, देवरिया (यूपी), दिल्ली, तितौलिया, रांची, जमषेदपुर, पटना, भागलपुर एवं अन्य में मेला अथवा अन्य आयोजनों में स्वयं स्टॉल लगाकर उत्पादों की बिक्री बखूबी करती रही है। विभिन्न षहरों में स्टॉल पर लगाये गये उत्पादों से इनकी एक अलग छवि बन गई है। जिससे प्रेरित होकर कुछ षहरों के लोगों के द्वारा इन से सीधे मोबाईल पर सम्पर्क कर उत्पादित ज्वेलरी की मांग लगातार की जा रही है। इनके द्वारा मांग के अनुरूप ज्वेलरी पोस्ट/डाक के द्वारा सीधे ग्राहकों को उनके घर पर उपलब्ध करा दी जाती है। आज की तिथि में कई बार ऐसा भी हुआ है कि इनके द्वारा ग्राहकों के अत्यधिक मांग के कारण उत्पादों की डिलीवरी में ग्राहकों से कुछ दिन का समय तक मांगा जा रहा है। इस प्रकार से इनकी आमदनी बढ़कर लगभग 30,000.00 से 35,000.00 रू0 प्रति माह हो गई है। इनके साथ-साथ इनके समूह से जुड़ी अन्य 15 महिलाओं की भी आमदनी बढ़ गई है और वे सभी इस कार्य से जुड़कर काफी प्रभावित हैं और अपने परिवार का बड़ी सहजता से भरण-पोशण कर रही हैं।

89 जेम एंड जेली से बनी जुही बनी व्यवसायी

परिचय

नामः-**जुही पांडे**
पिता का नामः-धर्मनाथ पांडे
शिक्षाः -10 + 2 (इंटरमीडिएट)
संपर्क नंबर।
समूह नाम :- माँ काली महिला समूह
कार्य अनुभवः- खाद्य प्रसंस्करण में 10 वर्ष
ब्रांडः-अक्षित
कंपनीः-अक्षित फार्म फूड्स
मास्टर ट्रेनरः वीरकुवर सिंह कृषि कॉलेज डुमरांव, एटीएम बक्सर,
पुरस्कार :-नवोनमेशी किसान पुरस्कार इकार,पटना
सम्मनितः-किसान दिवाश समरोह 2015, आत्मा बक्सर, अपराजिता सम्मान 2018 प्रभात खबर बक्सर

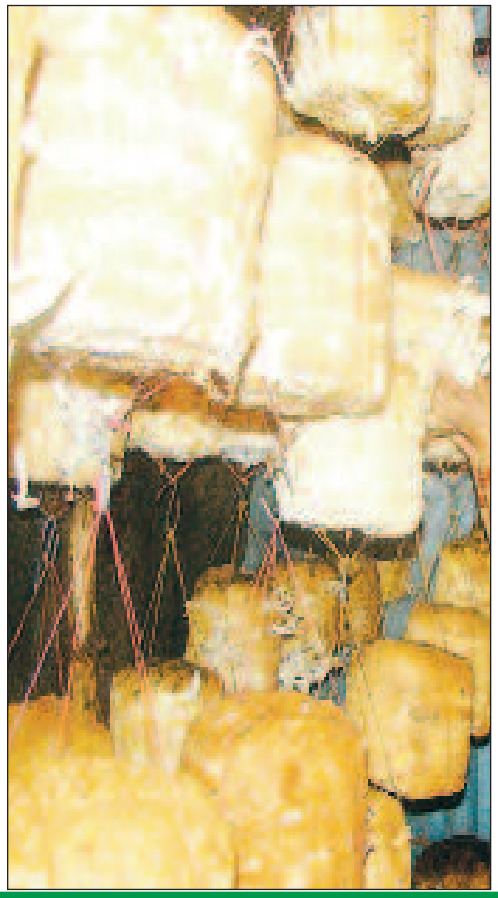

2010 मे कृ॰वि॰के॰ बक्सर से मशरूम, सोयाबीन, फल प्रोसेसिंग का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद के॰वी॰के। और आत्मा के सहयोग से एक 15 सदस्यीय महिला समूह का गठन किया,जिसमे नियमीत बैठक करके पूंजी का सृजन करने के बाद मशरूम आचार, सूरन आचार,दाल बरी जैम जेली का निर्माण और मार्केटिंग शुरू किया गया। इसके लिए एक मार्केटिंग कंपनी अक्षित फार्म फूड्स का गठन किया गया जिसका ब्रांड अक्षित हुआ। शुरूआत मे कृषि मेला और लोकल मार्केट को टार्गेट किया गया। आज नेट मार्केटिंग और डोर टू डोर मार्केटिंग विधा को अपनाते हुए दूर दराज के बड़ो शहरो तक अपने उत्पादो को पहुचाने मे सफल रहे। आज इस कंपनी की टर्न ओवर 12 लाक की है। इस का मुनाफा कुल 15 महिलाओ के बीच बाटी जाती है,अतः यह कहा जा सकता है की इस कंपनी के गठन के बाद कूल 15 महिलाओ का रोजगार सृजन किया गया। ये कंपनी आज 15 महिलाओ का दशा और दिशा बदलने मे मील का पत्थर साबित हुआ। मेरे द्वारा एक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाया जा रहा है जिसमे अन्य महिलाओ को प्रशिक्षित कर उन्हे आत्म निर्भर बनाने का कम किया जा रहा है।

80 ओल एवं फूलों की खेती के लिए पुरस्कृत

परिचय

अर्जुन प्रसाद सिंह
पिता–स्व० आनंदी प्र० सिंह,
पता–संत नगर कहर सहरसा
माबाईल–9570738172

मैं श्री अर्जुन प्रसाद सिंह पिता–स्व० आनंदी प्र० सिंह, संत नगर कहर सहरसा का रहने वाला हूँ। मुझे वर्ष 2008 में ओल एवं फूलों की खेती के लिए पुरस्कृत किया गया। मैं आत्मा. सहरसा से जुड़कर एवं कृषि विभाग द्वारा नये नये जानकारी प्राप्त कर अपने खेती के कार्यों को अधिक बढ़ाय में वर्गी कम्पोस्ट का उत्पादन एवं प्रयोग शुरू से ही करता आ रहा हूँ। आत्मा, सहरसा से जुड़कर कम्पोस्ट को हाइग्रेड करने का प्रयास किया ताकि उसमें नाइट्रोजन एवं फारफोरस की मात्रा को बढ़ाया जा सके। इसके लिए मुझे आत्मा द्वारा कृषि महाविद्यालय अगवानपुर सहरसा से सम्पर्क कराया गया. ताकि वैज्ञानिकों से तकनिकी जानकारी प्राप्त कर इस कार्य को अंजाम दे सके। इससे हमें काफी लाभ हुआ हमारे वर्मी कम्पोस्ट का जाँच बिहार कृषि विश्वविद्यालय सदीर में कराया गया, जिसमें नाइट्रोजन एवं फासफोरस के साथ सूक्ष्म पोषक तत्व अधिक मात्रा में पाया गया। उत्साहित होकर मैंने नाबार्ड, सहरसा द्वारा RIF के तहत एक प्रोजेक्ट उद्यान पोषक के उत्पादन के लिए दिया। यहाँ से मुझे उत्पादन एवं प्रत्यक्षण की स्वीकृति मिली इस प्रकार में इसका व्यवसायिक उत्पादन कर विभिन्न कृषकों के खेतों में इसका प्रत्यक्षण किया, जिससे किसानों को बहुत अधिक लाभ प्राप्त हुआ। इस कार्य हेतु मुझे नाबार्ड की जिला विकास प्रबन्धक मंडन भारती कृषि महाविद्यालय, सहरसा के प्राचार्य वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं आत्मा से सहयोग प्राप्त हुआ उद्यान पोषक के रूप में में वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन कर रहा हूँ। अब में फास्फोटिक खाद की अधिक कीमत एवं कम उपलब्धता के कारण नए कार्बनिक खाद वर्मी–फोस के उत्पादन में लगा हुआ हूँ जिसे मैं राक फास्केट एवं वर्मी कम्पोस्ट के द्वारा तैयार करूंगा। इससे आसपास के काफी कृषकगण लाभान्वित एवं प्रभावित हो रहे हैं।

वर्मी कम्पोस्ट से कर रहे सब्जी की खेती

परिचय

नाम– मो० सिटीक
पिता–मो० लाल मोहम्मद
ग्राम–नौलखा पंचायत दनगांव (पूर्वी)
प्रखण्ड–कहरा
माबाईल– 8877777814

मैं मो., सिटीक, पिता–मो० लाल मोहम्मद ग्राम–नौलखा पंचायत दनगांव (पूर्वी) प्रखण्डकहरा का रहने वाला है में शुरू से ही देती के कार्यों से जुड़ा हूँ एवं गांव के अन्य किसानों की तरह सब्जी की का कार्य कर रहा हूँ। मेरी खेती पारम्परिक रूप से रसायनिक खाद एवं कीटनाशक के प्रयोग पर आधारित थी। अब अपने गांव के अन्य लोगों के साथ मिलकर अंजुमन कृषक हित समूह का गठन किया हूँ। समूह का पंजीकरण आत्मा सहरसा से कराया आत्मा सहरसा द्वारा हमलोगों को वर्मी कम्पोस्ट आधारित सब्जी की खेती का प्रत्यक्षण कराया गया, जिससे हम कृषकों को काफी लाभ प्राप्त हुआ। हमलोगों ने वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधि सीखी एवं उसका उपयोग कर अधिक लाभ प्राप्त किया। पहले हमलोग सब्जी की खेती में अत्यधिक कीटनाशक का प्रयोग करते थे। इसके अवगुण से हमलोग अवगत थे मगर उनके पास इसका विकल्प नहीं था। आत्मा द्वारा हमारे गांव में कृषक पाठशाला का आयोजन ब्जी की खेती पर किया गया, जिसमें कीटनाशक के अवगुणों से परिचित कराया गया हमलोगों को समेकित कीट प्रबन्धन की जानक. ारी दी गयी एवं प्ड कीट दिया गया. कीट की पहचान करायी गयी, प्ड के विभिन्न नियमों से अवगत कराया गया। लाइट ट्रेप एवं फेरोमेन ट्रेप की जानकारी एवं प्रयोग बताया था।

रसायनिक खाद का प्रयोग कर मेरा खेत लाल हो गया था। बताया गया कि इस प्रकार मेरे खेतों की उर्वरा शक्ति समाप्त हो जायेगी।

पाठशाला में रासायनिक खाद एवं कीटनाशक का विकल्प प्राप्त कर हमलोग काफी उत्साहित हुए। मैंने पहले अपने खेतों में इसका प्रयोग शुरू किया, जिससे मुझे अप्रत्याशित लाभ हुआ। मैंने अपने समूह एवं गाँव में अन्य किसानों को इसकी जानकारी दी क्योंकि मुझे यह महसूस हुआ कि आर्गेनिक खेती सामूहिक रूप से विक. सित की जा सकती है। इसलिए मैंने अन्य कृषकों को भी प्रेरित किया और आज काफी किसानों द्वारा कार्बनिक खेती किया जा रहा है। गाँव के अन्य किसान हमारी बात मानकर कार्बनिक खेती करना शुरू किये हैं। शहर से निकट होने के कारण हमलोगों को सब्जी की खेती से अच्छी आय प्राप्त हो रही है। अब हमलोगों का विचार है। कि उद्यान विभाग द्वारा एक पॉली हाउस लगाएंगे, जिससे असमय में सब्जियों की खेती कर अधिक लाभ लिया जा सके कि सामान्य खेती से पॉली हाउस द्वारा असामयिक खेती कर 10 गुणा से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।